छन्द
रामायण

राष्ट्रपति भवन में छन्दरामायण के रचयिता श्री महेशचन्द्र शुक्ल को 'ब्रज तुलसी' सम्बोधन से आदर प्रदान करते हुए भारत के राष्ट्रपति महामहिम डा० शंकरदयाल शर्मा जी।

श्री महेशचन्द्र शुक्ल कृत

छन्दरामायण

प्रथम संस्करण — १०००
विजय दशहरा सम्वत २०५१ विक्रमी
मूल्य — इक्यावन रुपये मात्र

प्रकाशक—राष्ट्रभाषा संस्थान
शुक्लागंज, उन्नाव

महेशचन्द्र शुक्ल अपनी प्रेरणादायी पत्नी श्रीमती शकुन्तला शुक्ला को उनके आग्रह पर 'छन्दरामायण' की रचना करके राम कथा सुनाते हुए।

गृहकार्य से निवृत्त हुइ गृहणी मम पार्श्व में आसन आय जमायो।
कही रामकथा सुनिवेको बड़ो मन छन्द बनाय के मोहि सुनायो।
का का नरलीला दिखाई प्रभू अरु कैसे थो रावण मारि गिरायो।

—: o :—

जो पुनीत कथा कही शंकर ने औ सुनी जेह कहँ जगदम्ब भवानी।
अब सोई कथा मैं सुनाइहौं आपको जो तुलसी वाल्मीकि बखानी॥

विषय सूची

सुन्दर काण्ड

लका काण्ड

उत्तर काण्ड

लव कुश काण्ड

जल समाधि काण्ड

विद्वानों की दृष्टि में छन्द रामायण

मैंने श्री महेशचन्द्र शुक्ल की काव्यकृति 'छन्दरामायण' की पाण्डु-लिपि का आद्योपांत अवलोकन किया।

भारत मे रामकथा इतनी पिष्टपेषित तथा चर्वित चर्वण हैकि इसमें कुछ नया नहीं सोचा जा सकता, परन्तु 'छन्दरामायण' को पढ़कर मुझे अतीव हर्ष तथा परितोष हुआ क्योंकि इसमें अभिनव संस्थिति, नूतन प्रसंगोद्भावनायें तथा मौलिकता रोली की तरह विकीर्ण है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता इसकी भाषा में निहित है। ब्रजभाषा में लिखित होने पर भी इतनी सौम्य, शुचि, बोधगम्यता तथा लोकोमुखी वृत्ति इसमें है कि यह जन-जन के कण्ठ में परिव्याप्त होने की सामर्थ्य रखती है। इसकी भाषा की सरलता तथा सहजता इसे लोक-प्रिय बनाने में अपनी अहम तथा प्रभावी भूमिका का निर्बाह करेगी।

यद्यपि इसमें पारम्परिक स्वरूप अर्थात स्वीकृत/मान्यता प्राप्त काव्यशास्त्रीय छन्दों का उपयोग हुआ है जो कि लगभग ग्यारह सौ हैं, परन्तु उनकी भी ताजगी तथा वर्तमान प्रसंगानुकूलता विशेष दृष्टव्य है।

इसमें लोकजीवन में परिव्याप्त रामकथा को ग्रहण करके, इसे जनकाव्य की स्थिति में परिणत किया गया है। इसमें अनेकानेक नूतन सन्दर्भ तथा मौलिक काव्यांश को समाविष्ट करके, इसे राम-काव्य की परिपूर्ति का स्वरूप मिला है। विभिन्न रामायणों से कथा संयोजित कर, इसे सर्वांगपूर्ण बनाने में विशष सफलता मिली है।

रामकथा तो अमृतकुम्भ है और गंगोत्री भी। इसमें सहस्रों वर्षो से रचनाकार आसन ग्रहण करके, युग धर्म का निर्बाह कर रहे हैं।

इस कृति के द्वारा सचमुच रामकथा एवम् रामकाव्य को चरेवेति-चरेवेति वाली स्थिति प्राप्त हुई है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि रसिकवृन्द तथा मनीषीगण इसका हार्दिक स्वागत करेंगे और इसको अपनी चिरपरिचित कथा के नवल स्वरूप में पायेंगे। मार्मिकता तथा नैतिकता की इसमें मंजूषा है।

मैं इस काव्यकृति का विशेष सत्कार करते हुए, इसके रचयिता श्री महेशचन्द्र शुक्ल को हार्दिक साधुवाद देता हूं और मंगल अपेक्षा करता हूं कि वे इसी प्रकार भारतीय संस्कृति तथा वाङ्मय की श्री वृद्धि में अवदान देते रहेंगे। इत्यलम्।

पद्मश्री डा० लक्ष्मीनारायण दुबे
एम. ए. (हिन्दी), एम. ए. (इतिहास), पी. एच. डी., डी. लिट्,
'साहित्य रत्न' (गोल्ड मेडलिस्ट), 'साहित्य मार्तण्ड,
'साहित्यमनीषी,' 'साहित्यमणि', 'विद्यासागर',
'दर्शनदिवाकर', 'विद्यालंकार', 'बृजविभाकर'
सदस्य, हिन्दीसलाहकार समिति, भारत सरकार, नई दिल्ली
मार्गदर्शक साहित्यकार, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन,
गांधीनगर, ईशापुर भागलपुर (बिहार)
राष्ट्रीय रिसर्चफेलो, ब्रजसाहित्य-संस्कृति अकादमी (रसभारती),
मथुरा (उ.प्र.) और विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ (बिहार का खुला विश्वविद्यालय), भागलपुर
राष्ट्रीय रिसर्च एसोसियेट, गौरांग निकेतन शोध संस्थान
वृन्दावन (उ. प्र.)

दिनांक : १२-१२-९२

आवास तथा पत्राचार का पता :
ब-६, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय सागर ४७०-००३ (म.प्र.)
दूरभाष-२४१४ (आवास)
(एसटीडी कोड-०७५८२)

सुरसरि सम सब कहँ हित होई

जीवन की अतिशय क्षिप्रता, भाग दौड़, आपाधापी और मूल्य विघटन की इस विषम परिस्थिति में यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अतीत की अशेष संपदा की ओर झांकें। उसके साहित्य, भाषा, परम्परा का अनुशीलन करें तथा उनकी व्याख्या विवेचना कर वर्तमान जीवन का पथ प्रशस्त करें। मध्य युग में आठ वीणायें एक साथ कृष्ण का कीर्ति-कीर्तन कर उठीं, जिनमें सबसे मधुर और सुरीली झंकार अंधे कवि सूरदास की वीणा की थी। यह मधुरता, सरसता ब्रजभाषा के सौन्दर्य की सृष्टि है। आज जहाँ खड़ी बोली और हिन्दुस्तानी हिंदी का प्राबल्य है, वहाँ श्री महेशचन्द्र शुक्ल ने ब्रजभाषा में 'छन्दरामायण' की रचना कर एक ओर ब्रजभाषा काव्य की समृद्ध एवं सुदीर्घ परम्परा की पुनर्प्रतिष्ठा की, साथ ही रामकाव्य की अनन्त परम्परा में एक और मनका जोड़ दिया। गंगा के समान सर्वहितकारिणी 'छन्दरामायण' की रचना की।

भट्टतौत ने प्रतिभा की परिभाषा दी है — 'नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा प्रतिभा मता'। इस कृति में कवि की मौलिक उद्भावना, नवीन प्रसंगों का समावेश तथा समकालीन समस्याओं के समाधान के संकेत से उनकी नवनवोन्मेषिणी प्रज्ञा का पग-पग पर पता चलता है। यह कृति जहां रामचरित मानस एवं अन्य रामायणों की कथा-योजना का आनन्द देती है, वहां 'रावण' और 'नारी' को नए मूल्य प्रदान करती है। 'छन्दरामायण' की नारी भक्तिकाल की लांछित नारी नहीं है, वरन वह अपने शक्ति, शील, सौजन्य, सतीत्व की गरिमा से मंडित होकर अपना 'स्व' स्वयं स्थापित कर रही है, उसे किसी शठ रावण की परवाह नहीं है—

"तेहि शील सतीत्व अटूट रहे कितनेहु रावण शठ रूप धरे।
है नारि तो शक्ति औ मां जग की गृहिणी बन के प्रतिपाल करे।।"

यह कृति एक साथ ब्रजभाषा के सौन्दर्य गंगा में स्नान कराती है तो रामकथा की धारा में निमज्जन भी अध्यात्म लोक में ले जाती है, तो समकालीन जीवन संदर्भों से साक्षात्कार भी कराती है। ऐसी अमर कृति के लिए मैं श्री शुक्ल जी को साधुवाद देती हूं।

डा० विमला उपाध्याय

एम.ए., पी.एच-डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग
एस. एस. एल. एन. टी. महिला महाविद्यालय धनबाद-८२६००१

o o o

बन्धुवर शुक्ल जी, प्रणाम !

निश्चित ही आपको मां सरस्वती का वरदान प्राप्त है। आपने अत्यन्त लालित्यपूर्ण छन्दों में रामकथा को प्रस्तुत किया है। कहीं-कहीं तो इन छन्दों को पढ़ते हुए 'गीत गोविन्दम' की स्मृति साकार हो उठती है। ग्रन्थ प्रकाशित होने पर एक प्रति भेजियेगा।

डा. यतीन्द्र तिवारी

२५-९-९२ एम. ए., पी. एच-डी., डी. लिट्.
प्राचार्य अर्मापुर महाविद्यालय, कानपुर विश्वविद्यालय-कानपुर

o o o

प्रिय शुक्ल जी,

'छन्दरामायण' के कुछ अंश देखने को मिले। सामान्य जनता में आपकी यह रचना लोकप्रिय होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। रामकथा भारतीय जनमानस में पहले से ही अंकित है। उसे जितनी बार जिस स्तर से भी लिखा जाय, उसका स्वागत होगा ही।

डा. शरणबिहारी गोस्वामी

७-१०-९२ एम. ए., पी. एच-डी
कार्यकारी उपाध्यक्ष, हिन्दी संस्थान उ० प्र०, लखनऊ

श्रीमान् महेशचन्द्र शुक्ल जी, नमस्कार !

खड़ी बोली की चकाचौंध में ब्रजभाषा को साहित्य-रसिक भूल चुके हैं। इस भूल की चुनौती है आपकी 'छन्द रामायण'। आपके कथनशिल्प पर तुलसी का प्रभाव स्वाभाविक है। मगर तुलसी छन्द का प्रयोग कवित्त सवैया आदि कवितावली के सीमित दायरे में ही कर पाये हैं। श्री रामचरित मानस अवधी में दोहा चौपाई में गठित है। आपने पूरी कृति छन्द में बांधी है व ब्रजभाषा में। यह खूबी उल्लेखनीय है। ब्रजभाषा में पूरी रामायण का प्रणयन नूतन है। स्वागताई है। पूरी प्रकाशित कृति के अध्ययन मनन की मेरी इच्छा है। एक प्रति भेजियेगा।

डा. पी. नारायणन

१०-१०-९२ एम. ए., पी. एच-डी., डी. लिट्.

वासन्थम, पालघाट, केरल

० ० ०

'छन्दरामायण' की रचना के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

मणिशंकर अय्यर

संसद सदस्य एव राष्ट्रीय अध्यक्ष

सोसाइटी फार सेक्यूलरिज्म मद्रास, तमिलनाडु

० ० ०

'छन्दरामायण' एक अनुपम कृति है।

खान गुरफान जाहिदी

सांसद एवं पूर्वमंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

० ० ०

श्रीमान् महेशचन्द्रस्य छन्दरामायण कथां
पठित्वा किन्चिदर्थं च इच्छामि पठितुं सदा ॥

धर्मयश

संयोजक उन्नीसवां अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन

डेनपासार-बाली, इण्डोनेशिया

श्री महेशचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित महाकाव्य 'छन्द-रामायण' की पाण्डुलिपि देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुछ अंशों को पढ़कर लगा कि गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस का प्रभाव कवि पर पड़ा है, परन्तु भाषा की शैली, अभिव्यंजना, भावना, शब्दों का परिमार्जन एवं इसके सभी छन्द ब्रजभाषा की विशिष्टता को अक्षुण रखने में समर्थ हुए हैं। यह 'छन्दरामायण' बहुत ही सहज एवं सरल शब्दों में लिखी गई है। जो जन साधारण के लिए सुपाठ्य सुबोध एवं ज्ञानवर्धक है और कवि मनीषी एवं श्रद्धालु भक्तों के लिए प्रातः स्मरणीय एवं वन्दनीय है। मुझे आशा है कि निकट भविष्य में यह ग्रन्थ एक अमूल्यनिधि के रूप में देश व विदेश के विद्वानों के मध्य मान्यता प्राप्त करेगा।

विनयकुमार श्रीवास्तव
शोधछात्र
१९-५-९३ रेडक्रास रोड–मधुबानी, बिहार

० ० ०

श्री महेशचन्द्र शुक्ल विरचित 'छन्दरामायण' के विशिष्ट-विशिष्ट अंशों को मैंने कई बार मनोनिवेश पूर्वक पढ़ा तथा उनसे सुना। 'छन्दरामायण' अत्यन्त सरल, सरस एवं सुबोध है। सबसे बड़ी विशेषता इसकी भाषा है। आधुनिक युग में ब्रजभाषा में रामकाव्य की रचना शुक्ल जी का एक प्रशंसनीय प्रयास है। कवि की अनुभूति मनोयोग एवं मधुर शब्दावली की एक अविरल धारा सरल व मनोहारी काव्य के रूप में प्रवाहित हो रही है। 'छन्दरामायण' अत्यन्त मधुर एवं गेय है। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि घर-घर में इस ग्रन्थ का प्रचार हो।

राजेन्द्रकुमार गोस्वामी
अध्यक्ष मानस मण्डल,
२७-७-९३ जनकपुरी–नई दिल्ली

'राम कथा' हरिकथा होने के कारण अनन्त है। राम का यशगान दिव्यता का यशगान है। राम का नाम रावणत्व के विनाश का नाम है। रावणत्व के विस्तार से यह संसार दु:खों में उलझता है। रामत्व के विस्तार से शान्ति प्राप्त होती है, समत्व का उदय होता है, विषमता समाप्त होती है।

महेशचन्द्र शुक्ल की कृति 'छन्दरामायण' रावणत्व पर प्रहार में सहायक होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। कृति के प्रकाशन अवसर पर मेरी अनन्त शुभाशंसाएं।

डा. प्रतीक मिश्र
एम. ए., पी. एच-डी,
प्रोफेसर हिन्दी विभाग
डी. ए. वी. कालेज, कानपुर

० ० ०

आदरणीय शुक्ल जी !

सादर प्रणाम।

मुझे अपने भारत प्रवास के समय आप द्वारा विरचित 'छन्दरामायण' की पाण्डुलिपि देखने तथा पढ़ने का अवसर वृन्दावन–मथुरा में प्राप्त हुआ। अभी तक ब्रजभाषा में रामकथा नहीं लिखी गई थी, 'छन्दरामायण' ब्रजभाषा में बहुत ही सरल एवं सरस छन्दों में लिखी गई है। मेरी बड़ी हार्दिक अभिलाषा है कि यदि आप मुझे अनुमति दें तो इस 'छन्दरामायण' की कुछ हजार प्रतियां मैं छपवाकर विदेश में रहने वाले भारतीयों तक पहुंचा दूं ताकि वे भी इस अमूल्य ग्रन्थ का लाभ उठा सकें।

प्रोफेसर प्रेमशंकर चौधरी
३-२-९३ लुसाका विश्वविद्यालय, लुसाका–जाम्बिया

प्रिय शुक्ल जी !

ब्रजभाषा में आपके द्वारा लिखित छन्दरामायण के कुछ अंशों का अवलोकन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने जिस सरल एवं सरस भाषा में इस काव्य की रचना की है वह सराहनीय है। निश्चय ही यह रामायण भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी तुलसी के रामचरित मानस की भांति ही लोकप्रिय होगी।

डा. सु. मो. शुक्ला
१२-१२-९२ लुसाका–जाम्बिया

० ० ०

मुझे श्री महेशचन्द्र शुक्ल द्वारा विरचित 'छन्दरामायण' की पाण्डुलिपि पढ़ने का सौभाग्य मिला। वास्तव में श्री राम साहित्य ब्रजभाषा में कम पाया जाता है, किन्तु श्री शुक्ल ने अथक परिश्रम करके ब्रजभाषा में 'छन्दरामायण' की रचना सरस, बोधगम्य एवं सरल शब्दों में की है।

'छन्दरामायण' में जहां एक ओर गोस्वामी तुलसीदास के कालजयी ग्रन्थ रामचरित मानस का प्रभाव दृष्टिगत होता है, वहीं दूसरी ओर अन्य ग्रन्थो एवं लोकजीवन में प्रचलित रामकथा की भी स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

मैं श्री महेशचन्द्र शुक्ल को 'छन्दरामायण' की ब्रजभाषा में रचना करने पर बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं। भविष्य में भी लेखनी अनवरत रूप से चलती रहे, यही कामना है।

बद्रीनारायण तिवारी
अध्यक्ष/संयोजक
मानस संगम
अंतर्राष्ट्रीय संस्था
२८-८-९३ श्री प्रयाग नारायण मंदिर (शिवाला)
संयोजक–तुलसी उपवन एवं शहीद उपवन-कानपुर

अपने भारत भ्रमण के अवसर पर मुझे 'छन्दरामायण' की पाण्डुलिपि पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अभी तक ब्रजभाषा में इतने सरल एवं सरस शब्दों में रामकथा का अभाव था, जो 'छन्द रामायण' ने पूर्ण कर दिया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि देश-विदेश के रामकथा प्रेमी एवं मनीषीगण इसका हार्दिक स्वागत करेंगे।

'छन्दरामायण' के रचयिता श्री महेशचन्द्र शुक्ल को इस महान ग्रन्थ की रचना के लिए मेरे पास आभार के शब्द नहीं हैं।

कुँवरि किशोरी चौधरी
१०६० ओबोट रोड, लुसाका–जाम्बिया

० ० ०

महेशचन्द्र शुक्ल कृत 'छन्दरामायण' के कुछ प्रसंग सुनकर मुझे ऐसा लगा कि इस महान ग्रन्थ की रचना हम ब्रजवासियों के निमित्त ही हुई है। मुरली मनोहर भगवान श्रीकृष्ण की भूमि पर धनुर्धारी भगवान राम के दर्शन सहज ही होने लगते हैं। श्री शुक्ल जी ने 'छन्दरामायण' में अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों को सरलतम शब्दों के द्वारा प्रस्तुत कर दिया है जो जन सामान्य के लिए मझधार में पतवार का काम करेगा।

ब्रजभाषा की इस अनूठी कृति 'छन्दरामायण' की रचना के लिए श्री महेशचन्द्र शुक्ल को बहुत-बहुत धन्यवाद !

हेमकिशोर गोस्वामी
कांच का मन्दिर
वृन्दावन–मथुरा

गोविन्दकिशोर गोस्वामी
ब्रज महराज विश्वविद्यालय,
किशोर वन, वृन्दावन–मथुरा

० ० ०

श्री राम कथा के क्रम में 'छन्दरामायण' नवीनतम ज्ञात योगदान है। 'रामचरित मानस' के रचयिता महात्मा तुलसीदास ने जैसा कहा है– 'जथा अनन्त राम भगवाना, तथा कथा–कीरति–गुन नाना'। अनगिन रामकथाओं का सृजन हुआ है और आगे भी होता रहेगा। इसकी आवश्यकता का मूल कारण यह है कि मानव-मन अति भौतिकता से जब ऊब उठता है, सांत्वना का सम्बल एकमात्र भगवान के ध्यान में ही पाता है और उसे विश्वास हो जाता है कि राम नाम

का जहाज उसे निश्चय ही भवसागर के पार श्री भगवान की शरण में पहुंचा देगा।

राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखित अधिकांश पूर्ववर्ती रामकथायें, जहां महर्षि बाल्मीकि कृत 'रामायण' पर आधारित हैं, वहीं परवर्ती कवियों ने न्यूनाधिक सीमा तक 'रामचरित मानस' का अनुसरण किया है। पूर्ववर्ती कृतियों में आचार्य केशव दास की ओजस्वी रामकथा 'रामचन्द्रिका' विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो अद्भुत नाट्य तत्व-समन्वित होने पर भी काठिन्य तथा अलंकार बोझिल होने के कारण तुलसीदास की अवधी भाषा में रचित 'रामचरितमानस' की तुलना में न ठहर सकी और लोकप्रिय न हो सकी।

'छन्दरामायण' के रचयिता श्री महेशचन्द्र शुक्ल का बाल्य-जीवन ब्रजभाषा-क्षेत्र में व्यतीत हुआ, किन्तु सरकारी सेवा का कार्य-क्षेत्र खड़ी बोली के भाषा-भाषियों के बीच रहा। इसका सुपरिणाम यह हुआ कि 'छन्दरामायण' की काव्य-भाषा वह प्राचीन साहित्यिक ब्रजभाषा नहीं है, जो सुमधुर होते हुए भी खड़ी बोली के व्याप्त साम्राज्य में बहुसंख्यक पाठकों को लैटिन जैसी प्रतीत होने लगी और सहज बोधगम्य नहीं रही। प्रस्तुत कृति पर तुलसी की छाप असंदिग्ध है, किन्तु सर्वांश अन्धानुकरण नहीं है। कवि की अपनी अनेक मौलिक उद्भावनायें हैं और समसामयिक विचार-स्वातंत्र्य भी।

वर्तमान ग्रन्थ-प्रकाशन पुस्तकालयों में आपूर्ति की दृष्टि से होने के कारण महंगा और अध्ययनेच्छु पाठकों की पहुंच के बाहर होता है। यह प्रवृत्ति साहित्य में निहित ज्ञान के प्रचार-प्रचार में बाधक है। ग्रन्थ सहज सुलभ होने चाहिए। मेरी आशा और हार्दिक कामना है कि सरल शब्दों में वर्णित यह रामकथा श्री राधेश्याम कथावाचक कृत रामायण के समान लोकप्रिय सिद्ध हो और जनसाधारण को वांछित प्रेरणा प्रदान करे।

रामस्वरूप दुबे

२१-८-९३

एम.ए. (हिन्दी एवं अंग्रेजी), एल-एल.बी.
साहित्यकार, समीक्षक, कवि, लेखक एवं पत्रकार
पूर्व सूचना अधिकारी, उ० प्र०
शिवकुंज, गंगाघाट, उन्नाव (उ० प्र०)

भूमिका

'नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा, कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा'। कवि जब इस परम दुर्लभ की साधना 'स्वान्तः सुखाय' की भावना से परिचालित होकर करता है, तो उसका काव्य लोकोत्तर चमत्कार प्राण हो जाता है। श्री महेशचन्द्र शुक्ल की 'छन्द रामायण' इसी दुर्लभ की साधना है। कवि ने मधुमती भूमिका में पहुंचकर जिस अखण्ड आनन्द की दिव्यानुभूति प्राप्त की है, उसे खड़ी बोली के परिमार्जन, परिष्करण के युग में, ब्रजभाषा में अपने रामानुराग को छन्दबद्ध कर एक बार पुनः ब्रजभाषा को जीवंत बना दिया है। छन्द रामायण की पाण्डुलिपि को देखनेसे ऐसा प्रतीत हुआ।

राम कथा का रूप विभिन्न वैदिक एवं पौराणिक ग्रन्थों में बिखरा हुआ है, किन्तु कवियों की प्रेरणा का मूल उत्स बाल्मीकीय रामायण तथा तुलसीकृत रामचरित मानस है। इन्हीं कथा सूत्रों को अपनी प्रतिभा और कारयित्री क्षमता के उद्रेक से कवि नवीनताओं, मौलिकताओं और नव्य उद्भावनाओं के साथ प्रस्तुत करता है। श्री महेश चन्द्र शुक्ल ने भी तुलसी के रामचरित मानस को आधार बनाकर बालकाण्ड से लेकर राम की जल समाधि तक की कथा को मानसकार की तरह काण्डों में विभक्त कर प्रस्तुत किया है, किन्तु यह तुलसी का अंधानुकरण मात्र नहीं, बल्कि कवि की मौलिक उद्भावना का परिणाम है। रामकथा से सम्बन्धित विभिन्न ग्रन्थों में उल्लिखित तथा जनश्रुतियों में प्रचलित विविध प्रसंगों के समावेश से छन्द रामायण में नवीनता, मौलिकता और एतदर्थ सहज ग्राह्यता आ गई है।

कवि ने बड़े ही कौशल के साथ कथा-सूत्र को सजाया और संवारा है इस प्रयास में एकरसता और तारतम्य खंडित नहीं हुआ है। यही इस ग्रन्थ का वैशिष्ट्य है। कवि ने रामकाव्य की परम्परा का गहन अवगाहन किया है तथा ब्रजभाषा की शक्ति-सामर्थ्य को दृष्टिपथ में रखते हुए उसी भाषा में छन्दरामायण की रचना की है।

नवीन प्रसंगों के समावेश, कथा कहने की नवीन शैली तथा ब्रज-भाषा के सौन्दर्य के कारण आद्यंत 'ग्रन्थ' रमाए रहता है।

छन्द रामायण में राम पुरुषोत्तम हैं। आदर्श हैं। बालकांड से लेकर उत्तरकाँड तक में राम सर्वत्र मर्यादा पुरुष हैं। उन्होंने कभी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया है। बाल रूप हो, ब्रह्मचयब्रती रूप हो, पुष्पवाटिका में विहार करने वाला, राज्याभिषिक्त या वनवासी अथवा युद्धस्थल में राम का विजेता रूप हो—चाहे जहां कहीं भी राम को वर्णित किया गया है, वे सदैव मर्यादा पुरुषोत्तम रहे हैं। इसके साथ ही कवि ने रावण को एक नए रूप में प्रस्तुत किया है। मानसकार तथा आदि कवि बाल्मीकि ने रावण की महान आशंयता, सदाशयता और प्रकाण्ड पांडित्य को स्वीकार किया है। श्री शुक्ल जी भी इस मान्यता के कायल हैं। रामेश्वरम की स्थापना के समय राम रावण की विद्वता की प्रशंसा सुग्रीव से करते हैं - 'यदि शत्रु भी विद्वान है, तो वह भी आदर का पात्र है।' निम्न छन्द में रावण के चरित्र में मंडित कवि की नवीन उद्भावना दृष्टव्य है—

"शर खाय के रावण भूमि गिरो तेहि मांस को खान को गीध थे आए।
कही रावण खाओ न रोकिहौं मैं, पर एक कही माने सोइ भाए।।
रण से न विमुख भयो आज लौं मैं मम माँस न लंक की ओर गिराए।
उड़ियो ले लोथ अवधपुर को नहिं जाय सको मम अंश ही जाए।।"

मृत्यु के पूर्व रावण राम से कहता है—

"फिर राम की ओर निहारि कही उर प्रेम प्रबल मुख शब्द कठोरे।
हे राम न जीत सके मुझको, यद्यपि सिर काट दिये तुम मोरे।।

मम जीवित लंक न जाय सके तव धाम मैं जात हूँ देखत तोरे।
सिय मातु पवित्र सुधा सी सदा कहूं अंत समय लिख कागज कोरे।।"

'छन्द रामायण' में रामकथा प्रसंग में अन्य अनेक पात्रों का चारित्रिक उत्कर्ष दिखलाया गया है। कवि ने नारी के प्रति तुलसी की तरह 'ताड़न के अधिकारी' का भाव नहीं रखा है, बल्कि उसके प्रति सहज आदर का भाव व्यक्त हुआ है। निम्न छन्द में दृष्टव्य है कवि का नारी के प्रति दृष्टिकोण–

"यदि शील विवेक से नारि चले रहि केहु स्वतन्त्र नहीं बिगरे।
निष्ठा पति पाद रहे जेहि की तेहि के दोउ लोक सदा सम्हरे।।
तेहि शील सतीत्व अटूट रहे कितनेहु रावण शठ रूप धरे।
है नारि तो शक्ति औ माँ जग की गृहिणी बन के प्रतिपाल करे।।"

राम कथा का आधार अध्यात्म है। कथा का प्रत्येक प्रसग नैतिकता, आदर्श और अध्यात्म भावना से जुड़ा हुआ है। रामचरितमानस अध्यात्म रामायण आदि में ऐसे प्रसंगों की उद्भावना हुई। 'छन्द रामायण' में भी अध्यात्म तत्व का समावेश भक्तिभावना के परिप्रेक्ष्य में किया गया है। 'अहम्' का 'इदम्' में पर्यवसान तथा व्यष्टि की साधना को समष्टि के लिए अर्पित करने का भाव अध्यात्म की ओर प्रस्थान है–

"मन से जब तेरो औ मेरो मिटे औ दिखे सब में प्रभु रूप सलोनो।
शुचि कर्म करे जग के हित में तेहि के बन जात हैं लोक तो दोनों।।
तजि पाप बुराइन के घर को, कबहूं न करे कोइ कर्म घिनौनो।
मन शुद्ध से राम को नाम जपे मिलें राम में ही मन आतमा दोनों।।"

'छन्द रामायण' कथा काव्य होने के साथ-साथ विविध आयामों का पृष्ठपोषक है। आधुनिक युग की चेतना को कवि ने स्वर दिया है। समाजमें व्याप्त जातिवाद, धर्मवाद, उथली राजनीति तथा संकीर्ण

मानवीय वृत्तियों से ऊपर उठकर समाज में चेतना जागृति, एकता और देशप्रेम के महत् तत्व को उजागर करने का कवि ने प्रयास किया है। इस दृष्टि से इसकी प्रासंगिकता निस्संदिग्ध है।

'छन्द रामायण' में मार्मिक प्रसंगों की सफल अभिव्यंजना हुई है। आधुनिक युग में खड़ी बोली में लगातार परिमार्जन और ब्रजभाषा के प्रति उपेक्षा के भाव के युग में श्री शुक्ल जी ने ब्रजभाषा के माधुर्य को पुनः प्रतिष्ठित किया है। इस काव्य की भाषिक सज्जा, सरलता, सहजता और बोधगम्यता के कारण प्रभावोत्पादक हो गई है। आशा है श्री महेशचन्द्र शुक्ल विरचित 'छन्द रामायण' साहित्य-मनीषियों तथा अध्यात्म पिपासुओं को तुष्टि प्रदान करेगी।

ऐसे ही कालजयी ग्रन्थ को देखकर ऋषि कह उठते हैं - 'पश्य-देवस्य काव्यम् न ममार न जीर्यते'–देखो, देवकाव्य जो न मरता है, न जीर्ण ही होता है। ऐसे देवकाव्य के कवि कृती श्री शुक्ल जी के लिए साधुवाद के शब्द नहीं हैं।

डा० मृत्युञ्जय उपाध्याय
एम.ए., पी.एच.डी., डी.लिट्, विद्यासागर
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, स्नातकोत्तर केन्द्र,
आर० एस० पी० कालेज, झरिया (धनबाद)
संपर्क : वृन्दावन, राजेन्द्रपथ, धनबाद-८२६००१

निवेदन

इस महान ग्रन्थ छन्दरामायण की रचना प्रभु की विशेष कृपा का ही प्रतिफल है। मेरे जैसे एक अति साधारण व्यक्ति के द्वारा उन्होंने छन्दरामायण की रचना करवाकर "मूक होंय वाचाल, पंगु चढ़हिं गिरिवर गहन" की बात सिद्ध कर दी। मेरे इष्टदेव परमपूज्य घाट वाले बाबा महाराज की सदा मेरे ऊपर असीम कृपा रही है, उन्हीं की कृपा से तन्द्रावस्था में मुझे महर्षि बाल्मीकि के दर्शन हुए एवं उनसे ज्ञान की ज्योति प्राप्त हुई, और अपनी धर्मपरायण पत्नी श्रीमती शकुन्तला शुक्ला के द्वारा रामायण सुनाने के आग्रह करने पर रामकथा छन्दों के रूप में अनायास ही निर्झरणी की भांति तटबन्धों को तोड़कर प्रवाहित होने लगी, और ब्रजभाषा के इस महान ग्रन्थ की रचना हो गई।

इस छन्दरामायण में रामचरित मानस की भांति ही बालकाण्ड से लेकर श्रीराम की जलसमाधि तक की रामकथा नौ काण्डों में विभक्त की गई है। इसमें अधिकांशतः सवैया छन्दों का प्रयोग किया गया है एवं प्रत्येक काण्ड के प्रारम्भ एव अन्त में दुमदार दोहे लिखे गये हैं।

छन्दरामायण की कथावस्तु तुलसीकृत रामचरित मानस, बाल्मीकि रामायण, कम्बनजी की इराभावतारम्, राजगोपलाचार्य जी द्वारा अनूदित कम्ब रामायण, आध्यात्म रामायण, आनन्दरामायण, कृतिवास जी की रामकथा, थाई देश की रामकथा, इण्डोनेशिया की रामकथा, श्रीराम वचनामृत, केशवजी की रामचन्द्रिका, निरालाजीकी शक्तिपूजा; मलयाली रामायण, अद्‌भुत रामायण, योगवाशिष्ठ, भवभूतिकृत उत्तर रामायण, प्रेमरामायण, आन्ध्र की [illegible]गू रामकथा, विष्णुपुराण,

श्रीमद् भागवत पुराण, कालिदासकृत रघुवंश, जैनरामकथा, बौद्धजातक कथायें, एकनाथकृत मराठी रामायण, भुशुण्डि रामायण, विश्वम्भरोपनिषद,सीतोपनिषद, रामरहस्योपनिषद, वाल्मीकि संहिता, ब्रह्मसंहिता अगस्त संहिता आदि के अतिरिक्त आदिवासियों एवं ग्रामीण जन-जीवन में प्रचलित जनश्रुतियों से प्राप्त रामकथा के गूढ़ रहस्यों को ब्रजभाषा की सरल शब्दावली के द्वारा उजागर करने का प्रयास किया है।

देश-विदेश के उन महान विद्वानों का मैं हृदय से आभारी हूं जिन्होंने समय समय पर अपना आशीर्वाद देकर मेरा मनोबल बढ़ाया है, इनमें से मैं विशेष आदर के साथ पदमश्री डा० लक्ष्मीनारायण दुबे सागर विश्वविद्यालय, डा० मृत्युन्जय उपाध्याय भागलपुर विश्वविद्यालय, बिहार से ही डा० विमला उपाध्याय, डा० यतीन्द्र तिवारी कानपुर विश्वविद्यालय, डा० एम० शेषन तमिलनाडु, डा० पी० नारायणन केरल, श्री बद्रीनारायण तिवारी मानस सगम कानपुर, श्री मणिशंकर अय्यर मद्रास एवं खान गुरफान जाहिदी दिल्ली, राजेन्द्रकुमार गोस्वामी नईदिल्ली, डा०धर्मयश बालीद्वीप इण्डोनेशिया, डा० सु० मो० शुक्ल जाम्बिया के नामों का उल्लेख करना चाहूंगा। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध समीक्षक, साहित्यकार श्री रामस्वरूप दुबे का आभारी हूं कि उन्होंने समय-समय पर इस ग्रन्थ की सकारात्मक आलोचना करके मुझे सम्हलने का अवसर दिया।

मै लुसाका विश्वविद्यालय जाम्बिया के प्रोफेसर प्रेमशंकर चौधरी एवं उनकी धर्मपरायण पत्नी श्रीमती कुंवरि किशोरी जी का विशेष रूप से आभारी हूं जो उन्होंने इस ग्रन्थ को छपवाकर देश-विदेश में प्रचार-प्रसार का दायित्व ग्रहण किया है।

महेशचन्द्र शुक्ल
छन्दरामायण के रचयिता

प्रस्तावना

विघ्नहरण मंगलकरण हे गणपतिदातार
मेरी हर बाधा हरो पार्वती सुकुमार
शरण में आयो तेरी ।

सम्बत दो हजार अड़तालिस को
पहिलो सोमवार रहो अतिपावन ।
रिमझिम बूँदें पड़ें नभ से
चले शीतल वायु बड़ो मनभावन ।
रहो वा दिन तुलसी को श्राद्धदिवस
कृष्णा तृतिया अरु माह थो सावन ।
अति नेह सौं पूजें 'महेश' सभी
उर राखि सदा प्रभु काम नसावन ।

बाल्मीकि तपस्थलि में बसिके
नित राम जपूँ उन्हें चित्त में धारे ।
अरु सारी गृहस्थी चले अपनी
शुचि सत्य कहूँ उनके ही सहारे ।
निवृत भये राज की सेवा से जब
तब और नहीं कछु काज हमारे ।
कहुँ राम की होन लगे चरचा
मोहि लागे प्रत्यक्ष खड़े धनुधारे ।

✻

गृहकार्य से निवृत्त हुइ गृहणी
मम पार्श्व में आसन आय जमायो ।
उन बैन सनेह में पागि कहे
अरु मोसन प्रेम विशेष दिखायो ।
मन चाहत है सुनूँ राम कथा
कहो छन्द बनाय के मोहि सुनायो ।
का का नर लीला दिखाई प्रभू
अरु कैसे थो रावण मारि गिरायो ।

तब मैंने कही हरषाय हिया
प्रभु भक्त प्रिया तुम हो बड़भागी ।
श्री राम में भक्ति तुम्हारि बड़ी
सिय के पिय के चरणन अनुरागी ।
विस्तार से गाय सुनाइहौं मैं
अब छन्द बनाय कथा तोहि लागी ।
सुनियो तुम ध्यान लगाय प्रिये
शुचि राम कथा अमृत रसपागी ।

जो पुनीत कथा कही शंकर ने
औ सुनी जेहि कहँ जगदम्ब भवानी ।
जो कथा थी सुनी भरद्वाज ऋषी
याज्ञवल्क सुनाई मुनी अति ज्ञानी ।
वही पक्षिनराज गरुण ने सुनी
कही काक भुशुण्डि महा विज्ञानी ।
अब सोई कथा मैं सुनाइहौं आपको
जो तुलसी, बाल्मीकि बखानी ।

लिखना चाहूँ राम कथा कहँ मैं
पर मैं थो कुबुद्ध समझ नहिं आये ।
जब होय कृपा जेहि पै प्रभु की
वही राम कथा को सुने वा सुनाये ।
दिनभर मैं तो चिन्ता में बैठोरहों
अरु रात में भी मोहि नींद न आये ।
अति आकुल तन्द्रा में बैठो रहो
तब वाही समय बाल्मीकि जी आये ।

उन्हें देखके पाँव छुए उनके
सिर पै ऋषि नेह सौं हाथ फिरायो ।
कही सोच तजो अपने मन से
तू 'महेश' मेरी तपभूमि में आयो ।
तुम लोक की भाषा में पुत्र लिखो
तुमने अब मोर अशीष है पायो ।
ऋषिराज जी अंतर्ध्यान भये
जब मूँद नयन उनको सिर नायो ।

सुनिके अति हर्ष भयो मन में
क्षण में सब दूर विषाद भये ।
श्रीराम के पाद में प्रीति बढ़ी
पल पल पुलकें उर भाव नये ।
अब कैसे कहँ कितनो सुख थो
मनो कल्पतरू हम पाय गये ।
नव छन्द जगे उर में अपने
श्रीराम कथा मणि दीप लये ।।

तेहि दीप ने राह दिखाई नई
औ भई मनकी हर कामना पूरी ।
पद पंकज केरि अशीष मिलो
मिलिहै मोहि राम के काम मजूरी ।
अब साधना पूरि हमारी भई
बिनु राम के काम रही जो अधूरी ।
सिय राम सुमिर लिखूँ राम कथा
भव बन्धन काटन हेतु जो छूरी ।।

बाल काण्ड

वन्दना

गजमुख, गणनाथ कृपा करियो
उदरोन्नत पार्वती सुत हो।
प्रथमहिं पूजत द्विज देव तुम्हें
नवनिधि सब सिद्धिन से युत हो।
पितु मातु में भक्ति तुम्हारि बड़ी
शिवशंकर के अनुपम सुत हो।
मूषक वाहन इकदन्त प्रभो
तुम विघ्न हरण करुणायुत हो।।

हे शारद मातु करौं बिनती
तव ज्ञान की ज्योति हिया में जलाऊँ ।
लिखना चाहूँ राम कथा कहूँ मैं
यदि आपको आशिष आज मैं पाऊँ ।
हे माँ शत बार प्रणाम करूँ
उर अच्छत चन्दन फूल चढ़ाऊँ ।
वर दो मोहि मातु मैं पूत तेरो
श्रीराम चरित्र लिखूँ सुख पाऊँ ।।

गणपति, शिव गौरि को ध्यान करूँ
धरि शीश चरण सब देव मनाऊँ ।
जितने जड़ चेतन हैं जगके
उनमें लखि राम को शीश नवाऊँ ।
श्री घाट वाले बाबा जी के पद में
सिरनाय के मैं अति ही सुख पाऊँ ।
है उनकी तो भारी कृपा मुझ पै
तेहि कारण ही कछु मैं कर पाऊँ ।।

उन आदि कवी बाल्मीकि जी को
जिनने रामायण थी रचि डाली ।
जिन राम के पूत प्रवीण किये
अरु सीय को बेटी बनाय के पाली ।
करता है 'महेश' प्रणाम उन्हें
जिनने जग काव्य की नींव है डाली ।
कर जोरि प्रणाम करूँ तुलसी
तुम राम चरित्र के बाग के माली ।।

श्री रामअधार, त्रिवेनी जी थे
मम पितृ औ मातु बड़े सुखदाई ।
उनके पद माँहि प्रणाम करूँ
जिन सुमिरन सें मिट जात बुराई ।
करूँ वन्दना भारत भूमि की मैं
जहाँ जन्म लियो सियपति रघुराई ।
फिर विनवहुँ दैत्य भये जो नये
उनकी श्रीराम मिटायें बुराई ।।

अति नेह सौं माथ धरूँ पग में
उनके जो हैं प्रेम के बोल सुनाते ।
सहयोगी औ सब परिवारी मेरे
दे नेह सदा मम कष्ट मिटाते ।
बिनवौं सब सन्तन कों जो सदा
पर हित फल वृक्ष नदी बन जाते ।
उनकोहु कर जोरि प्रणाम करूँ
बिनुकारण जो मगशूल बिछाते ।।

सुत मारुति को मन ध्यान करूँ
श्रीराम के भक्त महा बलशाली ।
जिन कौतुक सिन्धु को लाँघ दियो
सिय खोजि के मुद्रिका वृक्ष से डाली ।
अरु मारि दियो सुत रावण को
करी स्वर्ण की लंक जराय के काली ।
जिनके उर रामजी वास करें
तेहि पाँव परो बनि आज सवाली ।।

सिय राम लखन उर वास करें
उन्हें नेकहु नींद में हू नहिं भूलें ।
मम अन्तस में प्रभु पाद बसैं
हम शीश झुकाय उन्हें नित छूलें ।
कलिका तव नाम की है उर में
वह नाथ बसन्त सी नित्य ही फूले ।
प्रभु को परि पाँव प्रणाम करूँ
क्षमियो तुम मोहि भई बड़ी भूलें ।।

❋

कलिकाल में राम कथा जो पढ़ें
या सुनें सब सन्त हैं पूज्य हमारे ।
जिन सपनेहु राम को नाम लियो
भगवान उन्हें भव पार उतारें ।
मैं तो हूँ मति मन्द मलीन महा
लिखूँ रामकथा प्रभु पाद सहारे ।
बसी दैत्य सी वासनायें मन में
उन्हें एक ही बाण से नाथ सँहारे ।।

कम्बन ऋषि पाद प्रणाम करूँ
जिन दक्षिण रामकथा शुचि गाई ।
रचि के इराभावतारम उनने
श्रीराम की भक्ति की लीक चलाई ।
विनवौं परदेश के सन्तन को
जिन राम कथा निज देश सुनाई ।
उनकेहु पद की सिर धूल धरूँ
जिन्हें धोखेहु राम की याद होआई ।।

अति ज्ञान को सागर राम कथा
मन संशय दूर करे सिगरे ।
हर योनि से मुक्ति मिले उनको
ये पवित्र कथा जिन कान परे ।
उन्हें राम के धाम में वास मिले
रघुनाथ चरण जिन माथ धरे ।
श्रीराम को नाम जहाज बड़ो
जपिके पापिहु भव सिन्धु तरें ।।

भव सरिता में पुल-सी है रामकथा
सुनतहि जग के अघ क्षार करे।
रघुनाथ के भक्त महान बड़े
भवनार को कूद के पार करे।
भव धेनु के पाद को चिन्ह बने
उनको जो हैं राम में ध्यान धरे।
भव सूख के रेत बने उनको
सब में जिन्हें राम दिखाई परे॥

❋

अति दीन सो दास मैं तोर प्रभू
तव पूजन की विधि हू नहिं जानू।
मम जीवन केरि अधार तुम्हीं
प्रभु पाप को जारन हेतु कृशानू।
तुम स्वामि सखा गुरु मातु-पिता
प्रभु आपको ही सर्वस्व मैं मानू।
तव पाद में नाथ प्रणाम करूँ
अच्युत भवरात्रि विनाशक भानू॥

हर कल्प में विष्णु जी राम भये
हर कल्प में ही उन रावण मारो ।
कई बार हैं रूप अनेक धरे
निज भक्तन के हित दैत्य सँहारो ।
उनमें से सुनाऊँ मैं एक कथा
प्रभु राम बनें महिभार उतारो ।
वरदान दियो मनु को उनने
सुत दशरथ के बनि रावण मारो ।।

※

उरसे सुमिरौ रामको, मिलें न कछु संदेह।
सुत तक वे बन जात हैं, पाय भक्त को नेह।
कृपा सब पर वे करते ।।

मनु औ सतरूपा महान बड़े
जिन कारण मानव जाति बनी ।
दोउ आपस में अति प्रेम करें
हरि चरणन में तिन प्रीति घनी ।
सुत उनके थे उत्तानपाद बड़े
जिन ध्रुव, प्रियब्रत, देवहूति जनी ।
कर्दम ऋषि को जो थी ब्याही गई
भगवान कपिल की जो मातु बनी ।।

❋

मनु ने बहु काल लौं राज कियो
फिर दे सुत को वनवास सिधाये ।
सतरूपहु संग गई उनके
चलिके दोउ नैमिष तीर्थ में आये ।
तहँ पै मुनि सिद्ध, समाज लिये
मिले राजऋषी से हृदय हरषाये ।
जहँ जहँ रहे तीरथ सो मुनि ने
नृप दम्पति को अति नेह कराये ।।

रमिके तप में कृशगात भये
बिनु ईश लखे उन्हें चैन न आये।
उन दोउन ने तप घोर कियो
कई बार त्रिदेव उन्हें समझाये।
तपलीन रहे नहिं नेक डिगे
छै हजार बरस लौं रहे बिनु खाये।
जलहू तजि वायु पै दोउन ने
फिर सम्बत सात सहस्र बिताये ॥

फिर वायुहू त्याग दई उनने
अरु ठाढ़ रहे इक पाँव सहारे।
सम्बत दस हजार लौं बीत गये
कृश काय भये नहिं चित्त में हारे।
प्रभु पाद में डोर अटूट लगी
हर श्वाँस में राम को नाम पुकारे।
जब अस्थि शरीर भयो उनको
नभ वाणि भई, सुन भक्त हमारे ॥

वर माँग लो चाहत जो मनमें
मैं प्रसन्न भयो तुमसे सच मानो ।
जब कान में वाणी पड़ी नभ की
नृप ने कही दर्शन दो तोहि जानों ।
दोउ के उर में प्रकटो तबही
प्रभु रूप सलोनो सो नेह में सानो ।
क्षण में दोउ स्वस्थ शरीर भये
नृप खोलके नैन प्रभुहि पहिचानो ।।

❋

धरि के पग शीष करें बिनती
अति प्रेम विभोर उठें न उठाये ।
अपलक हुइ रूप निहारि रहे
मनों कोटि विबुध बट हों उन पाये ।
दोउ नील सरोरुह रूप लखें
मन में नहिं तृप्ति न नैन अघाये ।
प्रभु ने अति नेह से दोउन को
कर थामि उठाय के वक्ष लगाये ।।

कहो माँग लो जो तुम चाहु अभी
नृप देउँगो तोहि न संशय मानो।
अति दुर्लभ वस्तु भी हो जग की
सुत तोहि मिलेगी यथार्थ ये जानो।
कर जोरि के राव कही हरि से
तुम सो इक पुत्र मैं चाहूँ सयानो।
हरि कही सुत मोसो कहाँ मिलिहै
मैं हि पुत्र तुम्हारो बनूँगो ये मानो ।।

प्रभु पुनि सतरूपाहि जाय कही
तुम हू वर माँग लो जो मन भाये।
कर जोरि के रानी कही हरि से
प्रभु आप मिले तो हम सब पाये।
नृपराज ने जो वर माँग लियो
प्रभु मोहि मिले मन में यही आये।
हे नाथ सदा उर माँहि बसो
मोहि भूलेहु से नहिं भूलो भुलाये ।।

एवमस्तु कही हरि ने उनसे
पुनि कही सुरलोक बसो दोउ प्रानी।
तुम त्रेता में दशरथ राज बनो
सतरूपा कौशिल्या बने तोहि रानी।
बनिहौं तब पुत्र तुम्हार वहीं
अरु मारिहौं रावण से शठ मानी।
प्रभु जी कहि अन्तर्ध्यान भये
सुरलोक गई मनु के सँग रानी॥

इक कैकय देश विशेष रहो
तेहि के सतकेतु महान थे राजा।
अति धर्म - धुरीण प्रवीण बड़े
नृप नीति निधान करें प्रिय काजा।
नित पालें प्रजा निज पूतन सी
शुचि कर्म करें रचि देखि समाजा।
दुइ पुत्र थे राव के वीर बड़े
उनसे भय मानत थे सब राजा॥

तेहि भानुप्रताप थो पुत्र बड़ो
अरिमर्दन थो लघु पुत्र सुजाना।
दोउ भाइन प्रीति अपार रही
कवि कोविद औ श्रुति शास्त्र बखाना।
सुत ज्येष्ठ को राज दै राव तभी
वन को तप हेतु कियो थो पयाना।
लखि भानुप्रताप को भूप नयो
पुरवासिन ने मन में सुख माना॥

करि युद्ध प्रताप ने जीत लिये
सब भूप अधीन किये बरियाई।
नृप नीति, विनीत हो पालें प्रजा
यश कीर्ति बड़ी चहुँ कोद में छाई।
दिन रैन ये भूप प्रयास करें
मम और बढ़े जग में प्रभुताई।
नृप धर्म से पालें प्रजा अपनी
सुख सम्पति पूरेहि राज में छाई॥

इक दिन मृगया हित राव गये
भटके वन राह, शिकार न पायो।
ताही क्षण एक बराह वहाँ
अति वेग से भूप के पास में आयो।
नृप ने धनु पै ज्यौंहि वाण धरो
मृग दूर भगो नृप पीछेहि धायो।
अकिलो नृप दूर भयो सबसे
भटको वन में मृग मार न पायो।।

श्रम से नृप और तुरंग थके
बड़ी प्यास लगी मन सोच न पाये।
मोहि लागत प्राण गये अब तो
भइ रात न कानन नीर दिखाये।
तेहि क्षण एक सन्त दिखाइ परे
नृप जाय के चरणन में सिर नाये।
कही सन्त से भूल गयो वन में
अति प्यास लगी मुख बोल न पाये।।

मुनि वेश धरे कोइ और नहीं
नृप एक कुटिल जो प्रताप हरायो ।
प्रतिकार वो हार को लेन चहे
मन सोचि यही वन में भगि आयो ।
शठ भानुप्रताप को जान गयो
पर भानु उसे पहिचान न पायो ।
समझत रहो सन्त महान उसे
शठ बातिन जाल में राव फँसायो ।।

ऋषि ताहि तड़ाग दिखाय दियो
महिराज तुरँग सँग प्यास बुझाये ।
जल पी नृप आय अभार कियो
मुनि के पद में अपनो सिर नाये ।
ऋषि आसन एक बिछाय दियो
कहि बैन मधुर तहँ भूप बिठाये ।
फल कन्द औ मूल लियाय धरे
कही भूप से खाय के भूख मिटायें ।।

मुनि कही का नाम है को तुम हो
केहि हेतु फिरौ भटकत वन माँही।
चक्रवर्ति नरेश के लक्षण हैं
पर सेवक संग में एकहु नाहीं।
तब राव दुराय के नाम कही
तव सेवक हूँ मुनिवर गुण ग्राही।
मंत्री नृप भानु प्रताप को हूँ
पथ भूल गयो भटको बन माहीं॥

मुनि नें कही जान गयो तप से
तुम भानुप्रताप हो भूप बड़े।
सुनतहि नृप ने मुनि पाँव छुए
कही आप महान हैं सन्त बड़े।
निज परिचय आप बतायें हमें
हम मस्तक नाय के नाथ खड़े।
कबसे उर राखि 'महेश' प्रभू
वन में एहि पर्णकुटी में पड़े॥

मैं हूँ निर्धन नाम भिखारि मेरो
सब छोड़ के वास करूँ वन में ।
कब से नहिं याद है मोहि कछू
सब छोड़ वसौं एहि कानन में ।
नृप नेह सौं पांव छुए मुनि के
कही धन्य प्रभू रत सुमिरन में ।
मुनिराज मैं सेवक आपको हूँ
तव चाहुँ कृपा अपने मन में ।।

मुनि बोले प्रसन्न मैं हूँ तुमसे
वर माँगों तुम्हें वही आज मिलेगो ।
कछु नाहिं कठिन तप के बल से
नृपराज तेरो मन पुष्प खिलेगो ।
पद में मुनि के नृप शीष धरो
कही आपको मोहि अशीष मिलेगो ।
मुनि ने कर थामि उठाय कही
मम से आशिष जगराज मिलेगो ।।

कर जोरि के भूप कही ऋषि से
तब आशिष से कछु दुर्लभ नाहीं ।
सब राजन पै हम राज करें
जगमें कोइ जीत सके मोहि नाहीं ।
ऋषि ने कही राव कछू जग में
तोहि विप्र प्रताप से दुर्लभ नाहीं ।
विधि कौन से विप्र प्रसन्न करूँ
कही भूप कहो मुनिजी मोहि पाँही ।।

कपटी मुनि ने कही भूप सुनो
ऋषि विप्र को शाप भयंकर होई ।
इन विप्र के वंश पै जोर नहीं
उन्हें पूजि प्रसन्न करे सब कोई ।
उनको तुम पूजि प्रसन्न करो
तव राज अमोघ अकंटक होई ।
यह गुप्त रहस्य रहो अबलौं
तव हेतु कहो नहिं जान ले कोई ।।

मुनि वेश धरे नृप फेरि कही
घबराओ न भूप अशीष है मेरी ।
तुम भूप बनो सब भूपन के
वह युक्ति सुनो धरि ध्यान घनेरी ।
हुइहैं सब विप्र प्रसन्न बड़े
नृप सम्पति कीर्ति बढ़े सब तेरी ।
सब विप्रन को करिहौं वश में
अति गूढ़ ये बात सुनो नृप मेरी ।।

❋

प्रभु शीघ्र बताओ कही नृप ने
शुभ कारज में अब देर न कीजे ।
मुनिदास हूँ पाँव परो तुम्हरे
देहु मोहि अशीष शरण महँ लीजे ।
पर बाधा है एक कही मुनि ने
नहिं गाँव गयो पर सोच न कीजे ।
तव हेतु मैं त्यागिहौं आन सभी
लखि भक्ति तेरी हम आज पसीजे ।।

तुम्हरे उपरोहित को हरिके
तेहि वेशको धरि तुम्हरे गृहअइहौं ।
कोई भेद न जान सके कबहूँ
द्विज हेतु मैं भोजन नित्य पकइहौं ।
नृप कोटिन विप्रन को नित ही
तव हाथ से भोजन मैं करवइहौं ।
तुम नेक न सोच करो मन में
तोहि विप्र के शाप से राव बचइहौं ।।

तजि सोच को सोउ यहाँ निशि में
तोहि संग तुरंग के गेह पठाऊँ ।
अब मोर अशीष मिलो है तुम्हें
क्षण माँहि तेरे सब कष्ट मिटाऊँ ।
नहिं दुर्लभ मोहि कछू जग में
मन चाहुँ जो मैं वह ही करि आऊँ ।
नृप गहरी सी नींद में सोय गयो
कहि के मुनि से पद शीष नवाऊँ ।।

थके हारे थे भूपति सोय गये
कपटी मुनि ने निज मित्र बुलायो ।
रहो वो ही असुर जो बराह बनो
करि के छल जो नृप को ले आयो ।
मुनि आयशु माया रची तेहि ने
नृप संग तुरंग के गेह पठायो ।
भई प्रात तो भूप जगे गृह में
मन अचरज भरि मुनि को सिर नायो ।।

हरि के तेहि दैत्य पुरोहित को
धरि के तेहि रूप वहाँ तब आयो ।
व्यंजन बहु भाँति रचे शठ ने
अरु ताहि में विप्र को माँस मिलायो ।
नृप ने सब विप्र बुलाय लिये
पग पूजि उन्हें शुचि ठाँव बिठायो ।
उन्हें राव ने भोजन पर्सि दियो
मन प्रमुदित करि कही भोग लगायो ।।

तेहि क्षण गर्जन अति घोर भई
नभवाणि भई द्विज कोउ न खाओ ।
एहि भोज में विप्र को माँस मिलो
मत खाउ इसे निज धर्म बचाओ ।
सुनिके सब विप्र उठे क्षण में
करि क्रोध सबनि निज हाथ उठाओ ।
सबने मिलि राव को शाप दियो
बनो घोर असुर सँग वंश नसाओ ।।

सुनि शाप पुनः नभ वाणि भई
बिनु सोचे दियो द्विज शाप है भारी ।
एहिमें नहिं राव को दोष कछू
सुनु विप्र अनिष्ट भयो अति भारी ।
सुनतहि भये विप्र दुखी मन में
पर शापको कोइ सके नहिं टारी ।
अति द्रुति नृप भोजन कक्ष गये
कही देखि छलो गयो, भूल हमारी ।।

जब शाप को हाल सुनो मुनि ने
तेहि ने सँग मित्र के सैन बनाई ।
सबने मिल के नृप घेरि लियो
अरु मारि दियो तेहि के सँग भाई ।
सब परिजन मंत्रिहु मार दिये
भये घोर असुर पुनि जन्म को पाई ।
नृप दसमुख रावण राज बनो
भयो कुम्भकरण तेहि को लघुभाई ।।

दसशीश औ बीस भुजा जेहि के
पगचाप से भूमिहू डोलन लागे ।
सोइ रावण भानुप्रताप बनो
जेहि नाम को सुनि सुर किन्नर भागें ।
बनो कुम्भकरण लघु बन्धु तभी
बड़ो दैत्य न वीर टिके कोइ आगे ।
बने बन्धु विमातृ विभीषण थे
रा[illegible] सचिव जो धर्मरुची अति भागे ।।

दसकन्धर बन्धुन संग लिये
तप हेतु चलो दृढ़ निश्चय धारे।
उन तीनहु नें तप घोर कियो
सब देवन सेहु टरैं नहिं टारे।
लखि के तप रावण बन्धुन को
चतुरानन आय के बैन उचारे।
दसशिर वर माँग प्रसन्न हूँ मैं
कहि शीश पै हाथ अशीष के धारे॥

दसकन्धर ब्रम्ह के पाँव छुए
करि स्तुति वन्दन शीश झुकाये।
यदि सचमुच आप प्रसन्न प्रभू
वर दो मुझको कोई मार न पाये।
नर वानर चहे अपवाद रहें
मम भोजन हैं वे कहा करि पायें।
एवमस्तु कही चतुरानन ने
वरदे प्रभु कुंभकरण पहँ आये॥

चतुरानन दैत्य को रूप लखो
गिरि श्याम सो देखि के वे घबराये ।
क्षण में मम सृष्टि को नष्ट करे
वर ऊटपटाँग ये पाय न जाये ।
कही शारदा से मति भ्रष्ट करो
वर बुद्धि से दैत्य ये माँग न पाये ।
तेहि बुद्धि में शारदा बैठ गई
कही ब्रम्ह ने माँग लो जो मन भाये ।।

लखि दैत्य ने सामने ब्रम्ह खड़े
कहि के तेहि स्तुति शीष झुकायो ।
कही माँगत हूँ वरदान प्रभो
दिन एक जगूँ छह माह सुलायो ।
वरदान दियो चतुरानन ने
कही माँग रहे तुमने वही पायो ।
सुनि के पुनि-पुनि पग शीश धरो
मन में अपने अति ही हरषायो ।।

फिर ब्रम्ह जी आये विभीषण पै
कहो माँग लो वर जो भी मन आये।
चतुरानन सन्मुख देखि खड़े
कर जोरि विभीषण स्तुति गाये।
हे नाथ! कृपा अति आप करी
तोहि देख के आजु कहा नहिं पाये।
वर दो हरि पाद में प्रीति रहे
दिन दूनि बढ़े औ डिगे न डिगाये।।

चतुरानन ने वरदान दियो
सुनि दैत्यकुमार बड़ोहि सुख पाये।
मन पुलकित रावण बन्धु सभी
अपने-अपने गृह लौट के आये।
परो नींद में कुम्भकरण गृह में
हरिपाद विभीषण ध्यान लगाये।
दसकन्धर डोलत भूमि हिले
बलवान महा नित देव सताये।।

मन्दोदरि थी मय की तनया
मनो पूनम चन्द्रकला उजियारी।
अति नीति निधान थी ज्ञानमयी
भगवान की भक्त बड़ी सुकुमारी।
तेहि मातु पिता अति नेह करें
लखि मोद भरें सब खेद बिसारी।
सोइ ब्याहि दई दसकन्धर को
ताहिजानिनिशाचरपतिअतिभारी।।

धन देव कुबेर थे यक्ष बड़े
मनो थी उनपै जग की निधि सारी।
रहे पुष्पक से नभ यान कई
चढ़ि के उनपै बिचरें दिकचारी।
बहु स्वर्ण प्रासादन को गढ़ थो
गिरिराज त्रिकूट पै सिन्धु मँझारी।
सोई जीत लियो दसकन्धर ने
सब सैन कठोर कुबेर की मारी।।

लँका तेहि धाम को नाम धरो
अरु ताहि बनाय लई रजधानी।
सँग बन्धुन के तहँ राज करे
तिहुँ लोक में नाहिं रहीं तेहि सानी।
घननाद से पुत्र अनेक जने
तेहि की मन्दोदरि आदिक रानी।
सविता, यम, इन्द्र, कुबेर सभी
दिकपाल औ देव भरें तेहि पानी।।

सब पुत्र पराक्रमि वीर बड़े
कस होत है हार कबहुँ नहिं जाना।
उनमेंहु घननाद थो वीर बड़ो
मायावी, महाशठ, शूर, सयाना।
दिकपाल अनेक थे जीत लिये
तेहि ने देवेन्द्र औ भूपति नाना।
लखि के सुत सैन सुभट अपने
दसशीश के शीश भरे अभिमाना।।

सुर, किन्नर नाग सभी जग के
लड़ि रावण युद्ध में जीत लिये।
बर जोरि किये वश में अपने
तेहि कालहु द्वार पै बाँध दिये।
प्रतिबन्ध कियो शुभकामन पै
द्विज यज्ञ करें सोइ मारि दिये।
जग में अति चीख पुकार मची
दससीष अनीति से त्रस्त किये।।

लखि धर्म की हानि औ पापन को
धरणी भयभीत बड़ी अकुलानी।
गई गाय को रूप बनाय तहाँ
जहँ देव औ सिद्ध छिपे भय मानी।
अब पाप को बोझ न जात सहो
कही जाय धरा भरि नेत्र में पानी।
सँग आय विरंच पै देव सभी
कही नाथ मही अघ से अकुलानी।।

दसशीष ने त्रस्त कियो सबको
शुभ कर्मन पर शठ रोक लगाई।
जप यज्ञ करे मुनि कोइ कहीं
शठ त्रास से प्रात वो देख न पाई।
सुनि के कही ब्रम्ह, अशक्त भयो
मम संग चलो हरि के ढिंग भाई।
प्रभु दीन दयालु कृपा निधि हैं
कहि के सबको उन धीर धराई ॥

❋

परब्रम्ह की स्तुति देव करें
हुइ दीन, विनीत, सभीत, दुखारी।
कही रक्षा करो, प्रभु रक्षा करो
हे अच्युत चक्र सुदर्शन धारी।
महि पै अति ही अघभार बढ़ो
गति ये दसकन्धर कीन्ह हमारी।
करुणा कर दीन दयालु प्रभो
प्रकटहु अब बेगि चतुर्भुज धारी ॥

तब वाहि समय नभ वाणि भई
मत देव डरो मन में हरषाओ।
अवतार ले शीघ्रहि आइहौं मैं
बधिहौं सब दैत्य न तुम घबराओ।
धरणी मत होउ दुखी मन में
हरिहौं तव भार न संशय लाओ।
चतुरानन भूमि औ देव सभी
मम बाट तको अपने घर जाओ॥

❋

धरि ध्यान सुनो बतलाय रहो
तुम को सुर गूढ़ रहस्य विचारी।
बहु काल भयो ऋषि कश्यप ने
अदिती सँग कीन्ह बड़ो तप भारी।
उनको हमने वरदान दियो
सुत रूप में आइहौं गोद तुम्हारी।
मुनि नारद ने मोहि शाप दियो
तेहि पालन की अब आई है बारी॥

रघुवंश में कश्यप जन्म लियो
औ बनी अदिती उनकी पटरानी।
नृप दशरथ कौशल राज बने
उन केरि अवधपुर में रजधानी।
उनकेहि सुत रूप में आइहौं मैं
निज अंशन संग सुनहु सुर ज्ञानी।
सँग में रहिहै मम शक्ति महा
तब मारिहौं रावण से शठमानी।।

चतुरानन ने कही देवन से
अब सोच तजो उर मोद मनाओ।
धरणी अरु देव प्रसन्न रहो
भय छोड़ के तुम अपने गृह जाओ।
सब देव भये वनचर क्षण में
अतुलित बल तेज प्रताप थो पाओ।
हरि आवन की सब बाट तकें
उनकेहि मग में सब ध्यान लगाओ।।

अब आउ चलें सरयू तट पै
लखें हाल अवधपुर केरि सुहाने ।
रहें दशरथ भूप महान जहाँ
तेहि रानी थी तीन सुघड़ रससाने।
कौशिल्या थी रानी बड़ी उनमें
कैकेयी सुमित्रा को तो सब जाने ।
रहीं पुत्र से हीन वे रानी सभी
नहिं बात असत्य, पुराण बखाने ।।

❋

नृप एक दिना मन ग्लानि भरे
यह सोच मेरे सुत एकहु नाहीं।
ऋषि राज वशिष्ठ के पास गये
निज शीश धरो उनके पग माहीं।
मन को सिगरो दुख भूप कहो
नहिं पुत्र भये कछु सोच न पाहीं।
हुइहैं सुत भूप कही मुनि ने
यह सत्य वचन कछु झूठ है नाहीं ।।

आवाहन करि ऋंगी ऋषि को
मुनिराज उन्हें निज पास बुलाये ।
सुत कामना यज्ञ कराय तभी
बिधु अग्नि से हवि नृप कहँ दिलवाये ।
कौशिल्याहि अर्द्ध दियो तेहि से
नृप शेष में से दुइ भाग बनाये ।
उन कैकयी को इक भाग दियो
जो बचो तेहि के दुइ भाग कराये ।।

नृप कौशिल्यहि पुनि एक दियो
अरु दूसर कैकयी के कर दीन्हा ।
उन दोउन ने हरषाय हिया
तेहि भाग सुमित्रहि दे सुख दीन्हा ।
तब गर्भवती सब रानी भईं
सुन के नृप ने हर्षित हिय कीन्हा ।
उपहार अनेकन बाट दिये
अति भावविभोर प्रजा मन कीन्हा ।।

हरि गर्भ में आवत आवत ही
सुख सम्पत्ति लोक में छाय गई।
त्रय ताप मिटे सिगरे जग के
सब सिद्धियाँ भूमि पै आय गई।
अति मेल मिलाप धरा पै बढ़ो
सबको सबकी रुचि भाय गई।
दुर्गुण तजि के सब जीव रहें
मनो प्रेम सुधा सरि पाय लई॥

अरु बीत गये नौ माह तभी
हरि के जगवास को अवसर आयो।
नभ से करि पुष्पन की बरसा
सब देवन ने अति मोद मनायो।
ऋतु राज सुगन्ध बिखेर दई
मलयागिरि मादक वायु बहायो।
तहँ फूल परे द्रुम वृक्ष सभी
मनो भूपर स्वर्ग उतर के है आयो॥

आई मधुमास की नौमी जभी
नहिं शीत न घाम थी मध्य दुपहरी ।
निज मातु कौशिल्या के कक्ष तभी
प्रकटे प्रभु चक्र सुदर्शन धारी ।
शुचि श्यामल रूप प्रभा मुख पै
मनो नीलमणी करती उजियारी ।
वन माल सुग्रीव विशाल भुजा
प्रभु विष्णु स्वरूप चतुर्भुज धारी ।।

जब मातु ने रूप लखो हरिको
कर जोरि के आपने बैन उचारे ।
प्रभु मैं तो निहाल भई लखिके
तुम्हें नाथ कृपा करी आप पधारे ।
प्रभु श्यामल तेज के पुंज महा
हे विष्णु बसौ मन माहिं हमारे ।
सुत को अब रूप धरो प्रभु जी
शिशु केलि मैं देखन चाहुँ तुम्हारे ।

शिशु रूप तुरन्त धरो प्रभु ने
अरु मातु की गोद में रोवन लागे।
शिशु रोदन कान सुनो भूप ने
भये प्रेम विभोर ज्यौं मोद में पागे।
सब रानिहु दौरि के आय गई
मन मोद चलो उतसेहु करु आगे।
सुत होन सुनो पुर वासिन ने
तब्हि ढोल मृदंग बजावन लागे ॥

छन्द कि र्ति न्तु

उन तोरण द्वार बनाये निरे
गये भूपति द्वार बजाय बधाई।
सब नाचत गावत मोद भरे
नृप द्वार प्रफुल्लित लोग लुगाई।
बहु मोतिन माल लिये कर में
पुर वासिन कहँ दिये भूप लुटाई।
गुरुदेव ने आय के ताहि घरी
नन्दी मुख श्राद्ध दियो करवाई ॥

सबही नर वृन्द अनन्द भरे
उत्साह 'महेश' न जाय बखानी ।
उत कैकयी ने सुत एक जनो
दुइ पुत्र जने जो समित्रा थी रानी ।
उन चारहु पुत्रन को लखिके
हुलसे से फिरें दशरथ नृप ज्ञानी ।
नभ प्रेम विभोर लखें सविता
भयो माहको दिन नहिं काहुनें जानी।।

सुत कौन को का हम नाम धरें
नृप सोच के विप्र वशिष्ठ बुलाये ।
सुख धाम जो कौशल मातु लला
तेहि नाम है राम वशिष्ठ बताये ।
जगपालक कैकयी नन्दन को
धरो नाम भरत तब नृप हरषाये ।
शुचि नाम सुमित्रा के पूतन के
गुरु ने लक्ष्मण, शत्रुघ्न धराये ।।

अवधेश के चारहु पूतन को
लखि के सब आनन्द के नद डूबें ।
सब राम के नेह विभोर रहैं
सँग बाल सखा खेलत नहिं ऊबें ।
शिशु राम जी खेलत जाय छुपें
सब बाल सखा दौरत उन्हें छूबें ।
लखि के सब मात सिहायँ बड़ी
जब राम करें नित नित्य अजूबे ।।

श्री राम की मातु ने एक दिना
निज हाथ से साँवरो पूत नव्हायो ।
तन पौंछि पराय दियो पलना
तेहि देह पै तेल लगाय सुवायो ।
फिर मंदिर जाय के पूजि प्रभू
हरि को नैवेद्य से भोग लगायो ।
कछु काज से आँगन जाय फिरीं
तब राम को भोग को खावत पायो ।।

फिर दौरि गईं पलना के ढिगाँ
लखे रामलला अति नींद में सोये ।
गईं मंदिर, राम थे खात दिखे
नैवेद्य को भक्ति के भाव में खोये ।
विस्मित लखि मातु को राम कह्यो
निज रूप विराट दिखात हैं तोये ।
मुख में तव मातु लखो उनके
मनो सारिहि सृष्टि धरें वे सँजोये ।।

लखि के भयभीत सी मातु भई
करजोरि के आपनु शीष झुकायो ।
नहिं स्तुति हू कर पाय रहीं
भय आतुर बुद्धि विवेक गँवायो ।
घबराउ न माँ तव पुत्र हूँ मैं
कहिके श्रीराम उन्हें समझायो ।
बोली सुत रूप में आउ लला
सुनतहि प्रभु पुत्र को रूप बनायो ।।

सुत नित्य नई नई लीला करें
नृप दशरथ के चारहु सुखदाई ।
भये बालक थोड़ से और बड़े
उन्हें देखि प्रसन्न हों लोग लुगाई ।
नृप चूड़ाकरण करवाय तभी
उपहार दिये ऋषि विप्रन जाई ।
लखि के श्री राम की बाल छटा
पुर लोग 'महेश' बड़ो सुखपाई ।।

जब भोजन के हित राव कहें
तब बालक बात सुनें नहिं काना ।
फिर मातु बुलायें सपूतन को
दिखलाय खिलौना ले हाथ में नाना ।
जब मातु जी पास में आयें तभी
सुत दूर भगें कहि के न न नाना ।
तन धूल भरे गहिं राव उन्हें
चिपकाय के गोद बड़ो सुखमाना ।।

जब चारहु पूत कुमार भये
द्विज कर्म कराय जनेऊ करायो ।
जिन वाणी में चारहु वेद बसैं
पढ़िवे उनकों गुरु गेह पठायो ।
सुत प्रात नहाय के पूजि प्रभू
फिर याद करें गुरु पाठ पठायो ।
श्री राम जी ज्ञान के पुंज भये
लखि राव 'महेश' बड़ो सुख पायो ।।

सब बाल सखान को साथ लिये
बनमें मृगया श्री रामजी खेलें ।
अति पावन से मृग जोहि मिलें
हरि प्राण उन्हें अपने संग लेलें ।
नृप को जब लाय दिखायें उन्हें
तो सिहाय के भूप हिये उन्हें मेलें ।
श्री राम को रूप ये ध्याय सदा
त्रयताप न स्वप्नहु में नर झेलें ।।

नित प्रात उठें रघुनाथ लला
निज मातु पिता गुरु को सिर नायें ।
सँग बैठ के मित्र औ भाइन के
नित ही श्रीराम जी भोजन खायें ।
गुरुदेव से वेद को पाठ सुनें
सब भाइन को नित जाय सुनायें ।
श्रीराम सदा वे ही काम करें
जिनसे पुरजन परिजन सुखपायें ॥

रहे विश्वामित्र महान ऋषी
वन में तप, जाप औ यज्ञ करें ।
निशिचर मारीच सुबाहु तहाँ
नित आय के मुनि मन दुःख भरें ।
शठ यज्ञ विनष्ट करें पल में
उनसे मन में सब सन्त डरें ।
मन माँहि महामुनि सोच रहे
वह युक्ति जो दैत्य को अन्त करें ॥

मन में मुनिराज विचार कियो
बिनु विष्णु न मारि सके इन्हें कोई।
मुनि ध्यान लगाय लख्यो तबहीं
दशरथ सुत रूप में आये हैं सोई।
मन में उनके अति चाह भई
दुति जाऊँ अवध प्रभु दर्शन होई।
प्रभु के शुचि रूप कों नित्य लखूँ
अब जाय के भूप से लाइहौं सोई।।

फिर बेगहि विश्व के मित्र मुनी
सरयू तट दशरथ द्वार पै आये।
जब राव सुनी मुनि आवन तो
सँग मंत्रिन जाय उन्हें सिरनाये।
उन्हें लाय बिठाय सुआसन पै
सन्मानि कहे नृप बैन सुहाये।
तुम नाथ पधार के कीन्ह कृपा
देहु आयशु मोहि सँकोच न लायें।।

नृप ! दानव यज्ञ विनाश करें
शठ खाय मुनिन निज त्रास डरायें ।
तुम देहु हमें रघुनाथ लला
उन संगहि लक्ष्मण वीर पठायें ।
रहिके कछु काल वे आश्रम में
नृप ! निशिचर सारेहि मार गिरायें ।
कहि भूप ने का तुम माँग रहे
सुत देत में नाथ जिया घबराये ।।

मोहि आयशु देहु मैं साथ चलूँ
अरु नाथ करूँ मख की रखवारी ।
मुनि कैसे पठाउँ कुमारन को
तनि देखु अबहिं इनकी वय वारी ।
दोउ राम लखन अति कोमल हैं
सकिहैं नहिं मारि निशाचर भारी ।
मुनि देत बने न लला हमसे
मिले मोहि जरठपन में सुत चारी ।।

नृप को तब ज्ञान वशिष्ठ दियो
कही आपनो मोह सँकोच मिटाओ ।
श्री राम जी हैं बलवान महा
इन्हें हर्ष हिया मुनि संग पठाओ ।
नृप ने दोउ पुत्र बुलाय तभी
अति नेह सहित उन कहँ समझाओ ।
फिर सौंप दियो ऋषि कौशिक को
कही राम निशाचर मार के आओ ॥

जब राम को रूप लखो मुनि ने
मुख देखि के भाव विभोर से ठाढ़े ।
तन नीलमणी धनु हाथ लिये
छवि देख के प्रेम अपरमित बाढ़ें ।
गये कौशिक के सँग बन्धु दोऊ
बधि ताड़का सन्तन व्याधि से काढ़े ।
सब राम के नेह में खोय गये
उर प्रेम के रंग भये अति गाढ़े ॥

नहिं नेकहु भूख औ प्यास लगे
उनको गुरु विश्वामित्र बतायो ।
आयुध बहु भाँति के लाय तभी
श्रीराम को दे मुनिराज दिखायो ।
तब दैत्य सुबाहु भयंकर सो
मारीच को ले आश्रम चढ़ि आयो ।
वाहि राम ने एकहि बाण हतो
अरु वारिध पार मरीच गिरायो ।।

लक्ष्मण तेहि सैन सँहारि दई
सब सन्त बड़े मन मे हरषाये ।
निर्भय किये विप्र सभी प्रभु ने
ऋषिराज तबहिं सन्देश सुनाये ।
धनु यज्ञ विदेह करें मिथिला
तहँ आवन हेतु हमें बुलवाये ।
तेहि ठाँव पै सीय स्वयम्बर है
श्रीराम चलो सबके मन भाये ।।

मुनि साथ चले रघुनाथ तभी
सौमित्र को संग लिये हरषाने।
मनो केहरि के दुइ पुत्र चले
अति सुन्दर कामहु देखि लजाने।
मग में उन्हें आश्रम एक मिलो
अति निर्जन लोग गये कहँ जाने।
पड़ी देख शिला कहो राम ये का
जग जानन हार बने अनजाने ॥

मुनि विश्व के मित्र बताई कथा
बनी पाहन नारि पड़ी केहि कारण।
ऋषि गौतम नारि आहिल्या है ये
पड़ी शाप को भोग बनी मग पाहन।
यह आपकी राह निहारि रही
श्रीराम जियाउ लगाय के पायन।
उठी राम के पाद छुवावत ही
बनिके अति सुन्दर नारि सुहावन ॥

कर जोरि के बारहिं बार करे
श्री राम की स्तुति पाँव परी।
हुइ गदगद भाव विभोर कहे
कृपा दासि पै आपने नाथ करी।
धनिवाद करूँ ऋषि गौतम को
जिन शाप से आपकी राह परी।
श्री राम ने तब वरदान दियो
पतिलोक में जायके नारि तरी ॥

मुनिनाथ के साथ बढ़ै मग में
सौमित्र को संग लिये रघुराई।
शुचि सुरसरि में स्नान कियो
ऋषि बन्धु सहित प्रभु पूजि के ताई।
पुनि राम समाज के संग बढ़े
पहुँचे मिथिला नगरी अति भाई।
मुनि वृन्द के संग विराम कियो
घनी आम की थी जहँ पै अमराई ॥

मुनि कौशिक आये विदेह सुनी
मिलबे उनको तुरतहि उठि धाये ।
सँग मंत्रिन आय प्रणाम करी
पग शीश धरो अतिही हरषाये ।
जब भूप ने राम को रूप लखो
रहे देखत बिनु पलकन झपकाये ।
फिर पूछत राव कुमार ये को
मुनि पुत्र हैं ये अथवा नृप जाये ।।

तब कौशिक ने समझाय कही
दोउ राम लखन दशरथ नृप जाये ।
मखराखन दैत्य सँहारन को
मुनिगण हित दशरथ राज पठाये ।
लखि राम को रूप विदेह भये
मिथिलापति आपनि देह भुलाये ।
फिर कही मुनि संग चलो हमरे
लइ साथ युगुल सुकुमार सुहाये ।।

ठहराय के धाम पुनीत उन्हें
नृप अर्चन वन्दन करि सन्माने।
लखि के अति भव्य प्रासाद सजे
श्रीराम लखन मन में हरषाने।
लक्ष्मण पुर देखन चाह रहे
नहिं बोल सकें मन में सकुचाने।
सबके मन की गति जानत जो
सोइ बन्धु हृदय अभिलाष को जाने।।

❋

रघुनाथ ने आदर से मुनि से
कही नाथ जो आपकी आयशु पायें।
लक्ष्मण पुर देखन चाह रहे
हम जायके संग घुमाय के लायें।
ऋषिराज कही सब लायक हो
हुइ आउ नगर, सब देखि सिहायें।
लखि श्यामल गौर स्वरूपन को
मिथिलापुर में सबही सुख पायें।।

गुरु को निज शीश नवाय चले
हरषे अति देखि छटा पुर की।
लखि हाट बाजार अटारिन को
खिली कुन्द कली उनके उर की
मग देखि के जात रुकीं बनिता
करिबे कछु बात उतैं मुरकीं।
छबि देखि अपार उछाह भयो
तेहि ठाँव फिरैं फुरकीं फुरकीं॥

मनभावन रूप कुमारन को
पट पीत पुनीत धरे धनु काँधे।
पलकें झपकाये बिनाहि लखें
मनो नैन दोऊ उन दोउन बाँधे।
तिय राम को रूप निहारि कहें
इनकी छबि संग अनंगहु आधे।
सुकुमार कहूँ यह मोहि मिलें
हम जीवन भर शिव को आराधें॥

सिय योग्य हैं ये, तिय एक कही
इन्हें देखत राव तुरत अपनइहैं।
कही दूसरि वज्र सो है धनु ये
कर कोमल से कस वाहि उठइहैं।
कही एक हने इन दैत्य निरे
बिगड़ी सबकी पल एक बनइहैं।
सखि! मोहि भरोस बड़ो यहही
धनुतोड़ि विदेह को भार हटइहैं॥

पुर बालक आय गये तबही
श्रीराम के सँग सब खेलन चाहें।
कछु रोज के बादहि लौटिहैं ये
यह सोच भरें सबके उर आहें।
सब साथ घुमाय रहे प्रभुको
पथ दर्शक ताहि दिखावत राहें।
लक्ष्मण कर जोरि कही प्रभु से
हम यज्ञ के ठाँब को देखन चाहें॥

पहुँचे दोउ बन्धु वहाँ जहँ पै
धनु यज्ञ की कक्ष गई थी बनाई ।
मख मण्डप भव्य विशाल बनो
मन हर्ष भयो लखि सुन्दरताई ।
जग सिरजन हार सिहाय करें
तेहिकी निर्माण कला की बड़ाई ।
कही राम ने शाम भई अब तो
मुनि नाथ के पास चलो प्रिय भाई ।।

❋

सँग बन्धु के लौट के रामलला
ऋषि पाद में शीष नवाय दिये ।
दिनरात की सन्धि को काल लख्यो
सन्ध्या वन्दन दोउ बन्धु किये ।
जिनके पग पै जग लोटत है
मुनिपद सोइ दाबत नेह लिये ।
तुमहू अब सोवहु रामलला
गुरु आग्रह बारहिंबार किये ।।

जब राम जी आय के लेट गये
तब लक्ष्मण पाँव पलोटन लागे ।
अति नेह सों दाब रहे पद को
तब राम कही सोवहु बहु जागे ।
प्रभु आग्रह बारहिं बार करे
सौमित्र उठे उनके पद लागे ।
प्रभु से पहिले वेहि प्रात जगें
ऋषि से पहले रघुनाथ जी जागें ।।

करि शौच नहाय के बन्धु दोऊ
गुरु आयशु पाय के उपवन आये ।
पूजन हित पूछके मालिन से
लगे लेन प्रसून उन्हें मन भाये ।
अति रम्य मनोहर थी बगिया
लखि राम लखन मनमें हरषाये ।
उपवन उर एक सरोवर थो
तहँ राम लखन दोऊ चलि आये ।।

तेहि क्षण सखि वृन्द को संग लिये
सिय गौरि को पूजन के हित आई ।
अति नेह भवानिहि पूजि सिया
परी मातु के पाद में ध्यान लगाई ।
सिय संग से एक सखी तबही
कछु दूर गई सबसे बिलगाई ।
तेहि फूलन तोड़त राम दिखो
सुधि भूल गई लखि सुन्दरताई ।।

❋

सखि दौरि के सीय से जाय कही
श्रीराम लखन, दशरथ सुत आये ।
सुकुमार हैं श्यामल गौर दोऊ
अति सुन्दर हैं लखि काम लजायें ।
उठि के सिय देखन हेतु गई
हुइ भावुक प्राण में राम बसाये ।
जब राम ने सीय को रूप लखो
कही सुन्दर हैं शशि देख लजाये ।।

निज बन्धु से राम सनेह कही
यहि सीय विदेह सुता सुकुमारी ।
धनु यज्ञ स्वयम्बर है येहिको
यह गौरि को पूजन हेतु पधारी ।
तेहि क्षण प्रभु वृक्ष की ओट भये
सिय नेत्र चितय ढूँढें दिकचारी ।
हरि पास ही फेरि दिखाय परे
सिय राम लखे पलकन बिनु टारी ।।

❋

श्रीराम के उर महँ सीय बसी
अरु राम बसे सिय के उर माँही ।
सिय राम बसें जिनके मनमें
शत जन्म के पाप मिटैं क्षण माँही ।
सिय राम को रूप धरे मनमें
आई पुनि गौरि के मन्दिर माँही ।
अति नेह सौं गौरि को पूजि सिया
निज शीष धरो उनके पग माँही ।।

लखि के उर नेह प्रसन्न भई
गिरिजा निज हाथ से सीय उठाई ।
फिर कही सिय से सुनु सत्य गिरा
तुमने अपनी मन कामना पाई ।
हम जानति हैं उर राम बसे
दियो तोहि अशीष मिलैं रघुराई ।
पुनि पुनि पग धूरि धरी सिर पै
अति मोद भरी सिय लौट के आई ।।

सिय रूप सराहत जात चले
सँग बन्धु गये गुरु पै रघुराई ।
उर निश्छल राम प्रसंग सभी
भयो उपवन दीन्ह मुनिहि बतलाई ।
ऋषि पाय के पुष्पन पूजि प्रभू
अति नेह अशीष दियो हरषाई ।
तव पूर्ण मनोरथ हों सिगरे
सुनि राम लखन दियो शीश नवाई ।।

करि भोजन बैठ गये तबही
मुनिराज पुनीत कथा कहि गाई ।
अस्ताचल हेतु गये रवि तो
मुनि संग करी सन्ध्या दोउ भाई ।
दिन रात्रि की सन्धि पै ईशभजे
त्रय ताप हरे तेहि के प्रभु आई ।
शिव को शुचि नाम हिया धरि के
विश्राम के हेतु गये रघुराई ।।

लखि के निशि चन्द्र प्रभा नभ में
कही राम लगे सिय के मुख नाईं ।
पुनि कही शशि नाहिं सिया मुख सो
तेहि भाल कलंक परे दिखलाई ।
नहिं कोइ कलंक सिया मुख में
सिय को मुख पुष्प गुलाब की नाईं ।
रहे काँटिन संग गुलाब सदा
सिय योग्य नहीं एहिकी उपमाई ।।

उपमा जग में सिय केरि नहीं
सिय को मुख है शुचि सीय की नाईं ।
मनमाँहि सराहत सीय छटा
निशि अर्द्ध भई सोये रघुराई ।
सपने मेंहु सीय दिखाइ परी
मनो उपवन गौरि को पूजन आई ।
अवतार है शक्ति को जानि सियै
कही राम सिया मम हेतु ही आई ।।

भई प्रात ज्यौं शुक्र उगो नभ में
जगे राम लखन निज इष्ट मनाये ।
करि मज्जन पूजन बन्धु दोऊ
मुनि पास गये, उनको सिर नाये ।
दियो कौशिक नेह अशीष उन्हें
तबही मुनि श्रेष्ठ सतानंद आये ।
उनको दोउ बन्धु प्रणाम कियो
फिर कौशिक से मिलि सन्त बताये ।।

मिथिलापति मोहि कही मुनि जी
मख मण्डप में अब आप पधारें ।
तव संग चलें सुकुमार दोऊ
जिन ताड़ुका और सुबाहु संहारे ।
सुनि राम लखन मुनि संग चले
लगैं केहरि पुत्र कँधा धनु धारे ।
पुर लोग प्रसन्न भये अतिही
जब रामको श्यामल रूप निहारे ॥

प्रभु आय सुआसन बैठि गये
निज भाव लखें उनको नरनारी ।
प्रभु नारिन कों रमणीय लगे
अरु भूप कुटिल तिनकों अति भारी ।
निज भक्तन को भगवान लगे
नृप दम्भ भरे लखि होत दुखारी ।
जोइ निश्चर छद्म स्वरूप धरें
डरे सोच हृदय नहिं खैर हमारी ॥

लखिके धनु को कछु भूप कहें
बरिहैं यहि तोड़ि विदेह किशोरी ।
कोइ कोई कहें धनु तोड़े बिना
हम ले जइहैं सिय को बरजोरी ।
मिथिलापति को प्रण आय कहो
बन्दीजन ने तब ही कर जोरी ।
नृप ! ताहि को सीय बरेगी सुनो
यह शम्भु पिनाक उठाय जो टोरी ॥

नृप आयें मनाय के देवन को
पर शम्भु पिनाक टरे नहिं टारे ।
इक बार ही भूप सहस्र उठे
निज शक्ति लगाय के वे सब हारे ।
दसशीष औ बाण प्रणाम कियो
धनु नाहिं छुयो उठिके गये द्वारे ।
मैं जा दिन सीय को लेन चहूँ
कही रावण आइहै द्वार हमारे ॥

जब कोई न टारि सको धनु को
सब पैं मिथिलापति खूब रिसाने।
नहिं वीर धरा पर कोउ रहो
अब आय गयो कैसो युग जाने।
सब जाउ घरें अपने अपने
करिके प्रण आज बहुत पछिताने।
रहिहै अब सीय कुमारि सदा
नहिं वाहि रचो कोइ वर विधना ने ॥

लक्ष्मण जब बैन विदेह सुने
अति क्रोध भरे उनकों ललकारे।
कही व्यर्थ की बात ये बन्द करो
नृप बोलत जात बिना हि विचारे।
यदि आयशु मोहि मिले प्रभु की
क्षण तोड़ पिनाक मैं डारहुँ सारे।
ऐसी कोइ बात वहां न कहे
जहँ होंय कहीं रघुवंश दुलारे ॥

उन्हें सैनन राम बुलाय लियो
गुरु आयशु के हित देखन लागे ।
कही कौशिक राम से जाउ लला
धनु तोड़ि, करो तुम भूप सभागे ।
तुम सोच विदेह को दूर करो
वर पूर्ण करो, सिय गौरि से माँगे ।
रघुनाथ नवाय के माथ चले
मनो सूर्य के पुंज हों वीरता पागे ॥

धनु ओर को राम चले जबही
सिय मातु कही सिय से अकुलानी ।
जहि भूप हजार न टारि सके
कस तोड़िहैं ये अति कोमल पानी ।
सुनि मातु को सीय ने राम लखे
कही आज लियो इनकोहि पतिमानी ।
श्रीराम पिनाक को तोड़ि सकें
इनकों बल देहु हे मातु भवानी ॥

सबही पुर लोग भजैं प्रभु को
मनमाँहि कहैं धनु राम ही टोरें ।
सिय को रघुनाथ ही आज वरें
बस एक यही अभिलाष है मोरे ।
कही शेष तबहि दिकपालन से
धरि धीर सुनो सब आयशु मोरे ।
धनु शम्भु को तोड़न राम गये
रखियो तुम बाँधि धरा को कठोरे ॥

धनु राम ने जाय उठाय लियो
मन में सिरनाय गुरुहि पल थोरे ।
क्षण माँहि उठाय के रामलला
तेहि चापको खैंचि चढ़ाय के टोरे ।
धनु टूटत घोर सो नाद भयो
मनो इन्द्र को वज्र गिरो तेहि ठौरे ।
रवि बाजहु राह को छोड़ भगे
सुनि चाप विखंडन शब्द कठोरे ॥

धनु टोरि के भूमि पै डारि दियो
तब सीय वहाँ सखि संग में आई ।
मनो चन्द्रिका आय गई नभ से
निज हाथ लिए जयमाल सुहाई ।
श्रीराम के उर तेहि डारि दई
जयमाल सभी कर तारि बजाई ।
सब देवन स्तुति गान कियो
नभ जाय प्रसून दिये बरसाई ।।

तबही सिगरे नृप बोलि परे
अब लेहु छुड़ाय सिया बरियाई ।
सुनिके सब व्याकुल लोग भये
करें कौन उपाय वे सोच न पाई ।
क्षण में सबही नृप दौरि छिपे
जब दूरि परे भृगुनाथ दिखाई ।
तपसी अति वीर धरे फरसा
सुत रेणुका के गये बाज से आई ।।

अति बाहु विशाल कँधा वृष के
शुचि मूँज जनेउ कुठार हैं धारे ।
अति वीर हैं गौर प्रभा जिनकी
सोइ रेणुका पूत वहाँ हैं पधारे ।
सब भूप भगे, छिपिबे को कहूँ
लखि क्रोधित नेत्र, भरे अंगारे ।
नृप जात रुके क्षण एकहि में
भृगुनाथ जबहिं कस के हुंकारें ।।

❋

लखिके उनकों घबराय गये
सब लाग करन भुइलोट प्रणामा ।
उठिके फिर जोरिके हाथ कहें
सुत कौन के हैं अपनो का नामा ।
फिर कौशिक आय मिले उनसे
निज संग लिये लक्ष्मण अरु रामा ।
सिय के सँग आय विदेह मिले
छुइपाँव कही सिय है एहि नामा ।।

येहि को प्रभु आज स्वयम्बर है
तेहि कारण ही धनुयज्ञ करायो।
ऋषिराज परी तव पायन में
यहि देहु अशीष जो ये मन भायो।
सिय तोर सुहाग अटूट रहे
भृगुनाथ प्रमुदि आशीष सुनायो।
फिर देखके चाप पड़ो महि में
करि लाल नयन अतिरोष दिखायो ॥

शठ! कौन ने ये धनु तोड़ दियो
वाहि शीघ्र समाज से बाहर लाओ।
क्षण माँहि कुठार से काटिहौं मैं
वह कौन है शीघ्रहि मोहि बताओ।
नहिं तो क्षण में बधिहौं सबको
लिये हाथ कुठार न रोष दिलाओ।
श्रीराम ने जोरि के हाथ तभी
कहि नम्र विनीत वचन समझाओ ॥

प्रभु तोड़न हार पिनाक कोई
अतिही प्रिय आपको सेवक होई ।
मुनि ने कही दास भयो कब से
मम शत्रु से कर्म करे नर जोई ।
जोइ जानिके काम करे अरि के
श्रीराम सुनो बध योग्य है सोई ।
सुनि शेष कही, उपहास भरे
हमने धनुहीं बहु तोड़िके खोई ॥

धनुहीं पर विप्र न मोह करो
सुनतहि भृगुनाथ ने रोष दिखायो ।
कही रे शठ का पगलाय गयो
धनुहीं सम शम्भु पिनाक बतायो ।
सबही धनु तो सम मोहि लगें
कहि लक्ष्मण व्यंग्यको तीर चलायो ।
रहो व्यर्थ पिनाक परो मिथिला
कहि ताहि सड़ो अतिजीर्ण बतायो ॥

जोइ राम छुयो सोइ टूट गयो
मुनि व्यर्थ की वस्तु को मोहन कीजे।
फरसा फटकार के रोष भरे
भृगुनाथ तबहिं सौमित्र पै खीजे।
फिर कौशिक को समझाय कही
हम बालक जानि रहे थे पसीजे।
कहि आपहि कोप प्रताप मेरो
रक्षा नृप के सुत की अब कीजै॥

जाहि बालक जानि न मारि रहो
ब्रम्हचारी हूँ और स्वभाव से क्रोधी।
तुम जानत हो भलीभाँति मुझे
मैं हुँ क्षत्रिय वंश को घोर विरोधी।
अब गाधिसुवन समझाउ तुम्हीं
बचिहै नहिं ये मैं हूँ कालसो क्रोधी।
लक्ष्मण कही आपहु जानत हो
मिथ्या यशगान को मैं अवरोधी॥

कर रहे निज स्तुति विप्र बड़ी
थक गये हुइहौ कोइ और बुलायें।
यदि ये धनु ही प्रिय है तुमको
तब काहु लुहार पै भेजि जुड़ायें।
नहिं चैन मिले उछलो चिटको
फिर बैठियो जाय थकें जब पाँयें।
सुनिके ऋषि क्रोध की ज्वाल बने
तब राम तुरत सौमित्र बुलाये ।।

कर जोरि के राम कही मुनि से
भृगुनाथ क्षमा एहिको करि दीजे।
नहिं जानत तोर स्वभाव प्रभू
मुनि! बालक बात पै ध्यान न दीजे।
लक्ष्मण पुनि व्यंग कियो मुनि पै
वश नाहिं कछू तुम ताहि से खीजे।
मृदु हो तुम राम, कही मुनि ने
उकसात हो बन्धु को आयु न छीजे ।।

सुनु एक कुठार के वारहि में
तुम दोउन के सिर काटि के डारौं ।
मरिहैं सिरको धुनि तात तेरे
जग देखत ही जब तोहि सँहारौं ।
समझो मत केवल विप्र मुझे
क्षत्रिय कुल कालहूँ, घेरि के मारौं ।
जरिहौ मम क्रोध की ज्वाल अभी
यदिवार कुठार घुमाय के मारों ।।

❋

रघुवंश को अश जहाँ कहुँ हो
अस बैन वहां न कहो भृगुराई ।
कोइ युद्ध के हेतु बुलाये हमें
कही राम लड़ें चाहि कालहु आई ।
हम विप्र को मान सदाहि करें
उर में उनके पग लेत छुपाई ।
पग चिन्ह लखे प्रभु के उर में
भृगुपति कही जानि गयो रघुराई ।।

धनु राम के हाथ में विप्र दियो
कहो खेंचि के मोर सँदेह मिटायें ।
छुवतहि श्रीराम के चाप चढ़ो
शर जाय कहाँ कही राम बतायें ।
पग में परिके भृगनाथ कही
हनि बाण प्रभू मम मोह मिटायें ।
प्रभु आज बड़ो अपराध भयो
करि देहु क्षमा मोहि दास बनायें ॥

पुनि पूजि के राम लखन पग को
भृगु भूषण जी तप हेतु गये ।
उन्हें जात लखो पुरवासिन ने
मन में सुख पाय समोद भये ।
नृप दुष्टन ने जब राम लखे
डरि श्वान लौं मूँछ झुकाय गये ।
छबि देख के राम सियावर की
पुर लोग 'महेश' सिहाय गये ॥

मिथिलापति आय के ताहि घरी
कर जोरि के कौशिक को सिर नाये ।
कही नाथ करूँ तुमसे विनती
देहु आशिष मोहि जो आपको भाये ।
अवधेश को पत्र लिखो अबही
मुनिनाथ ने भूप को बैन सुनाये ।
शुभ पत्र विदेह लिखाय दियो
नृप लायें बरात सन्देश पठाये ।।

मिथिलापुर खूब सजाय दियो
हर राह पै तोरण द्वार बनाये ।
बहुरंग वितान तनाय दिये
मणि मुक्तन की झालर लगवाये ।
कलशा धरि स्वर्ण के द्वारन पै
उनमे शुचि गंग को नीर भराये
पुर के जन ढोल बजाय नचैं
मग माँहि सुगन्धित पुष्प विछाये ।।

दियो दूत ने पत्र अवध नृप को
जो विदेह सँदेश कहो वो सुनायो।
पढ़िके नृप भाव विभोर भयो
उन राम विवाह सँदेश जो पायो।
नृप जाय वशिष्ठ को पत्र दियो
द्विज वृन्द, सुमंत्र को हाल बतायो।
नृप से मुनिवृन्द, सुमंत्र कही
चले राम बरात सुऔसर आयो ॥

❋

अति मोद उमंग भरे नृप ने
अन्तःपुर जाय के हाल सुनायो।
पढ़ि रानिहि पत्र सुनाय दियो
अरु दूत नें हाल कहो सो बतायो।
सुनि के सब मातु प्रसन्न भईं
मनो कल्प तरू उनने कहुँ पायो।
सुनि के सुत दोनोंहु आय गये
पढ़ि ब्याह को पत्र बड़ो सुख पायो ॥

नगरी अतिभव्य सजाय दई
नृप, राम बरात तैयार कराई।
रथ, हाथिन, और तुरंगन पै
सब बैठ गये उन्हें खूब सजाई।
दोउ राजकुमार सखा सँग ले
अति प्रमुदित हुइ रहे बाज नचाई।
सजवाय के सुन्दर से रथ द्वै
नृप बैठि गये गुरुदेव बिठाई।।

अब कूँच बरात करे मिथिला
कहि के नृप ने निज शंख बजायो।
चली राम बरात अवध पुर से
नभ देवन दुंदभि नाद करायो।
मग में शुभ होंय शकुन सबको
जल पूरित घट दधि मान दिखायो।
नीलकंठ किलोल करे नभ में
मग में निउला उन्हें जात दिखायो।।

नहिं राह में काहु को कष्ट भयो
मिथिला नगरी गये आय बराती।
पितु राम से जाय विदेह मिले
अति भाव विभोर न आवत बाती।
भरि बाहु विदेह को भेंट करी
नृप दशरथ राज लगाय के छाती।
मिथिला पति ने सत्कार कियो
ले चन्दन, अच्छत, दीपक बाती।।

सुखदा जनवास विदेह दियो
भये तृप्त तहाँ रहि भूप बराती।
शुचि भोज, सुस्वाद सुवास भरे
हर इच्छित वस्तु तुरतहिं आती।
पितु देखन कों मन राम करें
उर चातक सो हुड़िके, सुनि स्वाँती।
ऋषि ने तेहिं पीर लखी मन की
कही राम बुलाय लगाय के छाती।।

अब पुत्र चलो, पितु भेंट करें
जनवास, टिके सँग में दोउभ्राता।
उत्कंठित दर्शन को सबहीं
तव बालसखा, गुरु और बराता।
दोउ जाय प्रणाम कियो पितु को
दृग अश्रु भरे बोले तेहि ताता।
हम नित्य तुम्हारिहिं राह तकें
सँग बन्धु दोऊ अरु तीनहु माता।।

सुत आज तुम्हें लखि तृप्त भयो
अति प्रमुदित हैं तोहि लोग निहारे।
तुम तोड़ दियो धनु शंकर को
मख राखि अनेक निशाचर मारे।
ऋषि कों पुनि भूप प्रणाम कियो
पद छू कही नाथ! कृतज्ञ तुम्हारे।
फिर आय भरत, रिपुसूदन ले
प्रभु के, मुनि के शुचि पाँव पखारे।।

पुलके छबि राम की देखि सभी
अति प्रेम विभोर भरे दृग पानी।
कर फेरि के शीष कहें सबहीं
अति सील सनेह में पागि के बानी।
हे राम! कृपा करियो हम पै
रखियो सँग में निज सेवक जानी।
लखि के नृप चारहु पूतन को
भये भाव विभोर कृपा प्रभु जानी।।

द्विज विप्र सदानँद आदिक ने
मिथिला पति संग करी अगवानी।
पुरजन, परिजन सब आय गये
ले आरति थाल सुगंध सुहानी।
प्रथमहिं नृप ने गुरु पाँव छुए
उर जानि उन्हें मुनिवर अति ज्ञानी।
सबको कियो स्वागत भूप बड़ो
मिले दशरथ को कहि नेहकी बानी।।

छबि देखि भरत रिपुसूदन की
अति विस्मित से भये लोग लुगाई।
सब भरत में राम को रूप लखैं
शत्रुघ्न में लक्ष्मण दैंहि दिखाई।
लखि नारि मनाय रहीं प्रभु सो
इन चारहु की यहाँ होय सगाई।
दुइ राम के बन्धुहू आय गये
यह जानिके सीय की मातु सिहाई।।

रचिके इक मंडप भव्य बड़ो
मणि मुक्तन से नृप ताहि सजायो।
जनवास में सन्त सदानँद ने
नृप दशरथ राज को जाय बतायो।
मिथिलापति हाथन जोरि कही
शुभ लग्न मुहुर्त को है अब आयो।
नृप लेके बरात, कुमारन को
मिथिलापति द्वार चलो समझायो।।

जनवास से राम बरात चली
अति भव्य मनोहर सी सुखदाई।
मणि मुक्तन से तन काँठि सजे
शुचि बाज पै बैठि चले रघुराई।
सहबोलाहु संग चले उनके
चढ़ि अश्वन पै मन में हरषाई।
रथ भव्य पै बैठि वशिष्ठ चले
दस अश्वन के रथ पै नृपराई॥

बिछवाय के सुन्दर पुष्प निरे
हर राह वितानन से सजवाई।
शुचि स्वर्ण कलश भरि के जलके
पुरवासिन द्वार पै दीन्ह धराई।
सबके मन मोद से नाच उठे
लखिके श्रीराम बरात है आई।
सिय राम विवाह के अवसर पै
नभ देवप्रिया रहीं मंगल गाई॥

पहुँची नृप द्वार बरात जभी
अति मोद भरे मिथिला नर-नारी ।
शुचि थाल सजाय के मातु सिया
निज द्वार पै परछन हेतु पधारी ।
पुलकी अति भाव–विभोर भई
करके परछन मिथिलेश की नारी ।
जब राम गये शुचि मंडप में
तब अर्घ दे आरति भूप उतारी ।।

मंडप महँ राम विराज रहे
उनकी छवि देखके काम लजाये ।
प्रभु वाम भरत, रिपु सूदन हैं
अरु दक्षिण में सौमित्र सुहाये ।
कौशलपति राव विदेह दोऊ
सिंहासन पै बैठे हरषाये ।
लखि दृश्य 'महेश' पवित्र महा
नभ देव सुमन सुरभित बरसाये ।।

पुर कामिनि मंगल गान करें
किन्नर बहु भाँति बजावत बाजे ।
लगैं इन्द्र सभा के सभासद से
तेहि मंडप माँहि बराति बिराजे ।
मिथिला नर नारि प्रसन्न बड़े
तन पर बहु रँग के वस्त्रन साजे ।
सब बैठि समोद बजाय रहे
ढप, ढोल, मृदंग अनेकन बाजे ।।

नृप दशरथ और विदेह मिले
भरिके निज बाहु हिये से लगाये ।
मिथिलापति पूजि ऋषी सबही
करि आरति आसन पै बैठाये ।
नृप ने सम्मानि बरातिन को
उपहार अनेक उन्हें बटवाये ।
परजा जन नाई औ बारिन को
बहु बाँटि निछावर तृप्त कराये ।।

फिर देखके श्रेष्ठ मुहूर्त गुरू
लिये सन्त सतानँद पास बुलाई।
कही आज पवित्र नक्षत्र बड़ो
सिय राजदुलारिहि लाउ लिवाई।
सुनिके सिय मातु प्रसन्न भई
उपरोहित ने जब आय बताई।
तबही सिय संग लिवाय चलीं
कई चन्द्रमुखी सजि, रूप बनाई॥

नभ से बरषा भई फूलन की
लखि रामसिया भये देव सुखारी।
धरिके तिय भेष को देव प्रिया
गईं आय जहाँ सिय राजकुमारी।
सब गायें सुहागिन मंगल को
अरु देवबधू उनके सँग सारी।
अनतृप्त, अघात न देखि छबी
सियराम की देव, विरंच, पुरारी॥

दस नैंनन से छबि शम्भु लखैं
तब ब्रम्ह बड़े मनमें सकुचाये ।
कहें मोहि तो आठहि नेत्र मिले
इनसे शिव के सम देख न पाये ।
तब इन्द्र सराहत गौतम को
जिन शाप से नेत्र सहस्र हैं पाये ।
जिनके दुइ नेत्र वे देव दुखी
लखिबे छबि नेत्र हजार न पाये ॥

ऋषिने शुचि स्वस्ति को पाठ कियो
कुल कें गुरु ने विधि कर्म कराये ।
कुल रीति से पूजन को करके
सिय सादर आसन पैं बैठाये ।
रानी सँग पाँव पखारि तभी
नृप कार्य किये तेहि वाम बिठाये ।
हरषे लखिके छबि राम सिया
पुर के नर नारि अमित सुख पाये ॥

हैं जानकी रूप की राशि महा
उनकी उपमा कवि ढूँढ़ न पाये ।
मण्डप जब आईं सिहाये सभी
मन माँहि बरातिन शीश झुकाये ।
हरषे दशरथ लखि सीय प्रभा
त्रय पुत्र प्रसन्न भये सिर नाये ।
श्रीराम महा निष्काम प्रभू
लखिके सियको उरमाँहि बसाये ।।

नृप, रानी ने कन्या को दान कियो
दई सौंपि सिया प्रभु को हरषाई ।
भाँवर जब सात पड़ी प्रभु की
नभ देवन दुन्दभि खूब बजाई ।
ऋषि ने सिय को वर आसन पै
श्रीराम के वाम में दीन्ह बिठाई ।
दोउ को फिर आशीर्वाद दियो
नृप दशरथ ने निज हाथ उठाई ।।

जोड़ी सिय राम की देखि भये
सब देव मगन मन, मोद मनाये ।
सबके उर माँहि उछाह भरो
नभ देव प्रसून बहुत बरसाये ।
पुर कें नर नारि बरात सभी
अति भावुक हुइ उनको सिर नाये ।
कौशलपति और विदेह कहें
इनकों लखिके अति ही सुख पाये ।।

मुनिराज वशिष्ठ, सतानंद ने
मिलि के तब एक विचार बनायो ।
शुभ लग्न विशेष में हों सबही
सुत केरि विवाह नृपहिं समझायो ।
उन जाय कही नृप दशरथ से
उनकोंहु विचार बड़ो मन भायो ।
तब तीनहु दशरथ पुत्रन को
त्रयसीय भगिनि सँग ब्याह रचायो ।।

कुश केतु सुता बड़ी माण्डवी थी
अतिशील निधानऔर रूप की रानी।
नृप ने भरतहिं सोइ ब्याहि दई
विधिरीति से विप्र औ वेद बखानी ।
रही उर्मिला छोटी भगिनि सिय की
अति सुन्दर शील सनेह में सानी ।
सौमित्र से ब्याह भयो तेहि को
हरषी मिथिलापति के सँग रानी ।।

छोटी तनया श्रुतिकीर्ति रही
अति सुन्दर थी रति देख लजाये ।
रिपुसूदन के सँग ब्याह भयो
पुरजन, परिजन सब देख सिहाये ।
बैठे सुत चार सिंहासन पै
उन संग बधू बैठीं तिन बायें ।
दशरथ लखि हर्ष विभोर भये
मिथिलापति औ रानी सुख पाये ।।

करके पुनि लोक की रीतिन को
नृप ले बधुएँ जनवास में आये।
फिर आय जनक कौशलपति को
अति नेह भरे मृदु बैन सुनाये।
नृपराज ! हैं भाग्य हमार बड़े
तुमसे समधी हम आज हैं पाये।
हम परिजन औ मम राज्य प्रजा
सब सैन सहित ठाढ़े सिर नाये ।।

उठि दशरथ ने मिथिलापति को
करि आलिंगन निज पास बिठायो।
सत्कार अलौकिक आप कियो
कही पूर्ण बरात को नेह डुबायो।
अति ही प्रिय हैं नृप ! तोरि सुता
उनको मम पुत्रवधू है बनायो।
बहु दाइज दे सम्मान कियो
सुनके मिथलापति शीष झुकायो ।।

ज्यौनार निमंत्रण दे नृप को
कही भूप चलें सँग पुत्र बराती।
दशरथ सँग पूर्ण समाज चलो
मनो स्वर्ण मरालन की चली पाँती।
मग के सब ठांव सजे अति ही
उन्हें देखिके दृष्टि वहीं टिक जाती।
सुरभित बहु पुष्प बिछे पथ में
लगी मुक्तन झालर स्वर्णकी पाँती ॥

जनवास से घूमि नगर भर में
फिर आई बरात विदेह के द्वारे।
नृप पूजि सनेह बरातिन को
शुचि आसन पै सब को बैठारे।
वामदेव, वशिष्ठ औ कौशिक को
नृप पूजिके सादर पाँव पखारे।
फिर धोय के पग कौशलपति के
उन्हें पूजि भये नृपराज सुखारे ॥

श्रीराम के पाद सरोजन कों
अति नेह विदेह जी धोवन लागे ।
मनो सम्पत्ति तीनहु लोकन की
मिली आज सभी उनको बिनु माँगे ।
फिर रामहि लौं सन्मान दियो
सब भाइन कों नरपति शतभागे ।
बैठारि के पाँति बरातिन की
परसे उनकों व्यंजन रस पागे ॥

कोइ गायें सुमुखि ज्यौनार वहाँ
अरु नारि कोई गायें शुचि गारी ।
कहें रामसे, मातु को काह भयो
हवि खाय जने उनने सुत चारी ।
कौशलपति पौरुषहीन भये
तुम बैठो यहाँ अब पैन्हि के सारी ।
पुलकित तन पूर्ण बरात भई
मनमोद भरे सुनके नृप गारी ॥

गृह लौट के जान के औसर पै
पट भूषण कौशलराज बटाये।
मन चाहे मिले उपहारन ले
सब सेवक थे मनमें हरषाये।
जब लोगन जात बरात सुनी
हुइ व्याकुल वे जनवास को धाये।
अब राम लखन सिय जाय रहे
यह सोच के वे अति ही दुख पाये॥

❋

सिय को समझाय के मातु कही
तुम ध्यान में राखियो बात ये मोरी।
सेवा पति, सास, ससुर सबकी
करियो मनसे मिथिलेश किशोरी।
अब सास ससुर पितु मातु सिया
रहे देवर में रति बन्धु सी तोरी।
पुरजन अरु सेवक हैं सुत से
इनको प्रतिपालियो आयशु मोरी॥

गये माँगन हेतु विदा नृप से
सँग बंधु के राम कही कर जोरी।
अब आप तो हैं पितु से हमको
गृह जान चहूँ मिले आयशु तोरी।
हम चारहु बंधु प्रणाम करें
मिथिलेश कही तुम्हें आशिष मोरी।
फिर मातु को माथ नवाय कही
गृह जाय रहे तव नेह बटोरी॥

समझाय के राम से मातु कही
मम छोटि सिया मन की अति भोरी।
रखियो जाहि आपनि जानि सदा
करिहैं मनसे सेवा सब तोरी।
तब राम कही घबराउ नहीं
दइहौं तुमसी इन्हें मातु जो मोरी।
भरि नैन सुनयना ने फेरि कही
यहाँ आइयो राम बहोरि बहोरी॥

पुनि मातु को कीन्ह प्रणाम प्रभू
सब भाइन सँग गये जनवासे ।
फिर पुत्रिन से तेहि मातु मिली
समझात रही हुइ चित्त उदासे ।
मन व्याकुल अश्रुन धार बहे
मिलीं कंठ सखीं सब आय सियासे ।
मिथिलेश लगाय हिया सिय को
तेहि ठाँव पै ठाढ़ बड़े ही उदासे ।।

पलकी अति सुन्दर चार तभी
मँगवाय के भूप सुता बैठारी ।
कुल रीति औ नारिको धर्म सिखा
कही जाउ सुता, नयनन भरि बारी ।
सब विप्र बुलाय अवधपति ने
उपहार दिये, दई धेनु हजारी ।
गई राम के संग सिया जबहीं
सब फूटके रोय परे नर नारी ।।

जब आई बरात अवधपुर में
पुर लोगन भव्य बजार सजायो।
बहु तोरण द्वार बनाय दिये
शुचि पुष्प बिछाय के मार्ग बनायो।
सुनि राम सिया पुर आय गये
सब मातुन केरि हिया हुलसायो।
बधुएँ सब बन्धुहु लाय रहे
यह जानि मनो सुख स्वर्गको पायो।।

लइ अच्छत, चन्दन, पुष्पन को
प्रभु मातु ने स्वर्ण को थाल सजायो।
निज हाथ में पंकज पुष्प लिये
घृत डारि के आरति दीप जलायो।
करि आरति, परछन मातु सभी
लखीं पुत्र वधू अति ही सुख पायो।
पहिलो पग सीय धरो गृह में
मुनिराज ने श्रेष्ठ मुहूर्त बतायो।।

सुत चारहु संग लिये बधुएँ
श्रीराम की मातु को शीश नवाये।
हुलसी लखि मातु, अशीष दियो
अति नेह उठाय हिया चिपकाये।
फिर जाय छुए पग कैकयी के
पुलकी माँ शीश पै हाथ फिराये।
सब जाय सुमित्रा के पाँव छुए
उन्हें मातु अशीष न देत अघाये।।

जब प्रात भई नृप ने अपने
सुत चारहु थे निज पास बुलाये।
सँग राम के आयके बन्धु सभी
पितु के पगमें निज शीश नवाये।
रहे कौशिक और वशिष्ठ जहाँ
दशरथ सब पुत्रन को ले आये।
उनके सँग पूजि महा ऋषि को
नृप ने मुनि से कहे बैन सुहाये।।

रही आपकी भारी कृपा हम पै
तेहि कारण ही शुभदिन यह आयो ।
हम पै उपकार बड़ो तुम्हरो
कहि कौशिक को पुनि शीश झुकायो।
मम गुरु, ऋषिराज महान बड़े
उनकेरि अशीष को ही फल पायो ।
वामदेव को पूजि के दशरथ ने
सब पुत्रन के सँग ही सिरनायो ।।

जब विश्वकेमित्र विदा को कहें
नृप आग्रह करि उन्हें जान न देहीं ।
ऋषि राम से जान के हेतु कहें
प्रभु रोकि सनेह चरण गहि लेहीं ।
जब जब मुनि कौशिक जान चहें
तब रोकत नेह को सागर तेहीं ।
अति आग्रह देख के कीन्ह विदा
ऋषिराज को भूपति रामसनेही ।।

सब सास विभोर थीं नेह भरी
नित देख के पुत्र वधू सुखदाई ।
प्रमुदित सब सीय समेत वधू
मनो मातु मिली वही छोड़जों आई ।
परिवार को सेवहिं पुत्र बधू
नृप आशिष दे, करें खूब बड़ाई ।
अति ही आनन्द अवधपुर में
जहँ सीय रमापति की छबि छाई ।।

सबकेमन भयेअवधसे बसैंजहाँसियराम।
पावन तीरथ बनगये हाड़ माँस अरु चाम।
मुक्ति को मार्ग यही है ।।

इति बाल काण्ड

अयोध्या काण्ड

राम बसैं सबके हृदय धन्य धन्य पुरलोग।
भक्तिभाव डूबे सबहि भूलिगये भवभोग।
सुखों की बाढ़ सी आई।

कौशलपुर सब सुखधाम भयो
जहँ नित बाजति आनन्द बधाई।
लतिका द्रुम फूलि परे सिगरे
ऋतु चारहु थीं मधुऋतु बनि छाईं।
घर-घर सुख सम्पति आय भरी
जहँ सीय समेत बसैं रघुराई।
सियराम स्वरूप की देखि छटा
सुख स्वर्ग को पावत लोग लुगाई॥

प्रमुदित हुइ लोग कहें पुर के
हम सो नहिं कोउ है आज सुखारी ।
सब ऋद्धियां सिद्धियाँ आय बसीं
धन धान्य भरे नहिं कोउ दुखारी ।
लखि सास सनेह बधू हरषीं
गईं भूल सभी अपनी महतारी ।
दर्शन दे नित्य निहाल करें
श्रीराम सहित दशरथ सुतचारी ।।

दर्पण मुख देखके क्षोभ भयो
जब बालन को नृप राज निहारे
भये श्यामल केश सबहि सन से
गयो आय जरठपन द्वार हमारे ।
नृप कही मनको तब चैन मिले
जब राज के काज को राम सम्हारें ।
शुभ काम में ठीक विलम्ब नहीं
अति शीघ्र उसे लगके कर डारें ।।

यह सोचि गये गुरु गेह तभी
पद शीश धरो उनको सन्माने ।
गुरु से करजोरि के राव कही
प्रभु आयो यहाँ कछु आपसे पाने ।
कही राम को नेह करें सबही
सब मित्र औ शत्रुहू मोहिलौं माने ।
सब बंधु उन्हें अति प्रेम करें
नहिं नेह है कम जाने अनजाने ।।

सब लायक ही अब राम भये
युवराज को पद उनकौं अब दीजे ।
क्षण क्षण वृद्धापन आय रहो
मम राज को भार कछू कम कीजे ।
सुनि भूप के बैन वशिष्ठ कही
शुभ कारज में अब देर न कीजे ।
अति शीघ्र बुलाय के राज सभा
नृप! शुभ संकल्पकी अनुमति लीजे ।।

नृप शीघ्र बुलाय लियो सबको
अपनो मनतव्य उन्हें बतलायो ।
अब रामलला युवराज बनें
तुम अनुमति देहु उन्हें समझायो ।
सबने जयघोष करी नृप की
उनको यह मत सबके मन भायो ।
बनिहैं युवराज तो रामलला
यह जानि बड़ो सबने सुख पायो ।।

❋

गुरु ने समझाय कही नृप से
जल तीरथ तीरथ को मँगवाओ ।
पुंगीफल, वस्त्र, रसाल, पता
अरु वस्तु सभी जिन्हें वेद बताओ ।
सजवाय के हाट बजारन को
शुचि मण्डप और वितान तनाओ ।
विधि जो शुचि वेद औ शास्त्र कही
नृप ताहि से राम को काज कराओ ।।

गुरु की नृप आयशु पाय तभी
अभिषेक को पूर्ण प्रबन्ध करायो ।
उन्हें रानिन मोतिन हार दिये
सन्देश प्रथम जिन जाय सुनायो ।
सब सेवक भूप प्रसन्न किये
उपहार दिये जेहि को जोइ भायो ।
पुरवासिन उर उत्साह भरे
सुनिके अभिषेक को है दिन आयो ।।

गुरुदेव को भूप बुलाय कही
मुनि राम को जायके नीति सिखायें ।
रघुनाथ के द्वार वशिष्ठ गये
पग पूजि के राम उन्हें बैठाये ।
मंगलमय धाम भयो हमरो
श्रीराम कही गुरु आप जो आये ।
पुनि सीय ने आय प्रणाम कियो
गुरुदेव ने आशिष बैन सुनाये ।।

तब राम कही अति कीन्ह कृपा
गुरुदेव जो दास के गेह पधारे।
प्रभु छोड़ बड़प्पन आये यहाँ
कहिके श्री राम ने पाँव पखारे।
तव आयशु का मुनिनाथ कहैं
तेहि पालि सकें बड़े भाग्य हमारे।
नृप चाहत हैं अभिषेक करें
तुम्हरो गुरुदेव ने बैन उचारे॥

तुम संयम विधि अनुरूप करो
कलही अभिषेक की है तिथि आई।
सुनि राम कही अकुलाय प्रभू!
एहि दास में कौन विशेषता आई।
हम चारहु बन्धु थे साथ भये
अरु चारहु साथ में ब्याह रचाई।
युवराज अकेलेहि मैं बनिहौं
यह बात नहीं तनकहु मोहि भाई॥

प्रिय बन्धु भरत नहिं हैं पुर में
गये मातुल गृह लौटें कब जाने।
अति भावुक हुइ ऋषिराज कही
तव राम कृपा कोइ कोइ ही जाने।
सब भाइन को तुम प्रेम करो।
अरु वेहु तुम्हें निज प्राण सो माने।
पुरलोग, सचिव, नृप, बन्धु, सखा
तुमको मन से युवराज ही माने ।।

नगरी अति भव्य सजाय दई
बहु तोरण द्वार वितान बनाये।
घट स्वर्ण धरे सब द्वारन पै
शुचि कंचन वन्दनवार लगाये।
सब नाचत, ढोल मृदंग बजें
पुर के नर नारि फिरैं हुलसाये।
अब बैठिहैं राम सिंहासन पै
अति मोद भरे सबको बतलायें ।।

उत्सव प्रिय भरतहु आय लखैं
हुइ आतुर सब उनको मग देखें।
श्रीराम उन्हें अति नेह करें
भरतहु उनको निज प्राण सो लेखें।
उन्हें आवत काहि विलम्ब भयो
सब राह तकें मनो चित्रन लेखे।
हरि को सब लोग मनाय रहे
कछु विघ्न न हो शुभही सब देखें॥

अभिषेक है राम को देव सुनी
हुइ व्याकुल शारद मातु पै आये।
भयो जात है मातु अनर्थ बड़ो
वन माँहि दनुज उत्पात मचाये।
करिहैं प्रभु राज अवधपुर जो
तब दैत्यन को बधिहै को जाये।
तुम शारद शीघ्र उपाय करो
प्रभु राजतिलक यह होन न पाये॥

प्रिय मंथरा दासी थी कैकेयी की
बड़ी बुद्धि विहीन सी कूबड़ी नारी ।
वाकी वाणी में शारदा बैठ गई
अरु फेरि दई तेहि की मति सारी ।
अभिषेक है राम को ज्योंहि सुनो
अरु देखी वहाँ सब होत तैयारी ।
गई दौरि के कैकयी पास तभी
तेहि कानन सौं लगि बैन उचारी ।।

तुम कौन से कूप में सोय रही
वहाँ जानति हो का होत तयारी ।
श्रीराम को राजतिलक कल है
भरतहिं दियो भूप ने दूर बिड़ारी ।
श्रीराम को राज तो बात भली
कही रानी गई तुम्हरी मति मारी ।
हट दूर जा नेत्र के सामने से
शठ फेरि न अस कहुँ बैन उचारी ।।

पुनि मंथरा रोय कही उनसे
तुम्हरे हित ही अस बात चलाई।
मैं तो दासी हूँ दासी रहूँगी सदा
नृप कोउ बने मेरो का जाई।
फिर सोच लो रानी कहूँ तुम से
नृप राम बनें नहिं तोरि भलाई।
नहिं जात लखी यह हानि तेरी
सँग मायके से मैं हूँ आपके आई॥

तव पुत्र को कैकय भेज दियो
यह भूप बड़ो षडयंत्र रचायो।
अब भरत तो दास बनेगो बड़ो
श्रीराम को उन युवराज बनायो।
भयो जात है रोकु अनर्थ बड़ो
पुनि रोयके मंथरा वाहि दिखायो।
करिहौं कछु मंथरा! रानी कही
नृपकी प्रिय हूँ करिहौं तोहि भायो॥

यद्यपि नहिं राम को जन्म दियो
पर देखि सदा उनको रही जीती ।
सब रानी तो राम से नेह करें
पर राम करें मोहिसे अति प्रीती ।
कई बार परीक्षा करी उनकी
तबसे मन माँहि भई परतीती ।
यह सोचत हू डर मोहि लगे
भई बुद्धि मेरी घट छिद्र सी रीती ।।

❋

कही मंथरा मत घबराउ सखी
अब राह तुम्हें बड़ी ठीक बतइहौं ।
विधि जाहि सौं होय भलो तुम्हरो
तुमको कछु वैसिहि युक्ति सुझइहौं ।
तुम्हरो हित रानी मैं सोचूँ सदा
तव मइके की हूँ भली राह बतइहौं ।
कही कैकयी शीघ्र बताउ सखी
तव सीखको मैं उर माँहि बसइहौं ।।

कही मंथरा देवि ! सुनो तुमने
रणदेव असुर पति साथ दियो थो ।
रथ चक्र जबहि निकरो रथ से
तुम हाथ लगाय के थाम लियो थो ।
नृप दो वरदान थे देन कहे
तुम बाद में लेन को टाल दियो थो ।
अब आज समय शुभ आय गयो
फलिहैं वही वृक्ष लगाय दियो थो ।।

तुम कोप के गेह में जाय परो
अरु मानो नहीं चाहे कोइ मनाये ।
हठ ठानि के माँग लियो वर दो
जब प्रेम से भूप मनावन आयें ।
वर एक भरत युवराज बनें
अरु दूसर कानन राम पठायें ।
दसचार बरस वन राम रहें
तजि राजमुकुट मुनि वेष बनायें ।।

तेहि बुद्धि में शारदा बैठ गई
अपनो दियो पूर्ण प्रभाव दिखाई ।
कैकयी अति बुद्धि विहीन भई
वाहि मंथरा सीख बड़ी मनभाई ।
निज वेश कठोर बनाय लियो
गई कोप भवन भू परि अकुलाई ।
सब राज भवन थर्राय गयो
कहैं लोग ये कौन विपत्ति है आई ।।

❋

दासी इक दौरि गई नृप पै
क्षण में उनको सब हाल बतायो ।
नृप द्रुति ही कैकयी पास गये
उन भूमि परी बिलखत तेहि पायो ।
कही भूपति शीघ्र बताउ हमें
तोहि कौन से कष्ट ने आज सतायो ।
प्रिय रामको राजतिलक कल है
तुमकोअतिप्रिय सुतसेहु अतिभायो ।।

नहिं कैकयी राव की बात सुनी
अति क्रोध भरी मुख लीन्ह घुमाई ।
पुनि राव जबहिं मुख ओर गये
कैकयी कसिके हुंकार लगाई ।
नहिं मानि रहीं हठ ठानि परी
वाहि राव रहे हर भाँति मनाई ।
तब अन्तमें हार के राव कही
करिहौं मैं वही जोइ आपको भाई ।।

तब रानी कही तिरवाचा भरो
अरु देहु वचन वही मोहि जो भाये ।
मम वंश की रीति है भूप कही
नहिं जाय वचन चाहे प्राणहि जाये ।
तुम शीघ्र कहो करिहौं मैं वही
पुनि पुनि कहूँ भामिनि हाथ उठाये ।
तुम्हें याद है रानी कही नृप से
मोहि देन कहे वर दो सुधि आये ।।

मोहि याद है माँगलो भूप कही
सुनतहि नृप से मृदु बैन उचारी।
सचमुच यदि आप प्रसन्न भये
देहु भरतहिं राज ये माँग हमारी।
करिहौं मैं यही, सुनि भूप कही
वर और का चाहति है मम नारी।
कही दूसर राम रहैं वन में
धरि तापस वेश बरस दसचारी ।।

वनवास की बात सुनी नृप ने
गिरे भूमि विकल हुइ होश गँवाई।
कछु चेत भयो तब रोय कही
यह माँगत में तोहि लाज न आई।
श्रीराम को ना वन भेज त्रिया
उन्हें भेजत मोहि कहो नहिं जाई।
तुम चाहो तो माँग लो प्राण मेरे
पर राम वियोग सहो नहिं जाई ।।

कैकयी अति क्रोध में बोल परी
तुमने वर झूठ ये काहे दिये थे ।
स्थिर निज बात पै नाहिं रहो
नृप व्यर्थ ही क्यों यह दम्भ किये थे ।
तब रोय के राव कही गृहिणी !
वर झूठ नहीं हम तोहि दिये थे ।
तुम राम को जाय बताउ अभी
कहिके सिर आपनो थाम लिये थे ।।

सिगरी निशि बिलखत भूप रहे
जब होश में आयें तो राम पुकारें ।
नृप व्याकुल तड़पत भूमि परे
सोचत वन जायेंगे राम हमारे ।
बचिहैं नहिं रोयके राव कहें
श्रीरामबिना अब प्राण हमारे ।
फिर से भये राव अचेत गिरे
महि पै मनो सिंह गिरो शर मारे ।।

जब प्रात भई पुर लोग जगे
सब देख रहे उत्सव तैयारी ।
मन माँहि सुमंत्र थे सोच रहे
नहिं भूप जगे गइ आय दुपहारी ।
चलि देखहिं कारण काह भयो
नृप काहे न अब तक नींद बिसारी ।
अन्तःपुर आयके ज्ञात भई
पड़े भूप हैं कैकयी गेह दुखारी ।।

नृप राज के पास सुमंत्र गये
तेहि देख दशा मन में घबराये ।
वहाँ भूमि पै भूप अचेत परे
उन्हेंदेखि सचिव कछु सोच न पाये ।
तब कैकयी बोली सुमंत्र सुनो
कहो राम से वे अबही यहाँ आयें ।
उन्हें जाय सुमंत्र सँदेश दियो
कैकयी गृह राम तुरन्तहि आये ।।

उन मातु को जाय प्रणाम कियो
पितु के पग में पुनि शीष झुकायो।
कैकयी कही राम सुनो तुमको
कछु कार्य विशेष के हेतु बुलायो।
नृपराज दिये वर दो मुझको
सो बतान हेतु सुमंत्र पठायो।
पुर को अब राज भरत करिहैं
तुम छोड़ सभी अबही वन जायो॥

तब कैकयी से श्रीराम कही
मोहि भ्रातृभरत लागहिं अतिप्यारे।
अब राज तिलक उनको हुइहैं
सनतेहि भयो उत्साह हमारे।
मुनि वेश धरो वन जाउ अभी
तब कैकयी ने पुनि बैन उचारे।
जब राम को बोल सुनो नृप ने
कहीराम तुम्हीं तो हो प्राणहमारे॥

तब मातु से राम कही अबही
वन जाइहौं तापस वेश उदासी ।
पितु तो रघुवंश शिरोमणि हैं
उनकी मम हेतु न हो उपहासी ।
कैकयी हरषाय कही उनसे
तुम शीघ्र बनो सुत कानन वासी ।
तेहि क्षण कछु चेत भयो नृप को
कही राम यहीं पै रहो सुखरासी ।।

❋

कैकयी मन की गति को लखि के
नृप को श्रीराम ने बैन सुनाये ।
वनवास से आप न होंय दुखी
तब आयशु पालके हम सुख पायें ।
हम जात हैं मातु की आयशु को
फिर जाइहैं वन तव आशिष पाये ।
कहिके निज मातु पै राम गये
नृपसोच के वश कछु बोल न पाये ।।

पुर वासिन ने जब हाल सुनो
भये व्याकुल ज्यों उरबाण हो मारो।
भयो राव को का कोइ कोई कहें
अस कटु आदेश न देत विचारो।
सब कैकयी को धिक्कार रहे
वर माँग के जो यह संकट डारो।
कोइ रोय कहें यह काह भयो
तुम हाय प्रभू यह संकट टारो।।

इक दूसर को मुख देख रहे
हुइ व्याकुल सब पुर के नर नारी।
सब होंठ सुखान सुखान फिरें
नहिं चैन उन्हें बहे नेत्र से बारी।
अपने सिर को सब नारि धुनें
अरु कैकयी को सब देत थीं गारी।
कोइ कोई कहें तोहि काह भयो
नृप ! दे वरदान दियो उर जारी।।

नृप दें जिनको चाहें राज सभी
मम राम नहीं उन राज के भूखे ।
रह लेंगे वे तो गुरु के गृह में
फल कन्द को खाय के रूखेहिसूखे ।
वन भेजन की मत बात करो
सुनतहि उर घाव मेरे अति दूखें ।
श्रीराम रहें अपनेहि ढिगा
हम देखें उन्हें चाहे बैठ के भूखे ।।

बड़े हाल बुरे पुरवासिन के
सब व्याकुल धीर न कोइ बँधाये ।
नृप बेसुध कैकयी गेह परे
उत रामजी कौशल मातु पै आये ।
अति नेह सों पाँव छुए उनके
तब मातु ने प्रेम से कण्ठ लगाये ।
अति गद्‌गद् राम को देखि भई
जननी बहु भूषण वस्त्र लुटाये ।।

कही मातु मुहूर्त में देर नहीं
गुरुदेव कराय दई तैयारी ।
मन मोर प्रसन्न है आज बड़ो
हुइहै तब राजतिलक दुख हारी।
कर जोरिके मातु से राम कही
मोहि कानन राज मिलो महतारी ।
पितु आयशु से रहिहौं बन में
धरिके मुनि वेश बरस दसचारी ।।

वन जान को आयशु दो जननी
पद पंकज में निज माथ धरूँ ।
गिरी गाज सी ये सुनके उन पै
नहिं सोच सकी अब काह करूँ ।
फिर कही यदि आयशु है पितु की
तो हैं मातु बड़ी जाहि काटि धरूँ।
यदि मातु पिता तोउ चाह रहे
उर पाथर धरि स्वीकार करूँ ।।

पुनि पूछति मातु उदास भई
केहि कारण भूप दियो वनवासा।
सिर नाय सुमंत्र के पुत्र कहो
सम्पूर्ण प्रसंग भयो रनिवासा
सुनके अति पीर भई उर में
मनो फाटि परो उनपैहि अकासा।
करि पालन आयशु को पितुकी
कहीराम मैं फिर अइहौं तब पासा ।।

❋

वनवास प्रसंग सुनो सिय ने
सुनतहि निज सास पै दौरि के आई।
अकुलाय के पाद गहे उनके
दृग अश्रु भरे अति ही बिलखाई।
सँग राम के मातु मैं जान चहूँ
उनसे रहि दूर नहीं है भलाई।
तुम्हें कैसे कहूँ वन जाउ सिया
वहाँ दैत्य अनेक बसैं कही भाई ।।

सिय तापस नारिन को वन है
सब छोड़ के जो तप लीन रहें।
या कोल किरातन की पत्नी
वन कारज में तल्लीन रहें।
तसवीर छपी लखि वानर की
डर जाति हो तुम यह मातु कहें।
वहाँ बानर बाघ अनेकन हैं
वन भेजन को मन नाहिं चहे।।

घबराय के सास से सीय कही
नहिं राम बिना यह जीवन मोरा।
अब आयशु देहु मुझे जननी
मोहिपै उपकार नही कम तोरा।
तब सीय को देख दुखी अति ही
कही मातु करो जस हो मन तोरा।
तुम सेवा करो पति की वन में
सिय तोहि अशीश रहे नित मोरा।।

निज मातु को राम प्रबोध कियो
पुनि सीय को वे समझावन लागे।
हैं कानन कष्ट अनेक सिया
बहु कांकर, पाथर, कंटक लागे।
हिम आतप वारि, कठिन मग है
सब कष्ट चलें वन आगेहि आगे।
तुम जानकी मान लो मोर कही
यहीं सेवा करो रहि सास के आगे॥

❋

नदी, नार औ कन्दर खोहन में
नहिं राह सुगम निशिचर बहुतेरे।
रहैं बाघ औ रीछ अनेक वहाँ
नर भक्षी हैं एक से एक घनेरे।
सिय! तासौं कहौं घर में ही रहो
सुकुमारि हो वन नहिं योग्य है तेरे।
अति व्याकुल हुइ सिय पाद गहे
कही प्राण बसैं तुममेंहि प्रभु मेरे॥

मैं मानति हूँ वन कष्ट बड़े
पर पति बिछुड़न सबसे दुखदाई ।
हँसिके सहिहौं वन कष्ट सभी
तव संग सदा हमको सुखदाई ।
कही मातु के पाँयन में परिके
अब देहु तुम्हीं प्रभु को समझाई ।
तेहि मातु को आत न बात कछू
रही देख खड़ी सिय को बिलखाई ॥

❋

सिय देख के व्याकुल राम कही
तोहि ले चलिहौं वन में निज साथा ।
बहु विधि समझाय के सीय तभी
श्रीराम धरो जननी पग माथा ।
अति व्याकुल हुइ तब मातु कही
मत भूलियो मोहि कबहुँ रघुनाथा ।
पुरजन, परिजन अरु मो सबकी
सुधि राखियो राम सदा निजसाथा ॥

कहि जानकी सास के पाँव परी
तुम्हरी सेवा हम ना कर पाये ।
तुम मातु सदा अति नेह दियो
रहि संग पिता गृह याद न आये ।
तब आशिष साथ सदा रहिहै
फिर एकहु कष्ट न कानन आये ।
मत भूलियो मातु कबहुँ हमको
सुनतहि दृग मातु के मेघन छाये ।।

लक्ष्मण जब हाल सुनो सिगरो
अति आकुल व्याकुल राम पै आये ।
तन काँप रहो दृग नीर बहे
गहे पाद वचन मुख से नहिं आये ।
जब नेक सो चैन मिलो मन को
कही नाथ हमहु चलिहैं बनि साये ।
मैंम नाथ तो कष्ट सहें वन में
हम भोग करें यह ना हुइ पाये ।।

तब राम कही समझाय उन्हें
रहिकेहि यहीं करो तात की सेवा।
रिपुसूदन औ भरतहु नहिं हैं
नृप बृद्ध कठिन उन्हें राज की सेवा।
प्रियतात अचेत पड़े गृह में
उन्हें मोर बिछोह बड़ो दुख देवा ।
तुम तासु लखन रहिकेहि यहाँ
पुर वासिन औ नृप की करो सेवा।।

❋

तुम ही प्रभु प्राण अधार मेरे
कहिके लक्ष्मण पुनि रोवन लागे ।
नहिं नेकहु आँसुन धार रुके
बोले प्रभु हैं हम दास अभागे।
इन चरणन को प्रभु दास हुँ मैं
इनको तजि और नहीं कछु माँगे।
निर्मल यदि भक्ति मेरी इनमें
सँग राखि के मोहि बनाउ सभागे।।

कर फेरिके शीष पै राम कही
घबराउ न बन्धु चलो सँग में।
निज मातु पै जायके आयशु लो
उन्हें धीरज दे परि पाँयन में।
लक्ष्मण पद मातु के शीष धरो
कही राम जी जाय रहे वन में।
जननी निज आयशु देहु मुझे
उनके सँग जाउँ मैं कानन में ।।

सुनतहि जननी मन वज्र गिरो
कछु बात नहीं उनके मुख आये।
उन घोर विपत्ति को काल लखो
कही रावको को कैसे समझाये।
यह तो अति नीच सो काम भयो
इतिहास हु नाँहि क्षमा कर पाये।
फिर धीरज बाँधि के मातु कही
वन जाउ लखन बनि राम के साये।।

जहँ राम रहें साकेत वहीं
अरु राम बिना यह धाम हु कानन।
जेहिको सुत राम को सेवक हो
तेहि मातु को ऊँच रहे नित आनन।
सुन मातु निपूती भली उनने
नहिं राम बसैं जिनके सुत के मन।
मम कोख को जाय निहाल करो
बनि राम के दास रहो सँग कानन।।

लक्ष्मण निज मातु से माँगि विदा
गये दौरि जहाँ सिय औ रघुराई।
फिर नेह सौं पाँव छुए उनके
कही साथलियो प्रभु कीन्ह भलाई।
फिर राव के पास तुरन्त गये
सिय लक्ष्मण के सँग में रघुराई।
उन तात के पाद में माथ धरो
कहीजात हैं वन तब आयशु पाई।।

सुनतहि हुइ व्याकुल भूप गिरे
तब दीन्ह सचिव उनको बैठाई।
नृप राम को गोद बिठाय लियो
अरु रोय परे कछु बात न आई।
धरि धीर कही कोइ पाप करे
फल पाय कोई विधि की निठुराई।
अति व्याकुल हुइ नृप राम लखे
उर से उनको पुनि लीन्ह लगाई॥

जब सीय ने पाँव छुए पितु के
बिलखाय लियो उर भूप लगाई।
तुमको नहिं कानन वास दियो
मत जाउ सुता रहो सास पै जाई।
समझात रहे सबहीं सिय को
पर काहु की बात न सीय को भाई।
अति मोह में भूप परे लखि के
तमकी कैकयी कही मुँह बिदकाई॥

अति मोह में राम पिता तुम्हरे
कहिहैं नहिं ये वन को तुम जाऊ।
तुम राम गये यदि ना वन को
जग में अपयश हुइहै अति राऊ।
जे लेहु पट भूषण तापस के
करो सोच के ठीक उदार स्वभाऊ।
अति सुन्दर राम को बात लगी
उरमें मनो बाण लगो सुन राऊ॥

श्रीराम चले मुनि वेश धरे
सँग में सिय औ लक्ष्मण प्रिय भाई।
पुनि पुनि जननिन कर पाँव छुए
पितु पादन में दियो शीष नवाई।
तब भूप अचेत हो भूमि गिरै
हा राम पुकारि बड़े बिलखाई।
कही काहे न प्राण गये अब लौं
अब जासे बड़ो दुख और का आई॥

श्रीराम लखन सिय को सँग ले
सब विप्रन पूजि वशिष्ठ पै आये।
लिये दासी औ दास बुलाय सभी
उन्हें सौंपि कही गुरु से सिरनाये।
इनके अब आपहि मातु पिता
इन्हें कष्ट कछू अब होन न पाये।
पितु मातु हमार दुखी अति ही
पुरवासिन दुःख समुद्र नहाये।।

❋

ऋषिराज ये आपसे है विनती
करियो वह ही सब होय सुखारी।
पुरवासिन से तब राम कही
तुम हो अति प्रिय हमरें हितकारी।
करियो सोइ दाह मिटे उर को
मम मातु पिता पर है दुख भारी।
फिर गौरि गणेश को ध्याय चले
पुरजन रोये नयनन भरि बारी।।

कछु चेत भयो उठिके नृप ने
दृग बारि को डारि सुमंत्र बुलाये।
कही राम को रथ बैठारि सखा
सिय संगहि वन दिखलाय के लायो।
यदि राम न मानहिं तोरि गिरा
तब सीतहि को समझाय के लायो।
सँग चार दिना रहिके वन में
समझाय के तुम उनको ले आयो।।

रथ पै चढ़िके मुनि वेश धरे
श्रीराम चले वन सीय औ भ्राता।
पुर लोग थे चित्र लिखे से खड़े
अति व्याकुल आय नहीं कछु बाता।
सब धाड़िन मारिके रोय परे
नहिं चैन परे टूटत उर नाता।
सब राम के संगहि दौरि चले
कहें प्राण गये इन्हें रोक विधाता।।

समझाय के फेरत राम उन्हें
तब जाय तुरत पुनि लौट के आयें ।
पशु पक्षिहु तक बिलखान लगे
पुर वृक्ष खड़े चुपचाप सुखाये ।
बिनु राम अवध कोइ काम नहीं
पुरजन, पशुपक्षिहु संग में धाये ।
सब राम के प्रेम के बन्ध बँधे
नहिं लौटत राम कोहू अतिभाये ।।

घर लौट लो नेह सौं राम कहें
नहिं मानत वे उनके समझाये ।
पुरवासिन को प्रभु प्रेम लखो
कइ नेह समुद्र हृदय उमड़ाये ।
मन सोचत कोइ उपाय प्रभू
बिधि जाहिसे ये सब लौट के जायें ।
जब रात भई सब सोय गये
रघुनाथ तुरन्त सुमंत्र बुलाये ।।

कही माया से देर लौं सोइहैं ये
रथ प्रात चलो एहि भाँति चलाई ।
रथ चिन्ह बने नहिं भूमि कहूँ
लखिताहि कोई सँग आय न पाई ।
रथ प्रातहि हाँकि सुमंत्र चले
जस राम कही तेहि भाँति चलाई ।
तिनके सँगही रथ बैठ चले
श्रीराम लखन अरु जानकी माई ॥

प्रभु प्रेरित देर लौं सोये सभी
अति व्याकुल भये जब राम न पाये ।
सब भूपर खाय पछाड़ गिरे
कहिके विधि का दिन आज दिखाये ।
बिनु राम के जीवन व्यर्थ भयो
हरिले कोइ प्राण यही मन आये ।
कोइ कोई कहें जियो राहतको
जब जाय अवधि प्रभु लौटके आयें ॥

अति आकुल व्याकुल लौट परे
मन बिलखत धीरज नेक न आये।
बिनु राम के देखि अवधपुर को
सब पागल से घूमत घबराये।
समशान सो पुर उन्हें देखि परो
मनो डेरा वहाँ होय भूत जमाये।
श्रीराम वियोग वियोगी भये
सब शून्य लखैं नयनन पथराये॥

❋

इक दूजे को धीर बँधायँ सभी
पुनि मन्दिर जाय करैं व्रत पूजा।
हुड़कैं कहैं चारहु भाइन में
शुभ चिन्तक राम सो और न दूजा।
अपनेहि मन से कोइ कोई कहैं
अइहैं श्रीराम कहीं मत तू जा।
सब रोय के राम पुकार रहे
तहँ रामहि शब्द समाज में गूँजा॥

सब रोवत राम वियोग दुखी
करें काह कछू कोइ सोच न पाये।
जल बाहर हो मनु मीन पड़ी
उछले छटके पुनि भू गिरजाये।
कोइ कोइ गुण राम के गाय रहे
कोइ चुप बैठे दृग नीर बहायें।
अति शोक भरी सिगरी नगरी
तहँ काहु को कोइ न बात सुहाये ।।

उत संग सुमंत्र लिये प्रभु को
श्रृंगबेरपुरहि पहुँचे थके हारे।
शुचि गंग को रूप निहारि सभी
कर जोरि खड़े तट बन्ध किनारे।
जग कष्ट निवारण हार प्रभू
करि मज्जन पान अपुन श्रम टारे।
गंगा अति पावन देव नदी
कही राम नहात सभी अघटारे ।।

सिय राम लखन यहँ आय रहे
गुह राज निषाद जबहिं सुन पाये।
फल कन्द औ मूल समाज लिये
दर्शन करिबे श्रीराम के धाये।
प्रभु के पग में सब भेंट धरी
कर जोरिके आपनु माथ नवाये।
तव दास हूँ नाथ! कही गुह ने
धन,धाम,धरणि सौंपत सुख पाये।।

❋

प्रभु दास को गेह पवित्र करो
अब नाथ बसहु चलि गाँव हमारे।
अति नेह सौं राम लगाय हिया
तेहि पूछि कुशल निजपास बिठारे।
कही राम ने आयशु है पितु की
वनवास करौं मुनि वेश को धारे।
दसचार बरस नहिं गाँव घुसौं
मम मित्र न हो मन माँहि दुखारे।।

सब नारि प्रसन्न भईं लखि के
नृप दशरथ राज सराहन लागीं।
नहिं भेजत भूप जो कानन में
हम देखि इन्हें कस होति सभागी।
आये एहि ठाँव पै देख सखी
हम दर्शन पाय भये बड़भागी
कछु नारि कहें बन कष्ट बड़े
पद कोमल कंटक काँकर लागी॥

अति सुन्दर पीपल वृक्ष घनो
श्रीराम को तब गुह राज दिखायो।
सुन्दर थल रात्रि विराम करें
प्रभु को यह ठाँव बहुत मन भायो।
लइ घास औ पल्लव पत्रन को
शुचि साथरि एक निषाद बिछायो।
अति आदर से गुहराज तभी
सिय राम को लाय वहाँ बैठायो॥

आसन कछु दूर सुमन्त को दे
तेहि पर साग्रह उनको बैठायो ।
भइ साँझ तबहि दोउ भाइन ने
सन्ध्या वन्दन करि ध्यान लगायो ।
फल कन्द औ मूल निषाद धरे
सबने उनको अति प्रेम से खायो ।
जब सोवन के हित राम गये
उन चरण दबाय लखन सुख पायो ।।

जब सोय गये श्रीराम सिया
कछु दूर लखन बैठे वीरासन ।
बैठो मनो सिंह सजग हुइके
शर चाप चढ़ाय के शत्रु को नाशन ।
रक्षक कई ठाँव बिठाय दिये
गुह ने धनु बाण लिये निज हाथन ।
निज आयुध कों गहिके कर में
बैठे गुह लक्ष्मण को जहँ आसन ।।

भुइ सोवत राम को देख निशा
मन व्याकुल हुइ गुहराज विचारें।
भुइ फूँस बिछौना पै सोय रहे
प्रभु स्वर्ण पलंग पै सोवन हारे।
सिय जनक नरेश विदेह सुता
जेहि वीर ससुर बहु दैत्यन मारे।
अब सोइ सिया भुइ सोय रही
उर काहे न फाटत देखि हमारे।।

कइसे रहे निष्ठुर लोग सभी
जिनने इनको वन माँहि पठायो।
नृप को वश में कियो कैकयी ने
उन कैस जघन्य ये कार्य करायो।
लक्ष्मण प्रिय बैन कहे गुह से
समझाय उन्हें सन्तोष दिलायो।
गत जन्म के कर्मन के फल को
सब भोगत हैं जो भी जग आयो ।।

श्रीराम तो हैं भगवान गुहा
धरि मानव रूप करें नरलीला ।
ये जानकी शक्ति स्वरूप हैं माँ
प्रभु को सेवहिं अतिशय प्रियशीला ।
वन आये हैं कार्य विशेष प्रभू
धरिके मुनिवेश सुदृढ़ तन नीला ।
जेहिने जग में गुह जन्म लियो
मिलिहैं फल कर्म को ताहि रसीला ।।

लक्ष्मण जब खूब प्रबोध कियो
गुह के मन को कछु धीरज आयो ।
बीती यौंहि रात प्रसंगन में
प्राची ग्रह शुक्र तबहिं उग आयो ।
बिखरी नव लालिमा भोर भयो
खग बोलि मधुर सब काहु जगायो ।
रघुवंश शिरोमणि जाग गये
यह जानि लखन, गुह शीष नवायो ।।

निवृत्त जब शौच से राम भये
करके मज्जन शुचि गंग नहाये।
करि नेह निषाद बुलाय तभी
उनसे वट वृक्ष को दूध मँगाये।
मलिके बट दुग्ध को बालन में
श्रीराम औ बन्धु जटायें बनाये।
लखिके यह रूप कुमारन को
मन माँहि सुमंत्र बड़ो दुख पाये॥

मन सोचहिं राव कही हमसे
वन जाय दिखाय इन्हें ले आओ।
सब चार दिना रहि कानन में
अरु पूजि के सुरसरि खूब नहाओ।
लखि के इन रूप डरों मन में
अब कैस कहूँ तुहि भूप बुलायो।
रघुनाथ से जोरिकें हाथ कही
प्रभु लौटि अवध सुख को बरसाओ॥

कर जोरिके राम कही उनसे
मम तात करें मुहि कँह अति नेहू ।
मिलिहै अपकीर्ति उन्हें जग में
उनको प्रण तोड़ि चलूँ यदि गेहू ।
कही सचिव न लौट सको घर जो
देहु भेज सियहि हे सत्य सनेहू।
घबराय सुमंत्र से सीय कही
नहिं जाय सकूँ इन्हें छोड़के गेहू ।।

जब राम सिया इनकार कियो
तो सुमंत्र दुखी हुइके अति रोये ।
कही नाथ अनाथ भई नगरी
सब लोगन के अब भाग्य हैं सोये ।
नृपराज अचेत परे गृह में
सुनके लक्ष्मण कही रोष सँजोये ।
तब हटकेहु राम तुरन्त उन्हें
ऐसे नहिं बोलत तात को कोये ।।

श्रीराम सुमंत्र प्रबोध कियो
समझाय उन्हें अति धैर्य बँधायो ।
फिर जोरिके हाथ कही उनसे
मत बन्धु को रोष पितहि बतलायो।
कहिके मम ओर से नेह भरे
मृदु शब्द उन्हें अति धीर बँधायो ।
रहि के दस चार बरस वन में
फिरआइहौं लौटि सबहिसमझायो ।।

अब जाउ सचिव तुम लौट घरैं
सुनतहि उनके दृग अश्रुन डारे।
हिचकी भरके मन बोझ धरे
सिर नाय के अश्वन को हंकारे ।
हिन हिन बोलें नहिं अश्व चलें
दृग अश्रु भरे सब राम निहारें।
प्रभु ने जब पीठ पै हाथ धरो
तब बाज चलै मनो पाय सहारो ।।

भये देखके दृश्य निषाद दुखी
कितने व्याकुल बिछुड़त भये घोड़ा।
पशु पक्षिहु राम वियोग दुखी
तेहि मातु पिता दुख होय न थोड़ा।
हुइहैं का हाल अवधपुर को
जहँ से सिय राम ने हैं मुख मोड़ा।
अचरज अति होत हमें लखि के
नर कैस जियें जिन्हें राम ने छोड़ा।।

लौटाये सुमंत्र अवधपुर को
सिय राम लखन गंगा तट आये।
प्रभु माँगी जो नाव उतारिबे को
तब केवट ने मृदु बैन सुनाये।
पग छू तब पाहन नारि बनी
मन काठ की नाव तो मोहि जियाये।
पद की रज छू यहु नारि बनी
तब कौन मिरो परिवार चलाये।।

कर जोरिके नाथ करूँ विनती
बिनुधोय चरण नहिं नाव चढ़ाऊँ।
यदि जान चहो उस पार प्रभू
लेहु मान मेरी पुनिपुनि सिरनाऊँ।
जग तारन हार थे सोच रहे
अब केवट को कहि का समझाऊँ।
विहँसे सिय, बन्धु की ओर लखे
कही राम गुहा सुन, पाँव धुलाऊँ।।

भवसागर पार उतारत जो
कहें बेहि गुहा मोहि पार उतारो।
जल केवट पाँब पखारि पियो
परिवार पिवाय के गेह पखारो।
बैठारि के राम लखन सिय कों
गुह संग निषाद के पार उतारो।
तट पै तब नाव को बाँध दियो
पद राम में केवट ने सिर धारो।।

श्रीराम सँकोच कियो मन में
नहिं याहि दई हमने उतराई ।
प्रिय के मन को सिय सोच लखो
मणि की मुदरी दइ शीघ्र गहाई ।
उतराई लो केवट ! राम कही
सुनतहि गुह पाँव परो अकुलाई ।
चरणामृत पाय निहाल भयो
जग कौन सी निधि हम आज न पाई ॥

❋

लक्ष्मण, सिय ने जब जोर दियो
तब केवट ने उनकों समझायो ।
अति आदर सों धरिहौं उर में
प्रभु देहु हमें जब लौटके आयो ।
अइहौं जब घाट तुम्हार प्रभू
तब नाव हमारिहु पार लगायो ।
प्रभु के पग केवट शीष धरो
सियराम अशीष दे वाहि पठायो ॥

प्रभु सुरसरि मज्जन पान कियो
करी स्तुति ताहि नवाय के माथा।
माँ पूरन मोर मनोरथ हों
कही सीय ने सादर जोरि के हाथा।
पुनि पूजिहौं लौट के आय तुम्हें
लक्ष्मण अरु प्रिय पतिदेव के साथा।
सुनि गंग प्रसन्न भई अति ही
कही मोहि सिया तुम कीन्ह सनाथा।।

यश तोर चहूँ दिक है जग में
सब जानत हैं सिय की प्रभुताई।
तुम मोहि बड़प्पन आय दियो
अति कीन्ह कृपा यह तोरि बड़ाई।
मन तोहु अशीष है देत तुम्हें
तव कामना पूर्ण सभी हुइ जाई।
शुचि सुरसरि की सुनि बात सिया
हरषाइ हिया अति ही सुख पाई।।

श्रीराम निषाद बुलाय कही
तुमहू अपने गृह लौट के जायो।
सुनतहि गुह को मुख सूख गयो
मन बाण लगे खग सो मुरझायो।
रखियो प्रभु चार दिना सँग में
अबलों जस मोहि प्रभू अपनायो।
तुम्हें राह दिखाइहौं कानन में
अरु छाइहौं पर्ण कुटी मनभायो।।

❋

मिलिहै प्रभु आयशु जो तुम्हरी
करिहौं परिपालन मैं हरषाई।
श्रीराम ने प्रेम लखो उर को
कही संग चलो तुमहू प्रियभाई।
लौटाय दिये गृह अन्य सखा
गुह प्रेम प्रबोधि उन्हें समझाई।
शिव गौरि गणेश को ध्याय चले
सिय, बन्धु, गुहा सँग में रघुराई।।

निशि वृक्ष के पास निवास कियो
भइ प्रात प्रयाग के दर्शन पाये ।
यह तीरथ राज पुनीत महा
महिमा इनकी कोइ गाय न पाये ।
अक्षय बट वृक्ष पवित्र जहाँ
श्रीराम जी संगम जाय नहाये ।
महिमा बड़ी तीरथ राज की है
गुह, सीय, लखन कहँ राम बताये ।।

सिय के सँग लक्ष्मण राम गुहा
ऋषिवर भरद्वाज के आश्रम आये ।
अर्चन वन्दन करिके मुनि को
तेहि चरणन में सबशीष नवाये ।
पूछी ऋषिराज कुशल उनसे
शुचि आसन पै सबको बैठाये ।
परसे फल, कन्द औ मूल उन्हें
सिय,राम,लखन,गुह नेह सौं खाये ।।

मुनि कही तब दर्शन पाय प्रभू
हमरे कई जन्म के पाप नसाये।
कर जोरिके राम कही उनसे
प्रभु आप महान बड़ो यश पाये।
हम सेवक हैं सब सन्तन के
प्रभु पाद में जो निज ध्यान लगाये।
ऋषि कही नर रूप में ईश्वर हो
मम भाग्य बड़े प्रभु आश्रम आये।।

जब लोग प्रयाग के जानि गये
मुनि आश्रम में दशरथ सुत आये।
उन्हें देखन कों सब दौरि परे
शुचि सुन्दर रूप उन्हें अति भाये।
श्रीराम प्रणाम कियो सबको
सुकुमारन को सब शीष नवाये।
सिय की छवि देख के नारि कहें
नृप कैस निठुर वन जो पठवाये।।

श्रीराम को रूप निहारि सभी
अपने अपने मन में सुख पाये ।
कहें भाग्य बड़े हम लोगन के
प्रभु कीन्ह कृपा एहि ठाँव पै आये ।
मन होत है साथ रहें इनके
रहें राम यहीं कबहूँ नहिं जायें ।
हम खूब करें सेवा उनकी
नितही प्रभु के दर्शन हम पायें ॥

वहँ रात विराम कियो प्रभु ने
सँग सीय, गुहा, लक्ष्मण सुख पाये ।
जब प्रात भई श्रीराम कही
ऋषिराज हमें अब मार्ग बतायें ।
अति प्रमुदित हुइ मुनि नाथ कही
सब जानत हो तुम्हें कौन जनाये ।
फिरहू उन शिष्य बुलाय कही
सँग जाय इन्हें वन राह दिखायें ॥

जब आय गये यमुना तट पै
ऋषि शिष्य दिये प्रभु ने लौटाई ।
यमुनहि कर जोरि प्रणाम कियो
सिय सँग स्नान किये दोउ भाई ।
तट पै बसे गाँव के लोगन ने
सुनी राम लखन सँग में सिय आई ।
सब दौरि परे तेहि दर्शन को
भये देखि चकित प्रभु सुन्दरताई ।।

तपलीन युवा इक आये वहाँ
श्रीराम कमल पद में सिर नाये ।
मम इष्ट हैं वे पहिचान गये
दर्शन करके अति ही सुख पाये ।
पुनि बन्धु को आय प्रणाम कियो
सियकी पग धूलि को माथ लगाये ।
मुनि को गुह राज प्रणाम कियो
तेहि आशिष पाय हिया हरषाये ।।

श्रीराम प्रबोधि निषाद सखा
समझाय कही अपने गृह जायें ।
प्रभु आयशु पाय दुखी मन से
सिरनाय गुहा गृह लौटके आये ।
सिय, राम, लखन कर जोरि तभी
सविता तनया यमुनहि सिरनाये ।
मग माँहि चले पुनि रामलला
सिय औ प्रिय बन्धु को संग लिवाये ।।

मग जात बटोहि अनेक मिले
दोउ भाइन देख के सोच करें ।
नंगेहि पद जात कठिन मग है
सुकुमारन देखि सँकोच करें ।
वन में गज, सिंह अनेक बसें
मग व्याघ्रन पुंज किलोल करें ।
कहें साथ चलें पहुँचायँ वहाँ
प्रभु आप करें विश्राम जहाँ ।।

जिन गाँवन के ढिग से निकरैं
सिय राम लखन हरषैं नर नारी।
सब दर्शन के हित दौरि परैं
अपने अपने गृह काज बिसारी।
छवि देख के राम लखन सिय की
नर नारि सभी अति होत सुखारी।
जिन जानी थी कैकयी की करनी
मन क्षोभ भरें देंय ताहि को गारी॥

पुनि हाथन जोरि कहें प्रभु से
बट छाँह में बैठ तनिक बिलमायें।
शुचि पात बिछौना बिछाय वहाँ
करि आग्रह उन सब को बैठायें।
फिर नीर पवित्र कलश भर के
सिय राम लखन कहँ लाय पिवायें।
सब राम को रूप न देख थकें
अति हर्षित हुइ स्वर्गिक सुख पायें॥

मग पूछति आय के ग्राम त्रिया
हे सिया कहो कौन से कन्त तुम्हारे।
अति सुन्दर श्यामल गौर में से
सिय कौन धरे उर माँहि सम्हारे।
प्रभु श्यामल जो धनुबाण धरे
पति मोर कही करि नैन इशारे।
अति वीर जो गौर शरीर धरे
कही सीय हैं देवर वीर हमारे॥

❋

सुनिके सब भाव विभोर भईं
तिय सीय को देंहि अशीश हजारी।
सब बोलि के बैनन प्रेम पगे
कहें आइयो सिय फिर लौटति बारी।
जइहौं अब, राम कही जबहीं
सुनिके नर नारि कियो मन भारी।
रघुनाथ रुको कछु रोज यहाँ
कर जोरि कहें भरिके दृगबारी॥

उन्हें राम सिया मृदु बैन कहे
परितोष के उन सबको लौटारे।
रघुनाथ को जात लखो जबहीं
पछितात खड़े सब लोग दुखारे।
प्रभु नंगेहि पाँयन जाय रहे
विधि काहि नहीं मग फूलन डारे।
दृग अश्रु बहावत लोग गये
सियराम को निज मन में बैठारे॥

❋

मग में परे गाँवन के सबही
नर नारि प्रसन्न हों राम निहारी।
छवि देख के सीय रमापति की।
पुलके, मनो पाय लई निधि सारी।
धनि वे पितु मातु जियाये इन्हें
जेहि गाँव बसैं धनि धनि नरनारी
जेहि कानन में बसिहैं अब ये
धनि शैल, विटप, वन, जीवनधारी॥

मग राम के पीछेहि सीय चले
उनके पीछे लक्ष्मण धनुधारी।
मनो ब्रम्ह औ जीव के बीच में हो
माया सी वहाँ मिथिलेश कुमारी।
जेहि ठाँव पै राम के पाँव परें
चले सीय बचाय के पाँव सम्हारी।
पग चिन्ह बचाय के दोउन के
सौमित्र चलें उनको उरधारी ।।

बट छाँह को देख के राम रुके
वैदेहि थकी उनने जब जानी।
फिर खाय के कन्द औ मूलन कों
सबने पियो शीत तड़ाग को पानी।
निशिराम सिया भुइ सोय गये
गये बैठि लखन शर चाप ले पानी।
प्रभु प्रात की लालिमा देखि जगे
[illegible] प्रथम भयो भोर जो जानी ।।

निवृत हुइ प्रात के कर्मन से
रघुनाथ चले सिय बन्धु लिवाई।
पहुँचे बाल्मीकि के आश्रम पै
अति हर्ष भयो लखि सुन्दरताई।
ऋषिराज सुनी प्रभु आय रहे
उठि स्वागत कीन्ह हृदय हरषाई॥
अति नेह सौं पाँव छुए मुनि के
सिय राम लखन भक्तन सुखदाई॥

❋

बैठारि सुआसन पै प्रभु को
मुनि ने फल कन्द औ मूल मँगाये।
उर को लखि प्रेम रमापति ने
लक्ष्मण सियके सँग बैठके खाये।
छवि देख के राम की रूप मयी
ऋषिराज प्रसन्न भये सुख पाये।
पितु मातु को राम अभार कियो
मुनि के दर्शन जिन कारण पाये॥

ऋषिराज बताइये ठाँव मुझे
कहो राम जहाँ मैं रहूँ वन में
मुनि ने कही ब्रम्ह हो राम तुम्हीं।
प्रभु वास करो सबके मन में
तव नाम अजानेहु जो सुमिरे
भव पाप मिटें तेहिके क्षण में।
कही राम बड़प्पन है तुम्हरो
भगवान बसैं तुम्हरे मन में॥

कोइ ठौर न देखि परै हमको
मुनि ने कही राम जहाँ पै न हो।
उर संत में जाय के आप रहें
जहँ पै कलिकाल को वास न हो।
अथवा जो दरिद्र हैं दीन दुखी
उर वास करो उन्हें कष्ट न हो।
निशि वासर आपको नाम जपैं
करो वास जहाँ मन निर्मल हो॥

ऋषि आप महान हैं राम कही
मुनि तीनहु काल की जानन हारे।
जहँ पर्ण कुटी को बनाय रहूँ
वह ठौर बताउ, हो योग्य हमारे।
चित्रकूट बसो मुनि नाथ कही
तपलीन ऋषी तव बाट निहारें।
अति पावन गिरि जहँ सिंह बसें
बहे मन्दाकिनि उर सुरसरि धारे।।

तब आयशु पाय महाऋषि की
श्रीराम लखन सिय गिरिवर आये।
गिरिराज, पवित्र, महा सुखदा
मन्दाकिनि को लखिके हरषाये।
श्रीराम को देखन देव गये
निज कोल किरात को वेश बनाये।
करके प्रभु पाद प्रणाम सभी
मिलि सुन्दर पर्ण कुटीर बनाये।।

अति सुन्दर पर्ण कुटीर बनी
तहँ वास करें सिय लक्ष्मण रामा ।
नित दर्शन आय मुनीश करें
छवि रामलखन सिय की अभिरामा ।
गिरिराज पै मानहु आय बसे
हित देवन के कोटिक रति कामा ।
जब बात ये कोल किरात सुनी
दर्शन हित दौरि परे तजि कामा ।।

सँग ले फल कन्द औ मूलन को
भरि दौनन में उपहार धरे ।
सिय राम लखन तुम खाउ इन्हें
कहें आदर से अनुराग भरे ।
हुइ भाव विभोर लखैं हरिको
प्रभु देखत ही सब त्रास हरे ।
निर्मल मन निश्छल भाव भरे
प्रभु के पग में सब माथ धरे ।।

अब आप रहें येहि ठाँव प्रभू
हमें आयशु देत सँकोच न कीजे।
हम देखे हैं कन्दर खोह सभी
वन विचरण हेतु हमें सँग लीजे।
जग पालक, हे रघुनाथ प्रभू
मुनि वृन्द कहें दर्शन नित दीजे।
खग, मृग, सरिता, गिरि वृक्षन को
करि वास यहाँ प्रभु पावन कीजे।।

गिरि, कानन भाग्य सराहें सभी
बसते जहँ राम, लखन, वैदेही।
सिय राम के पावन बैनन कों
सुनकें वन लोग हृदय सुख लेंही।
मधु ऋतु तेहि कानन छाय गई
तरु फूलि के नित्य मधुर फल देंही।
गिरि कामद स्वर्ग समान भयो
नन्दन वन सो सबको सुख देंही।।

सिय तो रघुबीर में ऐसि रमी
पितुमातु की हू सुधि ताहि न आई।
निज सास ससुर कोहु भूल गई
तहँ पाय के मुनि पत्नी मुनि राई।
गिरि कानन आनद रूप भयो
जहँ वास करें सिय सँग दोउ भाई।
तप लीन ऋषी जब ध्यान करें
उन्हें राम में दें निज इष्ट दिखाई॥

❋

तेहि कानन आनँद छाय गयो
ताहि शारद, शेष सकें न बखानी।
वन में सब देव निवास करें
गिरि कामद पै प्रभु को पहिचानी।
फल, फूल, विटप नित नूतन दें
अरु मन्दाकिनि सुरसरि शुचि पानी।
खग मृग केहरि सँग केलि करें
अति नेह भरे पहुँचाय न हानी॥

जब राम को भेज निषाद फिरे
तो सुमंत्र मिले बैठे मुरझाये ।
दक्षिण दिशि बाज विलोकि दुखी
हिनहिन करि ठाढ़ बिना कछु खाये।
लखि के गुह आये अकेलेहि हैं
परे फूट सुमंत्र बड़े बिलखाये ।
दोउ नयनन नीर की धार बहे
गये सूख अधर, उर चैन न आये।।

उन कही यह काह निषाद भयो
अब कौन सो मुख लेके गृह जाऊँ।
तजिके प्रिय राम लखन सिय को
अब जाय अवधपुर काह बताऊँ।
सिर को धुनि के पछितात खड़े
नृप पूछिहैं तो उन्हें का बतलाऊँ।
कर पाद हृदय सब ढील भये
रथ नाहिं हँके कस लौट के जाऊँ।।

जब शोक सुमंत्र, निषाद लखो
तजि धीर, हिया भर के बिलखाने।
बैठारि गुहा रथ में उनको
खुद हाँकि चले पथ में पहुँचाने।
सब बाज शिथिल नहिं पाँव चलैं
मग देखत राम गये कित जाने।
लखि दीन तुरंगन केरि दशा
गुहराज निषाद विषाद में साने॥

कर फेरि के पीठ पै अंक भरे
पुचकारि निषाद चलावन लागे।
रथ बैठि सचिव अति शोक भरे
निज शीष धुनें पछितावन लागे।
मुख कौन सो लै सिय राम बिना
जइहौं अब मैं पितु-मातु के आगे।
रथ देख के राम बिना कहिहैं
सब, आज सुमंत्र भये हो अभागे॥

रथ बैठ के बिलखत जात चले
दोउ आय गये तमसा के किनारे।
विनती करके समझाय उन्हें
दुख पाय सुमंत्र गुहा लौटारे।
उर माँहि विषाद निषाद भरे
गृह लौट चले मन राम बिठारे।
रथ हाँकि सुमंत्र बढ़े मग में
अति व्याकुल से अपनो मन मारे।।

❋

मध्यान्ह अवधपुर देखि परो
रथ रोक दियो बट वृक्ष के नीचे।
सिर थामि सुमंत्र थे बैठ गये
दोउ आँखिन मूँद किये मुख नीचे।
दिन में पुर जान की शक्ति नहीं
अस लागत प्राणहीं काहु ने खींचे।
डरपत पुर में गये रात भयें
रथ छोड़ि छुपत नयनन जल सींचे।।

निज नैन चुराय सुभंत्र चले
मनो हों गुरु मातु पिता कहँ मारे।
पहुँचे नृप द्वार दुखी मन से
पग बोझिल से टरते नहिं टारे।
गये राम की मातु के धाम, लखो
बिनु राम विकल नृप भूमि पै डारे।
रथ को पुर लोग विलोकत ही
सब दौरि के आय गये नृप द्वारे।।

अति आरत हुइ सब पूछि रहीं
भय आतुर सी दशरथ नृप रानी।
उत्तर कछु देत सुमंत्र नहीं
अति आकुल नेत्रन से बहे पानी।
सुनिके कछु भूप सचेत भये
गृह लौट के आये सुमंत्र ये जानी।
अति प्रेम से पूछत राव उन्हें
तुम साँच कहो हमसे गुण खानी।।

कहँ हैं मम राम सुमंत्र कहो
गये कानन या गृह लौट के आये।
विनती उन मोरि सुनी अथवा
मम आग्रह को सबही ठुकराये।
मोहि शीघ्र बताउ, बिना उनके
मम प्राण विकल उर चैन न आये।
अवरुद्ध गला हिचकी भरके
रहे ठाढ़ सुमंत्र थे शीष झुकाये।।

❋

अति नेह से धीरज कों धरि के
थी सुमंत्र कही नृप से मृदु बानी।
प्रभु हो अति धीर औ वीर महा
तुम मीत हो देवन के अति ज्ञानी।
यश-अपयश जीवन-मृत्यु सभी
नृप है बिधि हाथहि लाभ औ हानी।
सुख में पुलकें, दुख में बिलखें
नर मूरख हैं, अति ही अज्ञानी।।

नृपराज कहैं तुमसे हम ये
सुनियो धरि धीर विवेक विचारी।
तमसा तट प्रथम निवास कियो
अरु दूसर सुरसरि तट दुखहारी।
बट दुग्ध मँगाय के प्रात भये
सुत केश लगाय बने जटा धारी।
गुहराज ने आदर दे उनको
फल, मूल खवाय थकान उतारी॥

फिर नाव मँगाय के राम सखा
अति नेह सों उन सबकों बैठायो।
श्रीराम ने बिलखत देखि हमें
करि नेह बहुत बिधि से समझायो।
कही तात से जाय के आप कहैं
मम कारण ही उनने दुख पायो।
जब जाय अबधि अइहौं तब मैं
कहिके तुमको पुनि-पुनि सिर नायो॥

चिन्ता नहिं तात करें हमरो
श्रीराम कही परि पाँव तुम्हारे।
वन में सब भाँति सुखी रहिहौं
उर में धरिके पितु पाद तुम्हारे।
सिर नाय के उन गुरु हेतु कही
समझायँ पितहि नहिं होंय दुखारे।
जब लौट के आँय भरत, कहियो
उनसे करें राज न नीति बिसारे।।

समभाव से पालहिं मातु सभी
रहें पुरजन परिजन आदि सुखारी।
तेहि ठाँव लखन कछु रोष कियो
हटकेहु उन्हें राम सुबैन उचारी।
पुनि-पुनि सिर नाय कही उनने
यह तात से कहि मति कीजो दुखारी।
सब नाव चढ़े उस पार गये
मोहि छोड़के बिलखत ही येहि पारी।।

सुनके बिलखे नृप भूमि गिरे
अरु खोय दई अपनी सुधि सारी।
रनिवास बड़ी चित्कार मची
बिलखें नृप ज्यौं मछली बिनु बारी।
सब रानिहु रोवंति धीर नहीं
मुख भीग गये बरसो दृग बारी।
मन धीरज धर कछु थिर हुइके
श्रीराम की मातु ये बैन उचारी।।

हे नाथ ! तनिक मन धीर धरो
तुमही मम नाव के खेवन हारे।
जब आपहि धीरज खोय रहे
तब आश्रित तो मरिहैं बिनु मारे।
मन सोचहु आइहैं एक दिना
श्रीराम लखन सिय पास हमारे।
उनके जब शीतल बैन सुने
नृप ने क्षण को निज नैन उधारे।।

उन की अति कष्ट में रात कटी
बिलखत रहे मीन ज्यौं भूमि पै डारी।
जोइ शाप श्रवण पितु-मातु दियो
वो सुनाई कथा नृप रानिहि सारी।
अब राम को कोइ बुलाय यहाँ
देहु मोहि दिखाय हरो दुख भारी।
हा राम! पुकारि पुकारि तभी
नृप राज गये सुर लोक सिधारी ॥

❋

पुर में अति हाहाकार मची
सब शोक में डूबि गये नर-नारी।
रानी सुधि खोय विलाप करें
पटकें सिर को सब भूमि पै डारी।
सबही नर-नारि थे रोय रहे
देंय शोक भरे कैकयी कहँ गारी।
सुनि के मुनि आये अनेक वहाँ
गुरुदेव प्रबोधि ये बात उचारी ॥

अब धीर धरो मन में सबही
द्रुत धावक एक तुरन्त बुलायें ।
वह कैकय देश को जाय अभी
अरु भरत को संग लिवाय के लाये ।
कहियो दोउ भाइन से उनको
ऋषिराज वशिष्ठ तुरन्त बुलाये ।
गतिमान तुरंगन पै चढ़िके
अति वेगहि दुइ धावक धरि धाये ।।

दोउ जाय संदेश दियो उनको
अतिशीघ्र चलो गुरुदेव बुलाये ।
गतिमान तुरंगन के रथ पै
चढ़िके दोउ बन्धु तुरत धरि धाये ।
उन्हें असगुन होत अनेक मिले
तिन्हें देख भरत मन में घबराये ।
प्रभु कोइ अनिष्ट न हो घर में
यह सोच कें गौरि गणेश मनायें ।।

अति वेगि चलाय तुरंगन को
सँग बन्धु भरत पुर द्वार पै आये।
पुर शोक सनो उन्हें देखि परो
लगे ऐस कोई दोउ छोर जराये।
श्रीहीन खड़े नर-नारि दिखे
कोउ दौरि के भेंट करन नहिं आये।
मिले राह जुहार कियो उनने
अपने-अपने मुँह को लटकाये ।।

मम पुत्र भरत अब आय गयो
सुनके कैकयी मन में हरषाई ।
कुबड़ी सँग साज बनाय सभी
कर आरति ले तेहि द्वार पै आई।
अति हर्षि के भेंट करी सुत से
कुटिला उन्हें ले रनिवास में आई।
मम नैहर के का हाल लला
हुइ प्रमुदित पूछि रही कुशलाई ।।

सुत कही सब ठीक वहाँ जननी
अब आप कहें गृह की कुशलाता ।
यहाँ कोई न मोहि दिखाई परे
कहँ हैं हमरे पितु औ सब माता।
श्रीराम सिया नहिं देखि परें
कहँ जाय छिपे लक्ष्मण लघु भ्राता।
अति नेह सों नयनन नीर भरे
तब बोलीं भरत सन कैकयी माता ।।

प्रिय तात सम्हारी मैं बात सभी
अरु मंथरा कीन्ह सहाय हमारी ।
बिधि थोड़ी सी बीच बिगारि दई
नृपराज मरे गये स्वर्ग सिधारी।
सुनि भूप मरे, सुत भूमि गिरे
अति व्याकुल हुइ हा तात ! पुकारी।
पुनि धीर धरो पूछी उठिके
कहु कैस पिता निज देह बिसारी।।

कैकयी भरि आँखिन अश्रु कही
हुइके प्रमुदित सब बात बताई।
वर माँगि लिये नृप से हम दो
तोहि राज मिले रघुपति वन जाई।
जब राम को उन वनवास सुनो
गये भूल वे तात मरण दुखदाई।
हा राम ! पुकारि के भूमि गिरे
कही काहिन बिधितोहि लीन्हउठाई।।

रहती भली बाँझ सदा, निठुरा
अथवा मैंहि जन्मत ही मर जातो।
फिर भूप से ना वर माँगि कोई
मोहि तात से ना एहि भाँति छुड़ातो।
नहिं कोइ भी राम लखन सिय को
तब कानन में मुनि वेश पठातो।
कुटिला तोहि सोच नहीं मन में
मोहि राम बिना कछु नाहिं सुहातो।।

तुम्हरे अघ कर्मन से जननी
भरतहि बिधि घोर से पाप में डारे।
वह रौरव नर्क में वास करे
मनों हों गुरु महिसुर कोटिन मारे।
कही मातु ने तात न सोच करो
अब तोरि कही जरे नौन सो डारे।
पापिन मम शत्रु है मातु नहीं
भरि शोक भरत अस शब्द उचारे।।

❋

सोलहु श्रंगार करे कुबड़ी
निज रूप सम्हारि वहाँ जब आई।
रिपुसूदन पाद प्रहार कियो
तेहि बाल पकरि उन दीन्ह गिराई।
वाहि लातन मारि घसीट रहे
तेहि कूबड़ तोड़ि हरी कुटिलाई।
गहि पाँयन फूट के रोय परी
सुनि आय भरत तेहि दीन्ह छुड़ाई।।

गये राम की मातु पै बन्धु दोऊ
रही व्याकुल शोक भरी कृशगाता ।
लखें शून्य में फारिके नेत्रन कों
मुख से नहिं आय रही कछु बाता ।
परि पाँव भरत तेहि रोय कही
मम पाप बड़ो क्षमियो मोहि माता।
मम जीवन व्यर्थ है राम बिना
उर बिलखत है काहि छोड़ न जाता ।।

सिर को धुनि के पछितात खड़े
तब मातु लियो उन्हें गोद बिठारी।
कही मातु न सोच करो मन में
सुत होनी को कोइ सके नहिं टारी।
सब लायक ही तुम सक्षम हो
अब सोइ करो हों लोग सुखारी ।
सुत राम में नेह अटूट तेरो
प्रिय तोहि लगें सब ही महतारी ।।

जननी मम पापिन है कुटिला
प्रस्तर उर ने ऐसे वर माँगे।
नहिं जीवन जीवन राम बिना
हैं प्राण वही प्रभु पद अनुरागे।
बिनु राम के जीवित हूँ अबलौं
मम प्राण अबहु लग काहि न भागे।
उन्हें राम की मातु लगाय हिया
सिर फेरिके हाथ बहुत अनुरागे॥

❋

एहि भाँतिहि रात व्यतीत भई
भई प्रात वशिष्ठ ऋषी तहँ आये।
भरतहिं उपदेशि प्रबोधि मुनी
इक सेवक भेजि सुमंत्र बुलाये।
नृप को तन तेल से काढ़ि लियो
उन्हें वेद विदित ढँग से हनवाये।
रचि एक विचित्र विमान तभी
नृप के शव को तेहि में पौढ़ाये॥

नृप को अन्तिम सँस्कार कियो
सुत ने जैसेहि मुनि राज बताये ।
फिर जानि सुअवसर को गुरु ने
प्रिय भरत, सुमंत्र सनेह बुलाये ।
अब सोच करो नहिं भूपति को
मुनि श्रेष्ठ सबन बहुविधि समझाये ।
कैकयी अति बुद्धि विहीन भई
जेहिने श्रीराम वनहिं पठवाये ।।

❋

सुख दुख अरु जीवन मृत्यु सभी
सुत हानि औ लाभ पै जोर नहीं
यश अपयश सब विधि हाथ में है
प्रभु की अनुमति बिन भोर नहीं ।
रहे दशरथ भूप महान बड़े
उनसो प्रण पालक और नहीं ।
अब तुम प्रतिपाल करो सबको
वन राम गये नृप कोइ नहीं ।।

जेहिके हित भूप ने प्राण तजे
अपनो तुम लेहु ये राज सम्हारो
पुर लोग, स्वजन सब व्याकुल हैं
करके सेवा उनको दुख टारो ।
वन राम रजायशु पाय गये
तुमहू पितु आयशु को सिर धारो।
गुरु मातु सचिव सब लोग कहें
पितु आयशु पालि उन्हें सतकारो ।।

फिर राम की मातु कही उनसे
गुरु आयशु को तुम सादर मानो।
सुत होनि सदा हुइकेहि रहे
सबको गतिकाल औ कर्म की मानो।
पुरजन, परिजन, अरु मातुन के
अवलम्ब बनो मेरी सुत मानो ।
अपने मन में तुम धीर धरो
पितु आयशु में अपनो सुख मानो ।।

सुनिके गुरु मातु के बैनन कों
गहि पाँव भरत बोले कुम्हलाये।
जननी अघ बोझ दबो सुत हूँ
मोहि देखत ही शुचि फल जरजाये।
मम कारण ही वन राम गये
यह सोचत शीष मेरो झुक जाये।
मन व्याकुल राम को देखन कों
मोहि चैन नहीं उनको बिनु पाये।।

ऋषि कही तुम्हें राम में नेह बड़ो
यह जानत हैं मन में हम सारे।
तुम राम को जानिके राज करो
वन केरि अवधि उनकों उर धारे।
मेरे प्रभु राम कहाँ हुइहैं
भरि नैन भरत यह बैन उचारे।
हमरो उर राम के पाँव बसै
बिनु राम के मैं मरिहौं बिनु मारे।।

बसो बात ग्रहीत कियो ग्रह ने
पियेवारुणि ताहि हो बिच्छिनेमारो।
मम तात मरे वन राम गये
औ मैं राज करूँ वही हाल हमारो।
गुरु हाथन जोरि करूँ विनती
प्रिय मातु सुनो ये विचार हमारो ।
अब होतहि प्रात चलो प्रभु पै
सिय राम चरण रज को सिरधारो।।

❋

यद्यपि अपराधी हूँ मैंहि बड़ो
मम कारण ही उनने दुख पाये ।
मन मोर कहे क्षमिहैं हमको
प्रभु दीन दयालु हैं शील स्वभाये।
अति पाप भरो कुटिला सुतहूँ
अपनाइहैं मोहि अवसि ढिग जाये ।
विनती करके समझाय उन्हें
परि पाँयन कालि लिवाय के ल्यायें।।

सबने ये विचार सुनो उनको
मनो डूबत बीच जहाज हो पायो ।
सुनतहि मिलिहैं वन राम हमें
मन को मुरझो पौधा हरियायो ।
गुरु मातु सचिव पुरवासिन कों
यह भरत विचार बड़ो मन भायो ।
मनो आग लगी थी अवध उर में
घनकारो सो आय भरत बरसायो ।।

❋

सब भरत स्वभाव सराह रहे
गुरु को सिर नाय गये फिर लोगा ।
प्रमुदित उर लोग तयारी करें
निशि आसमें जागिके ही सुखभोगा ।
निज वाहन साज सम्हारि लिये
पुरवासिन ने जो रहे जेहि योगा ।
अति प्रात नहाय तैयार भये
नृप द्वार पै आय गये सब लोगा ।।

जब द्वार लखे पुर लोग सभी
तब भरत कहें प्रिय बैन सुहाये ।
पुर औ सब सम्पति राम की है
यहि राखु सम्हारि न कम हुइ पाये ।
सब ठाँव पै रक्षक बैठ गये
लखि राम को काम हृदय हरषाये ।
लिये कामना राम मिलेंगे हमें
चलिबे को खड़े पुरजन हुलसाये ॥

बैठारि के रानिन को पलकी
सब विप्रन को वाहन बैठाये ।
बहु रथ, करि, बाज अनेक चले
चतुरंगिनि सैन को संग लिवाये ।
गुरु, वेद विहित सामान सभी
श्रीराम तिलक हित साथ धराये ।
चित्रकूट को ओर चले सबही
मिलिहैं प्रिय राम ये आस लगाये ॥

पुर सौंपि भरत निज भक्तन कों
सियराम सुमिरि लघु बन्धु लिवाई ।
गुरु पुरजन औ सब रानिनि के
सँग लोग चले जपिके रघुराई ।
सबतो चढ़ि वाहन जाय रहे
पर पाँव पियादेहि दोनोंहु भाई ।
तब देखि उन्हें सब नेह भरे
उतरे निज वाहन से हरषाई ।।

श्रीराम की मातु लखो जबहीं
सब लोग चलें रथ त्याग के पाँयन ।
कही भरत से नेह में बैन पगे
पथरीली है राह भरी अति काँटिन ।
तुम जो रथ छोड़के पाँव चले
चलिहैं सबहीं जन त्याग के वाहन ।
एहि हेतु तुमहु रथ बैठि चलो
सुत जासौं दुखैं इन काहु के पाँव न ।।

चढ़ि के रथ पै पुनि दोउ चले
सब लोगन कों वाहन बैठाई।
जपि राम को नाम चले सबही
भई साँझ रुके तमसा तट आई।
पुनि प्रात सबहि प्रस्थान कियो
निशि माँहि रुके गोमति तट जाई।
भइ प्रात चले पुनि कानन को
उर में धरिके सिय औ रघुराई॥

❋

सब तीसरि रात रुके सई पै
श्रृँगवेरपुरहि चलके फिर आये।
गुहराज निषाद सुनी जबही
बड़ी सैन समेत भरत यहँ आये।
पुनि सोचि विषाद भरे मन में
केहि कारण सैन को संग हैं लाये।
करिबे जनो राज अकंटक वे
सिय राम लखन कहँ मारन आये॥

पर जानलें वे अपने मन में
मम जीवित कोइ भी मार न पाई।
फिर जाय कही पुर लोगन से
सब नाव औ बाँस डुबाय दो जाई।
फिर युद्ध करें चाहे भूमि गिरें
करि सुरसरि पार वे जान न पाई।
मम राम लखन बलवान बड़े
उनपै इनकी न चले कुटिलाई ॥

यदि राम के काम मरे रन में
तरिहैं भव से कहूँ सत्य सनेहू।
तुम लाउ धनुष अरु बाण सभी
चलो सुरसरि तीर पै छोड़ के गेहू।
बरछी, धनुबाण जो हैं घर में
उनको अपने अपने कर लेहू।
कहि राम सौं गरजत वीर चले
हम रोकिहैं राह न कछु सन्देहू ॥

तेहि क्षण इक वृद्ध निषाद मिलो
अति नेह सौं उन सबकों समझायो।
नहिं हानि भरत सन पूछन में
कहुँ राम को लेन समाज हो आयो।
बिनु जाने कछू यदि युद्ध भयो
पछिताइहौ सब कहि काह करायो।
गुहराज कही यह ठीक कहैं
चलोघाट पैं सबकछु जानिके आयो॥

मिलबे उनकों गुहराज चले
सँग भेंट मधुर फल कन्द लदाई।
उन जाय प्रणाम कियो ऋषि को
अति मोद भरे ऋषि आशिष पाई।
ऋषिराज कही यह राम सखा
भरि नेत्र भरत लियो कंठ लगाई।
पुनि भरतहिं दण्ड प्रणाम कियो
सबने सादर निज नाम बताई॥

लियो भरत उठाय लगाय हिया
गुहराज को राम सखा प्रिय जानी।
अति भाव विभोर भये मिलिके
कही भरत विलोचन में भरि पानी।
तुम धन्य गुहा प्रिय राम सखा
जोइ सेवत थे प्रभु को इन पानी ।
श्रीराम थे कंठ मिले तुमसे
तोहि भेंटत हूँ प्रिय राम सो जानी।।

अति प्रेम विभोर निषाद लखें
अरु भाव विभोर भरत तहँ ठाढ़े।
उन दोउन देखि समाज दोऊ
हुइ विस्मित देखत नेत्रन काढ़े।
गुह भरत में राम स्वरूप लखें
अरु भरत लखें गुह राम हों ठाढ़े।
कही भरत सखा तुम धन्य बड़े
तोहि बाँह में बाँधि के राम थे ठाढ़े।।

पहुँचे शृंगवेरपुरहि सबही
पूजे सुरसरि कहँ जाय किनारे ।
जब भरत ने राम को घाट लखो
अति भाव विह्वल हुइ बैन उचारे।
अति पूज्य हो तट तुम सुरसरि के
तुमने प्रिय राम थे पार उतारे ।
सबसे कही रात्रि रुको यहीं पै
अति पावन ठाँव है गंग किनारे ।।

फिर राम की मातु के पास गये
रिपुसूदन और भरत दोउ भाई ।
उनके पग चापि अशीष लियो
गुह से फिर पूछत पास बुलाई ।
तुम मोहि बतावहु ठौर सखा
जहाँ रात रुके सिय औ रघुराई ।
गुहराज ने वृक्ष दिखाय दियो
जेहि छाँव में राम ने रात बिताई ।।

तेहि वृक्ष के पास तुरन्त गये
भरि अंक मिले तरु को दोउ भाई।
पुनि पुनि तेहि भूमि के पाँव छुए
जहँ पै रहे बैठि सिया रघुराई।
दृग अश्रुन धार बही उनके
कुश साथरि जब देखी उन जाई।
दोउ कीन्ह प्रदिक्षण नेह भरे
तहि बारहिं बार लें शीष लगाई।।

श्रीराम के जब पद चिन्ह लखे
अति भावुक हुइ उन्हें शीष नवाये।
कछु बिन्दु सुवर्ण के देखि परे
उनको सिय पाद समझि दुख पाये।
जेहिके अति धीर विदेह पिता
अरु वीर ससुर जिन्हें देव सिहाये।
सोइ जानकी डोल रही वन में
श्रीराम लखन सँग पाँयन पाये।।

लक्ष्मण प्रिय बन्धु सलोनेहि से
पुरजन, परिजन सबको अति प्यारे।
जोइ लालन योग्य दुलार अभी
वन में भटकत हुइहैं कहँ मारे।
हम भाग्य सराहत हैं उनके
प्रभु संग रहें बनि सेवक प्यारे।
हतभागी हूँ मैं अब काह करूँ
प्रभु चरणन से अति दूर हुआरे॥

❋

श्री राम महा सुख धाम प्रभू
जोइ हैं संसार के पालन हारे।
जिनके चरणन लखि देव ऋषी
अपने अपने सब भाग्य सम्हारे।
प्रभु जो सबके मन वास करैं
पुरवासिन बन्धु औ मातुन प्यारे।
जोइ कारक जड़ चेतन जग के
सोइ सोवत काँस बिछौनिनि डारे॥

यह सोच भरत पुनि रोय परे
कहिके मोहि काहि प्रभू जग जायो।
मम मातु ने भीषण पाप करो
फल दाहिको है हमने यह पायो।
नहिं है कोइ मोसम नीच बड़ो
पदहू श्रीराम के पाय न पायो।
मिलिहैं तोहि राम सनेह बड़े
घबराउ नहीं गुहराज बतायो॥

अब आपहु जा विश्राम करें
गुहराज सनेह उन्हें समझाये।
जब गाँवन के नर नारि सुनो
सब दौरि भरत कहँ देखन आये।
कोइ कहे हम तो हत भागि बड़े
गुह के सँग राम को देख न पाये।
कोइ कोइ कैकयी कहँ कोसि रहे
कोइ भरत स्वभाव को देखि सिहाये॥

एहि भाँतिहि जागत रात कटी
भइ प्रात गुहा बहु नाव लगाई।
बैठारि सुनाव गुरुहि अपने
नई नाव में सादर मातु बिठाई।
उतरे कई बार में पार सभी
तब भरत गिनाय सम्हारि कराई।
फिर प्रात क्रिया करके सबने
पद शीष धरो गुरु, मातु के जाई॥

चले सुरसरि को सिर नाय सभी
उर माँहि धरे सिय औ रघुराई।
गुहराज चले सबको सँग ले
वन राह दिखात हृदय हरषाई।
गुरुदेव औ विप्र चले रथ पै
दियो मातुन को पलकी बैठाई।
उनके पीछे सब सैन चली
मग नंगेहि पाँव चले दोउ भाई॥

पहुँचे कछु काल प्रयाग सभी
जपैं राम सिया उनमेंहि लौ लाये।
यह देखि विषाद भरे सबही
दोउ बन्धु हैं पाँव पियादेहि आये।
दर्शन करि संगम के सबने
फिर पावन नीर त्रिवेणि नहाये।
लखि श्यामल और धवल जल को
रिपुसुदन और भरत सिर नाये॥

*

कर जोरि भरत कही, माँगि रहो
तुमसे निज क्षत्रिय धर्म बिसारी।
नहिं मैं गज बाज औ मुक्ति चहूँ
रहे राम के पाद में प्रीति हमारी।
वरदो मोहि राम सनेह करें
अनुराग रहे उनके पग भारी!
तव भक्ति प्रबल, मृदु वाणि भई
श्रीराम से नेह तुम्हें अति भारी॥

श्रीराम तुम्हें अति नेह करें
सुनतेहि भरत मन में सुख पाये।
तुम धन्य भरत रमे राम में हो
कहिके देवन नभ पुष्प गिराये।
प्रमुदित पुर के सब लोग कहैं
हैं धन्य भरत रामहि अति भाये।
एहि भाँति ही राम जपत सबही
ऋषिवर भरद्वाज के आश्रम आये॥

दोउ बन्धु प्रणाम करी मुनि को
ऋषि नेह भरे उन्हें अंक लगाये।
मुनि आशिर्वाद अनेक दिये
लखि राम भरत उर माँहि समाये।
घर के सब लोग सँकोच परे
मुनि पूछिहैं तो उन्हें का बतलायें।
बैठारि सुआसन पै ऋषि ने
कहीहोनी को कोइ भी रोकि न पाये॥

मुनि कही तुम नाहिं सँकोच करो
कछु दोष नहीं तुम्हरो प्रिय ताता ।
श्री राम तुम्हें अति प्रेम करें
उर राखत तुम उनको निशि प्राता।
बिधु बैठिकें बुद्धि घुमाय दई
निर्दोष हैं सुत तव कैकयी माता ।
ठहरे जब राम लखन सिय थे
तुम्हें खूब सराहत थे तेहि राता ।।

तब भरत कही मोहि सोच नहीं
मम तात गये सुरलोक सिधारी।
उन्हें राम में थो अनुराग बड़ो
बिछुड़त उन नश्वर देह बिसारी।
सिय राम लखन नंगे पग ही
वन में विचरें यह सोच है भारी ।
मुनिवेश धरें कुशपात परें
तरु वास करें सहि आतप बारी ।।

मोहि नींद नहीं बेचैन रहूँ
नहिं भूख लगे नतु प्यास सताती।
मुनिजी तुमसे यह सत्य कहूँ
बिनु राम के कोइ न वस्तु सुहाती।
उर में अति पीर अधीर बड़ो
तड़फे मन ज्यौं चातक बिनु स्वाती।
ऋषि ने कही राम चरण लखि के
तुम्हें आइहै चैन जुड़ाइहैं छाती॥

सुनिके उदगार भरत उर के
प्रमुदित हुइ देवन पुष्प गिराये।
लखिके मुनिराज श्रमित सबको
सब सिद्धिन कों क्षणमाँहि बुलाये।
कही राजन सो सत्कार करो
श्रीराम के भक्त भरत यहँ आये।
क्षण में बहु राजप्रासाद बनें
उनमें सबको सादर ठहराये॥

श्रमहीन समाज भयो क्षण में
हुइ प्रमुदित सब अति ही सुख पाये।
मिले भोजन वस्त्र विलास सभी
जिन्हें देखि विपुल सुरलोक लजाये।
मीठे फल सुरभित पुष्प खिले
मनों आश्रम में ऋतुराज हों आये।
सब लोग कहें इक दूसर से
तप बल अपनो ऋषिराज दिखाये।।

भइ प्रात प्रयाग नहाय सभी
ऋषिराज के चरणन में सिर नाये।
तेहि आशिष पाय प्रयाण कियो
चित्रकूट की ओर को राम मनाये।
जहँ जहँ मग में प्रभु थे ठहरे
गुहराज भरत कहँ ठाँव दिखाये।
नंगेहि पग ना शिरत्राण कछू
मग जात भरत जपि राम स्वभाये।।

लखि भरत को राम में प्रेम बड़ो
अपने मन में सुरपति घबराये ।
उन कही गुरुदेव बृहस्पति से
प्रभु रोकु भरत कहँ जान न पायें ।
परि बन्धु के प्रेम के बन्ध कहीं
पुनि राम अवधपुर लौट न जायें ।
गुरुदेव कही कटुभाव तजो
अपराध कहीं कछु ना बन जाये ।।

शचिनाथ रहस्य कहूँ तुमसे
सब जग श्रीराम को ध्यान लगाये ।
पर राम भरत कोहि नेह करें
उनकों अपने मन माँहि बिठाये ।
तुम केलि न जान सको उनकी
प्रभु दैत्य सँहारन को जग आये ।
सुर के हित साधक राम प्रभू
नहिं बन्धु के आग्रह लौट के जायें ।।

एहि भाँति भरत मग जात चले
पहुँचे यमुना तट साँझ के आये।
श्रीराम सी श्याम लगी यमुना
अति नेह सहित सब शीष झुकाये।
तेहि रात रुके यमुना तट पै
गुह रातहि नाव अनेक मँगाये।
जगे प्रात सबनि स्नान कियो
गुह एकहि बार में पार कराये।।

वन राह दिखात निषाद चले
श्रीराम में ही निज चित्त लगाये।
लखि राम में नेह भरत मन को
भये भाव विभोर सबहि बिसराये।
पथ भूलि के अन्तहि जान लगे
तब देव उन्हें लखि के मुसुकाये।
उन फूलनि डारि के राह दई
तब वे चलिके प्रभु राह पै आयें।।

यद्यपि कोइ देव न चाहत थे
मिलें राम से जाय भरत वन में।
कैसेंहु पथ सेहि यह लौटि सकें
सब सोचत थे अपने मन में।
पर देखि निषाद की भावुकता
सिर नाय दियो उन पाँयन में।
सब भूलि के राह दिखान लगे
सुर फूल बिछाय के कानन में।।

मग जात भरत उर राम धरे
प्रभु मेंहि उनने निज चित्त लगायो।
जितने डग राम की राह चले
उतनो दूनो प्रभु प्रेम बढ़ायो।
जिन लोगन राम को रूप लखो
सबनेहि अधिकार थो मोक्ष को पायो।
पर देखि के आज भरत पद फो
सब लोगन नेंहि परमपद पायो।।

मग जात चले प्रिय बन्धु दोऊ
पुरजन,परिजन, गुह, सैन लिवाये।
मन में सबके श्रीराम बसैं
उनि प्रेम को देखि के प्रेम लजाये।
विस्मित मग लोग थे देखि उन्हें
समझे सब रामलखन पुनि आये।
बिनु सीय विषाद भरे लखिके
पुनि लोग कहें मन में सकुचाये॥

श्रीराम नहीं कोइ और हैं ये
निज संग समाज औ सैन हैं लाये।
लघु बन्धु हैं राम के कोइ कहैं
सिय राम लखन कहँ लैन को आये।
प्रभुपाद में नेह लखो उनको
सबने उनके पद शीष नवाये।
दुइ कोस रहो चित्रकूट जबै
भइ साँझ वहीं सबही बिलमाये॥

तेहि रात में स्वप्न में सीय लखो
गये आय भरत यहँ नंगेहि पाँये।
सँग सैन समाज सबहि उनके
सबके मुख घोर विषाद में छाये।
औरहि अनुहार में सास दिखीं
उनकों लखि सोच बड़ो उर आये।
भइ प्रात तो सीय ने स्वप्न सभी
श्रीराम लखन कहँ जाय सुनाये ।।

सपनो सुनि राम गँभीर भये
कही लक्ष्मण से अति ही अनुरागे।
यह स्वप्न लगे कछु ठीक नहीं
अब बन्धु लखो का होत है आगे।
प्रभु सोच विमोचन राम तबै
हुइ ध्यान मगन कछु सोचन लागे।
करि मज्जन पूजन ध्यान प्रभू
मुनि पूजि उतर दिशि देखन लागे ।।

तेहि क्षण अति धूलि उड़ी नभ में
सिय राम लखन कहँ दीन्ह दिखाई।
खगहू घबराय उड़े उतसै
छिपे आश्रम के तरु पै सब आई।
तबही कछु कोल किरातन ने
द्रुति आय कही अपनो सिर नाई।
हे राम! भरत यहँ आय रहे
उन संग कटक विकराल है आई।।

सुनकि श्रीराम जी सोच परे
मन जानि भरत कर शील स्वभाये।
लखि राम को सोच में बन्धु कही
प्रभु पाय के राज भरत बौराये।
वन माँहि अकेलेहि जानि हमें
लइ सैन बड़ी हम पै चढ़ि आये।
उनकेहु प्रभु आप तो पूज्य रहे
गयो ज्ञान सकल नृप को पद पाये।।

अब आज पता चलिहै उनको
फल पाइहैं राम विरोध में आये ।
प्रभु सत्य कहूँ तुम्हरे पग छू
बधिहौं सँग सैन के भूमि गिराये ।
फिर बाँधि लिये कसि केश जटा
धनु बाण लियो कर क्रोध में आये ।
अति वीर लखन एहि भाँति खड़े
मानो वीरता ठाढ़ि है रूप बनाये ।।

कहें देव मगन हुइकें मन में
इन सम कोइ राम को दास है नाहीं ।
तब वाहि समय नभ वाणि भई
बिनु सोचि करें नर वे पछताहीं ।
सुनिके नभ वाणि प्रसन्न भये
धरो शीष लखन प्रभु के पद माहीं ।
तब राम कही समझाय उन्हें
मम भरत महान उन्हें मद नाहीं ।।

जब भरतहिं राम सराहि रहे
सुनि देव सबहि मन में हरषाये ।
सुरपति कही राम महान बड़े
इन कारण ही हमने सुख पाये ।
भरतहिं सब शीष नवाय कहें
तुमको श्रीराम हिया में बसाये।
तुम धर्म औ प्रेम की मूरत हो
सुनिके सिय राम लखन सुख पाये॥

❋

उत राम के नेह मगन हुइके
ससमाज भरत मन्दाकिनि आये ।
मँगवाई ये सुरसरि अत्रि प्रिया
यह जानि पवित्र नदी में नहाये।
फिर सोचत राम के पास चले
सँग अरिमर्दन, गुहराज लिवाये ।
भये सोच के मातु की बात दुखी
अपने मन में अति ही सकुचाये ।

सियराम के पाद धरैं मन में
पहुँचे गिरि पै जहँ थे रघुराई ।
गिरि पै चढ़िके गुहराज लखो
सिय संग बिराज रहे दोउ भाई ।
अति भाव विभोर भरत हुइके
चढ़िके गिरि पै देखी छबि ताई ।
रमणीक सो आश्रम है प्रभु को
नन्दन वनहू जाहि देखि लजाई ॥

प्रभु दीनदयालु क्षमा करियो
कहि बैन भरत प्रभु पाँयन लेटे ।
उन्हें देख के राम सनेह भरे
निज हाथ उठाय के अंक समेटे ।
रिपुसूदन पाँव परे तबहीं
प्रभु अंक लगाय के सब दुख मेंटे ।
भुइ लोट प्रणाम करी गुह ने
श्रीराम उन्हें अति नेह से भेंटे ॥

लक्ष्मण अति भाव विह्वल हुइके
पद कंज भरत महँ शीष नवाये ।
तब भरत सनेह उठाय उन्हें
करि नेत्र सजल निज अंक लगाये ।
अरिमर्दन पाँव छुए जबहीं
लक्ष्मण उनको उर में चिपकाये ।
गुह दूर से दण्ड प्रणाम कियो
लक्ष्मण उन्हें नेह सौं कण्ठ लगाये ।।

फिर मातु सिया, पद पंकज में
दोउ भाइन ने अपने सिरनाये ।
कछु दूर से पद गुहराज छुए
सब नेह भरे सिय आशिष पाये ।
इक दूसर को मुख देख रहे
पर कोइ भी काहु से बोल न पाये ।
जब राम ने बन्धु की ओर लखो
तब भरत सँकोच नदी उतराये ।।

कर जोरि निषाद कही तबही
सँग में गुरुदेव औ मातु हैं आई।
पुर लोग सचिव सब शोक भरे
तिन संग कटक सिगरी चलि आई।
सुनिके गुरु आवन राम चले
रिपुसूदन को सिय पास बिठाई।
गुरु के पद में प्रभु शीष धरो
ऋषिराज लियो उन्हें कंठ लगाई॥

सौमित्र प्रणाम कियो जबहीं
गुरुदेव अनेक अशीष सुनाये।
मिले राम सचिव, पुर लोगन से
उन्हें बन्धु सहित निज शीष नवाये
लखिके सब भाव विभोर भयो
अरु देवन ने बहु पुष्प गिराये।
कहुँ लौट न जाँय प्रभू वन से
डर देव तो सुर गुरु ने समझाये॥

फिर मातुन पै दोउ बन्धु गये
मुख घोर विषाद में थे कुम्हलाये ।
अति आरत, सोच परी लखिके
प्रथमहि प्रभु कैकयी पास में आये।
वह रोय परी हिचकी भरिके
तेहि आँसुन धार रुके न रुकाये ।
गहिके पद राम प्रबोध कियो
कही होत वही जोइ ईश्वर भाये ।।

दइ धीरज मातु से राम कही
अब लाउ न सोच तनिक मन में
करिहैं प्रतिपाल भरत सब को
हमें कोइ भी कष्ट नहीं वन में ।
पछिताय रही, करो पुत्र क्षमा
कहिके पुनि रोय परी क्षन में।
पुनि राम कही समझाय उन्हें
होनी बलवान, करे क्षन में ।।

समझाय के राम जी कैकयी को
बहुभाँति प्रबोधि के धीर धराये।
फिर आय सुमित्रा के पाँवन में
सौमित्र सहित अपनो सिरनाये।
उन्हें खूब अशीष दियो जननी
करिनेह युगुल सुत गोद बिठाये।
निज मातु के पास में राम गये
प्रिय बन्धु लखन कहँ संग लिवाये।।

श्रीराम लखन दोउ पाँव परे
अति शोक भरी लखिके दुख पाये।
तब मातु ने नेह सौं दोउ लला
चिपकाय हिया निज गोद बिठाये।
उन्हें देत अशीष न मातु थके
दोउ पूतन के सिर हाथ फिराये।
फिर छू गुरुमातु के पाँयन कों
सब विप्र त्रियान को शीश नवाये।।

पुर लोग औ सैन टिकाय वहीं
जन जो थे विशिष्ट उन्हें सँग लाये।
मग देखत बृक्ष पहाड़न कों
सब पावन पर्णकुटी चलि आये।
उठि सीय प्रणाम कियो गुरु कों
फिर सादर गुरु पत्निहि सिर नाये।
रहीं विप्र त्रिया, जननी सँग जो
सिय जाय छुए उनके शुचि पाँये ॥

भइ मातुनि देखके सीय दुखी
तिन रूप लखत उनकों गश आयो।
थिर हुइ पुनि सोचिके रोय परीं
कहि हे बिधना यह काह दिखायो।
फिर बाँधि के धीरज को मन में
सब मातुन के पग में सिर नायो।
अति नेह सौं तीनहु मातुन ने
सिय कों अपने उर से चिपकायो ॥

गुरुदेव की आयशु पाय तभी
सब बैठ गये इक पेड़ के साये ।
प्रभु पाँयन में सिर कों धरिकें
हुइ प्रेम विभोर भरत बिलखाये ।
कही नाथ कृपा करियो मुझपै
तव सेवक हूँ मोहि कहँ अपनायें ।
कर थामि के राम उठाय उन्हें
दइ धीरज नेह सौं कंठ लगाये ।।

❋

तबही गुरुदेव ने शोक भरे
श्रीराम लखन सिय को बतलायो ।
प्रिय भूपति तो सुरलोक गये
उन तोर बिछोह नहीं सहि पायो ।
पितु की जब मृत्यु को हाल सुनो
सिय,राम,लखन अति ही दुखपायो ।
सुत होनि तो हैं बलवान बड़ी
मत होहु दुखी गुरु ने समझायो ।।

अति शोक विकल सब लोग मनो
नृपराज अबहिं सुर लोक सिधाये।
फिर जाय मँदाकिनि तीर सभी
गुरु आयशु पायके लोग नहाये।
ब्रत नेम सौं वा दिन राम रहे
उनके सँग कोउ नहीं कछु खाये।
क्षण में जग के दुख मेंटत जो
सोइ राम विषाद पड़े मुरझाये।।

सब प्रात जगे मुनि ने तबहीं
नृपको सब श्राद्ध को कर्म करायो।
उन वेद विहित सब रीति करीं
श्रीराम को सूतक शुद्ध करायो।
जब दुइ दिन में सब शुद्ध भये
श्रीराम ने तब गुरु कों समझायो।
प्रिय राव मरे सब लोग यहाँ
पुर सून परो अब लौटके जायो।।

श्रीराम की बात सुनी सबने
मनो गाज गिरी सबही अकुलाने ।
गुरु ने कही राम से नेह भरे
तुम्हें देखि के सब उर माँहि जुड़ाने ।
मग के सब लोग थके भये हैं
एहि ठाँव रुकें दुइ दिन यदि माने ।
गुरु आयशु पाय प्रसन्न भये
श्रीराम पुनः गुरु को सन्माने ।।

❋

बुलवाय भरत परिजन सिगरे
गुरुदेव सचिव सबको बैठाये ।
चलें रामजी कौन उपाप करें
प्रिय आप सबहि अब मोहि बतायें ।
तब सचिव कही सब लायक हो
तुमको कोइ का निज राय सुझाये ।
तब भरत कही गुरु से अपने
प्रभु आपहि अब कछु राह दिखायें ।।

गुरुदेव कही प्रिय राम तुम्हें
अरु रामहु को तुम हो अति प्यारे।
मनमाँहि भरोस बड़ो हमको
श्रीराम कबहुँ नहिं आग्रह टारें।
तब भरत कही अपराधी हूँ मैं
मम मातु के ही वह गेह निकारे।
अब मैं मुनिवेश रहूँ वन में
श्री राम अवध कर राज सम्हारें।।

धनि धन्य कही सब लोगन ने
तुम सम कोइ और नहीं जग भाई।
तुम्हें राम में प्रेम अगाध रहो
बिनु राम के कोइ न वस्तु सुहाई।
तुम्हें ठीक लगे अब सोइ करो
तुम सम नहिं कोइ जो राम को भाई।
कल प्रात के होत चलो प्रभु पै
उनके अभिषेक को साज सजाई।।

कही लखन की मातु, न ठीक लगे
मम पूत भरत यदि कानन जाये।
रघुबीर तुम्हें अति नेह करें
तुम्हरेहु उर में श्रीराम समाये।
सब के प्रिय रामहि राव वनें
प्रिय भरत तुम्हें युवराज बनायें।
मम दोनोंहि पूत बसैं वन में
अरु राम, भरत कौशलपुर जायें।।

गुरुदेव कही उठिके उनसे
तुम धन्य हो देवि सुमित्रा रानी।
समझें अब राम जो ठीक, करें
उनसेहि कहें अब जोरिके पानी।
सबनेहि कही यह उत्तम है
रघुवीर बचाय सकें यह हानी।
कल प्रात के होत चलो उन पै
सबहीं परिजन, पुरजन अरु रानी।।

भई प्रात कुटीर के आँगन में
गई बैठ सभा सब देव मनायें।
गुरुजन अरु मातुन के पग छू
सिय, राम, लखन बैठे तहँ आये।
भरतहु उठि राम के पाँव परे
उन्हें राम उठाय के कंठ लगाये।
गुरु से कर जोरिके राम कही
मोहि आयशु देंय, करहुँ सुख पाये॥

❋

ऋषिराज भरत तन देखि कही
कहो राम से तुम मन की सब बाता।
कर जोरि भरत तब ठाढ़ भये
बही अश्रुन धार गिरे कहि ताता।
तब राम उठाय प्रबोध कियो
तुमही सबसे प्रिय हो मम भ्राता।
फिर भरत कही धरि धीर तबै
मोहि राम बिना कछुहू नहिं भाता॥

लखि राम से प्रेम भरत उर को
नभ से मुदि देव प्रसून गिराये ।
फिर सोचिके व्याकुल से हुइके
कहुँ राम अवधपुर लौट न जायें ।
परि बन्धु के नेह जो लौट गये
तब दुष्टन कों बधिहै को आये ।
कहो शारद सें विनयावत हो
करि भरतहि राम विमुख लौटायें ।।

कही शारद राम बसैं उनमें
अरु भरत करैं उर राम निवासा ।
यह राम के बन्धु महान बड़े
करिहैं हम ना एहि भाँति तमासा ।
माया तब देव रची मिलके
कही ताहि, करो तुमसेहि बड़ी आसा ।
माया निज काम दिखाय दियो
मन भये उद्विग्न गई अभिलाषा ।।

जब भरत सभा महँ ठाढ़ भये
इक दूत जनकपुर को तहँ आयो।
यहाँ तिरुपति राज पधार रहे
कर जोरिके दूत गुरुहि बतलायो।
सिय राम से तब गुरुदेव कही
करि स्वागत भूपति कों ले आयो।
सिय तात के स्वागत कों तबहीं
श्री राम समाज वहाँ चलि आयो।।

श्री राम लखन सँग बन्धुन के
कौशिक, जावाल मुनिहि सिरनाये।
सब विप्रन को सम्मान कियो
पुनि आय विदेह को माथ नवाये।
फिर सास के पाँव छुए उनने
उन शीष पै मातु ने हाथ फिराये।
गुरुदेव से तिरुपति राज मिले
उनके पग पूजिके आशिष पाये।।

रनिवास में जाय विदेह तबै
श्रीराम की मातु को धीर धरायो।
नर कोइ न कालहि टारि सके
कहिके उनकों नृप ने समझायो।
फिर जाय मिले दोउ रानिन से
दइ धीरज,ज्ञान, प्रबोध करायो।
सिय मातु मिलीं सब रानिन से
समझाय उन्हें, सिय कंठ लगायो।।

पुनि आय सभा महँ बैठ गये
कर जोरि भरत तब बैन उचारे।
रघुनाथ मैं सेवक हूँ तुम्हरो
करो सोइ प्रभू हित होंय हमारे।
प्रभुजी तव पाँयन में परिके
भये आज सबहि पुर लोग सुखारे।
हे राम! हमें अब आयशु दें
हम आरत हुइ तुम्हरे पद डारे।।

माया निज काम दिखाय दियो
भरतहु बल द्वै कछु बोल न पाये।
तब राम उठाय लगाय हिया
उनसे कही शोक नहीं उर आये।
तुम तो सबसे प्रिय मोहि लगो
तव निर्मल मन, छल, दम्भ न आये।
प्रिय सोच तजो अपने मन को
सब लायक हो तुम शील स्वभाये।

प्रिय तात करो तुम काम वही
जेहि से सुरपुर पितु शोक न पायें।
प्रण टूट न जाय कहूँ उनको
उन मोहि तजो अरु स्वर्ग सिधाये।
अपकीर्ति न हो जेहि में उनकी
करो बन्धु वही सबके मन भाये।
प्रिय तात अवधपुर आइहौं मैं
मम राज समझि केहि काज चलायें।।

प्रभु पाँयन में पुनि शीष धरो
भरि अश्रु भरत तब रोवन लागे।
नभ में सब देव प्रसन्न भये
बहु पुष्प गिराय सराहन लागे।
लखि प्रेम भरत अरु रघुपति को
थे विदेह, विदेह भये मधु पागे।
भरतहिं पुनि राम प्रबोध कियो
उठि आदर से उनके उर लागे॥

पुर जायके पालहु राम कही
पुरजन,परिजन सेवक अरु रानी।
उर में धरिके मम नेह सदा
तुम राज करो वाहि राम को जानी।
तुम धर्म धुरीण प्रवीण बड़े
जग में नहिं कोई तुम्हारी है सानी।
जब जाय अवधि अइहौं तब मैं
प्रतिपाल करो सबको मोहि जानी॥

कही भरत ने नाय के माथ तबै
रघुनाथ मैं आपको आयशुकारी।
कहिहौ प्रभु जोइ वही करिहौं
प्रभु आयशु आपकी है सिरधारी।
दुइ चार दिना रहिके संग में
वन देखत चाहत आस हमारी।
यह बात उचित श्रीराम कही
मिलो अत्रिमुनी आदिकऋषिचारी।।

❋

प्रिय भरत घुसे जब कानन में
उन्हें राम प्रभाव दिखाइ परो।
मीठे फल से युत बृक्ष भये
उन ऊपर सुमनन वृन्द झरो।
मिलि कोल किरात प्रसन्न भये
फल फूलन से सत्कार करो।
बन में मुनि वृन्द अनेक मिले
दोउ भाइन को आभार करो।।

पहुँचे जब अत्रि के आश्रम में
ऋषि देखि उन्हें मिलिबे उठि धाये।
मुनि नाथ के पाँव छुए उनने
ऋषि आशिष दे उन्हें कंठ लगाये।
सत्कार कियो फल फूलन से
मुनि देखि भरत कहँ खूब सिहाये।
बोलें तुम राम के भक्त बड़े
हम राम सो जानि तुम्हें सिरनाये॥

बीते एहि भाँति ही पाँच दिना
तब राम सनेह भरत बुलवाये।
कही बन्धु अवधपुर सून परो
गुरुदेव, सचिव सब ही यहँ आये।
अब जाउ समाज के सँग वहाँ
तुम पालो प्रजा मोहि में मन लाये।
तब बोले भरत जल तीर्थन को
केहि ठाँव धरें जोइ संग हैं लाये।

तब राम सनेह कही उनसे
ऋषि वृन्द कहें तैसोहि अब कीजे।
कौशिक, जाबाल औ अत्रि मुनी
ढिग जायके ही तिन आयशु लीजे।
गये भरत तबहि, मुनि वृन्द कही
गिरि कूप है इक तामें भरि दीजे।
एहि कूप को नाम तुम्हार मिले
भरि नीर सुफल यह कानन कीजे।।

जल पावन कूप में डारि दियो
फिर आयके राम से आयशु माँगी।
श्रीराम ने सादर कीन्ह विदा
सब मातुनि, बन्धु, गुरुहिं अनुरागी।
सब विप्रन के पग शीष धरो
त्रय मातृ के पाँव छुए बड़भागी।
पुनि ज्ञान दियो उन कैकयी को
सुनि राम वचन पीड़ा तेहि भागी।।

पुनि भरत ने राम के पाँव छुए
अरु लक्ष्मण को लियो कंठ लगाई।
प्रिय बन्धु के लक्ष्मण पाँव छुए
सब मातुन कों पुनि शीष नवाई।
सिय, राम ने मातुन के पग में
पुनि शीष धरो शुचि आशिष पाई।
सिय कों कियो मातु प्रबोध बड़ो
आशीष दिये तेंहि कंठ लगाई॥

कही पादुका देहु हमें अपनी
दई राम कृपालु सनेह उतारी।
धरि के निज शीष भरत उनकों
गृह हेतु चले करिके मन भारी।
सबने प्रभु के पद माथ धरो
चले नेत्रन नेह को बारिधि डारी।
मन में सिय राम को जाप करें
पहुँचे पुर, राह लगे दिन चारी॥

निज सास ससुर पग राम छुए
दोउ आशिष दे उन्हें कंठ लगायो।
सिय को हिय मातु लगाय लियो
बहुभाँति प्रबोधि के धीर धरायो।
जाबाल औ कौशिक के पद में
सिय,राम,लखन निज शीष नवायो।
मुनि वृन्द सनेह अशीष दियो
चले तिरहुत सब बिछुड़त दुखपायो।।

⁂

गुह ने फिर दण्ड प्रणाम कियो
सिय राम लखन चरणन चित लाये।
श्रीराम सनेह उठाय सखा
अति भावुक हुइ निज कंठ लगाये।
सिय वाहि अशीष अनेक दिए
गुह ले पग धूलि को शीष लगाये।
एहि भाँति विदा सब लोग भये
सिय राम लखन निज आश्रम आये।।

पुर आय भरत गुरु आयशु ले
लखिके शुभ दिन सब विप्र बुलाये।
बिधि रीति से राज सिंहासन पै
श्री राम की पादुका पूजि बिठाये।
फिर छोड़के राज भवन अपनो
नँदिग्राम में पर्णकुटीर बनाये।
रहिके तहँ सोवत पातन पै
मुनिवेश धरें निज केश बढ़ाये॥

पालैं नित राम के नाम प्रजा
गुरु, विप्र, सचिव सन आयशु पाये।
रहे राम की मातु को ध्यान बड़ो
नहिं एकहु माँ कबहूँ दुख पाये।
कब बीतिहै ये वनवास घरी
मन सोचि भरत अति ही दुख पाये।
युग के सम बीतत रात दिना
करि राम की याद दुखी हुइ जायें॥

दिन चारि विदेह रहे पुर में
सब राज, समाज के काज सम्हारे।
फिर सौंपि के भार गुरू मुनि कों
उन साथहि बोझ सुमंत्र पै डारे।
नृप माँगि विदा सब रानिन से
पुनि राम की मातु से बैन उचारे।
रखियो तुम ध्यान अवधपुर को
कहिके निज गेह विदेह पधारे ॥

❋

श्रृंगार विभूषित एक दिना
श्रुतिकीर्ति रही निज गेह में बैठी।
लखि द्वार पै प्रियतम आय रहे
सत्कार करन उनको उठि बैठी।
शत्रुघ्न श्रृँगार लखो तिय को
रति सी छवि थी उनके उर पैठी।
पिय के उर को जब भाव लखो
कहिके प्रभु ना, तेहि पाद में बैठी ॥

मम जीवन रूप श्रँगार सभी
प्रभु आपको हैं हम सत्य कहें।
पर मातु पिता सम राम सिया
सँग बन्धु के वन हिम ताप सहें।
गृह में तपलीन दोऊ भगिनी
मम ज्येष्ठ भरत नँदिग्राम रहें।
ऐसे में हु काह उचित हमको
हम केलि करें, प्रभु आप कहें ॥

शत्रुघ्न कही बड़ी भूल भई
अब नेत्र खुले रहे थे पट डारे।
पुनि सोच के राम सिया दुख को
मन ग्लानि भरो बहे अश्रुन धारे।
श्रुतिकीर्ति बचाय लियो तुमने
हमहू अब आजहि से ब्रत धारे।
सिय राम न आयँ घरैं जबलौं
ब्रम्हचर्य बरैं उनको चित धारे ॥

बिनु राम अवध सब लोग दुखी
रवि होतहु थो मन में अँधियारो।
रवि वंश शिरोमणि होंय नहीं
तेहि ठाँव भला कस हो उजियारो।
रघुवीर बिना पुर कानन सो
तपसी सम बन्धुन योग सम्हारो।
सब राम के ध्यान में लीन रहें
कब जाय अवधि सोचें पुर सारो ॥

卐

सिंहासन पै पादुका,
धरें करत हैं राज।
राम वियोगहि सब दुखी
परिजन सकल समाज।
अवधि की घड़ियाँ लम्बी ॥

卐

॥ इति अयोध्या काण्ड ॥

आरण्य काण्ड

जानि सको नहिं राम कों
सिर धुनि धुनि पछिताय ।
भूलि ब्रह्म भटको फिरै,
जीव योनि दुख पाय ।
ज्ञान से प्रभु को जानो ॥

चित्रकूट को राम पवित्र करैं
तहँ नित्य मिलैं ऋषि, सन्तन जाई ।
मन में आनन्द भरें लखिके
वनचर, खग, मृग अरु लोग लुगाई ।
पुलकें लतिका द्रुम देखि उन्हें
नित फूलिके देंय प्रसून बिछाई ।
फल बोझ झुकें प्रभु के मग में
मन सोचत खायँ इन्हें रघुराई ॥

स्फटिक शिला पर एक दिना
रहे बैठि सिया सँग में रघुराई ।
तब इन्द्र को पुत्र जयन्त वहाँ
दिखलाय गयो अपनी कुटिलाई ।
बनि काग सिया पद चौंच हनी
दियो राम ने सींक को वाण चलाई।
लखि वाण भगो पितु के गृह कों
रहो वाण तहूँ शठ को पिछियाई ।।

लखिके सियराम विमुख सुत को
शचिनाथ ने डाँट के वाहि भगायो।
हुइके भय आतुर भागि रहो
फिर दौरि के ब्रह्मके पास में आयो।
श्रीराम को दोष कियो एहि ने
यह जानि के ब्रह्म हु दूर भगायो ।
फिर दौरि 'महेश' के धाम गयो
उनके गृह हू नहिं प्राश्रय पायो ।।

बिलखत हर लोक जयन्त गयो
ताहि राम को वाण रहो पिछियाई।
मुनि नारद राह में वाहि मिले
सब हाल कहो मुनि से सिर नाई।
तब देखि जयन्त की दीन दशा
हरिभक्त ऋषी वाहि राह बताई।
तुम राम पै जाउ जयन्त अबै
लेहु माँगि क्षमा तजिके कुटिलाई।।

श्रीराम के पाद में आय गिरो
कहि मोहि क्षमा कर दें असुरारी।
हे प्रभु ! अति पाप भयो मुझसे
महिमा नहिं जान सको मैं तुम्हारी।
प्रभु दीनदयालु बचाउ हमें
अब लेहु शरण महँ सारँग धारी।
तेहिको इक नेत्र विहीन कियो
कर दीन्ह क्षमा बरु दोष थो भारी।।

जब राम लखो सब जानि गये
वन भीड़ लगन लागी अति भारी।
रहिबौ एहि ठाँव पै ठीक नहीं
अब अन्तहि जाँउ कही असुरारी।
तुरतहि मुनि वृन्द से माँगि विदा
चले राम, लखन, सीता सुकुमारी।
पहुँचे मुनि अत्रि के आश्रम पै
सँग माँहि रहे उनके वनचारी ॥

❋

सुनि राम लखन सिय आय रहे
मुनि अत्रि तुरत मिलबे कहँ धाये।
मुनि कों श्रीराम प्रणाम कियो
ऋषिराज उन्हें निज कंठ लगाये।
अति भावविभोर भये लखि के
छवि देख रहे बिनु पल झपकाये।
उन राम में विष्णु को रूप लखो
कही कीन्ह कृपा प्रभु आप जो आये॥

सिय जाय के अत्रि प्रिया पद में
अति नेह सहित निज शीष नवायो।
अनुसुइया ने आशीर्वाद दियो
तेहि दिव्य वसन भूषण पहिरायो।
उनने कही सीय महान बड़ी
श्रीराम सो जो तुमने वर पायो।
फिर जानि महान सती सिय को
विस्तार से पतिव्रत धर्म सिखायो॥

❋

पति रोगी, जरठ, धनहीन भले
होय तोहु करे मन से सेवकाई।
सिय तन, मन औ व्रत नेमहि से
उर माँहि धरें अति नेह सुखाई।
जग पतिव्रत चार प्रकार सिया
उत्तम, नहिं परपति स्वप्नहु आई।
मध्यम पर को पति ऐस लखे
मनो होय पिता अथवा निज भाई।

पतिब्रत जोइ धर्म विचारि रहे
सब माँहि निकृष्ट है शास्त्र बताई।
पतिब्रत भय से बिनु अवसर की
है होत अधम सुनु सिय सुखदाई।
पति छोड़ करे रति औरहि से
तिय रौरव नर्क पड़े सोइ जाई।
पति से प्रतिकूल जो नारि चले
सोइ हो विधवा पावत तरुणाई॥

यदि नारि पतित पति लीन बने
हुइ शुद्ध बसै वह स्वर्ग मझारी।
जग के हित तोहि बताई सिया
तुम तो अति पतिब्रत राम पियारी।
पुनि मातु के पाद में शीष धरो
पायो सिय ने मन में सुख भारी।
ऋषिराज के पाँव में माथ धरो
सिय,राम सहित लक्ष्मण धनुधारी॥

मुनि नाथ कृपा करियो हम पै
श्रीराम कही निज सेवक जानी ।
ऋषि ने जब बैन सुने प्रभु के
कर जोरि कही उनसे मृदु बानी ।
तुमको सब सेवत रात दिना
चतुरानन, शंकर औ मुनि ज्ञानी ।
रघुनाथ हैं आप महान प्रभू
जोइ भक्त से बोलत हो अस बानी।।

ऋषिराज के राम ने पाँव छुए
चले कानन संग लखन सिय आगे।
मग की छबि देखि निहाल भये
वन लोग भये उनि देखि सभागे ।
प्रभु जानि के बादल छाँव करें
सरिता निज घाट बनाउतीं आगे।
जेहि ने सिय राम लखे मग में
तेहि ने त्रय ताप तुरन्तहि त्यागे ।।

इक दैत्य विराध मिलो मग में
श्रीराम ने ताहि तुरन्तहि मारो।
रघुनाथ कृपालु ने देखि दुखी
निज धाम पठाय के ताहि उबारो।
फिर वे सरभंग के पास गये
ऋषि अन्तस ने मनु होय पुकारो।
मुनिराज कही कर जोरि प्रभू
तुम दर्शन दै मोहि आज उबारो।।

सुनिके प्रभु आवत हैं इतकों
तबसेहि परो राह में नैन बिछाये।
मैं तु ब्रह्म के लोक थो जाय रहो
पर आज निहाल भयो तोहि पाये।
अब नाथ कृपा करियो इतनी
मोहि जानिके दीन प्रभू अपनायें।
जब लौं तन त्यागि मिलूँ तुमसे
रहो पास मिरे प्रभु शील स्वभायें।।

मुनि के उर राम निवास कियो
ऋषि तेज प्रभाव अपनु तनु जारो।
विस्मित मुनिवृन्द निहारि रहे
कहें राम महान प्रताप तुम्हारो।
तहँ से पुनि कानन राम चले
सँग लक्ष्मण,सिय, मुनि मंडल सारो।
मग में जब अस्थिन ढेर लखो
पूछो यह को किनने इन्हें मारो।।

यह है मुनि अस्थिन पुञ्ज प्रभू
तप लीन रहे तब दैत्यन मारो।
करुणानिधि राम भरे करुणा
उनि संतन से तब बैन उचारो।
निज बाँहु उठाय कहूँ तुमसे
सुन लो ऋषिगण प्रण आज हमारो।
करिहौं अब दैत्यविहीन धरा
हमनेहु सारँग निज हाथ सम्हारो।

मुनि कुंभज शिष्य सुतीक्ष्ण सुनी
वन आवत रामलखन वैदेही ।
द्रुति दौरि परे मिलबे उनकों
अति भावविभोर हो राम के नेही ।
मन व्याकुल राह न सोचि परै
भरि राम के प्रेम में दौरत तेही ।
क्षण में मुनि आगेहि दौरि चलें
क्षण बीतत पुनि पीछे चल देहीं ।।

मुनि राम के प्रेम में पागल से
दौरत इत उत, उर राम बिठाये ।
अति भावविह्वल हुइ नाचि रहे
कहें राम मिलें छोड़ें नहिं पाँये ।
प्रभु वृक्ष की ओट से देख रहे
अति प्रेम लखो तब सन्मुख आयें ।
गये बैठ सुतीक्ष्ण के अन्तस में
मुनि भावविभोर जगें न जगाये ।।

श्रीराम तबहि नृप रूप तजो
अरु वाहि चतुर्भुज रूप दिखाये।
उर में प्रभु रूप लखो मुनि ने
मन में अति व्याकुल हुइ घबराये।
तब नैन उघारि दिये ऋषि ने
निज सन्मुख राम लखन सिय पाये।
अकुलाय के पाँव परे प्रभु के
भये भावविभोर उठें न उठाये।।

उन्हें राम उठाय लगाय हिया
कही माँग लो वर मुनि जो मनआये।
उनसे मुनि ने कर जोरि कही
माँगो न कबहुँ, नहिं माँगिवो आये।
तुमही समझो जोइ ठीक प्रभू
सोइ देहु हमें कहि शीष नवाये।
प्रभु अविरल भक्ति दई उनको
उन्हें ज्ञान अपार दियो हरषाये।।

पुनि पुनि सिर नाय कही मुनि ने
प्रभु आप दियो सोई मैं पायो ।
अब मैं वर माँग रहो तुमसे
उर माँहि बसै वहि रूप सुहायो ।
सिय मातु, लखन तुम्हरे सँग हों
जस मैं तुमको वन घूमत पायो ।
एवमस्तु कही प्रभु ने उनसे
मुनि गदगद हुइ पुनि माथ नवाये ।।

फिर कही ऋषि ने गुरु से न मिले
जबसे हम हैं एहि आश्रम आये ।
कर जोरि के नाथ करूँ विनती
प्रभु साथ चलें मुनि दर्शन पायें ।
श्रीराम प्रसन्न भये सुनि के
मुनि के सँग ही गुरु आश्रम आये ।
द्रुति जाय सुतीक्ष्ण कही गुरु से
जेहि सुमिरत हौ सोई प्रभु आये ।।

सुनि राम लखन सिय आय रहे
मुनि छोड़ि सबहि द्रुति लेन को धाये।
लक्ष्मण, सिय के सँग रामहु ने
बढ़िके ऋषि के पग माथ नवाये।
कुंभज कर जोरि कही उनसे
तुम्हें देख के आज बहुत सुख पाये।
निशि वासर नाम जपौं जिनको
सोइ राम सिया चलिके यहँ आये।।

बैठारि के पावन आसन पै
पग पूजि कही प्रभु से ऋषि राई।
हमरो मन आज प्रसन्न बड़ो
अति कीन्ह कृपा आये रघुराई।
कही राम निशाचर बाढ़ि रहे
कहु कैस बधौं उनकों मुनि राई।
मुनि कही मोहि देन बड़प्पन कों
प्रभु पूछत हो अनजान की नाईं।।

मुनि कही रहो जाय के पंचवटी
अति सुन्दर ठाँव विटप मन भाये।
दण्डक वन आप पुनीत करें
ऋषिगण तव प्राश्रय में सुख पायें।
उनि आयशु पाय चले तबही
सिय,राम,लखन मुनिवृन्द लिवाये।
मग में जब पाँव थके सिय के
सब बैठि गये इक पेड़ के साये ।।

लक्ष्मण जब बैठि रहे तहँ पै
मन माँहि विचार कियो पछिताये।
श्रीराम को कानन वास मिलो
हम नाहक ही इनके सँग आये।
सबके मन की जोइ जानत हैं
सौमित्र को देखिके बैन सुनाये।
माटी एहि ठाँव की बाँधि धरो
सिर पै अपने उनको बतलाये ।।

गठरी जब बन्धु ने शीष धरी
मन में अति दुष्ट विचार समाये।
कछु दूर चले थकि बैठि गये
गठरी तब रामजी दूर धराये।
गठरी हटतहि मन भक्ति भरो
श्रीराम के प्रति शुचि भाव समाये।
गठरी धरि शीष चले पुनि वे
पुनि कुत्सित भाव तुरत मन आये॥

माटी पुनि भूमि धरी जबही
भयो निर्मल मन पकरे प्रभु पाँयें।
कही नाथ बताउ है बात कहा
उर काहि मिरो विचलित हुइ जाये।
गठरी जब जब हम शीष धरी
मम भक्ति को भाव तबहि डिग जायो।
कही राम न दोष तुम्हार कछू
तेहि भूमि ने तोहि प्रभाव दिखाये॥

निश्चर जहँ सुंग निसुंग मरे
तेहि ठाँव पै जब हम औ तुम आये ।
तबही मनमें कटुभाव जगे
श्रीराम सनेह उन्हें समझाये।
सिर पै जब धूरि धरी तहँ की
मनमें कटुता अंकुर उगि आये ।
जब दूर करी माँटी तुमने
पुनि प्रेम जगो तुमहू हुलसाये ।।

दुइ निश्चर सुंग निसुंग रहे
दोउ बन्धुन ने तप घोर कियो ।
तिनपै भये ब्रम्ह प्रसन्न बड़े
उन्हें नेह सों उन वरदान दियो ।
तुम्हें कोइ न मारि सके कबहूँ
कहि दोउन को आगाह कियो।
लड़िहौ जब आपस में क्रुधहो
मरिहौ तबही बतलाय दियो ।।

कही निश्चर बन्धुन ने प्रभु से
हम आपस में अति प्रेम करें।
नहिं युद्ध कबहुँ हुइ है हममें
मनमें नहिं संशय आप करें।
पग ब्रह्म के पूजि हुँकारि चले
कछु काल में दोनहु दम्भ भरे।
उन दोउन के उत्पातन से
सबही नर, किन्नर, देव डरे॥

गये ब्रह्म पै सुर जब त्रस्त भये
उन्हें सुंग निसुंग को हाल बतायो।
उन्हें कोइ न मारि सके रन में
बिध से उनने वरदान है पायो।
मरिहैं जब आपस में लड़िहैं
सुनिके कही ब्रह्म न तुम घबरायो।
मरिहैं अब दोउ निशाचर वे
कहिके निज सुन्दरि रूप बनायो॥

पहुँचे दोउ बन्धु रहे जहँ पै
प्रभु ने निज कामिनि रूप दिखायो।
लखि सुन्दर नारि निसुंग तबै
चलु संग मिरे, कहि वाहि बुलायो।
तब सुंगहु देखि हुँकारि परो
कहि ज्येष्ठ हूँ, निजअधिकार बतायो।
तेहि नारिके हित दोउ जूझि परे
इक दूसर कों उन मारि गिरायो।।

❋

येहि भूमि में रक्त मिलो उनको
तेहि गन्ध ने आज प्रभाव दिखायो।
तुमसेहु मम भक्त के अन्तस में
कुविचार लखन यहि कारण आयो।
भ्रम में फँसि जात हैं आय यहाँ
शिव गौरिको ठौर प्रभाव दिखायो।
प्रभु पाद में बन्धु ने शीष धरो
तब राम ने सोइ प्रसंग सुनायो।।

ऋषि कुंभज पै शिव गौरि गये
कही राम कथा मुनि आप कहें।
मुनि ने उठि पाँव छुए उनके
शिव से तब गौरि ने बैन कहे।
कहिहैं यह का प्रभु रामकथा
जोइ श्रोता के पद आय गहे।
जब शंकर ज्ञान विवेक दियो
तब दक्ष सुता भ्रम दूर बहे।।

एहि भाँति प्रसंगन राह कटी
मिले गिद्ध जटायु से प्रीति बढ़ाई।
शुचि ठाँव गोदावरि के तट पै
इक पर्णकुटीर बसे रघुराई।
यहँ पै जब से प्रभु आय बसे
मुनि त्रास हटे, सबकों सुखदाई।
खग, मृग, वन, बृक्ष निहाल भये
छबि देखि लखन, सिय औ रघुराई।।

कछु दिन एहि भाँति व्यतीत भये
रहे आश्रम में मधु ऋतु नित छाई।
सिय संग कुटीर विराजत थे
कही रामसे लक्ष्मण ने सकुचाई।
माया अरु ज्ञान विराग है का
देउ ईश्वर जीव को भेद बताई।
प्रभु पाद में प्रीति बढ़े हमरी
भ्रम, मोहऔ शोकसबहि मिटजाई।।

कही राम ने ध्यान से बन्धु सुनों
अति सूक्ष्म में तोहि बताय रहो।
हमरो तुम्हरो, तुम, हम सब वे
एहि माया में जीव भ्रमाय रहो।
जग देखे सुने मन जाय जहाँ
सबै माया को जाल फँसाय रहो।
अविद्या, सुविद्या हैं भेद सुनो
दुखदा अति दुष्ट है एक कहो।।

अरु दूजी प्रदान करे गुण को
प्रभु प्रेरित है अपनो वश नाहीं।
जेहिके उर ज्ञान को मान नहीं
नित ईश लखे सिगरे जगमाही।
सोइ व्यक्ति विरागी है बन्धु बड़ो
जोइ त्यागि सके सबही क्षण माही।
सत धर्म औ योग से ज्ञान बढ़े
मिले ज्ञान से मोक्ष ये संशय नाहीं॥

मम भक्ति तो मोहि बड़ी प्रिय है
एहि कारण भक्त लगें अति प्यारे।
सुन ज्ञान औ योग से भक्ति बड़ी
सब सन्तन को भव पार उतारे।
अति निर्मल मन युत भक्तन के
हम बंधु सदा प्रिय भक्त हमारे।
अब भक्ति के साधन तोहि कहूँ
यह पंथ सुगम चलि होयँ हमारे॥

जन विप्र के पाद जो प्रीति करैं
शुभ कर्म करैं श्रुति नीति विचारी।
तेहि फल बैराग्य हो विषयन से
करे धर्म में प्रेम औ प्रीति हमारी।
जोइ भक्ति से नित्य सुने औ गुने
रहे मस्त सदा लखि केलि हमारी।
सतकारत जो गुरु मातु पिता
अपने पति लीन रहे जोइ नारी।।

गुण मेरेहि गावत रात दिना
हुइ भाव विभोर बहे दृग धारा।
मद, मोह, व दम्भ न काम हिया
उनके उर में रहे वास हमारा।
अति प्रिय सब भक्त लगें हमको
अरु भक्तन को अवलम्ब हमारा।
भक्ती भव सागर नाव बने
मोय पाइबे को अति सूक्ष्म सहारा।।

एहि भाँति दिवस निशि बीत रहे।
नित ज्ञान की बात करें रघुराई
कुटिद्वार पै बैठि रहे जब वे
दसकंठ भगिनि सूर्पनखा आई।
तेहि राम को सुन्दर रूप लखो
लियो वाहु ने सुन्दर रूप बनाई।
कही मो सम नारि न, नर तुमसो
मिलिहै जगमें ढूढ़ै कोउ जाई॥

मोहिसो अब लौं न मिलो जग में
एहि कारण राम रही मैं कुमारी।
तुम्हें देख के नैन को चैन मिलो
करो मोसन व्याह मैं चेरि तुम्हारी।
प्रभु सीय की ओर विलोकि कही
इनको पति हूँ यह नारि हमारी।
मम बन्धु कुमार है जाउ वहाँ
कहती तुमहू अपने को कुमारी॥

तुरतहि गई लक्ष्मण पै कुटिला
कही लक्ष्मण नें तब राम निहारी ।
मैंतु सेवक हूँ इनको, अबला
पराधीन हूँ कोइ न वस्तु हमारी ।
ये समर्थ हैं भूप अवधपुर के
इन सम्मुख का औकात हमारी ।
एहि सेवक से तोहि का मिलिहै
मैं तो हूँ इन द्वार को एक भिखारी ॥

❋

पुनि राम पै लौटि तुरन्त गई
प्रभु ने पुनि लक्ष्मण पै पठवाई ।
खोय लाज बरे तुमसे वह ही
कहि ताहि सौमित्र तुरन्त भगाई ।
पुनि गई खिसियाय के राम ढिगाँ
निज रूप भयंकर लीन्ह बनाई ।
सि ा देख के निश्चरि रूप डरीं
क ा लक्ष्मण से सैनन रघुराई ॥

लक्ष्मण श्रुत नाक विहीन करी
तेहि रूप, कुरूप बनाय दियो।
मनो दे के चुनौती सी रावण को
वाहि युद्ध सँदेश भिजाय दियो।
बही रक्त की धार वहाँ इतनी
मनो गेरु से शैल रँगाय दियो।
बिलखात दुखी मन सूर्पनखा
खर-दूषण पाँहि प्रयाण कियो ॥

कही जाय धिकार है पौरुष को
तोहि होत भई गति का मम भाई।
बसैं राम लखन दण्डक वन में
उनके सँग सुन्दर नारि है आई।
उनने मम रूप बिगारि दियो
दोउकान औ नासिका काटि गिराई।
खर-दूषण ने कही धीर धरो
उनकों अबही हम मारिहैं जाई ॥

लइ सैन विशाल निशाचर की
धाये खर-दूषण गोल बनाई ।
नकटी उनि आगेहि संग चली
बनि असगुन घोर कुरूप बनाई ।
अति वीर निशाचर गर्जि चले
जिनने न कहूँ रण पीठ दिखाई ।
कोइ कहे जियतहि पकरो इनको
अरु बाँधि के नारि को लेहु छिनाई ।।

कहे कोइ कि मारि धरो इनकों
भगिनी बदलो अब लेहु चुकाई ।
बड़ी सैन निशाचर आत लखी
कही राम ने लक्ष्मण कों समझाई ।
तुम लै सिय जाउ गुफा गिरि की
बधिहौं मैं निश्चर सैन जो आई ।
गये लक्ष्मण तो खर-दूषण ने
निज सैन से घेर लये रघुराई ।।

नहिं राम पै वाण प्रभाव करें
लखि के खर-दूषण थे घबराये ।
कही नाहिं लखे इनसे कबहूँ
नर, नाग, असुर,सुर, किन्नर जाये ।
यद्यपि इन भगिनि कुरूप करी
तबहू नहिं मारन कों मन आयें ।
यदि नारि को देंहि हमें अपनी
तब ना बधिहैं कहि दूत पठाये ।।

पहुँचो तब दूत जहाँ प्रभु थे
खर-दूषण केरि सँदेश सुनायो ।
रिपु देखि डरें नहिं, राम कही
चाहि कालहु होय जो सन्मुख आयो।
मृगया हम खेलत क्षत्रिय हैं
बधिहैं इनसे खल वाहि बतायो।
करें शत्रु पै कायर लोग कृपा
तुम दूत उन्हें इतनो बतलायो ।।

जब लौटिकें आयके दूत कही
सुनतहि निश्चर अति क्रोध में आये।
लइके बहु अस्त्रन कों कर में
श्रीराम को मारन हेतु चलाये।
प्रभु एकहि वाण से काटि धरे
सब व्यर्थ भये जोइ अस्त्र चलाये।
अति घोर सो युद्ध कियो प्रभु ने
त्रिशरा, खर, दूषण मार गिराये ।।

सब सैनहु राम सँहारि दई
नभ से बहु देवन पुष्प गिराये।
सिय और लखन तब आय गये
श्रीराम के पाँव परे हरषाये।
कही आपने दुष्ट सँहारि दये
बनि पाथर जो सत के मग आये।
उत व्याकुल हुइ तब सूर्पनखा
गई रावण पै निज वेष बनाये ।।

शठ रोय कही दस कन्धर से
इक नारि सहित दुइ वीर हैं आये।
उन काटिके नाक औ कान मिरे
त्रिशरा, खर, दूषण मारि गिराये।
समझो अब राज गयो कर से
का होत कहाँ कबहूँ सुधि पाये।
तुम तो अति व्यस्त विलासन में
चिन्ता नहिं कोई जिये मर जाये॥

भगिनी कर रूप लखो जबहीं
दस कन्धर ने अति क्रोध दिखायो।
खर दूषण मृत्यु को हाल सुनो
अपने मन माँहि विचार बनायो।
खर दूषण वीर पराक्रमि थे
भगवान बिना कोइ मारि न पायो।
इन घालक भूप के पूत नहीं
लगे विष्णु ने है नर रूप बनायो॥

फिर सोचके शाप की बातिन कों
दसशीष बड़ो मन में हरषायो।
भुइपै अवतार भयो प्रभु को
हमरेहु उद्धार को है युग आयो।
अति तामस देह रही हमरी
नहिं भक्ति औ भाव कछू बन पायो।
यदि प्रेम करौं, तब ना बधिहैं
यह सोचिके राम से बैर बढ़ायो ॥

यदि ब्रम्ह न ये तो हरूँ सिय को
दोउ राम लखन कहँ मारिहौं जाई।
फिर कही भगिनी मत होउ दुखी
हरिहौं सिय कों, बधिहौं दोउ भाई।
कहिके मिलिहै अब दण्ड इन्हें
मारीच के धाम गयो अकुलाई।
वहि देखि भयो मारीच दुखी
पर नाय के सिर पूछी कुशलाई।

दस कंठ बताइ कथा सिगरी
कही आज करो तुम मोरि सहाई।
कपटी मृग जाय बनो विचरो
जहँ बैठ रहे सिय औ रघुराई।
हरिके उनकी सिय को तहँ से
देहु नारि वियोग उन्हें तड़पाई।
मारीच कही वह ईश्वर हैं
अघघातक है उनि संग लड़ाई।।

मुनि को मख राखत में उनने
मोहिपै बिनु नोक को वाण चलायो।
क्षण माँहि सुबाहु को मार दियो
मो कहँ शत योजन दूर गिरायो।
उनके पग पूजि प्रणाम करो
दसकंठ अपनु सब पाप मिटायो।
मारीच की बात सुनी शठ ने
तलवार निकारि के वाहि डरायो।।

लक्ष्मण फल लेन गये वन में
तब राम सिया एकान्त बुलाई ।
कही अग्नि में जाय निवास करो
अरु मैं दनुवंश सँहारहुँ जाई ।
छाया निज राखि के पंचवटी
तब सीय अगिनि महँ जाय समाई ।
प्रभु केलि कों कोइ न जानि सके
वही जानत है जाहि देत जनाई ।।

❋

यह गुप्त रहस्य रहो अति ही
लक्ष्मण तकहू जाहि जानि न पायो।
सँग ले मारीच को ताहि घरी
दशशीष वहाँ वन में चलि आयो ।
बनिके मृग स्वर्ण मरीच तबै
सियकों निज सुन्दर रूप दिखायो ।
मृग कों लखि रामहि सीय कही
बधिके यहि स्वर्णिम चर्म लिआयो ।।

कहिके प्रभु लक्ष्मण से, ठहरो
सिय पास दनुज कोइ आय न पाये।
अपने मन में सब जानत हू
तोहु बाण उठायके मारन धाये।
मृग दूर भगे कहुँ जाय छिपे
प्रकटे पुनि राम के पास में आये।
शठ दूर गयो जब ले प्रभु को
श्रीराम तबै इक बाण चलाये॥

शठ बाण के लागत भूमि गिरो
कहि हा लक्ष्मण! आओ मम भाई।
फिर रामको नाम लियो मन में
तजि दैत्य की देह गयो प्रभु पाई।
हा लक्ष्मण! शब्द सुनो जबहीं
कही सीय विपत्ति परे रघुराई।
द्रुति दौरि के जाउ लखन उन पै
करो घोर विपत्ति में बन्धु सहाई॥

अति वीर हैं राम, ये बन्धु कही
सके जीत नहीं रण में उन्हें कोई।
तुम्हरे मन लागत खोट भरी
करि व्यंग सिया तब खूबहि रोई।
लक्ष्मण मन मारि चले कहिके
बिधि वाम लगे कछु ठीक न होई।
उन बाण से खैंचिके रेख कही
एहि भीतर मातु रहो हित होई ॥

पहुँचे लक्ष्मण जहँ राम रहे
उन्हें देखि कही प्रभु ने कस आये।
तुम छोड़ि सिया दई कानन में
प्रिय बन्धु हो काहि विवेक गँवाये।
बहु निश्चर घूमत हैं वन में
कहुँ जानि अकेलि न वाहि सतायें।
लक्ष्मण कही दोष नहीं हमरो
कहि व्यँग वचन मोहि मातु पठाये ॥

उत पंचवटी दसशीष गयो
जहँ बैठि सिया प्रभु राह निहारे।
शठ साधु को भेष बनाय कही
देहु भीख सिया हम आये दुवारे।
जब रेख के भीतर से सिय ने
दई भीख तो ना कहके दुतकारे।
हम भीख बँधी नहिं लैंय सिया
यदि देन चहो देउ आय केद्वारे ॥

जब रेख के बाहर सीय गई
कर थामि कही चलु संग हमारे।
बल से नभ यान में डारि लियो
गयो वायु के मार्ग भरत हुँकारे।
रथ में सिय घोर विलाप करे
रोये, बिलखे, बहें अश्रु पनारे।
अति आकुल व्याकुल रोय रही
परवश भई लक्ष्मण राम पुकारे ॥

हुइ व्याकुल रोय कहे रथ में
प्रभु आय बचाउ हमें असुरारी।
लक्ष्मण नहिं दोष कछू तुम्हरो
करूँ काह गई हमरी मति मारी।
गिधराज जटायु मिले तबही
लखी रामप्रिया बिलखतिअतिभारी।
घबराउ न सीय कही खग ने
हम आय रहे मत होहु दुखारी।।

दसशीष पै गीध ने वार कियो
वाहि चोंचन मारिके भूमि गिरायो।
अति घोर भयो रण ताहि घरी
भयो मूर्छित रावण पार न पायो।
मूर्छा दसशीष की ज्यौंहि जगी
कर में अपने तलवार उठायो।
कसि के शठ वार कियो खग पै
दोउ पंखन को तेहि काटि गिरायो।।

पुनि लै सिय कों रथ हाँकि चलो
बिलखात बड़ी प्रभु नाम पुकारे।
गिरि पै तबहीं कपि वृन्द लखे
उनि टेरि सिया पट भूषण डारे।
सिय रोवत जात परी रथ में
अति व्याकुल सी प्रभु राह निहारे।
दसकंठ अशोक के कानन में
रथ रोक के सीय को जाय उतारे।।

मारीच को मारि फिरे जबहीं
श्रीराम लखन नहिं सीय को पाये।
कही राम निशाचर आय कोई
हरी सीय जबहिं लक्ष्मण तुम आये।
हुइहै सिय घोर मुसीबत में
अब काह करूँ प्रिय मोहि बतायें।
लक्ष्मण तब रोय कही उनसे
मिलें मातु हमें करो तात उपाये।।

सब ठौर पै ढूँढ़ि फिरे सिय कों
पर नाँहि उन्हें कहुँ दीन्ह दिखाई।
खग, मृग, गिरि, राह से पूछि रहे
अति व्याकुल से हुइकें रघुराई।
लतिका, मग वृक्ष कहो तुमही
कहुँ जात सिया परी होय दिखाई।
लखिके दुख माँहि परे प्रभु कों
द्रुम, बेलि दें रोयके पात गिराई।।

मग घायल गिद्ध जटायु मिले
करि नेह तुरत प्रभु पीर मिटाई।
कही राम ने तात भयो यह का
कही गीध दशा दसशीष बनाई।
हरिके सिय लंक की ओर गयो
नहिं मारि सको तेहि, मैं रघुराई।
तोहि देन सँदेश जियो अब लौं
अब मृत्यु रही मोहि पास बुलाई।।

तब राम कही तुम तात जियो
कही गीध प्रभू अब जान दे मोये।
तरि जात हैं नाम जपे जिनको
तिन सन्मुख देह को अन्त जो होये।
कटिकें सब बन्धन मुक्ति मिले
एहिसे बढ़िके कछु और न होये।
तजि राम की बाँहु में देह तबै
खग जाय चतुर्भुज रूप में खोये ।।

सुरलोक को गिद्ध चले जबही
तब राम कही उनसे समझाई ।
गई सीय हरी यह बात कहूँ
मम तात से ना कहियो तुम जाई ।
सँग में सब दैत्य समाज लिये
दसकंठ उन्हें बतलाइहैं जाई ।
अति ही प्रिय हो तुम भक्त मिरे
शुभकर्मन से तुमने गति पाई ।।

श्रीराम अँत्येष्ठि करी खग की
अति दुर्लभ जाहि पितहु नहिं पाई ।
पुनि सीय कों ढूढ़न हेतु चले
अति शोक भरे तहँ से दोउ भाई ।
मग शापित एक गँधर्व मिलो
तेहि राम ने शाप से मुक्ति दिलाई ।
बहु बिधि समझाय उबारि तबै
पहुँचे शबरी आश्रम रघुराई ॥

प्रभु आवन ज्यौंहि लखो शवरी
मुदित्है मग में बहु पुष्प बिछाये ।
पग धूलि धरी उन की सिरपै
पद धोय सुआसन पै बैठाये ।
भरि नेह मधुर फल चाखि धरे
उन्हें रुचि रुचि के श्री राम ने खाये ।
शवरी फिर जोरि के हाथ कही
अति कीन्ह कृपा प्रभु आप जो आये ॥

अति नीच सी भीलिनि जाति मेरी
तियहूँ अज्ञानि न बुद्धि है मोरे।
एहि आश्रम आप पधारि करी
दया दीन पै नाथ बड़प्पन तोरे।
नर, नारि औ जाति को भेद नहीं
कही रामने, भक्त बसैं उर मोरे।
अब नवधा भक्ति कहौं तुमसे
चित धारि सुनो एहिमें हित तोरे।

❋

सुनु भक्ति प्रथम सतसंग में है
अरु दूसरि भक्ति कथा रत मोरी।
सेवहि गुरु के पद को तिसरी
करे ध्यान हमार बहोरि बहोरी।
चौथी विश्वास से मंत्र जपै
अरु पंचम भजन करे मति भोरी।
अघ कर्म से दूर रहे छटवीं
करे धर्म के कर्म सदा तजि खोरी।।

सप्तम हर जीव में मोहि लखे
अरु सन्तन कों मोसेहु बड़ु माने।
मिले ताहि में ही सन्तोष करे
अष्टम नहिं देखत दोष बिराने।
नौवीं छल हीन सरल उर हो
अरु मोहि कों जो अपनो सब जाने।
इनमें जिनके उर एकहु है
वह भक्त मिरे अतिही सन्माने॥

मोकहँ प्रिय भक्ति सबै तुममें
जगमें दुर्लभ गति देतहूँ तोई।
जैसेहि सुधि सीय की मोहि मिले
बतलाइये राह चलूँ अब सोई।
पंपासर जाहु कही शवरी
तहँ मीत बने सुग्रीव है जोई।
तुमकों बतलावति राह वही
सब जानिके पूछत हो प्रभु जोई॥

तेहि कानन छोड़ि बढ़े मग में
भये देखि बसन्त दुखी रघुराई।
दृढ़ बृक्षन अंक लता लिपटी
खग, मृग सबके सँग नारि सुहाई।
द्रुम फूलि श्रँगार करें अपनो
तिन देखिके सीय की याद सताई।
कही राम लगे उपहास करें
यह सोचि दोऊ अखियाँ भर आई।।

पहुँचे पम्पा सर सोचत ही
यह ठाँव उन्हें अति ही मन भायो।
बहु सुरभित बृक्ष लगे तट पै
खग, मृग, बिचरैं, कहुँ कोयल गायो।
ऋषि गण सर के चहुँ ओर बसैं
सब आय मिले ज्यौंही सुन पायो।
बट बृक्ष की छाँव में बैठ गये
छबि राम की देखि अमित सुख पायो

सिर नाय गये मुनि वृन्द जबै
तब नारद जी विचरत भये आये।
लखि रामकों दौरि गये उनपै
वनवास में देखि उन्हें दुख पाये।
मुनि ने प्रभु के पद कंज गहे
करि शाप कीयाद बहुत बिलखाये।
कही मोहि क्षमा करि देहु प्रभू
मम कारण ही तुमने दुख पाये॥

कर जोरिके पूछ रहो तुमसे
करि नाथ कृपा अब मोहि बतायें।
माँगो जब रूप तुम्हार प्रभू
तब काहि कुरूप थे मोय बनाये।
श्री राम कही रहे ध्यान सदा
मम भक्त कुपंथ पै जान न पाये।
तोहि काम की जीत को गर्व भयो
तबही कपि रूप बनाय बचाये॥

सुनिकें मुनि राम के पाँव परे
कहि कीन्ह कृपा प्रभु मोहि बचाये।
अब नाथ करौं तुमसे बिनती
प्रभु सन्तन के गुण मोहि बतायें।
सुनिके अपने गुण कों सकुचें
गुण और के जो सुनिके सुख पायें।
सबमें मोहि जानिके प्रीति करें
नहिं त्यागत शीतल सौम्य स्वभाये ॥

✻

गुरु, गोविंद, विप्र कों सेवत जो
जप, तप, व्रत, शील रहे बिनु माया।
मम पाद में पावन प्रीति रखें
रत श्राद्ध, क्षमा, मैत्री अरु दाया।
विनयी, विज्ञान, विवेक भरो
श्रुति, शास्त्र, पुराण को ज्ञानहोपाया।
छल, दम्भ, न द्वेष रहे मन में
मम ध्यान में लीन सदा सुख दाया ॥

श्री राम कही पुनि नारद से
गुण सन्तन के हम तोहि बताये।
तुमतो अतिही प्रिय भक्त मिरे
जग के कल्याण के हेतु सुनाये।
मुनि पाँयन में धरि शीष कही
अति कीन्ह कृपा प्रभु राह दिखाये।
फिर स्तुति बारहि बार करी
गये ब्रम्ह पुरी प्रभु ध्यान लगाये।।

सब में देखत राम कों
सब से बड़े वे सन्त।
सुख भोगत संसार में
होत राम मेंहि अन्त।
प्रभू के सबसे प्यारे ।।

।। इति आरण्य काण्ड ।।

किष्किन्धा काण्ड

स्मृति सिय की संग ले
वन घूमत रघुनाथ ।
नवल सिंह से सँग चलें
लखन लिए धनु हाथ ।
राम के भक्त बड़े हैं ॥

तेहि ठाँव को छोड़ के राम चले
सँग में अपने निज बन्धु लिवाई।
रिष्यमूक पहाड़ दिखाइ परो
जहँ पै सुग्रीव बसैं कपिराई ।
मंत्रिन सँग बैठि रहे गिरि पै
दुइवीर परे उन्हें आत दिखाई ।
पठये कहुँ बालि के होंय न ये
कही हनुमत से देखहु तुम आई॥

पठयो यदि बालि ने हो इनको
हम भागि चलें कहुँ दूर पराये।
तब विप्र को रूप धरो कपि ने
श्रीराम की राह में दौरि के आये।
कही जाय के को तुम वीर महा
पथ कंटक पै केहि कारण आये।
नृप से अति सुन्दर आप लगैं
हिम आतप बात सहत कहँ जायें।।

✻

त्रय देव में कोइ हो तुम अथवा
नर रूप धरे नारायण आये।
त्रय लोक के नाथ हो मोहि लगै
जग कष्ट निवारण कों तुम आये।
तब राम कही प्रिय विप्र सुनो
हम राम लखन दशरथ नृप जाये।
निश्चर मम सीय हरी वन में
हम ढूढ़त ताहि यहाँ चलि आये।।

अपनो परिचय हम दीन्ह तुम्हें
तुम कौन हो विप्र हमें बतलाओ।
पहिचानि लियो कपि ने प्रभु को
अति प्रेम विह्वल हुइके सिर नायो।
करि स्तुति, हाथन जोरि कही
परि माया में पहिचान न पायो।
अब दास पै राम कृपा करियो
कहिके कपि ने निज रूप दिखायो॥

फिर राम के पाद में जाय परे
हुइ प्रेम विभोर उठें न उठाये।
रघुनाथ ने प्रीति लखी उर की
कर थामि उन्हें हिय सो चिपकाये।
फिर कही तुम तो अति ही प्रिय हो
मोहि सेवक, सन्त बहुत मन भायें।
कपि ने तब जानि प्रसन्न प्रभू
करि नेह विनीत हो बैन सुनाये॥

यहँ पैं कपिराज सुग्रीव बसैं
तव दास हैं वे उनकों अपनायें ।
प्रभु देहु अभय वरदान उन्हें
तव भक्त हैं आपनु मित्र बनायें ।
अब देहु उन्हें यह भार प्रभू
गण भेज के वे सिय खोज करायें ।
समझाय के राम लखन दोउ कों
कपि पीठ चढ़ाय पहाड़ पै लाये ।।

सुग्रीव लखो जबही प्रभु कों
अति गद्‌गद् हुइ मन में हरषायो ।
मम भाग्य बड़े प्रभु आप मिले
कहिके कपिराज ने शीष झुकायो ।
अपनो करि, राम उठाय उन्हें
अति आदर से निज कण्ठ लगायो ।
दोउ आपस में दृढ़ मीत भये
हनुमान ने पावक साक्ष्य करायो ।।

कही राम ने को तव मातु-पिता
सुग्रीव तबहि यह बैन सुनाये ।
पितु-मातु की नाथ विचित्र कथा
कहिके पुनि पूर्ण प्रसंग बताये ।
चतुरानन खोलिके नेत्र जबै
भुइ पै कीचर उन केरि गिराये ।
तेहि कीचर से कपि एक बनो
अति वीर तुम्हें प्रभु काह बतायें ।।

ऋक्षिराज धरो कपि नाम प्रभू
कही जाय धरा फल फूलनि खायो ।
भुइ पै जोइ दैत्य मिलें तुमकों
सबकों तुम घेरिके मारि गिरायो ।
कपि ने बहु दैत्य बधे तबहीं
चलिके इक सुन्दर कूप पै आयो ।
जल झाँकत छाँव दिखी अपनी
वाहि दैत्य समझि सोइ मारन धायो ।।

जल कूदत बात विचित्र भई
बिध ने ताहि सुन्दर नारि बनायो।
लखि के तेहि रूप कों मुग्ध भये
रवि,इन्द्र दोऊ जन वाहि बुलायो।
तेहि बाल पै इन्द्र को स्वेद गिरो
तब बालि प्रकट हुइ के जग आयो।
रवि तेज सुग्रीव गिरो उनके
उपजो तब मैं सुग्रीव कहायो ॥

पुनि नारि से वे कपि रूप भये
मुदि लै हमकों तब ब्रह्म पै आये।
सुत हूँ तुम्हरो कहि पाद परे
कस पूत जने सब हाल बताये।
इच्छा हरि केरि यही कहिके
किष्किन्धपुरी हम दोउ पठायें।
मिलिहैं वहँ राम के रूप प्रभू
करके उनकी सेवा सुख पायें ॥

सुग्रीवहि जानि के भक्त प्रभू
अपने मन की सब बात बताई ।
मिलिहैं सिय, राम अवश्य तुम्हें
सुग्रीव कही उनसे समझाई ।
हम एक दिना रहे बैठि यहाँ
नभ यान से जात परी दिखलाई ।
पटभूषण डारिकें देखि इतैं
लइके तव नाम बहुत बिलखाई ॥

❋

सुनिके अति खेद भयो मन में
पट राम के माँगत ही कपि लायो ।
वाहि देख के राम अधीर भये
कही लक्ष्मण से यहि देख बतायो ।
तुम तो रहे साथ सदा सिय के
पहिचान के वस्त्र हमें बतलायो ।
लक्ष्मण तब जोरि के हाथ कही
इनको प्रभु मैं पहिचान न पायो ॥

सिय मातु के पाद को छोड़ि प्रभू
कबहूँ उनके मुख ओर न हेरो ।
उनके पट नाहिं लखे कबहूँ
सियमातु चरण रहो नेत्र बसेरो ।
अब आपहि देखिके नाथ कहँ
बँधै आस कछू मिट जाय अँधेरो ।
पुनि देखके राम सशोक कही
पट सीय को है ये कहे मन मेरो ।।

❋

पुनि राम अधीर भये लखिकें
कपिराज सनेह उन्हें समझायो ।
अब सोच तजौ अपने मन से
मिलिहैं सिय मातु न तुम घबरायो ।
चहुँ दिक कपि भालुन भेजि प्रभू
करवाइहौं खोज उन्हें बतलायो ।
सुनिके श्रीराम प्रसन्न भये
सुग्रीव को उन निज कंठ लगायो ।।

फिर कही तुम काहि बसौ वन में
परो कौन सो कष्ट हमें बतलाओ।
जेहि कारण छोड़ भगे घर कों
अँसुवन भरिके सुग्रीव बतायो।
रहे बालि औ मैं दुइ बन्धु प्रभू
रहो प्रेम बड़ो अति ही सुख पायो।
निश्चर मय सुत मायावि बड़ो
इक रात प्रभू! मम गाँव में आयो॥

गरजो पुर में घुसि नाद करी
तब बालि झपटि तेहि कहँ दौड़ायो।
गिरि कें गुह में शठ भागि छिपो
तब बालि हमें कहिके समझायो।
हम मारन जात निशाचर कों
घुसि जो गिरि कन्दर माँहि समायो।
इक पक्ष लौं बाट तको हमरी
नहिं आउँ मरो मोहि मान के जायो॥

इक माह लौं बैठकें राह तकी
तब रक्त की धार वहाँ बहि आई।
प्रभु! शोणित देखि डरो मन में
समझो, शठ मार दियो मम भाई।
यह सोचि शिला गुह द्वार धरी
मोहि बाहर आय वो मार न पाई।
मन बोझिल बन्धु की याद लिये
पुर लौटि गयो अति ही बिलखाई॥

पुर कों जब भूप विहीन लखो
सबने मोहि राज दियो बरियाई।
जब मारि निशाचर बालि फिरो
मोहि देखि नृपति अति क्रोध में आई।
मोहि लतिन मारि के नारि हरी
अरु लीन्ह मिरो सर्वस्व छुड़ाई।
डर बालि के वास करूँ वन में
यहाँ शाप के कारण आय न पाई॥

नहिं आवत बालि यहाँ गिरि पै
कही राम ने कारण काह भयो।
सुग्रीव प्रसंग कहो सिगरो
जेहि कारण ही मुनि शाप दयो।
मय दानव के दुइ पुत्र रहे
मायावि और दुन्दुभि नाम रह्यो।
उनमेंहु दुन्दभि बलवान बड़ो
इक बार समुद्र के मध्य गयो॥

❋

कटिलौं भयो सिन्धु सबिह तेहिके
मथिके वहि दानव त्रास दिखायो।
कर जोरिके वारिधि वाहि तबै
तुम सम नहिं मैं, कहिके समझायो।
गिरिवर अति वीर है जाउ वहाँ
तेहि जाय के तब गिरिराज उठायो।
गिरि कही हम वीर नहीं तुमसे
अति वीर है बालि वहाँ तुम जायो॥

सुनिके गिरि बात चलो तबहीं
हुंकारि के दौरत बालि पै आयो।
ललकारि के बालि से जाय भिरो
भयो घोर समर दिन डूबन आयो।
तब बालि ने मुष्टि हनी कसिके
अरु दुन्दभि मारिके चीरि गिरायो।
मुनि आश्रम रक्त सनो तबहीं
दियो शाप मतंग जरै पुनि आयो ॥

प्रभु ताड़ के सात जो पेड़ खड़े
इक वाण इन्हें जोइ वीर गिराये।
सोइ बालि को मारि सके कहिके
उन वृक्षन केरि प्रसंग सुनाये।
गयो बालि थो एक दिना वन में
इक वृक्ष के फल तेहिके मन भाये।
फल सात थे तोड़िके साथ लये
धरि भूमि पैं जाय तड़ाग नहाये ॥

तबही इक सर्प भयंकर ने
फल पुञ्ज पै आसन आय जमायो।
यह देखि के बालि ने शाप दियो
कहि तू मम भोज विषाक्त बनायो।
उगिके फल सातहु ताड़ बनें
तब देह पै ही, कहि शाप सुनायो।
निकरे तेहि देह से बृक्ष तबै
यह देखके सर्प-पिता वहँ आयो॥

तब वाहु ने बालि कों शाप दियो
इक वाण से जो सब ताड़ गिराये।
बधिहै वही वीर तुम्हें क्षण में
कहि साँप के बाप ने रोष दिखाये।
पर बालि रहो मद चूर प्रभू
जेहि कारण ही हमनेहु दुख पाये।
यदि मारन चाहत याहि प्रभू
इक वाण से सातहु ताड़ गिरायें॥

सुनि मित्र को दुख भये राम दुखी
सुग्रीव से बैन कहे समझाई ।
निज हाथ उठाय करूँ प्रण मैं
अब बालि कों मैं बधिहौं कपिराई।
बचिहैं अब ना तेहि प्राण सखा
चहि ब्रह्म, महेश औ विष्णु पै जाई।
कहि दुन्दभि अस्त के ताड़न कों
प्रभु एकहि वाण में दीन्ह ढहाई ।।

अति वीर सो राम को रूप लखो
कपि के मन में कछु धीरज आयो।
प्रभु को पहिचान के दौरि तबै
उनके पद पंकज में सिर नायो ।
सिगरी सुख सम्पति कौं तजि कें
करिहौं इनको सेवा मन आयो ।
तुम बालि बड़ो हित मोर कियो
तव बैर ने राम से मोहि मिलायो।।

येहि दास पै नाथ कृपा करियो
सब त्यागि करूँ तुम्हरी सेवकाई ।
ऐसोहि हुइहै श्रीराम कही
कबहूँ मम बात बृथा नहिं जाई ।
लइके कर में धनु बाणन कों
सुग्रीव के संग चले रघुराई ।
वाहि बालि के पास पठाय दियो
कछु दूर से देख रहे दोउ भाई ।।

लखिके वहि क्रोध में बालि चलो
तब नारि ने वाहि बहुत समझायो।
प्रियतम ! श्रीराम हैं वीर महा
सुग्रीव ने है उनको बल पायो ।
तब बालि कही सुनु भीरु प्रिया
हम वीर हैं ना भय मोहि दिखायो।
रण में यदि राम बधैं हमकों
मिलिहै पद वो जाहि कोउ न पायो।।

अति गर्व में झूमत बालि चलो
लखि बन्धुकों मुष्टिक से कसि मारो।
भैराय के भूमि पैं जाय गिरो
उर राम सुमिर सुग्रीव विचारो।
उठके फिर राम से रोय कही
मुठिका नहिं थी मनु वज्र हो मारो।
तब राम शरीर छुयो कपि को
क्षण एक में सारोहि कष्ट निवारो।।

समरूप हो दोनहु राम कही
एहि कारण ही पहिचान न पायो।
निज ग्रीव की माल उतारि तबै
सुग्रीव की ग्रीव पिन्हाय बतायो।
फिर से तुम बालि से जाय भिरौ
हम रक्षक हैं कहि वाहि पठायो।
फिर दोनहु बन्धु भिरे कसिकें
प्रभु वृक्ष की ओट से वाण चलायो।।

शर लागत बालि गिरो भुइ पै
रघुबीर तबै तेहि सन्मुख आये।
पहिचानि के बालि कही उनसे
उर प्रेम पै वैन कठोर बनाये।
तुम धर्म के हित अवतार लियो
छिपि ब्याध लौं मोपर वाण चलाये।
सुग्रीव परम प्रिय तोहि लगै
मम का अपराध जो मारि गिराये।।

सुत नारि, बधू लघु बन्धु की हो
अथवा भगिनी, श्रीराम कही।
यदि पाप की दृष्टि लखै इनकों
अघ बोझ से ये दब जात मही।
ऐसे अघ कर्म करे नर जो
वध योग्य है बात पुरान कही।
सुग्रीव को कष्ट दियो तुमने
मम मीत है वो हम बाँह गही।।

तब बालि कही तोहि देखि प्रभू
अबहू रहे का कछु दोष हमारे।
सुनिके मृदु बैन कपीश्वर के
कर शीष पै राम सनेह से धारे।
क्षण एकहि कष्ट हरे सिगरे
प्रभु नेह भरे मृदु बैन उचारे।
जीना यदि चाहु जियाउँ तुम्हें
तब बालि कही बड़े भाग्य हमारे।।

प्रभु आपके हाथनि मुक्ति मिले
अति दुर्लभ जाहि मुनिहु नहिं पायें।
जिनको नितही सब नाम जपैं
कहि अन्त में राम न पुनि जग आयें।
प्रभु सोइ हैं सन्मुख आज खड़े
मरिके उन हाथ से मोक्ष ही पायें।
सुनि बालि कों राम प्रसन्न भये
हरि प्राण तबहि निज लोक पठाये।।

जब बालि की मृत्यु को हाल सुनो
पुरजन परिजन सबहीं उठि धाये।
तारा बहु भाँति विलाप करे
खोये निज धीर चुपै न चुपाये।
माया तब राम हरी सिगरी
अति नेह सहित ताराहि समझाये।
जेहि जीव ने जन्म लियो जगमें
वह निश्चय ही सब छोड़के जाये ।।

सुनिके वहि ज्ञान भयो तबही
उठि राम कमल पद में सिर नायो।
फिर राम बुलाय के बन्धु कही
सुग्रीव को राज तिलक कर आयो।
बैठारि सुग्रीव सिंहासन पै
अरु अंगद को युवराज बनायो।
सुग्रीव ने फिर बिधि रीतिनि से
मृत बालि शरीर को दाह करायो।।

पितु मातु हों या गुरु, बन्धु, सखा
सुर आदि सभी जन स्वार्थ पुजारी।
पर राम कृपालु दयानिधि हैं
करुणाकर भक्तन के हित कारी।
उनकोंहु कपिराज बनाय दियो
जो रहे नित बालि के त्रास दुखारी।
ऐसे प्रभु पाय भजें नहिं जो
वह मार रहे निज पाँव कुल्हारी॥

सुग्रीव को राम बुलाय तबै
बहु भाँति उन्हें नृप नीति सिखाई।
कही मैं वन माँहि निवास करूँ
पुर जाय के राज करो कपिराई।
उर माँहि सदा यह ध्यान रहें
मम काज बिना हुइहैं कठिनाई।
प्रभु के पग छू कपिराज कही
हम दास सदा तुम्हरे रघुराई॥

सुग्रीव गये अपने पुर को
तब राम प्रवर्षण गिरि पर आये।
बसिहैं रघुनाथ यहाँ कबहूँ
सुर सोचि गुफा गिरि माँहि बनाये।
सुन्दर फल कन्द औ मूल लगे
जब से श्री राम लखन गिरि आये।
खग, मृग, मधुकर बनि देव सभी
तहँ सेवत हैं प्रभु को हरषाये।।

निति बैठके प्रस्तर खण्डन पै
श्रीराम लखन कहँ ज्ञान सिखायें।
वर्षा ऋतु देख के राम कही
घन गर्जन सुनि सियकी सुधिआये।
खल प्रीति सी अस्थिर हुइ चमके
नभ में दामिनि दमके, छुप जाये।
बुधि लोग ज्यों छोड़ि घमंड नवैं
बरसैं घन भूमि के पास में आये।।

घन बूँदनि वार पहाड़ सहैं
जिमि सन्त सहैं मुदि दुष्टकी बानी।
गिरतहि जल भूमि पै कींच बनै
मनो जीव में हो माया लिपटानी।
हर छुद्र नदी उफनाय बही
धन पाय कछू खल सी बौरानी।
सद्गुण चलि आवत सज्जन पै
तैसेहि तालाब समेटत पानी॥

दादुर निज बोल सुनाय रहे
मनो पण्डित वेद पढ़ैं हरषाई।
बहिके सरि नीर समुद्र रुके
जिमि जीव अचल हुइ राम सहाई।
सब अर्क जवास हैं सूख गये
मनो पाप जरो सँग सन्त को पाई।
कहुँ धूलि धरा पै दिखात नहीं
जिमि पाप के कर्म से पुण्य बिलाई॥

निशि पूनम चन्द्रिका फैल रही
मनो सज्जन कीर्ति चहूँ दिक छाई।
अति बृष्टि से खेतन मेड़ फटी
मनो पाप बढ़ो शठ संग कों पाई।
निज खेत किसान निराय रहे
ज्यौं अवगुण सन्त निकारि भगाई।
ऊसर बरसे नहिं घास जमै
जिमि संत हृदय नहिं बासना आई॥

फुफकारि बयारि बहे बरषा
उरमें अति पीर प्रिया बिनु होये।
अबहू सुधि सीय की नाहिं मिली
कितने दिन बीत गये तेहि खोये।
कहँ होयगी बन्धु न जाने सिया
तेहि याद धरैं उर माँहि संजोयें।
श्रीराम जी याद करें सिय की
विरही नर लौं निज नैन भिगोये॥

जब वायु बहे बदरा झट से
आये क्षण में देखत उड़ जाये ।
परिवार में जैस कपूत भये
सिगरी सुख सम्पति ही बिखराये ।
दिन में कहुँ सूर्य दिखाइ परै
कहुँ होय तिमिर जब बादल छाये ।
लगे मानो सुसंग से गुण उपजै
अरु पाय कुसंगति धर्म नसाये ।।

अब तो बरसा ऋतु बीत गई
प्रिय बन्धु शरद मनभावन आई ।
पथ को जल सोखि पतंग लियो
मनो लोभ मिटो सन्तोष को पाई ।
सरिता जल निर्मल संत हिया
सरनीर घटो अरु खंजन आई ।
नभ से सब बादल दूर भये
लखि सोच सहित बोले रघुराई ।।

लक्ष्मण अबहू सुधि नाहिं मिली
हुइहै जाने कहँ पै वैदेही ।
सुधि कैसेहु एकहु बार मिले
हम जीत के कालहु लाइहौं तेही।
सुग्रीवहु मस्त भयो मद में
अरु भूल गयो अब खोजन तेही।
जेहि वाण से बालि बध्यो हमने
शर वाहि से मारिहौं काल हि तेही।।

❋

लक्ष्मण जब क्रोध लखो प्रभु को
अपनो धनुवाण तुरन्त उठायो ।
तब राम कहो तुम जाउ अबै
सुग्रीव कों भय दिखलाय के लायो।
तेहिसेहु पहिले हनुमान उन्हें
कई बारहि काम की याद दिलायो।
इतने दिन बीत गए अब लौं
सिय खोजन हेतु न काहु पठायो ।।

सुनि के मन में सुग्रीव डरे
कही भूल भई विषयन मति खाई।
बहु दूत बुलाय के भेज दिये
सबको भय प्रेम विशेष दिखाई ।
पन्द्रह दिन में बधिहौं सबकों
यदि सीय की खोज नहीं कर पाई।
कपि दूतन कों निर्देश दियो
भय मानि चले चरणन सिरनाई ।।

तेहि क्षण कर में धनुवाण लिये
अति क्रोध भरे लक्ष्मण तहँ आये।
कहँ हैं सुग्रीव बताउ हमें
कहिके धनु पै तेहि वाण चढ़ाये ।
भय ग्रस्त भई सिगरी नगरी
अंगद कर जोरि वहाँ तब आये ।
उनि शेष के पाद में शीष धरी
लक्ष्मण उन्हें नेह सौं कंठ लगाये ।।

अति क्रोध में लक्ष्मण हैं सुनिके
सुग्रीव बड़े मन में घबराये।
तारा सँग भेजि पवनसुत कों
परि पाँय उन्हें सादर बुलवाये।
उनके पग पूजि कपीश तबै
करि आदर आसन पै बैठाये।
पग में पुनि शीष धरो कपि ने
तब लक्ष्मण सादर कंठ लगाये॥

मैंतु भूल गयो परि विषयन में
जेहि कारण काज नहीं कर पायो।
सुनि प्रेम विनीत वचन कपि के
लक्ष्मण अपने मन में सुख पायो।
चहुँ दिक कपि दूत हैं भेज दिये
हनुमान ने लक्ष्मण कों समझायो
फिर अंगद आदि कपिन संगले
सुग्रीव तुरन्तहि राम पैं आयो॥

सिर नाय के राम से आय कही
कर देहु क्षमा नहिं दोष हमारो ।
परि गयो मैं तो भोग विलासन में
तब माया के वश है जग सारो ।
कठपुतरी से सब नाच रहे
सुर नर मुनि औ ब्रम्हाण्ड ये सारो ।
एहि बन्ध को तोड़ सकें जन वे
जोइ पावत हैं प्रभु तोर सहारो ।।

❋

रघुवीर कही अति ही प्रिय हो
मम मित्र कपीश, भरत सम भाई ।
अब तो कछु शीघ्र उपाय करो
जेहि से सिय की द्रुति हो सुधियाई ।
तेहि क्षण कपि वृन्द अनेक तहाँ
गये आय जहाँ बैठे रघुराई ।
सब राम को देखि सनाथ भये
रघुनाथ सबनि पूछी कुशलाई ।।

कपि चारहुँ ओर को भेज दिये
सुग्रीव कही सिय खोजके लायो।
इक माह में जो सुधि नाहिं मिली
समझो सबने निज प्राण गँवायो।
अंगद, नल, नील, पवनसुत को
दिशि दक्षिण खोजन हेतु पठायो।
रिछराज हो उम्र में आप बड़े
तुमहू सँग जायके खोज करायो।।

※

सब लोग चले सिर नाय तबै
फिर मारुति नन्दन शीष नवायो।
उन्हें मुद्रिका राम उतारि दई
अति नेह सहित कहि कंठ लगायो।
सिय को समझाइयो जाय तुम्हीं
मम शक्ति, वियोग बताय के आयो।
हनुमन्त प्रसन्न भये मन में
चले राम सुमिर पुनि पुनि सिर नायो

सब खोज रहे सिय कों मन से
वन, बाग, तड़ाग बचो कोइ नाहीं।
निशिचर यदि कोइ मिले मग में
धरि लात हनैं तेहिकों क्षण माहीं।
पर संत मिलैं जब कोइ उन्हें
सब पूछत सीय मिली तोहु नाहीं।
सबको अति प्यास लगी तबही
पर नीर मिलो उनकों कहुँ नाहीं।।

✠

मरिहैं बिनु नीर के जानि परै
कहिके हनुमन्त चढ़े गिरि ऊपर।
इक बाग सौ देखि परो उनकों
बक हंस किलोल करैं तेहि ऊपर।
उतरे गिरि से हनुमान तबै
सब संग गये पुनि बाग के भीतर।
सर एक पुनीत दिखो उनकों
प्रभु मन्दिर स्वच्छ बनो तेहि ऊपर।।

तपलीन तपस्विनि एक दिखी
सब बानर यूथ वहीं चलि आये।
अति नेह प्रणाम कियो सबने
तेहि आयशु से मीठे फल खाये।
दियो आशिर्वाद तपस्विनि ने
मिलिहै तुम्हें सीय न सोच मनायें।
सबने भरि जी जलपान कियो
सुनके तेहि बैन बड़ो सुख पाये॥

तपसिन कही बन्द करो अखियाँ
सबको मैं देति अबहिं पहुँचाई।
तुम्हें भेजके मैं अब जान चहूँ
बैठे जहाँ बन्धु सहित रघुराई।
सब नेत्रनि मूँदि के ठाढ़ भये
खोलत पहुँचें सागर तट जाई।
साध्वी श्री राम के पास गई
करके स्तुति उनकों सिर नाई॥

कपि सिन्धु के तीर विचार करें
करें काह मिलैं हमकों सिय माई।
है दोनोहुँ भाँति मरन अपनो
इत खन्दक है तो है उत खाई।
घबराय के अंगद रोय परे
मिली सीय न तो बधिहैं कपिराई।
सबही मिलिकें समझाय रहे
हैं राम महान परम सुख दाई॥

सम्पाति सुन्यौ गिरि कन्दर से
कपि यूथ करें भय मान के बाता।
कही मैं बहुकाल से भूख सहौं
दये बानर भोज को भेज विधाता।
सुनि गिद्ध की बात डरे सबही
मन सोचि कहैं हुइहै का ताता।
कही अंगद धन्य जटायु रहे
निज प्राण तजे उनि राम की बाता॥

सुनिके कपि बात कों गीध उठो
भयभीत जहाँ कपि थे वहाँ आयो।
कही बन्धु जटायु कों काह भयो
तब बानर नें सब हाल बतायो।
कही बन्धु जटायु तो धन्य भयो
तन त्यागि जो राम के काम में आयो।
करिबे को क्रिया निज बन्धु की वो
चलिके तब सागर तीर पै आयो।।

करि बन्धु को काज तबै खग ने
मत सोच करो, कहि बात बताई।
इक दिन हम दोउ उड़े रवि कों
लखि तेज असह्य लौटो लघु भाई।
पर मैं गतिमान रह्यो उतही
जरे पंख गिरो तब भूमि पै आई।
मुनि चन्द्रमा कीन्ह सहाय मेरी
दियोज्ञानविपुल,बहुबिधि समझाई।।

त्रेता जब ब्रम्ह प्रकट हुइ हैं
तब निश्चरराज हरैं तेहि नारी।
मिलिहैं सिय खोजत दूत तुम्हें
उनके दर्शन मिटिहैं श्रम सारी।
जमिहैं पुनि पंख तुम्हार तबै
तुम गीध न हो मन माँहि दुखारी।
अब तो कपि लागत सत्य भई
मुनिचन्द्र गिरा जोइ मोय उचारी॥

❋

सुनु लंक त्रिकूट पहाड़ बसी
तहँ रावण राज करे हरषाई।
वहँ बाग है एक अशोकन को
तहँ सीय ससोक सी देय दिखाई।
एहि ठाँव से देख सको तुम ना
पर गीध कों दूर से देत दिखाई।
कपिवृन्द अशक्त भयो अब मैं
नहिं तो तोहि देत वहाँ पहुँचाई॥

शत योजन सागर पार करे
श्रीराम को काम करै सोइ वीरा।
मोहि देखिके धीर धरौ मन में
रघुनाथ कृपा भयो स्वस्थ शरीरा।
जेहि सुमिरत पाप मिटैं सिगरे
तेहिके तुम दूत न होउ अधीरा।
इतनो कहिके उड़ि गीध गयो
अति विस्मित हुइ रहे देखत वीरा॥

❋

सब वीर बखान करैं बल को
मन संशय पार वे जाय न पायें।
जामवन्त कही अब बृद्ध भयो
तबहूँ मन होत है धाय के जायें।
अँगद कही पार तो जाय सकैं
मन संशय शायद लौट न पायें।
हनुमान से तब रिछराज कही
अति वीर हो तुम बल वायु को पाये॥

हरि काज कों तुम अवतार लियो
हैं कौन सो काम जो ना कर पायो।
इतनो सुनि ज्ञान भयो बल को
गरजे परवत सम रूप बनायो ।
क्षण एकहि में यह सिन्धु लघूँ
दैंउ रावण मारि उन्हें बतलायों।
फिर कही, कहो कौन सो काम करूँ
जामवन्त कही सिय की सुधि लायो।।

कपि खोजहु लंक में जाय सिया
फिर लौट के राम से हाल बताओ।
हैं रावण गेह में मातु दुखी
उनसें मिलके तुम धीर बँधाओ ।
प्रभु ब्रम्ह हैं राम को रूप धरैं
उनको धरि ध्यान तुरन्तहि जाओ।
बल रावण तौलि, प्रबोधि सियँ
सब देख के राम कों आय बताओ।।

जामवन्त जो सीख दई उनको
सोई मारुति नन्दन के मन भाई।
उन कही हम जात हैं, राह तको
सहिकैं दुख, कन्द औ मूलनि खाई।
ठहरो तबलौं एहि ठाँव सभी
जबलौं सिय देखके लौट न आई।
कर जोरि प्रणाम कियो सबको
हुँकारि चलो कपि राम मनाई॥

तब हनुमन्त प्रसन्न हुइ
चले सुमिरि श्रीराम।
प्रभु के कारज के बिना
उन्हें कहाँ आराम।
राम के भक्त निराले॥

इति किष्किन्धा काण्ड

सुन्दर काण्ड

बार बार सुमिरहुँ तुम्हें
एका समय हनुमान ।
अपने ही राम देहु मोहि
राम शक्ति, बुद्धि, ज्ञान ।
शरन में आयो तेरी ।।

हनुमान कों देवन जात लखो
तब सुरसहिं परखन हेतु पठायो ।
सुरसा कही देव अहार दियो
मग रोकि खड़ी जेहि पै कपि आयो।
मुख खोलि विशाल कियो अपनो
हनुमन्तहुँ ने तब रूप बढ़ायो ।
सुरसा जितनो मुख खोल सकी
तासेहु दुगनो कपि रूप बनायो ।।

मुख कों शत योजन बाढ़ि कियो
तबही कपि ने लघु रूप बनायो ।
क्षण में सुरसा मुख में घुसिके
श्रीराम भगत पुनि बाहर आयो ।
सुरसा कही देख लियो तुमकों
कपि, राम के काम के लायक पायो।
फिर माँगि बिदा सिरनाय उन्हें
हनुमन्त चलो मन में हरषायो ।।

❋

दइ आशिष मातु गई घर कों
हनुमान चले उर राम मनाई ।
मग सिन्धु निशाचरि एक बसै
पकरै नभ से खग देखके छाईं ।
तेहि ने कपि कों नभ जात गह्यो
कपि मुष्टक मारि बधेहु तेहि जाई ।
क्षण में फिर पार समुद्र कियो
पहुँचे गिरि पै उर धरि रघुराई ।।

हनुमन्त ने लंक लखी तबही
चढ़िकैं गिरि पै मन में हरषाई।
वन, उपवन, बाग अनेक लगे
दिखी स्वर्ण की लंक बड़ी मन भाई।
तहँ वीर अनेक थे घूम रहे
दिखी सैन विशाल गिनी नहिं जाई।
सुर, नर, गन्धर्वन की बनिता
रहीं घूमि वहाँ श्रंगार बनाई ॥

पुर रक्षक वृन्द अनेक दिखे
कपि सोच परों कैसे वहँ जाऊँ।
तबही अपनो लघु रूप धरो
पुर कीन्ह प्रवेश लै राम को नाऊँ।
इक निशिचरि लंकिनी द्वार खड़ी
तेहि रोक लियो कहिके तोहि खाऊँ।
कपिने तेहि मुष्टि प्रहार कियो
गिरी भूमि पकरि हनुमन्त के पाऊँ॥

कही लंकिनी ब्रम्ह कही हमसे
मरिहैं निश्चिर तब सत्य ये जानो।
गिरिहौ कपि वार से भूमि जबै
सोइ आज भयो हमने मन मानो।
तुम राम के दूत महान बड़े
तब पाँय परूँ, तुमको पहिचानो।
तुम जाउ प्रवेश करो पुर में
धरि के लघु रूप घुसो कपि स्यानो।।

कपिने सबही गृह जाय लखे
पर सीय कहूँ नहिं दीन्ह दिखाई।
दसशीषहु सोवत गेह दिखो
परनाहिं दिखी कहुँ जानकी माई।
हरि मन्दिर युत गृह एक लखो
तुलसी बिरवा शुचि दीन्हि दिखाई।
तहँ सोवत निश्चर एक जगो।
कहि राम को नाम लई जमुहाई।।

यह जानिके राम को भक्त कोई
हनुमान प्रकट हुइ वाहि मिले ।
जब राम को दूत लखो गृह में
कहि ताहि विभीषण कंठ मिले ।
अब तो कपि मोहि भरोस भयो
श्रीराम कृपा सेहि सन्त मिलें ।
ठहरे भये कीचड़ से जल में
सरसिज सम सुन्दर पुष्प खिलें ।।

मैं तो रावण-बन्धु निशाचर हूँ
रहिके उन संग बड़ो दुख पायो ।
जिमि दाँतन बीच में जीभ रहे
परतंत्र पड़ो उर घाव समायो ।
अपनीहु अब बात कहो कपि जू
केहि कारण रात्रि में आय जगायो ।
दसशीष जो सीय हरी वो कहाँ
हनुमन्त कहो प्रिय मोहि बतायो ।।

तब बोले बिभीषण है जननी
भरी शोक, अशोकन के वन में।
दिन-रैनहि रावण त्रास जरै
पर जीवित राम धरैं मन में।
तहँ से हनुमंत हुँकारि चलो
पहुँचो तेहि ठाँव कछुहि क्षण में।
बिरहाकुल शोक सनी सिय माँ
उन्हें देखि परी तेहि कानन में।।

तरु पै निशि बैठि व्यतीत करी
गयो प्रातहि पातन पुँज लुकाई।
यतुधानी अनेक दिखीं कपि कों
सिय कों समझावति त्रास दिखाई।
क्षण मेंहि दसकन्धर आय गयो
कहे बैन सिया सन प्रेम दिखाई।
मत राम कों सोचु बरो हमकों
तोहि कौं पटरानी मैं देंहु बनाई।।

करिके त्रण ओट कही सिय ने
तव कामना पूरि नहिं हुइ पाये।
तलवार उठाय कही शठ ने
तोहिकौं अबही हम मारि गिरायें।
मत मारु, मन्दोदरि वाहि कही
कछु देहु समय एहि कों समझायें।
इक मास को काल दियो कहिके
तेहि बीतत ही बरिहौं बरियाये॥

✠

यतुधानी सयानी जो बैठी वहाँ
तिनकों दशकन्धर ने समझायो।
साम, दाम औ दण्ड या भेदहि से
सियकों समझाय के त्रास दिखायो।
गयो रावण, तब यतुधानिन ने
सिय कों बहुरूप दिखाय डरायो।
त्रिजटा सिय से अति नेह करे
कही हे सिय! स्वप्न मुझे [illegible]आयो॥

सँग सैन के राम हैं आय गये
उनने निश्चर कुल मारि गिरायो।
तिनको इक वानर दूत बड़ो
सोइ आय के स्वर्ण की लंक जरायो।
फिर आयके राम मिले तुमसे
अरु लंक को राज विभीषण पायो।
यह स्वप्न सिया मोहि सत्य लगै
अब आइहैं राम न तुम घबरायो॥

✠

सिय ने कही मातु सुनो हमरी
उर धीरज छूटत चैन न आये।
अब काठ कों बीनि बनाऊँ चिता
नहिं आग मिले कोइ मोय मँगाये।
तनकों अब जारि के छार करूँ
दसकंधर राखहु पाय न पाये।
सिय से कहि के सिग नारि गई
नहिं पावक कोउ यहाँ हम लायें॥

सबके तुम शोक अशोक हरो
नहिं पावक नेक हमें तुम लाये ।
शुभ जानि समय हनुमन्त तबै
मुदरी प्रभु की तेहि ठाँव गिराये ।
सिय पावक जानि उठाय लई
जब देखी तो राम लिखे भये पाये ।
मुदरी पहिचान के सोच रही
छल से कोइ याहि बनाय न पाये ।।

❋

बलवान हैं राम महान बड़े
उन्हें सृष्टि में कोइ भी मार न पायें ।
तुम सन्मुख आउ कही सिय ने
तुम कौन हो, ये मुँदरी कहँ पाये ।
प्रकटो कपि पाद परो सिय के
श्रीराम को सेवक हूँ, बतलाये ।
हनुमन्त है नाम पवन सुत हूँ
रघुनाथ सँदेश दै मोहि पठाये ।।

अइहैं कछु काल में राम यहाँ
उन वानर रीछ की सैन बनाई।
प्रभु मारि निशाचर वृन्दन कों
जइहैं सँग सादर तोहि लिवाई।
निशि बासर याद करैं तुम्हरी
बिनु तोहि लखे उन्हें चैन न आई।
तोहिकौं विश्वास दिलावन कों
मुदरी यह नाथ ने मातु पठाई ॥

⊠

सुनिके कपि बैन कों चैन मिलो
कही सोय ये बात समझ नहिं आई।
का तेरेहि से लघु वानर लै
प्रभु आयके लंक कों जीतिहैं भाई।
गिरि सो कपि रूप विशाल कियो
कही मातु से निज बल कों समझाई।
क्षण एक में रावण मारिके मैं
लैहु तोहि अबहि प्रभु पै पहुँचाई ॥

पर आयशु है प्रभु की इतनो
तोहि देखके मातु कहूँ सुधियाई ।
यह देख भरोस भयो सियको
कपि कह्यो फिर से लघु रूप बनाई ।
मो कहँ अति भूख लगी सिय माँ
तव आयशु होय तो लूँ फल खाई ।
कही सीय सुभट रखवार यहाँ
फल तोड़त ही तोय मारिहैं आई ।।

❋

जब आपको आशिष हो सँग में
तो कहा करिहैं हमरो रखवारें ।
कपि खाउ सुफल तब सीय कही
हनुमन्त चले उर में प्रभु धारे ।
कपि पेड़न पेड़न कूद रहो
फल खाये कछू, बहु वृक्ष उखारे ।
रखवारिन ने जब घेरि लियो
तब पेड़ उखारिकें वे सब मारे ।।

बच पाये वे दौरि गये नृप पै
कही वानर ने सब बाग उजारो।
रखवारिन रोकन चाहो जबै
कपि ने तबही उनकों संहारो।
कही अक्षकुमार से रावण ने
सुत लेहु कटक कपिकों तुम मारो।
उन्हें देखत ही कपि टूट परो
सब सैन समेत कुमार सँहारो॥

सुनिके बध अक्षकुमार तबै
गरजो दसकन्धर क्रोध में आयो।
घननाद से शीघ्र बुलाय कही
तुम जाउ अबहि कपि बाँध के लायो।
अति घोर सो युद्ध भयो कपि से
घननाद थको कछु पार न पायो।
तबही ब्रह्मास्त्र चलाय दियो
प्रभु अस्त्र समझि कपिनें सिर नायो॥

शर लागत आय गई मुरछा
शठ बाँधिके हनुमत कों लै आयो ।
दसमुख करि क्रोध कही कपि से
शठ कौन है तू कहि हेतु है आयो ।
केहि कारण बाग उजारि दियो
अरु काहि मिरो सुत मारि गिरायो ।
कपि सत्य बताउ हमें नहिं तो
समझो तुमने निज प्राण गँवायो ।।

मैंतु राम को दूत पवन सुत हूँ
तुमकों समझावन के हित आयो ।
उनकों हि बध्यौ, जिन वार कियो
मोय भूख लगी तेहि से फल खायो ।
इतनो तुमसे दसशीष कहूँ
सिय कों प्रभु पै सादर पहुँचायो ।
नहिं जान लो राम के बाणन से
अपनेहि करसे तुम वंश नसायो ।।

गरजो तब रावण क्रोध भरो
कही मारु इसे शठ जान न पाये।
तब जोरि के हाथ विभीषण ने
कही दूत बधे अपयश नृप पाये।
सुनि बन्धु, बध्यो नहिं वानर कों
दसशीष वसन घृत तेल मँगाये।
कही होत है पूँछ से मोह बड़ो
घृत बोरि लपेट कें आग लगाये॥

कपि कूदि तुरन्त चढ़ो छत पै
पुर के हर धाम में आग लगाई।
दहकी अगिनी सब वायु चले
सिगरी नगरी कपि दीन्ह जराई।
इक गेह विभीषण को न जरो
निज भक्त को पक्ष लियो रघुराई।
जरिके सब लंक थी भस्म भई
कपि सिन्धु में कूदि के पूँछ बुझाई॥

निज पूँछ की आग बुझाय कपी
पुनि लौट के सीय के पास में आये।
कही माँ अब जान चहूँ प्रभु पै
तब चरणन में पुनि-पुनि सिर नायें।
प्रभु ने मोहि जैसोहि चिन्ह दियो
तुमसेहु कछु माँ वैसोहि हम पायें।
चूड़ामणि सीय उतारि दियो
औ कही प्रभु को मम याद दिलायें।।

चूड़ामणि हाथ लियो कपि ने
पुनि मातु के चरणन में सिर नायो।
अति धीरज दै समझाय उन्हें
कपि कूद के सिन्धु के पार से आयो।
अंगद, रिछराज से जाय मिलो
उन दौरि पवनसुत कंठ लगायो।
कपि ने सब हाल बताय दियो
कहाँ सीय मिली, कस लंक जरायो।।

हर्षित सब लौट चले प्रभु पै
उद्घोष करैं कहि जय रघुराई।
मधु के वन माँहि घुसे सबही
फल खान लगे रुचि अंगद पाई।
रखवार विरोध कियो जबही
कपि रीछन ने दियो मारि भगाई।
अंगद सब बाग उजारि दियो
उन दौरि कपीश कों जाय बताई।।

सुग्रीव कही सुधि सीय मिली
नहिं तो एहि बाग में कोइ न आतो।
नहिं अंगद में इतनी दम थी
प्रभु काज बिना मधु के फल खातो।
तब लौं सब वानर आय गये
कियो स्वागत खूब कपीश वहाँ तो।
सुग्रीव के पद सब आय छुए
हनुमन्त के गुण हर वानर गातो।।

इन प्राण बचाय लिये सबके
हनुमत अति वीर के हम आभारी।
सुग्रीव लगाय के कंठ उन्हें
रहे पूछ कहो कस लंक थी जारी।
हनुमान ने पूर्ण वृतान्त कहो
कस सीय मिली अरु लंकिनी मारी।
सुग्रीव अभार कियो उनको
पहुँचे फिर वे जहँ रामखरारी।।

❋

प्रभु प्रस्तर खण्ड विराज रहे
कपिराज सहित सबने सिर नाये।
रिछराज कहो अञ्जनि सुत ने
कस सिन्धु लँघो, सुधि सीय की पाये।
श्रीराम अभार कियो उनको
भरि बाँह पवनसुत कंठ लगाये।
हुइ भाव-विभोर कहो उनने
कपि मोहि सँदेश सिया को सुनायें।।

गहिके प्रभु पाद कही कपि ने
विरहाकुल थी सिय मातु दुखारी।
कहै काहि न प्राण गये अब लौं
प्रभु से बिछुड़ी बिलखाति थी भारी।
माँगो जब मातु से चिन्ह कछू
तब चूड़ामणि यह दीन्ह उतारी।
माँगों जोइ राम, दियो कपि ने
कियो सोच,बहो दोउ नेत्रन बारी।।

❋

कैसे सिय प्राण बचाय रही
कपि मोहि कहो, प्रभु बैन उचारे।
नित ही सिय रावण त्राण सहै
निज प्राण बचात लै नाम तुम्हारे।
उनने यें सँदेश कह्यो प्रभु से
कहियो द्रुति आवहिं पास हमारे।
इक माह के बाद नहीं बचिहैं
यदि आये नहीं तो ये प्राण हमारे।।

हनुमान से नेह सौं राम कही
तुमसो नहिं और कोई उपकारी ।
हे कपि ! मैं हूँ तोर कृतज्ञ बड़ो
तुमने सिय खोजि विपत्ति है टारी।
वर माँगलो तोहि मैं देन चहूँ
अति भावुक हुइ कही राम खरारी।
कपि ने परि पाँव कही प्रभु से
अनपायनी भक्ति चहूँ मैं तुम्हारी ।।

एवमस्तु कही प्रभु ने उनसे
कपि पाँव परो औ उठै न उठाये ।
करि आग्रह राम उठाये उन्हें
अरु पीठ पै नेह सौं हाथ फिराये ।
फिर लंक के हाल कों पूछत हैं
हनुमन्त कों वे निज पास बिठाये ।
कस रावण लंकहि पालि रहो
कहु कैस कपी तुम कोट जराये ।।

कर जोरि के गर्वरहित हुइके
कपि ने कही है तुम्हरी प्रभुताई।
पुनि कही जस सागर पार कियो
पुर जारि के मातु को आशिष पाई।
फिर से कपि सीय सँदेश कहो
अब बेगि चलो बिलखत होय माई।
भये कष्ट कों सोच के राम दुखी
सिय की सुधि में अँखियाँ भर आई।।

सुनि सीय सँदेश विषाद भरे
श्रीराम जगत दुख मेंटन हारे।
अब बेगहि लंक को कूँच करो
कहिके सुग्रीव की ओर निहारे।
निज सैन कपीश सजाय लई
कपि एक से एक भरैं हुँकारे।
सब राम के पाँयनि आय परे
भये राम मुदित कपि सैन निहारे।।

श्रीराम तुरन्त प्रयाण कियो
सँग लै कपि रीछ की सैन सुहाई ।
शुभ शकुन अनेक भये सियकों
गई जानि कि आवत हैं रघुराई ।
जितने शुभ होंय शकुन सियकों
असगुन रावण कहँ दीन्ह दिखाई ।
मन्दोदरि असगुन ज्यौंहि लखे
हुइ व्याकुल रही पति को समझाई।।

❋

श्रीराम नहीं कोइ मानव हैं
वेतु हैं प्रभु तीनहुँ लोक के स्वामी ।
शरणागत हेतु कृपालु हैं वे
सुखदायक हैं प्रभु अन्तर्यामी ।
उनि बैर से नाहिं सुखी रहिहौ
देहु भेजि सियै न बनो प्रभु कामी ।
श्रीराम के पाँवन में परिके
अपने दोउ लोक सम्हारिलो स्वामी।।

दसकंठ मँदोदरि डाँटि दई
कही मूढ़ तू भीत सिखावत मोही।
निज नारि वियोग में पागल से
वन में भटकत हुइहैं अब ओही।
सँग सैन ले वानर, रीछन की
नहिं मानव जीत सके कोइ मोही।
मन्दोदरि पुनि समझाय कही
नहिं लाभ कछू बने राम के द्रोही।।

लंका तेहि दूत जराय गयो
सुनि गर्जन निश्चरि गर्भ गिराये।
उनके लघु दूत को हाल है ये
तब का हुइहैं जब वे चढ़ि आयें।
अबहू कछु नाथ नहीं बिगरो
सँग लेहु सिया चलि शीष झुकायें।
कसिके गृहणी कहँ डाँटि दियो
फिर गर्जत राजसभा महँ आये।।

तेहि क्षण इक दूत ने आय कही
कर जोरि हे रावण राज हमारे।
तट पै अब सिन्धु के आय गये
श्रीराम लखन सँग में कपि सारे।
पूछी तब रावण मंत्रिन से
रुख देखि सचिव कही नाथ हमारे।
यदि आय रहे कपि ठीकहि है
मम भोजन है हम खाइहैं सारे।।

❋

दसशीष तबहि अटहास करी
अरु पूरी सभा सुनि तान मिलाई।
मंत्री, शुभचिन्तक, वैद्य, गुरू
मुख देखि कहें तब नाहिं भलाई।
यह देखि विभीषण बोलि परे
हे बन्धु उचित सिय देहु पठाई।
श्रीराम के पाद में नेह करो
शठ कहि तब रावण लात चलाई।।

मात्यवान सचिव कर जोरि कही
हे तात ! विभीषण ठीक कहें ।
शठ काहि को शत्रु प्रशस्ति करे
कही रावण दुष्ट यहाँ से बहे ।
माल्यवन्त सभा तजि गेह गयो
पुनि बन्धु विभीषण बैन कहे ।
सुमती मंहि तो सुख सम्पत्ति है
कुमती महँ दुःख निवास रहे ।।

कुमती तुम्हरे उर वास करे
हित अनहित हू नहिं सोचत भाई ।
निश्चर कुल नाश बचाओ प्रभू
पठवौ सियकों क्षमिहैं रघुराई ।
शठ खाय मिरो, रिपु नाम जपै
कही बन्धु विभीषण से रिसियाई।
गृह मोर बसै अरु शत्रु भजै
कहिके रावण पुनि लात चलाई ।।

तुम तात पिता सम बन्धु मिरे
तेहि से पग लागि तुम्हें समझायो।
करिहैं श्रीराम कृपा तुम पै
सँग लेहु सिया उनपै प्रभु जायो।
श्रुति, शास्त्र, पुरान पढ़े अब लौं
सोइ सोच दनुज कुल हेतु बतायो।
अब जात हौं मैं रघुनाथ ढिगाँ
करिहौं तुम तो अपनेहि मन भायो।।

इतनो कहि संग सचिव लइके
नभ जात विभीषण बैन उचारे।
दसकंठ सभा मति मन्द भई
सब पैहि छाये संकट घन कारे।
हम जात हैं राम के पाँयन में
अब नाहिं कछू सिर दोष हमारे।
गये बन्धु विभीषण संग मनो
दसकंठ के राज के वैभव सारे।।

मग जात विभीषण सोच रहे
लखिहौं रघुनाथ चरण सुखदाई।
पापिहु जिन्हें देखि तरैं भव से
उर में नित राखति हैं सिय माई।
पूजैं जिनके पद त्राणन कों
प्रिय बन्धु भरत मन में हरषाई।
जिनके पग छू मुनि नारि तरी
पद राम के सोइ विलोकिहौं जाई॥

यह सोचत सागर पार कियो
समझे कपि रावण दूत है आयो।
कपि आयके बाँधि लियो उनको
सुग्रीव कों जायके हाल बतायो।
पूछो कपि कौन हो मोहि कहौ
तब नाम विभीषण तेहि बतायो।
कही राम कमल पद ठौर मिलै
निज बन्धु दशासन कों तजि आयो॥

कपि राज ने राम से आय कही
लघु बन्धु दशासन को प्रभु आयो ।
यह निश्चर ना उत्पात करे
एहि कारण ही प्रभु याहि बँधायो ।
कही राम, न बात कछू डर की
परिहास कियो कपि को समझायो ।
हम बन्धु बड़े सहस्रानन के
तुम याहि अनुज दसकंठ बतायो ।।

सुग्रीव कही ये निशाचर हैं
नहिं जान सकै इनकी कोइ माया ।
मम सैन के भेद कों लैन कहूँ
यह दानव वंशज होय न आया ।
अब बाँधिके राखहु याहि यहीं
यह नाथ विचार मिरे मन आया ।
श्रीराम कही तुम ठीक कही
पर शरणागत पर चाहिए दाया ।।

हनुमन्त कही तुम धन्य प्रभू
शरणागत के तुम पालनहारे ।
अपने हित हेतु तजै जो इन्हें
तिन्हें देखत ही खुलैं नर्क दुवारे ।
श्रीराम कही उन्हें पाप लगे
शरणागत कों जोइ देखि के टारे ।
मोहि देखत ही सब पाप कटैं
पर दुष्ट न आवत पास हमारे ।।

आयो यदि भेदहि लेन यहाँ
तबहू कछु हानि नहीं कपि राई ।
जितनेहु निशाचर हैं जग में
क्षण माँहि हनै उनकों लघु भाई ।
लइ आउ उन्हें अति आदर से
सुनिके हनु संग चले कपिराई ।
फिर सादर ल्याय विभीषण कों
पहुँचे जहँ बैठि रहे रघुराई ।।

लखे दूर से श्यामल गौर दोऊ
मनु हौं दुइ सिंह के पूत विराजे ।
लखि राम को रूप विभोर भये
कर चाप औ बाण तुणीर हैं छाजे ।
सब देवन के प्रभु देव लगे
नर रूप में ब्रह्म हों आय विराजे ।
मुनि वेश धरे नर वीर कोई
बैठे तहँ अस्त्रन-शस्त्रन साजे ।।

❋

कहिके मम नाम विभीषण है
अरु हूँ लंकापति को लघु भाई ।
शरणागत हूँ तव पाँव परो
करो नाथ कृपा सियपति रघुराई ।
अति नीच हूँ, वंश निशाचर है
परो पाँव प्रणाम करत सकुचाई ।
तब राम उठाय सनेह उन्हें
निर्भय करके लियो कंठ लगाई ।।

बैठारि कें पास कुशल सबही
पूछो कस हैं लंकेश बताओ।
खलमंडलि बीच निभे कइसे
रहिके वहँ पै कस धर्म निभाओ।
सिर नाय विभीषण अश्रु भरे
कही दुष्टन के सँग त्रास ही पाओ।
अब राम! तुम्हारेहि पाँव परो
मोहि सेवक जानि प्रभू अपनाओ॥

फिर जोरि कें हाथन बैन कहे
प्रभु! रावण है अति ही व्यभिचारी।
जिन शंकर को नित जाप करे
उनकेहु शठ पीठ छुरी कसि मारी।
वर माँगि भवानिहि लेन चहो
जोइ शम्भु प्रिया जग की महतारी।
कहें लोग कि ज्ञान को पुञ्ज बड़ो
पर नाथ गई एहि की मति मारी॥

इक बार कियो तप शंकर को
भये शम्भु प्रसन्न वहाँ तब आये।
दसकंठ के शीष पै हाथ धरो
कही माँग लो वर तुमको जोइ भाये।
शिव कों लखि सन्मुख रावण ने
पद शीष धरो मृदु बैन सुनाये।
वरदान हमें दुइ देहु प्रभू
कही शम्भु जो चाहत हो सोइ पाये।।

तब रावण ने कर जोरि कही
हे गौरिपती प्रभु शम्भु पुरारी।
नगरी तव स्वर्ण के धामन की
प्रभु आज से ही वह होय हमारी।
शिव ने कही तोहि दई नगरी
इच्छा कहु दूसर काह तुम्हारी।
कहीं रावण गौरि कों देहु हमें
बनिके तहँ पै रहे नारि हमारी।।

शिव सौंपि दई गिरिजा शठ कों
सँग ताहि लिवाय चलो अभिमानी।
गइ गौरि तो शंकर सोच परे
यह काह भयो बोले वरदानी।
हमने कस ये वरदान दियो
मोहि छोड़ के जात है आदिभवानी।
तबही वहाँ विष्णु ने आय लखे
अति सोच में व्याकुल औघड़दानी॥

कही विष्णु ने यह सब काह भयो
तब पूर्ण वृतान्त कह्यो त्रिपुरारी।
सुनि विष्णु कही मत होहु दुखी
करिहौं अब शम्भु सहाय तुम्हारी।
द्रुति ग्वाल को रूप बनाय गये
जहँ रावण औ गिरिराज कुमारी।
कही ग्वाल ये संग में को तुम्हरे
दसकंठ कही दई गौरि पुरारी॥

तब ग्वाल कही यह गौरि नहीं
शिव वाहि पताल में दीन्ह छिपाई।
यह तो कोइ अनुचरि जानि परै
सुनतहि दसकंठ परो रिसियाई।
कही ग्वाल से का तुम बोलि रहे
यह पार्वती शिव से हम पाई।
दसकंठ से ग्वाल कही हँसिके
नित देह से गौरि सुगंध उड़ाई ।।

लेहु काहि न सूँघि के देख इन्हें
हुइहै यदि गौरि सुगन्ध झरे ।
यदि सूँघत ही दुर्गन्ध मिले
तब बात हमारि सही निकरे ।
सूँघी जब गौरि दशानन ने
दुर्गन्ध अँबार थे फूट परे ।
गयो रावण छोड़ के गौरि वहीं
द्वैपायनि शक्ति ने नाम धरे ।।

कही राम न नेकहु सोच करो
मम बाण प्रबल तेहि मार गिरायें।
पर भक्त सदा प्रिय मोहि लगै
छल;दंभ,कपट तजि जो मोहि ध्यायें।
फिर सिन्धु को नीर मँगाय प्रभू
कियो राजतिलक लंकेश बनाये।
तपिकैं जाहि रावण पाय सको
सोइ देत विभीषण कों सकुचाये॥

卐

लंकापति से फिर राम कही
केहि भाँति समुद्र कों पार करैं।
तुम्हू कपिराज विचार करो
कस पार अगम जलधार करैं।
लंकेश कही तव बाण प्रभू
क्षण एक में सिन्धु कों जारि धरैं।
कुल के गुरु सागर हैं तुम्हरे
उनसे पथ माँगि चलो उतरैं॥

श्रीराम कही यह ठीक सखा
विनवौं जलनिधि करि स्तुति वन्दन।
लंकेश की सीख न नेक रुची
मन खीजत जात सुमित्रा के नन्दन।
रघुनाथ कही मन धीर धरौ
पहिले पूजहुँ ले अच्छत चन्दन ।
फिर जो तुम चाहत हो करिहौं
समझाय दिये प्रभु ने तब लक्ष्मन ।।

❋

इतनो कहि राम गये तट पै
कर जोरि कें सागर कों सिर नाये।
करि अर्चन वन्दन बैठि गये
अति नेह सहित मन में हरषाये।
लक्ष्मण हनुमन्त विभीषण हू
प्रभु आयशु बैठ गये तिन दाँये।
अनुचर दुइ आयकें रावण के
कपि रूप में बैठ गये प्रभु बाँये ।।

पहिचानि तबै अरि दूतन कों
कपि जूथ पकरि सुग्रीव पै लाये।
कपि पीटि, घसीटि के दोउन कों
तब पूरीहि सैन में बाँधि घुमाये।
अँग भंग करो सुग्रीव कही
देहु भेज इन्हें जहँ से ये आये।
मत काटु कपी मम अंगन कों
तुम्हें राम शपथ कहिके चिल्लाये।।

प्रभु की सौगन्ध सुनी जबही
लक्ष्मण तुरतहि दोउ दूत बुलाये।
सुनि राम को नाम दया उमड़ी
कपिवृन्द से दोनोंहि मुक्त कराये।
कही रावण से तुम जाय कहो
सिय, राम कों दे उनकों सिर नायें।
नहिं तो प्रभु बाण कठोर बड़े
क्षण में दसहू सिर काटि गिरायें।।

पहुँचे ढिग दूत दशानन के
हँसिकें शठ ने पूछी कुशलाता ।
कितने कपि-रीछ कहा बल है
उनसे भइ काह विभीषण बाता ।
अबहू तक ठहरेहि हैं तट पै
अथवा भय मानि भगे दोउ भ्राता ।
कर जोरि के दूत कही तबही
दियो राज विभीषणकों उनि ताता।।

❋

फिर जानि हमें तव दूत प्रभू
दियो त्रास बड़ो सब मारन लागे ।
हमें बाँधि घुमाय कटक भर में
मम अंगन कों फिर काटन लागे ।
छोड़ें नहिं खूब करी विनती
दई राम शपथ हमकों तब त्यागे ।
लक्ष्मण जोइ पत्र दियो उनकों
सोइ दूत निकारि धरो तेहि आगे ।।

रहे कोटिक बानर, रीछ वहाँ
पहिले वालो सबसे लघु होई।
ऐसो कपि एकहु नाहिं दिखो
जो न जीत सके रण में प्रभु तोई।
हुंकारि कहें सब क्रोध भरे
हमही बधिहैं दसकन्धर तोई।
तव बन्धु की सीख पै माँगि रहे
पथ सागर से विनवावत होई॥

मुदि ह्वै दसकन्धर खूब हँसो
सुनि बैननि कों जोइ दूत कहे।
उनसो बुधिहीन नहीं जग में
पथ माँगिके जो दिन खोय रहे।
व्यर्थहि गुणगान करैं उनको
जोइ नारि वियोग में रोय रहे।
मंत्री जिन केरि विभीषण से
मम लात से जो भयभीत रहे॥

फिर लक्ष्मण केरि सँदेश कह्यो
सिय कों सादर लइ राम पै आयें।
नहिं तो तव वंश समेत तुम्हें
क्रुध हो शर राम के मार गिरायें।
अब नाथ हमारीहु है विनती
लौटारि सियहि निज प्राण बचायें।
सुनिके पगवार कियो शठ ने
गिरे दूत धरणि उठि राम पै धाये ।।

बीते दिन तीन मनावत ही
पर सिन्धु न कोइ प्रभाव दिखायो।
भय के बिनु प्रीति न होय कहीं
कहि राम ने क्रोध से बाण उठायो।
शर सिन्धु पै राम सँधान कियो
उर में लगी आग जलधि घबरायो।
अति व्याकुल सब जल जीव भये
तब सिन्धु ने विप्र को वेश बनायो।।

शठ पै कितनोहु उपकार करौ
पर ना छोड़ैं शठता अपनी।
कितनोहु कर जोरि मनाउ उन्हें
नहिं छोड़त हैं अघ की करनी।
विश्वास के योग्य न होंय कभी
रहे तीन औ छैं करनी-कथनी।
भय मानत हैं उनसेहि सदा
जिनकी उन पै रहे भौंह तनी॥

कर जोरे से ना बने
शठ से कोई काम।
राजदण्ड सिर पै गिरै
दौरि के करत प्रणाम।
काम तुरतहि करि डारे॥

॥ इति सुन्दर काण्ड ॥

लंका काण्ड

❋

सागर मन व्याकुल बड़ो
पड़ो राम के पाँव ।
बार-बार स्तुति करै
त्यागि कुटिल मन भाव ।
क्षमा कर दीन्ह खरारी ।।

❋

मणि मुक्तन थाल लिये कर में
चलि आतुर ही प्रभु के ढिग आयो ।
अति कातर सो डरपै मन में
प्रभु चरणन में निज शीष नवायो ।
कही भूल भई कर देहु क्षमा
तुमकों प्रभु मैं पहिचान न पायो ।
मिली आपहि से मर्याद हमें
दई सूख के राह तो ना यश पायो ।।

नल नील हैं वानर दुइ सँग में
ऋषि आशिष दीन्ह उन्हें सुखदाई।
जल डारिहैं, छू जिन पाथर कों
नहिं डूबिहैं वे तुम्हरी प्रभुताई।
उनसे पुल बाँधि के पार करो
करिहैं हमहू भरि शक्ति सहाई।
एहि बाण से गात जरै हमरो
देहु मार वे पाप उतर बसे जाई।।

मत सागर ठीक लगो उनकों
श्रीराम हरी क्षण में तेहि पीरा।
तेहि बाण से दुष्ट हते प्रभु ने
शठ जोड़ बसे उत्तर दिशि तीरा।
तब सिन्धु गयो अपने गृह कों
धरि माथ पुनः चरणन रघुबीरा।
प्रभु नेह सौं हाथ धरो सिर पै
फिर आये जहाँ रहे वानर वीरा।।

सुनि सागर बात कही प्रभु ने
अब बाँधहु सेतु विलम्ब न कीजे।
चढ़ि सेतु पै पार करैं भव सो
रिछराज कही बल रावण छीजे।
प्रभु तेज अगिन हनुमान कही
सोखेहु वारिधि, भरो ज्यौंहि पसीजे।
सिर नाय कही कपि रीछन ने
हमकोंहु श्रीराम शरण महँ लीजे।।

नल नील कों राम बुलाय लियो
रिछराज उन्हें कहिके समझाओ।
हर पाथर पै श्रीराम लिखो
जल में तैराय कें सेतु बनाओ।
फिर कही उन वानर रीछन से
सब पर्वत वृक्ष उखारि के लाओ।
नल नील से राम लिखाय तबै
वेहि पाथर वारिधि में तैराओ।।

कस राम के सेतु में योग करैं
यह सोचकें एक गिलहरिहु आई।
जल कूद कें रेत में लौटि गई
निज बालन में बालू भर ल्याई।
देय सेतु पै रेत कों झारि तबै
लखि ताहि प्रसन्न भये रघुराई।
अति नेह सौं वाहि उठाय लियो
कर फेरिकें पीठ पै छाप बनाई।।

❋

लिखि राम केनाम कों पाथर पै
नल नील उन्हें जल में तैरायें।
पर देख के चिंतित लोग भये
सिल दूर तरैं कोइ पास न आयें।
बनिहैं कस सेतु सुग्रीव कही
यदि ये सब पाथर ना मिल पायें।
हनुमान कही दुइ पाथर लो
लिख के सिय, राम उन्हें तैरायें।।

इक पाथर पै सिय नाम लिखो
अरु दूसर पै कपि राम लिखायो।
नल नील ने डारि दये जल में
यह देखि सबनि अति आनँद पायो।
लिखे पाथर राम में आय जुरे
जिनपै कपि ने सिय नाम लिखायो।
हर पाथर के सिय राम मिले
लखिके कपि रीछन ने सुख पायो।।

❋

श्रीरामहु देखि प्रसन्न भये
नल नील जो पाथर थे तँराये।
कछु सोचिके वेहु गये तट पै
एकान्त में पत्थर सिन्धु गिराये।
गिरतहि जल डूबि गयो पथरा
यह देख के राम बहुत सकुचाये।
मम नाम लिखे सब तैर रहे
अरु डूब गयो जोइ हम तँराये।।

कहुँ देखत होय न कोइ हमें
यह सोच के राम ने शीष घुमायो।
जब पीठ की ओर लखो उनने
तबही हनुमन्त खड़ो उन पायो।
कही राम ने काह लख्यो तुमने
हनुमन्त कही जोइ आप दिखायो।
तुम्हरे कर से जोइ छूट गिरे
सोइ डूबत है हमने लखि पायो ।।

पर नाम में शक्ति बड़ी तुम्हरे
जेहि पाय के पाथर हू उतराये।
जेहि भक्त ने नाम जपो मन से
तेहिने अपने भव कष्ट मिटाये।
तर जात हैं सेतु के पाथर लौं
तव नाम कों जो आधार बनाये।
कहिके कपि पाद में शीष धरो
श्रीराम अशीष दै वाहि उठाये।।

गिरि खण्ड उखारि के भालु कपी
द्रुति दौरिकें वे नलनील पै लायें।
नल नीलहु राम सिया लिखिकें
शिल खण्डन कों जल में तैरायें।
कछु काल में सेतु बनो जबही
लखि राम कपीश से बैन सुनाये।
हम चाहत थापन हो शिव की
येहि हेतु सकल द्विज श्रेष्ठ बुलायें।।

सुग्रीव प्रसन्न भये सुनिकें
कर जोरि कही प्रभु से सिरनाये।
दसमुख विद्वान बड़ो द्विज है
यदि आप कहें तोहि वाहि बुलायें।
ज्ञाता श्रुति, शास्त्र, पुरानन को
है पौत्र पुलस्त, विसश्रवा जाये।
श्रीराम कही कोइ हानि नहीं
बैरिहु विद्वान हो आदर पाये।।

कही राम सुग्रीव से ताहि घरी
काहु भेजि महा शिव लिंग मँगायें।
कहुँ बीत न जाय मुहूर्त सखा
एहि कारण ही वह दौरिके जाये।
हनुमन्त कही कहँ पै मिलिहै
अति पावन लिंग हमें बतलायें।
सुग्रीव कही नदी नर्मदा में
जोइ दौरिकें जाय सके सोइ लाये॥

❋

हनुमन्त कही अति गर्व भरे
द्रुति जायके हम शिव लिंग लियायें।
मोहि लागत भूल गये क्षण वो
जब सिन्धु को लाँघि के लंक जराये।
नहिं बीतिहै यज्ञ मुहूर्त तबै
हम लै शिवलिंग तुरन्तहि आयें।
श्रीराम ने गर्व लख्यों उनको
मुसुकाय कही द्रुति लौटिके आयें॥

हनुमान तुरन्त गये सरि पै
जहाँ शुभ्र प्रपात बहे सुखदाई।
शिव लिंग मनोहर ढेर भरे
तहँ एकहि ठाँव पै दीन्ह दिखाई।
उनसें लगे छाँटन सोचि कपी
अति सुन्दर होय सो लेंहि उठाई।
उन्हें छाँटत बीनत देर भई
तब मूरति एक उन्हें मनभाई ।।

इत राम निमंत्रण पाय चलो
रावण सँग में सिय मातु लिवाये।
पत्नी बिनु यज्ञ अपूर्ण न हो
कही राम से तासु सियहि लै आये।
सिय, राम के वाम बिठाय दई
विधि रीति से पूजन आदि कराये।
कही राम से हेतु कहो अपनो
जेहि कारण यह अनुठान कराये ।।

भरिके जल अंजुलि में प्रभु ने
कही रावण को वध ध्येय हमारो।
द्विज! शंकर से करियो विनती
एहि काम में आय वे देंय सहारो।
दसकंठ सँकल्प कराय दियो
करि स्तुति बेद को मंत्र उचारो।
हे राम! ये यज्ञ तो पूर्ण भयो
अनुष्ठान कराय दियो हम सारो॥

तुम चाहु तो राखहु सीय यहीं
वन में विरहाकुल घूमत मारे।
कही राम ये काम है कायर को
लै जाहु सिया हम आइहैं द्वारे।
यदि मातु को दूध पियो हमने
सिय जीत के लाइहैं तोहि सँहारे।
सिय संग लिवाय के लौटि गयो
कहि राम से आइयो द्वार हमारे॥

जब राम मुहूर्त कों जात लख्यो
तब रेत को थो शिव लिंग बनायो ।
बिधिवत सोइ थापि दियो उनने
तबही हनुमन्त वहाँ पर आयो ।
लखि रेत को लिंग कही कपि ने
यहि थापन थो मोहि काहि भगायो ।
कही राम उखारि धरौ एहि कों
तुम ल्याये जो संग में ताहि लगायो ।।

❋

सुनिके हनुमन्त प्रसन्न भये
द्रुति रेत को लिंग उखारन लागे ।
जब हाथ से लिंग नहीं उखरो
तब पूँछ लपेटि घुमावन लागे ।
चटकी तेहि पूँछ न लिंग डिगो
भयो ज्ञान मनो होय नींद से जागे ।
परि राम के पाँव में रोय कही
कर देहु क्षमा हमकों बड़भागे ।।

कही का अपराध भयो हमसे
मम गर्व भयो सब चूर खरारी।
तब राम कही तुम भक्त मिरे
हम भक्तन केरि सदा हितकारी।
कहुँ गर्व के गर्त न जाय गिरैं
एहि हेतु करौं उनकी रखवारी।
तुमने कही सिन्धु लँघ्यो हमने
अरु भूल गये तुम शक्ति हमारी।।

❋

सुग्रीव कही प्रभु के प्रिय हो
कपि काहि तबहुँ तुम जानि भ्रमाये।
मुख में धरिके मुदरी उनकी
तुम सिन्धु लँघ्यौ सिय की सुधि पाये।
पुनि लै मुखमें चूड़ामणि कों
तुम लंक जराय यहाँ तक आये।
हनुमान ने राम के पाँव गहे
कही कीन्ह कृपा प्रभु आप बचाये।।

अहँकार में डूब के भूल गयो
प्रभु थापित मूर्ति उखारन लागो।
रघुनाथ क्षमा कर देहु हमें
कहि पाँव परो अति नेह में पागो।
श्रीराम उठाय लगाय हिया
कही नेह सहित कपि से वर माँगो।
कपि कही तुम्हरे पद प्रीति रहे
कही राम मिलो तुमने जोइ माँगो।।

हनुमन्त कही एहि मूरति कों
केहि ठाँव धरैं प्रभु जो हम लाये।
कही राम सनेह, धरौ यहि पै
जल सिन्धु नहाय के लोग चढ़ायें।
जन जो दर्शन करिहैं इनको
शिव आशिष पाय के पाप नसायें।
सुनिकें जयघोष करी सबने
अरु भक्त बछल प्रभु के गुण गाये।।

शिवदास है भक्त हमार बड़ो
उनको द्रोही मम शत्रु है जानो।
शिव तो आराध्य हमारेहु हैं
हमने उनको निज इष्ट है मानो।
निशि दिन मम नाम 'महेश' जपै
मैनेहु अपने से बड़ो उन्हें मानो।
शिव राम समानहि भाव भजै
कही राम वो भक्त है पूज्य सयानो।।

कही लोगनि नाम कहा धरिहौ
तब राम कही मम ईश्वर हैं
अब रामेश्वर सब लोग कहैं
शिव, राम के बाहर भीतर हैं।
तेहि क्षण कही शम्भु प्रकट हुइके
सुनो जो नर, भालु कपीश्वर हैं
यह तो वह ही शिवशंकर हैं
जिनके श्रीराम हो ईश्वर हैं ।।

दर्शन रामेश्वर के जो करैं
तनकों तजिकें मम धाम में आयें।
गंगा जल लाइ चढ़ाइहैं जो
निश्चय नरनारि वों मुक्ति को पायें।
येहि सेतु के जो दर्शन करिहै
बिनु श्रम भवसागर पार वो जाये।
निज निज गृह कों द्विज वृन्द गये
सुनि राम वचन सबही सुख पाये।।

प्रभु सेतु के मध्य में ठाढ़ भयें
जल जीव सबहि दर्शन हित आये।
लखि राम कों भाव विभोर भये
सब ठाढ़ रहे, होंय सेतु बनाये।
लखि सेतु कों राम प्रसन्न भये
दई आयशु पार कटक अब जाये।
कछु बानर यूथ चले नभ से
बचे शेष दोऊ पुल पै चढ़ि धाये।।

सब लोग भये विस्मित लखि के
जल जीव जो दूसर सेतु बनाये।
रिछराज कही कर जोरि प्रभू
माया तुम्हरी कोइ जान न पाये।
पुल येहि बनावन थो तुमको
हम नाहक पाथर खोदि मँगाये।
कही राम ये सेतु तुम्हारोहि है
जेहि पै चढ़िकें जलजीव बुलाये।।

❋

एहि भाँतिहि सिन्धु कों पार कियो
तट पासहि सैन सुग्रीव टिकाई।
कपि यूथन से तब राम कही
फल खाउ निकट गिरि वृक्षनि जाई।
फल खाँय कछू कुतरैं फैंकें
कछु पेड़ हलाय के देंय गिराई।
मग माँहि निशाचर जोइ मिले
करे अंग विहीन प्रताड़ि नचाई।।

निश्चर जोइ अंग विहीन भये
उनि रावण कों द्रुति ज़ाय बतायो।
पुल बाँधिकें सागर पार कियो
सुनकें दसशीष बड़ो घबरायो ।
उठिके अति चिन्तित गेह गयो
लखि ताहि मँदोदरि ने समझायो।
अबहूँ बिगरो कछु नाँहि पिया
सिय राम पै आदर से पहुँचायो ।।

※

पुनि रोय के हाथन जोरि कही
नाँहि राम हैं मानव तोहि बतायें।
वह तो पर ब्रम्ह हैं साँच कहूँ
मत रारि करो सिय को पठवायें।
जिन नाम कों लिखि कपि भालुन ने
गिरि खण्ड विपुल जल में तैराये।
सब देखत सेतु बनाय लियो
सँग सैन के लंक पै वे चढ़ि आये।।

सुनि रावण ने अटहास कियो
फिर नेह सौं नारि कों ये समझायो ।
नहिं मो सम वीर भयो अबलौं
तुम मानव से काहे घबरायो ।
जोइ पाथर तैर रहे जल में
यह काम बड़ो नहिं वाहि बतायो ।
हमहू तैरात हैं देखु अबै
कहिके इक पाथर नीर गिरायो ।।

क्षण में सोइ पाथर तैरि बहो
तब मन्दोदरि अस बैन सुनाये ।
तुम जानत हो माया तेहिके
बल पै पथरा जल में तैराये ।
कहो रावण बात ये सत्य नहीं
हम माया करि नहिं तोहि दिखाये।
हम राम की आन दई सिल कों
सोइ तैर गई कहिके मुसुकाये ।।

पति के पग थामि कही पुनि यौं
प्रियतम लेहु मान ये बात हमारी।
मत मानव ही समझो उनको
अवतार हैं वे अति बीर खरारी।
उनि खेलहि बाँधि समुद्र दियो
अरु पाँव छुआ मुनि की तिय तारी।
सकिहौ नहिं जीत कबहुँ उनसे
वह ब्रम्ह हैं चक्र सुदर्शन भारी।।

अब मोरि कही लेहु मान पिया
उन्हें देहु सिया चरणन सिरधारो।
खर दूषण तोहि समान रहे
त्रिशरा सँग ही रण में उनि मारो।
अब पुत्र कों दै निज राज पिया
चलो कानन राम कौ लेहु सहारो।
पग थामि के रोय कहैं पिय से
लेहु नाथ बचाय सुहाग हमारो ।।

सब छोड़के तुम रघुवीर भजो
करि राम कृपा आये तोहि पाहीं।
जीवन भर ध्यान करें जिनको
कहि राम जगत पुनि आवत नाहीं।
वेहि राम दयालु भये हमपै
उन्हें ध्यान धरो उन सो कोइ नाहीं।
वह ब्रम्हस्वरूप दयानिधि हैं
उनकोंहि भजौ धरिकें उर माँहीं।।

❋

अति नेह दिखाय मँदोदरि कों
दसमुख निज तेज प्रताप बतायो।
भुजबल दिकपालहु जीत लिये
यम, देव, कुबेर कों बाँधि के लायो।
सब देव दनुज हमरे वश हैं
जग में नहिं कोइ जो जीत न पायो।
बहुबिधि समझाय प्रियै अपनी
निज राजसभा मँह रावण आयो।।

मुसुकाय के पूछत मंत्रिन से
अब युद्ध की का रणनीति बनायें।
मंत्री कही ये सब भोजन हैं
कपि, मानव से हम का घबरायें।
सुनिके तेहि बात प्रहस्त कही
सचिवहि यह ठीक कि सत्य बताये।
मंत्री रुख देख के बात कहैं
तेहि भूप औ राज सबहि नसि जाये।।

✻

कपि आय जराय गयो नगरी
तब काहि न काहु को भूख सताई।
जोड़ बाँधिके सेतु पयोनिधि पै
गये सैन समेत यहाँ तक आई।
उन्हें खायके भूख मिटाइहैं ये
अरे काहि को बोलत गाल फुलाई।
अब मानहु नाथ हमारि कही
रण टारि सियहि तुम देहु पठाई।।

अति नीति वचन सुनिकें सुतके
करि लाल नयन दसशीष रिसानो।
कहि पुत्र गयो तजि राजसभा
गयो आय विपत्ति समय हम जानो।।
समझाई थी आपको सीख सही
मति है तुम्हरी मानो मत मानो।
मन जो कछु सोच रहो तुम्हरो
एहि कौं हम काल को चक्र ही जानो।।

अति ऊँच अटारि पैं साँझ ढले
दसशीष बड़ो रँगमंच लगायो।
बहुभाँति के साजनि की धुनि पै
नचिके नर्तकियन वाहि रिझायो।
बहु किन्नर रागनि गाय रहे
सुनि ताहि दसानन ने सुख पायो।
तेहि राम को त्रास न याद रहो
परिहास विलास में काल भुलायो।।

इत संन उतारि पहाड़न पै
लखि उच्च शिखर पहुँचे रघुराई।
लक्ष्मण तरुपात बिछाय तबै
उनपै मृग छाल लियाय बिछाई।
प्रभु सादर बैठ गये तेहि पै
हनु, अंगद थे रहे पाँव दबाई।
वीरासन, लक्ष्मण के सँग ही
कपि बैठ गये बहु चक्र बनाई ॥

शशि पूरन पूर्व उगो लखिकें
कही राम कपिन अति नेह सुखाई।
शशि मध्य ये श्यामल चिन्ह कहा
सब लोग कहौ निज बुद्धि लगाई ।
कही अंगद भूमि की छाँव परी
एहि कारण श्याम परै दिखलाई।
कही एक शशी कुम्हिलाय गयो
करी राहु बहुत एहि केरि पिटाई॥

सुग्रीव कही शशि को सत लै
रति को मुख ब्रम्ह ने दीन्ह बनाई।
तबही एहि मध्य में छिद्र भयो
तहँ से परै श्याम अकाश दिखाई।
कही राम ने बन्धु ये है विष को
अति कलुषित है बिरहिन दुखदाई।
हनुमन्त कही शशि भक्त बड़ो
उर माँहि बिठाय लये रघुराई ॥

दिशि दक्षिण देख के राम कही
चमकै बिजुरी गरजै नभ भारी।
कर जोरि विभीषण बैन कहे
घन नाहिं, ये रावण बैठ अटारी।
तेहि छत्र दिखाय परै घन सो
दमकै मन्दोदरि कान की बारी।
बहु साज, मृदंग बजैं तहँ पै
सोइ लागत गर्जत मेघ खरारी ॥

सुनिकें प्रभु बात विभीषण की
अभिमान विलोकि के बाण सँधाने।
शर एकहि राम गिराय दये
तेहि छत्र औ कुंडल कोइ न जाने।
न तो भूमि हिली नहिं वायु चली
गिरो छत्र न काहु को अस्त्र दिखाने।
रघुवीर पै लौटके बाण गयो
श्रीहीन भयो रावण सब जाने॥

यह देखि भयाकुल लोग भये
कहैं छत्र गिरो असगुन भयो भारी।
भय मानि विहँसि दसशीष कही
अपने गृह जायँ सबहि नर नारी।
सुनिकें सब लोग गये घर कों
कही मन्दोदरि भरिके दृग बारी।
तुम राम से बैर को छोड़ पिया
उन्हें नित्य जपो अपने उरधारी॥

वह ब्रम्ह हैं मानव रूप धरैं
सब देव ऋषी उनकों नित ध्यायें।
श्रुति, शास्त्र, पुराण सराहत हैं
इनको यश शम्भु सुरेशहु गाये।
जग सृष्टा, विनष्टा सभी येहि हैं
अरु येहि सगुण निर्गुण बन जायें।
अब लेहु पिया पहिचान उन्हैं
हम दोउ चलैं उनकों सिरनायें ।।

❋

दसकंठ कही कहैं लोग सही
बसैं अवगुण आठ सदा उरनारी।
भय, माया, चपलता, अनृत,साहस
अविवेक, अशौच करैं नित रारी
गुण शत्रु के काहि बखान करै
करैं वे सेवा नित आय हमारी।
रिपु को गुणगान बहानोहि थो
तिय चतुर प्रशंसहि कीन्ह हमारी ।।

मन्दोदरि सोच रही मन में
भयो काल विमुख इन बुद्धि नसाई।
श्रीराम को हम गुणगान कियो
ये समझत हैं इनि कीर्ति है गाई।
एहि भाँति विनोद में रात्रि कटी
वाहि नारि सिखावन नैंकु न भाई।
भइ प्रात गयो सजि राजसभा
खल,मन्द,ि शंक भरो कुटिलाई ॥

※

इत राम ने प्रातहि आदर से
रिछराज, सचिव सब पास बुलाये।
कही बेगि बताउ करें हम का
जामवन्त कही प्रभु को सिरनाये।
हे नाथ! उचित यह बात लगै
करैं युद्ध, प्रथम इक दूत पठायें।
अंगद बल, बुद्धि प्रवीण बड़े
प्रभु दूत बनाय इन्हें पठवायें ॥

सब लोगन कों यह बात रुची
तब राम ने अंगद कों बुलवायो।
तुम धीर, सुवीर, प्रबुद्ध बड़े
अति सक्षम हो कहिकें समझायो।
तुम जाय के रावण राजसभा
मम काज करो अरु लौट के आयो।
अंगद प्रभु आयशु शीश धरी
उठिकें उनने सबकों सिरनायो।।

मन बालि कुमार सिहाय चले
जगपालक ने मोहि दीन्ह बड़ाई।
रण, सक्षम, वीर निशंक कपी
प्रभु राखि हृदय पहुँचो पुर जाई।
इक रावण पूत मिलो मग में
दियो मारि पटकि भई रारि थी ताई।
उनि देखि निशाचर भाजि परैं
कतराय चलैं, निज प्राण बचाई।।

कहँ बानर आय गयो वह ही
कछु दिन पहिले जेहि लंक जराई।
सब सोचि रहे अब का हुइहै
बिनु पूछेहि देत थे राह बताई।
श्रीराम सुमिर मन में अपने
पहुँचो कपि रावण द्वार पै जाई।
दियो भेज सँदेश निशाचर से
दसकंठ तुरन्तहि लीन्ह बुलाई ॥

पहुँचो कपि वीर सभा जबही
उठि स्वागत कीन्ह सभासद सारे।
सिर नाय सुआसन बैठ गयो
दसकंठ सकोप कुबैन उचारे।
कपि कौन है तू बतलाउ हमें
घुसो राजसभा बिनु सोच बिचारे।
श्रीराम को दूत मैं अंगद हूँ
आयो संदेश लै पास तुम्हारे ॥

मम पितृ के मित्र दशानन हो
एहि हेतु रहो तुमको समझाई।
त्रण दाँतन दाबि सिया सँग ले
परिवार के संग चलो मम भाई।
जब आदर से सिय सँग चलैं
दसकण्ठ! क्षमा करिहैं रघुराई।
करुणानिधि दीनदयालु हैं वे
सुख पाइहौ तुम करिके सेवकाई॥

❋

गरजो तब रावण अंगद पै
कपि मूढ़, न बोलत बैन सम्हारी।
सब देव तो सेवत हैं मोहिकौं
शठ नाहिं सुनी कहुँ कीर्ति हमारी।
तव कों पितु है मम मित्र रहो
सुत बालि को हूँ कपि बात उचारी।
दसकंठ कही इक वानर थो
वाहि बालि से थौ पहिचान हमारी॥

कपि वीर के वंश कपूत भयो
तोहि होतहि मातु ने काहि न मारो।
गिर जात जो गर्भ कहूँ उनको
तबहूँ मिट जात कलंक ये सारो।
बनिके नर दूत पधारि यहाँ
निज वंश को नास कियो तुम कारो।
कपि बालि के हाल सुनाउ हमें
कही जोहत पथ सुरलोक तुम्हारो ॥

नर को तुम दूत कह्यो हमको
सुनु रावण तू उनकी प्रभुताई।
जिन सुमिरन से तर जात मुनी
शिव, इन्द्र, विरंच करैं सेवकाई।
जब बचन कठोर सुने कपि के
दसशीष को तब थोड़ी रिस आई।
कही धर्म औ नीति मैं जानत हौं
तेहि कारण व्यंग सहौं कपि राई।

जानहुँ जस धर्मपरायण हो
छल से बनि चोर हरी प्रभु नारी।
लखि कान औ नाक बिना भगिनी
कर दीन्ह क्षमा तुम धर्म बिचारी।
कियो धर्म में नाम बड़ो तुमने
यह सृष्टि सराह रही तोहि सारी।
गरजो रावण कहि नाहिं लखी
अति शक्ति भरीं भुज बीस हमारी॥

यम किन्नर नाग सबै सुर हू
मोहि सेवत हैं मन में सुख पायें।
शिव पै हम शीष चढ़ाय दये
इन बाहुन से कैलाश उठाये।
योधा तव सैन कहो कितने
जोइ कछु पलहू हमसे लड़ पाये।
मम बन्धु विभीषण भीरु महा
जामवन्त हैं वृद्ध कहा कर पायें॥

नल-नील तो शिल्प प्रवीण दोऊ
नहिं युद्ध कला उनकों कछु आये।
तव राम तो नारि वियोग दुखी
अति सोच विकल कस बाण चलाये।
इक वीर अवश्य वहाँ कपि है
जोइ सिन्धु को लाँघ के लंक जराये।
कही अँगद ने तुम ठीक कहो
जो अति लघु कीस को वीर बताये।।

वह तो लघु धावन है प्रभु को
जेहिकों तुमने अति वीर बतायो।
जोइ खूब चले वह वीर नहीं
वाहि लैन खबर श्रीराम पठायो।
बिनु आयशु लंक जराय गयो
तेहिके डर से कहुँ जाय लुकायो।
शोभा तुमसे लड़ि पाय सकै
ऐसो नहिं कोइ वहाँ हम पायो।।

श्रीराम तो सिंह समान सुनो
तुम मेढक से वे कहा लरिहैं।
सम जानिके बैर मिताई करें
तोसे बैर या प्रीति वे का करिहैं।
पर जान लो वे क्षत्रिय सुत हैं
अभिमान तिरो क्षण में हरिहैं।
कपि के कटु व्यंग वचन सुनिकैं
कही रावण वे कुढ़िके मरिहैं ॥

तव जाति कों मैं कपि जानत हौं
कहैं स्वामि, तुरन्तहि नाच दिखाते।
तुम माँगि के पेट भरौ अपनो
तजि लाज शरम नचि के इठलाते।
तुमहू निज स्वामि के भक्त बड़े
एहि कारण ही उनके गुण गाते।
मैं तु हूँ गुण ग्राहक ज्ञानि बड़ो
कटु बोलत हू तुमकों सहि जाते॥

कही अंगद ने गुण ग्राहकता
तुम्हरी हमको हनुमान बताई ।
उन मारि दियो तुम्हरे सुत कों
अरु बाग उजारि के लंक जराई ।
तबहू तुमने कछु नाहिं कही
एहि कारण ही हम कीन्ह ढिठाई ।
हनुमान कह्यो तस तोहि लख्यो
तोहि क्रोध या लाज कछू नहिं आई ।।

❋

कही रावण, राम बध्यो पितु कों
तबहू तुमकों कछु ज्ञान न आयो ।
अब मारिहैं वे तुमकोंहु लला
बचना चाहु तो मम गोल में आयो ।
कही अंगद काहि कों गर्व करौ
तुम भूल गये पितु काँख दबायो ।
हमरी चिन्ता मत आप करौ
प्रभु बाणन से परिवार बचाओ ।।

तुम कौन से रावण हो उनमें
बड़े वीर बनो तनि सोचि बतायो।
बलि जीतन एक पताल गयो
तब लरिकन बाँधि के वाहि नचायो।
रहो रावण एक सहस्र भुजा
इक जन्तु विशेष थो वापर धायो।
गिरिकन्दर माँहि घसीट जबै
गयो लै, तब वाहि पुलस्त छुड़ायो॥

दिकपाल डरात हैं नाम सुने
पग चापन से भूमंडल डोले।
कर से कैलाश उठाय लियो
कइ बार, जहाँ बैठे शिव भोले।
पग पूजि पुरारि के बार कई
दये शीष चढ़ाय, दसानन बोले।
वहि रावण वीर महान हुँ मैं
जेहि की तलवार निकारति शोले॥

तेहि रावण को शठ क्षुद्र कहे
नर केरि बखान करे अति भारी।
सुनि अंगद ने भरि क्रोध कही
शठ काहि नहीं रहो बोल सम्हारी।
भुज काटि सहस्र भुजा पति की
दियो क्षत्रिन कों जिन काटि कुठारी।
सोइ देखत गर्व तज्यो अपनो
पगशीष धरो कहिके असुरारी ॥

❋

सुनि क्रोध भरे, दसकंठ कही
लियो बाँधि समुद्र तो का प्रभुताई।
खग नित्यहि लाँघत हैं तेहि कों
वाहि लाँघि के राम का वीरता पाई।
घननाद सो पूत है वीर महा
अरु कुम्भकरण मम वज्र सो भाई।
दिक्पाल भरें घर नीर मिरे
अरु गावत तू नर की प्रभुताई ॥

निज शीष को हाथ से काटत जो
नहिं होत हैं वीर, कही कपिराई ।
इक पर्वत काह् उठाय लियो
तुम बीसन बार कथा ये सुनाई ।
कही रावण जो भटकैं वन में
जरैं नारि विरह् मम त्रास डराई ।
निशिचर उनसे नर खात सदा
तेहि राम के मूढ़ रहो गुन गाई ।।

भरि के अति क्रोध कही कपि ने
नहिं राम की आयशु है हम पाई ।
नहिं मारिके बन्धु समेत तुम्हें
प्रभु पै जातो सिय मातु लिवाई ।
गरजो कसिके कपि रावण पै
भुइपै अपने दोउ हाथ बजाई ।
गिरो रावण डोल गई धरणी
गिरे क्रीट मुकुट पृथ्वी पर जाई ।।

कछु तो दसशीष उठाय लये
अरु चार कों अंगद फैंकि उड़ाये।
सोइ रामसभा महँ जाय गिरे
उन्हें आवत देखि कपी घबराये।
समझे शर आवत हैं इतकों
हम पै दसशीष ने होंय चलाये।
ये किरीट हैं राम ने देखि कही
दसशीष के अंगद फैंकि भिजाये।

❋

हनुमान पकरि प्रभु पास धरे
सब कौतुक से देखत ढिग जाई।
रवि की छबि के सम वे दमकें
विस्मित कपि भालु लखैं हरषाई।
उत कही दसकन्धर क्रोध भरे
मारहु कपि रीछन कों सब जाई।
जियतहि लक्ष्मण अरु राम दोऊ
मम पास अबहिं कोइ बाँधिके लाई॥

अंगद अति क्रोध भरे तमके
तोहि गाल बजात में लाज न आये।
तिय चोर, कुमार्गि, निशाचर तू
फल पाइहै अब दस शीश गँवाये।
रिस लागत है मुख तोड़ धरौं
अरु लंक उखारि समुद्र डुबायें।
मन होतकि खैंचहुँ जीभ तेरी
पर आयशु ना रघुनाथ की पाये॥

सुनि के दसकंठ कह्यो कपि से
करे मर्कट काहिको डींग हकाई।
नर को सँग पायके तू बिगरो
तव बालि कबहुँ नहिं डींग लगाई।
अंगद सुनतहि रिसियाय परो
अरु बीच सभा दियो पाँव जमाई।
कही है कोइ वीर जो टारि सकै
पग टारत हार सिया हम जाई॥

सब योधन से दसशीष कही
गहि पाँव उछालि कपिहि दै मारो ।
घननाद सहित कइ एक उठे
पर अंगद पाँव टरै नहिं टारो ।
सब ही इक साथ उठान लगे
पग नाहिं टरो बहुतहि सिरमारो।
जबही दसकंठ उठान चलो
तब बालि तनय यह बैन उचारो ।।

पद मोर छुए न कछू मिलिहै
छुओ राम के पाँव मिलैं फल चारी।
उनके पद पंकज में रहि के
सुख पाइहौ मानलो बात हमारी।
खिसियाय के रावण बैठ गयो
भई राज सभा श्रीहीन बिचारी।
श्रीराम को नाम लियो कपि ने
अरु लौट गयो प्रभु पास हुँकारी।।

कपि आय के पाँव परो प्रभु के
श्रीराम उठाय के कंठ लगाये ।
दसशीष सभा कर हाल सबै
विस्तार से बालि के पूत बताये।
हरषे हनुमान, कपीस, प्रभू
रिछराज, विभीषणहू सुख पाये ।
फिर नीति पै सोच विचार कियो
कइसे दसशीष कों मार गिरायें ।।

दसग्रीव कों ज्ञात भई कपि ने
यहँ आवत ही हमरो सुत मारो ।
सुनके मन में अति खेद भयो
मन्दोदरि गेह गयो मन हारो ।
भइ नारि दुखी लखि के पति कों
अति नेह सहित यह बैन उचारो ।
मम प्राण! न राम से युद्ध करो
अपनो कुल आप बचाय लो सारो।।

श्रीराम कों मानव ना समझो
प्रियतम ! परब्रम्ह हैं वे जगदीशा।
जिनको लघु सेवक सिन्धु तरो
अरु लंक को जारि गयो तेंहि कीशा।
दुइ सुत कपि खेलहि खेल बधे
भरी राजसभा में झुको तव शीशा।
प्रभु जोरि के हाथ कहौं तुमसे
लेहु मानि इन्हें सचराचर ईशा ।।

तुम जीतन चाह रहे उनकों
जिनको कपि अक्ष कुमार कों मारो।
फल खाय के वृक्ष उखारि सबै
रखवारेन मारि कें बाग उजारो।
कपि दूसर क्रीट मुकुट तुम्हरो
क्षण भूमि डुलाय के शीष से डारो।
तेहिको पग कोइ न टारि सको
पुर आवत ही सुत एक सँहारो ।।

अब छोड़ पिया अभिमान वृथा
अतुलित बल राम कों शीषनवायो।
जिन एकहि बाण से बालि बध्यो
मारीच को वारिधि पार गिरायो।
गये सीय स्वयम्बर थे तुमहू
जहँ राम ने शम्भु पिनाक उठायो।
जब सीय थी ब्याहि लई उनने
नहिं काहि कोई बल से हर लायो॥

सुत इन्द्र रहो बलवान बड़ो
ताहि फोड़िके आँख सिखायके छोड़ो।
त्रिसरा, खर, दूषण वीर बड़े
उन्हें मारिके राम ने गर्व निचोड़ो।
तुम्हरी भगिनी जब पाप कियो
तेहि कों उनि रूप कियो अति भौंड़ो।
तजि गर्व को जाउ शरण उनकी
पिय फेरि कहूँ, मिथ्या मद छोड़ो॥

वाहि नारि की सीख न नैंक रुची
मन्दोदरि कों मुसुकाय के टारो।
डरपोक बड़ो, मन है तुम्हरो
दसशीष ने पुनि यह बैन उचारो।
क्षण एक में मारि धरूँ दोउ कौं
जिनके कपि ने तव पूत है मारो।
अब नाहिं क्षमा करिहौं उनकों
कपि भालुन संग उन्हेंहु संहारो।।

इत राम बुलाय के अंगद कों
पूछत अति नेह सौं पास बिठाये।
भइ रावण से तव बात कहा
तेहि क्रीट मुकुट कैसे तुम पाये।
धरिके प्रभु पाद में शीष तबै
कपि ने सब लंक के हाल बताये।
कही अंगद भूप अधर्मिन कों
तजि तेज सदा नृप धर्म पै जाये।।

साम, दाम हो दण्ड या भेद प्रभू
नृप के गुण चार जो शास्त्र बताये।
गुण कोट के रूप में चारहु ये
दसकंठ कों छोड़ कें आप पै आये।
यहि में कछु श्रेय हमार नहीं
तव तेजहि से उड़ि कें प्रभु! आये।
कही राम बुलाय सचिव सबही
कस लंक घुसें मोहि सोचि बतायें॥

प्रभु लंक में चार दुवार बने
उनकों बहु निश्चर वीर रखायें।
करि चार कटुक कपि-रीछन की
सेनापति चारहि वीर बनायें।
इक संग चढ़ें सब द्वारन पैं
श्रीराम कों सचिव सुझाव बताये।
सुनतहि कपि भालु बुलाय प्रभू
रण की सब नीति उन्हें समझाये॥

निज हाथ उठा-उठाय शिला
कपि रीछ तबहि पुर द्वार पै धाये।
सब जानत दुर्ग विशेष बनो
फिर हू श्रीराम सुमिर चढ़ि आये।
चहुँ ओर से लंक कों घेरि लियो
कपि जय श्रीराम की घोष सुनायें।
पुर द्वार कुलाहल कों सुनिकें
दससीषहु निशिचर सैन बुलाये।।

※

अभिमान भरे दसकण्ठ कही
सब निशिचर वीर तुरन्तहि आयें।
सब मार के वानर रीछन कों
जीभर खायें अरु मोद मनायें।
भगवान ने भोजन भेज दियो
उन्हें खायके सब निज भूख मिटायें।
सुनतहि निज अस्त्रन कों कर ले
कपि सैन पें सब निश्चर धरि धाये।।

लगे बाजन ढोल मृदंग वहाँ
ढप, भेरि नफीरि अनेक बजायें।
रणभेरिन की धुनि कों सुनिकें
अति कायर के मनहू हुलसायें।
गर्जत भट काटत होंठन कों
कपि डारत हैं गिरि टोरि जो लायें।
जमिके सब युद्ध करें रण में
भट मार रहे रिपु को जहँ पायें॥

गढ़ पै चढ़ि तोड़ि कंगूरन कों
कपि डारि रहे गिरि पाथर भारी।
कबहूँ निश्चर दल जोर कसैं
कपि रीछन की दैंय सैन बिड़ारी।
कपि लै उड़ि जाँय उन्हें कबहूँ
नभ से भुइ पै पटकैं, दैंय मारी।
कपि राम की जय-जयकार करें
यतुधान रहें दसशीष पुकारी॥

श्रीराम प्रताप धरैं उर में
कपि रीछ निशाचर कों धरि मारें।
पुर में अति हाहाकार मची
सब रोयकें नारि लँकेश पुकारें।
गरियाय रहीं सब रावण कों
जेहि हेतु मरे उनके पति प्यारे।
जबही बिचली निज सैन लखी
करि क्रोध दशानन बैन उचारे।।

⁂

मारौ सबही कपि रीछन कों
मत आउ यहाँ उनकों बिनु मारे।
पर जानहु जो रण छोड़ि भगे
सोइ जाँयगे मम तलवार से मारे।
तुम खाय के मौज करी अब लौं
अब युद्ध समय ठाढ़े मन हारे।
सुनि क्रुद्ध वचन दसकन्धर के
अति सोच भरे निश्चिर तब सारे।।

मरिबो अपनो दोउ ओरहि हैं
रणभूमि मरैं तबही शुभ होई ।
निज अस्त्रन लै सब दौरि परे
मारैं कपि-भालु, मिलै जोइ कोई।
जेहि वानर कैं तिरशूल लगै
सोइ भूमि गिरै अति व्याकुल होई।
कपि रीछ विकल हुइ भागि परे
सुमिरैं कोइ राम, पवन सुत कोई ।।

कपि भालु बिकल हनुमन्त लखे
लड़ैं पश्चिम द्वार सुभट बलवाना।
घननाद के साथ वे युद्ध करैं
नहिं टूटत द्वार लड़ैं विधि नाना।
गिरि खण्ड उठाय के हाथ लियो
करि क्रोध चढ़ो गढ़ पै हनुमाना ।
रथ पै घननाद के डारि दियो
पद घात हरे तेहि सारथि प्राना।।

रथ ध्वस्त भयो घननाद गिरो
कपि दुर्ग चढ़ो धरि-धरि हुंकारे।
निशिचर जोइ आय भिरैं उतसे
तिन्हें भूमि पटकि हनुमान ने मारे।
अकिलो लखि मारुति नन्दन कों
लगे अंगद आयके दैन सहारे।
चढ़े दुर्ग पै दोउ महान बली
सब स्वर्ण कँगूर उखारि के डारे॥

दसशीष को गेह ढहाय दियो
दोउ वीर अनेक निशाचर मारे।
कहि रोय निशिचरिं शीष धुनें
बचिहैं नहिं एकहु, दोउ के मारे।
कपि केलि करैं डरपायें उन्हें
भय मानि निशाचर होंय दुखारे।
कपि कंचन खम्भ हलाय दये
फिर कूदि परे जहँ मिश्चिर भारे॥

कपि मारि के लात गिराय उन्हें
सिर तोड़िके भूमि पछाड़ि के मारें।
धड़ से उनि शीष उखारि तबै
दैंय फैंकि उन्हें दसकंठ अगारे।
निश्चर भट जोइ मिलैं उनकों
गहि पाँव उन्हें फैंकत प्रभु द्वारे।
बतलाये जो नाम विभीषण ने
सोइ राम ने एकहि बाण सँहारे॥

❋

उन्हें देत परमगति राम प्रभू
तप से बड़े योगिहु जाय न पायें।
हनुमान और अंगद वीर दोऊ
मरदैं निश्चिर, उत्पात मचायें।
कपि काहु कों मारत लातिन से
अरु काहु के शीष से शीष बजायें।
कपि आय रहे इतकों लखि कें
निश्चिर उर की धड़कन बढ़ जाये॥

मर्दन करि निश्चर गर्वन कों
दोउ साँझ भये ढिग राम के आये।
उनके पद पंकज माथ धरे
प्रभु शीष अशीष के हाथ फिराये।
अंगद हनुमान फिरे लखि कें
बन्दर अरु भालु कछुक फिरि आये।
लौटत कपि भालु लखे जबहीं
निश्चर तब टूट परे खिसियाये।।

कपि आवत देखि असुरगण कों
सब लौट परे उन पैं धरि धाये।
दोउ ओर से भीषण युद्ध भयो
तहँ काहु कों कोइ हराय न पाये।
दानव करि क्रोध भिड़े कपि से
दिन कों माया करि रात बनाये।
बड़ी रक्त की होन लगी बरषा
निश्चर कपि शीष उपल बरसाये।।

सब हाल ये राम लखो जबहीं
हनुमान औ अंगद कों बुलवाये।
आयशु पा जानकी बल्लभ की
कपि कुंजर द्वै रणभूमि को धाये।
भई दूर तिमिर रविहू चमके
जब राम ने अग्नि के बाण चलाये।
श्रम त्रास मिटी कपि रीछन की
करि क्रोध निशाचर भीड़ पै धाये॥

सुनि गर्जन अंगद हनुमत की
भय मानि निशाचर जाँय पराये।
कोइ कोई घबराय के भूमि गिरैं
गहि पाँव उन्हें कपि सिन्धु गिरायें।
दल रावण में अति त्राहि मची
कपि दोउ असुर मारत पिछियायें।
रिपु दल विचलो सब भाग परे
कछु दानव लौट के दुर्ग में आये॥

जब रात भई दल दोउ फिरे
निज खेमन में थक के सब आये।
श्रीराम लखे करि नेह जबै
कपि भालु विगत श्रम हो हरषाये।
उत रावण सचिव बुलाय कही
निज आधेहि वीर हैं लौट के आये।
रण में लड़िकें उन प्राण तजे
अब का रणनीति हो मोहि बतायें।।

अति वृद्ध सचिव माल्यवन्त कही
कहूँ नीति वचन तुमसे अति पावन।
असगुन हों सीय हरी जबसे
अबही तुम मान लो मोर सिखावन।
प्रकटे बनि राम हैं ब्रह्म यहाँ
उनके पद शीष धरो तुम रावन।
देहु आदर से लौटाय सिया
लेहु माँग क्षमा उनके परि पाँयन।।

गरजो कहि रावण, वृद्ध भयो
एहि कारण नाहिं रहो तोहि मारी।
कहूँ साँच कि तू शठियाय गयो
एहि कारण बुद्धि गई तव मारी।
शठ जाउ अबहि तजि राजसभा
कहिके तड़पो रावण अति भारी।
माल्यवन्त तुरन्त गयो उठिके
घननाद कही तब भरि हुँकारी॥

लखियो रण प्रात पिता हमरो
दल राम में ईंट से ईंट बजाऊँ।
करि दर्प कों चूर सकल उनके
तव देखत ही उन्हें गर्त मिलाऊँ।
कपि रीछन के सँग ही दोउ कों
बधिके तव सन्मुख मैं ले आऊँ।
सुत कों सुनि के कछु धीर भयो
कही रावण मैं तुम पै बलि जाऊँ॥

जब प्रात भई कपि भालुन ने
चारहु फाटक घेरे पुनि जाई ।
उन घेरि लियो गढ़ रावण को
भयो घोर समर सब रहे घबराई ।
जब निश्चर अस्त्र प्रहार करैं
कपि दें उनपै गढ़ खण्ड गिराई ।
दोउ मार रहे इक-दूसर कों
घनघोर मची रणभूमि लड़ाई ।।

यह देखि तबै घननाद बढ़ो
अति क्रोध सहित गढ़ पै तेहि आयो ।
कपि भालुन से ललकारि कही
कहँ अंगद और नलनील बुलायो ।
कहँ राम लखन लिये वाण खड़े
औ कहाँ हनुमान छिपो घबरायो ।
सुनिके आवाहन निश्चर को
हनुमन्त तहाँ अति क्रोध में आयो ।।

लखिके भट वानर रीछन कों
भरि क्रोध असुर करै घोर लड़ाई।
लैकें शत वाणन कों धनु पै
तकि भालु कपिन पर देत चलाई।
मरे वीर, बचे असहाय भये
सोइ भागि परे रण छोड़ि पराई।
हनुमान जबै सब हाल लख्यो
दियो शत्रु पै शैल उखारि गिराई।।

शठ शैल कों देखि उड़ो नभ में
तत्काल लियो निज शीष बचाई।
रथ शैल की मार से टूट गयो
दिये सारथि ने निज प्राण गँवाई।
हनुमान बुलाय रहे शठ कों
पर जानि मरम वह पास न जाई।
दुर्बाद करत घननाद तबै
पहुँचो जहँ बैठ रहे रघुराई ।।

उन पै बहु अस्त्र प्रहार करे
श्रीराम ने कौतुक काटि निवारे।
बहु भाँति प्रहार करैं प्रभु पै
नहिं राम टरैं घननाद टारे।
माया खिसियाय रची शठ ने
जलधार बहाय, गिराये अँगारे।
फिर धूलि उड़ायके धुंध करी
विष्टा, कच, हाड़, रुधिर तेहि डारे।।

व्याकुल कपि भालु भये सिगरे
माया प्रभु एकहि वाण निवारी।
श्रीराम कृपा करि सैन लखी
क्षण में सब केरि थकान बिड़ारी।
कपि अंगद आदि लिये सँग में
सौमित्र चले धनुशायक धारी।
रण ओर लखन जब आत दिखे
पठई दसकंठ कटुक इक भारी।।

बहु भाँति के आयुध लै कर मैं
शठ टूट परे कपि भालुन ऊपर।
तब वानर रीछ भिरे उनसे
पटकैं उन्हें लातिन मारि के भूपर।
कपि मारत, दाँतन काटि उन्हें
तेहि शीष उखारि के फेंकत भू पर।
उठिकैं तेहि रुण्ड भगैं रण में
कटि के जब मुण्ड गिरें तहँ भू पर।।

धरणी पर शोणित धार बही
मनो रक्त को एक समुद्र बनायो।
जलचर बनि रुण्ड औ मुण्ड परे
कपि भालु निशाचर लोरि नहायो।
नाचहिं पी रक्त पिशाच वहाँ
डंकिनि तिन्हें देख के मोद मनायो।
कपि भालु निशाचर मार रहे
इक दूसर कों जेहि ने जो पायो।।

हुइ घायल भागि परैं रण से
कोइ भूमि गिरैं निज चेत गँवाई।
कोइ घाव लगे उठि वार करें
कपि मारि के दुइ, तन छोड़त जाई।
हुलसाय कैं बानर रीछ लड़ैं
यतुधान कों मारत शैल गिराई।
कपि राम की जय-जयकार करें
निशिचर दसकंठ कों दैंय दुहाई ॥

लक्ष्मण घननाद भिरे रण में
इक दूसर को कोइ जीत न पाये।
माया घननाद करी तबही
अति कोपि लखन रथ तोड़ि गिराये।
कसिके कइ वार किये तेहि पै
शठ सोच रहो अब प्राण गँवाये।
तब मारि के साँग बिहाल कियो
घननाद ने लक्ष्मण भूमि गिराये ॥

मूर्छित भये लक्ष्मण शक्ति लगे
गिरे भूमि तबहिं निशिचर ढिगआयो।
शत-शत दानव इक साथ लगे
सौमित्र कों कोइ उठाय न पायो।
जब साँझ भई दोउ सैन फिरीं
तब राम कही लक्ष्मण नहिं आयो।
उनकों निज पीठ धरैं तबही
सुत मारुत को तेहि ठाँव पै आयो ।।

भये बन्धु कों देख कें राम दुखी
कर जोरि विभीषण बैन सुनाये ।
लंका महँ वैद्य सुखेन बसैं
कोइ जाय तुरन्त उन्हें लै आये।
हनुमत धरिके लघु रूप गये
ताहि गेह समेत उठाय के लाये ।
संजीवनि प्राण बचाय सकै
कही वैद कोई द्रोणागिरि जाये ।।

अंगद कर जोरि कही प्रभु से
यह शत्रु को वैद्य भरोस न कीजे।
करि देय अशुभ नहिं बन्धु को ये
एहि कारण निर्णय सोच के लीजे।
कही राम ये मित्र मरीजन के
उनके लखि कष्ट तुरन्त पसीजें।
गुण वैद्य को प्राण बचात सदा
इन्हें शत्रु को जानि सँदेह न कीजें।।

हनुमन्त से राम कही जबही
सोइ औषधि लेन तुरन्तहि धायो।
दसकंठ कों भेद मिलो जबही
कालनेम भवन अति शीघ्रहि आयो।
अति नेह सौं भेद कहो सिगरो
सुनि रावण कों कालनेम बतायो।
भगवान से बैर तो ठीक नहीं
श्रीराम कों तुम पहिचान न पायो।।

सुनतहि गरजो दसकंठ तबै
शठ रोकु कपिहि न तु मारिहौं तोई।
कालनेम विचार कियो मन में
खल से तो भलो कपि मार दे मोई।
यह सोचि, गयो कपि के मग में
छल से रचे मन्दिर औ सर सोई।
बनिके मुनि बैठ गयो तहँ पै
मन सोच रहो द्रुति आय बटोई।।

मग आश्रम एक लख्यो कपि ने
जहँ बैठ मुनी एक ध्यान लगाये।
हनुमान जबहिं पग माथ धरो
ऋषि ने गुण राम के गाय सुनाये।
कही देख रहो रण होत महा
दिव्यदृष्टि से जो तप से हम पाये।
बधिहैं कपि रामहि रावण कों
उनकों कबहूँ शठ जीत न पाये।।

माँगो जल ज्यौंहि पवनसुत ने
उन्हें साधु कमण्डल दीन्ह गहाई ।
कपि कही नहिं, काम चले एहि से
मज्जन करिहैं सर देहु बताई ।
कपि ज्यौंहि घुसो सर के जल में
माया मकरी मुँह फारिके धाई ।
हनुमन्त तुरन्त सँहारि दई
सुरलोक गई अपनी गति पाई ।।

मकरी सुरलोक को जात कही
कपि दर्शन दै मुनि शाप मिटायो ।
कही ये मुनि नाहिं निशाचर है
मायावी ने है यह रूप बनायो ।
कपि बाहर आय कही मुनि से
महाराज प्रथम गुरु दक्षिणा पायो ।
लैहौं मैं बाद में मंत्र सबै
कहि,ताहि पटकि सुरलोक पठायो ।।

प्रकटो निज रूप निशाचर ने
श्रीराम सुमिर सुरलोक सिधायो ।
मन हर्षित हुइ हनुमन्त चलो
पहुँचो गिरि औषधि ढूँढ़ न पायो ।
जपि राम उखारि लियो गिरि कों
अरु लै तेहि कों कपि लंक कों धायो ।
गिरि कों अपने कर माँहि लिये
कपि रात में जात अवध नभ आयो ।।

नभ माँहि भरत लखिके गिरिसो
निशिचर अनुमानि के बाण चलाये।
बिनु नोंक को बाण लगो कपि के
हुइ मूर्छित भूमि गिरे बिलखाये ।
गिरतहि लियो राम को नाम कपी
सुनि राम, भरत वहँ दौरिके आये ।
हुइ व्याकुल कीस लगाय हिया
रहे वाहि जगाय जगै न जगाये ।।

यदि राम चरण मम प्रीति घनी
प्रभु ! तो कपि शूल रहित हुइ जाये।
इतनो सुनतहि कपि जाग गयो
जपो राम को नाम हृदय हुलसाये।
सुनि राम को नाम प्रसन्न भये
अति नेह भरत कपि कंठ लगाये।
पूछो कस राम लखन सिय हैं
कपि ने संक्षेप में हाल सुनाये ।।

सुनके उनको अति खेद भयो
कही पहुँचत देर तुम्हें हुइ जाये।
बिगरैं सब काम प्रभात भये
मम बाण चढ़ौ हम देत पठाये ।
कपि के मन में अभिमान जगो
कही भार मिरो कस बाण उठाये।
फिर राम को जानि प्रभाव कपी
कही जाइहौं तीर सो आशिष पाये।।

जपि राम चले गिरि हाथ लिये
प्रिय भरतहिं नेह सहित सिर नाये।
कपि जात सराहि रहे मन में
कहैं राम के भक्त सुशील स्वभाये।
उत देख के बन्धु कों राम कही
निशि अर्द्ध भई कपि लौट न पाये।
तजि धीरज राघव रोय परे
इक मानव लौं कहिके बिलखाये।।

❋

मम हेतु सहे तुम कष्ट बड़े
वन माँहि रहे सहि आतप बाता।
निज नारिहु को नहिं मोह कियो
तुम छोड़ि दिये अपने पितु-माता।
मन मोर दुखी अति व्याकुल हैं
यही सोचि जगो हमरे प्रिय भ्राता।
तुम बिनु नहिं मोय सुहाय कछू
नहिं जात जियो हमसे प्रिय ताता।।

सौंपेहु मम मातु ने मोहि तुम्हें
अकिले उन्हें जायके का बतलइहौं ।
तुम बीच भँवर मोय छोड़ रहे
मैं लौटि अवध का मुख दिखलइहौं।
उर्मिल जब पूछिहै–नाथ कहाँ ?
तब का कहि धीरज वाहि बँधइहौं।
पुरजन, परिजन अरु बन्धु, सखा
जब पूछिहैं वे उनि काह बतइहौं ।।

❋

सुनि राम विलाप दुखी सबही
तबही वहँ आय गये हनुमाना ।
लखि सम्मुख मारुतिनन्दन कों
भये राम कृतज्ञ बड़ो सुख माना ।
परिके पग कीश प्रणाम कियो
उन्हें कंठ लगाय लियो भगवाना।
बूटी घिसि वैद्य पिवाय दई
सौमित्र जगे मनो पाय बिहाना ।।

लियो बन्धु कों राम लगाय हिया
कपि भालु सबै मन में हरषाये।
रघुनाथ अभार कियो उनको
फिर वैद्य सनेह घरैं पहुँचाये।
भये ठीक लखन, दसकंठ सुनी
सुनतहि दसहू मुख थे कुम्हलाये।
गयो कुम्भकरण जहँ सोय रहो
ताय भैंसन दाँय चलाय जगाये ॥

卐

उठो कुम्भकरण अति क्रोध भरो
मनो कोइ महागिरि हो उठि आयो।
कही बन्धु कहा दुख आय परो
काहि सोवत बीचहि मोहि जगायो।
कस सीय हरी अरु लंक जरी
सब रावण युद्ध को हाल सुनायो।
कही कुम्भकरण नहिं ठीक कियो
जग मातु कों तू हरिकैं लै आयो ॥

लड़ि राम से पाप कियो तुमने
हमकों अब आजु जगावन आये।
अबहू कछु नाहिं गयो तुम्हरो
तजिके अभिमान कों राम पै जायें।
जिनके हनुमान से सेवक हैं
नर जानि उन्हें उत्पात मचाये।
सेवत सुर, ब्रह्म, 'महेश' उन्हें
मुनि नारद मोहि रहस्य बताये॥

मैंतु जात हूँ दर्शन कों उनके
भेंटौ भरि अंक निकट मम आयो।
गुण गावत राम के मस्त भयो
तब रावण मदिरा पान करायो।
मँगवाय सहस्रन भैंसन कों
कटवाय के बन्धु कों माँस खबायो।
पी के घट पै घट वारुणि के
शठ आमिष खाय मती बौरायो॥

मदिरा पिय शून्य विवेक भयो
तब बन्धु के हित अति नेह झरो।
अति प्रेम से पूछत रावण कों
तुम काहि न राम को रूप धरो।
तुम जानत हो माया सिगरी
बनि राम न सीय को शील हरो।
दसकंठ कही माया रचि के
कई बार ही राम को रूप धरो।।

छल से जबही हम राम बने
मम पाप मिटे सिगरे मन के।
नहिं कलुषित भाव रहे उर में
मिटे पाप प्रभाव सबै तनके।
श्रीराम को रूपहु राम बने
उर पाप को नूपुर ना खनके।
हम जानिके बैर कियो उनसे
तरिहैं तेहि हाथन से हनिके।।

चलो कुम्भकरण बिनु सैन लिए
रणभूमि में गर्जत झूमत आयो।
लखि बन्धु कों आय रहो इतको
उठि जाय विभीषण ने सिर नायो।
कही मारिके लात निकारि दियो
तजि रावण को रघुनाथ पै आयो।
कही कुम्भकरण प्रिय धन्य भयो
सब छोड़के जो प्रभुपाद समायो।।

तहँ से गिरि मेरु सो झूमत ही
पहुँचो जहँ पै रघुनाथ विराजे।
लखि राम कों मुग्ध भयो मन में
धनु तीर तुणीर शरीर पै साजे।
तन नीलमणी, मुख पै प्रतिभा
शुचि सन्त को वेश जटा सिर राजे।
प्रभु कों मन माँहि प्रणाम कियो
हुंकारि उठो मनों मेघ ह्वों गाजे।।

वहि देखि विभीषण आय कही
प्रभु आवत कुम्भकरण मम आगे ।
इतनो सुनतहि कपि टूटि परे
गिरि बृक्ष उखारि कें मारन लागे ।
वाहि बृक्ष, पहाड़ तो जानि परैं
मनों प्रस्तर मूर्ति में पुष्प हों लागे ।
हनुमन्त ने लात हनी तबही
गिरो भूमि निशाचर बानर आगे ।।

हनुमन्त पै दैत्य प्रहार कियो
नभ में नलनील कों फेंकि उछारे ।
शठ कों कपि भालु मिलें भट जो
उनकों भुइ पै पटके अरु मारे ।
मूर्छित अंगद सुग्रीव भये
कपिराज कों कोख दबाय हुँकारे ।
लीला सब राम दिखाय रहे
दम दैत्य की का उनि भक्त कों मारे ।।

हनुमान लख्यो सुग्रीव नहीं
तब दौरि निशाचर के ढिग आये।
मृत सम सुग्रीव थे कोख दबे
जब होश भयो वाहि काटिके खाये।
सुग्रीव कों ले शठ भाग परो
तब वाहि पवनसुत खैंचि गिराये।
कपि दाँतन काटिके कान दोऊ
गहि टाँग झपटि तेहि भूमि चटाये।।

लखिकें निज नाक औ कान कटे
करिकें अति क्रोध निशाचर धायो।
जय बोलकें राम की भालु कपी
शठ ऊपर लाय पहाड़ गिरायो।
उदरस्थ करे कपि भालु निरे
जब कुम्भकरण अपनो मुख बायो।
कपि कोटिक पाँव से रौंदि दये
अरु बहुतन मीजिकें गर्द मिलायो।।

निकरे कपि नाक औ कानन से
जोइ कुम्भकरण निज पेट में खाये।
मुख फारि निशाचर भूमि चलै
अस लागत वानर वंश नसाये ।
मग में नहिं देख चलै कछुहू
रौंदै कपि भालु कटक निज पाँये ।
जब राम लख्यो कपि हार रहे
तब अंगद औ हनुमान बुलाये ।।

निज सैन की जाय सहाय करो
हम शत्रु की सैन कों जाय सँहारें।
शर सारँग राम उठाय चले
किये दैत्य बधिर जब वाहि टँकारे।
कटिके सिर रुण्ड गिरे धरणी
क्षण में प्रभु कोटिन दानव मारे ।
बहु रुण्ड भगें उठिकें रण में
तिन माँहि बहैं बहु रक्त पनारे ।।

यह देखि निशाचर क्रुद्ध भयो
क्षण में लियो एक पहाड़ उखारी।
कपि भालुन पै गिरि डारि दियो
शर मारिके राम कियो तेहि छारी।
मुँह फारिके दौरि परो प्रभु पै
तब राम ने साँग उठाय के मारो।
कई बाण प्रहार किये शठ पै
सब छेदिके देह गये ओहि पारी॥

तन से बही रक्त की धार बड़ी
शठ व्याकुल हुइ अति घोर चिंघारे।
वाहि देखन जाँय जो भालु कपी
उन्हें कुम्भकरण पकरै दै मारे।
रौंदे इनको निज लातिन से
कपि भालु विकल हुइ राम पुकारें।
धनु बाण उठायके राम तबै
शठ के तन में तकि के शर मारे॥

गिरि दैत्य ने एक उखारि लियो
श्रीराम के ऊपर डारन धायो।
रघुनाथ ने बाण चलाय तबै
कर सोइ तुरन्तहि काट गिरायो।
गिरिकों गहिके कर दूसर से
रघुनन्दन पै शठ डारन आयो।
प्रभु काटि दियो भुज दूसर हू
मुख फारि उन्हें तब खान कों धायो॥

प्रभु मारि अनेकन बाण तबै
मुख बन्द कियो तोहु मारन धायो।
धनु डोर कों खैंचिके कानन लौं
शर मारि प्रभू सिर काटि गिरायो।
सिर जाय गिरो दसकंठ ढिगा
लखिके तेहि रावण क्रोध में आयो।
कपि भालुन रौंदत रुण्ड फिरै
तब राम ने बाण से काटि गिरायो॥

गिरो भूमि पहाड़ सो देखि परे
गिरतहु रौंदे कपि भालु सयाने।
निकरो तन तेज लगै प्रभु सो
सोइ देखि अमर अचरज्ज अतिमाने।
सुर दुर्लभ गति ताहि राम दई
बरसाय सुमन सुर प्रभु सन्माने।
मुनि वृन्द ने आय प्रणाम कियो
प्रभु वीर स्वरूप लखो हरषाने॥

जब साँझ भई दोउ सैन फिरीं
लगे वीरन कों दोउ पक्ष सम्हारी।
कपि को दल तो अति बाढ़ि रहो
पर निश्चर सैन भई क्षति भारी।
लखि के प्रिय कुम्भकरण सिर कों
दसकंठ विलाप कियो अति भारी।
सिर पीट के रानिहु रोय परीं
गुणगान करें तेहि नाम पुकारी॥

सुनि आय गयो घननाद वहाँ
निज तात कों कहि बहु धीर धरायो।
करिहौं रण कालि विकट उनसें
लखियो कौतुक नहिं तोहि बतायो।
सुनिकें सुत बात घमंड भरी
दसकंठ हृदय कछु धीरज आयो।
पल पल करके सोइ रात कटी
कपि प्रात ही द्वार जमाव लगायो।।

इतै मर्कट भालु लड़ैं रण में
उत वार करैं निशिचर रणधीरा।
गरजैं, तरजैं, चिंघार करैं
अरु जूझि परैं दोउ लँग भट वीरा।
आयो तेहि क्षण घननाद वहाँ
माया रथ पै चढ़ि बाँधि तुनीरा।
नभ जाय तुरन्त गिराय दये
प्रभु सैन पै, अस्त्र, पहाड़ औ तीरा।।

कपि बृक्ष उखारि उड़े नभ में
शठ पै डारैं सोइ जाय बिलाई ।
घननाद रचो छल ताहि घरी
दियो वाणन से सिगरो नभ छाई ।
सब व्याकुल हुइ कपि भालु भगे
कस प्राण बचैं सुमिरैं रघुराई ।
अंगद नल नील पवन सुत कों
करके घायल दियो भूमि गिराई ।।

लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण हू
भये घायल शठ अगणित शर मारे ।
श्रीराम कों बाँधि के डारि दियो
जब नाग की पाश उठाय के मारे ।
जग कों जोइ मुक्ति दिलावत हैं
वे हि नाग की पाश बँधे तहँ डारे ।
यह देखि अमर घबराय गये
सब ध्याय रहे प्रभु कों भय धारे ।

माया शठ खूब करै रण में
कबहूँ प्रकटे कबहूँ छिप जाये।
रिछराज तबहिं ललकारि दियो
निश्चर कहो बृद्ध हो जानि बचाये।
ले मारत हूँ अब तोहि, बचो
कहिके घननाद त्रिसूल चलाये।
कर थामि के छीन त्रिसूल लियो
कसि लात हनी ताहि भूमि गिराये॥

❋

गहि पाँव घुमाय दियो कसिके
पटको उनि भूमि गिरो हहराई।
वरदान प्रभाव न मृत्यु भई
तब पाँव पकरि पुनि दीन्ह घुमाई।
शठ लंक में जाय गिरो तबही
जब चेत भयो लज्जा अति आई।
इत आय गरुण डसि नागन को
श्रीराम कों पाश से मुक्ति दिलाई॥

हरतहि माया कपि भालु सबै
गिरि बृक्ष उखारि कें दुर्ग पैं धाये।
निशिचर बहु मारि दये उनने
कछु भाग गये निज प्राण बचाये।
घननाद कों चेत भयो जबहीं
मख हेतु अजयगिरि कन्दर आये।
तब आय विभीषण ने प्रभु कों
तेहि यज्ञ के पूर्ण प्रभाव बताये।।

घननाद ने यज्ञ जो पूर्ण कियो
प्रभु होय अजेय, न कोइ हराये।
सुन कें श्रीराम प्रसन्न भये
अंगद, लक्ष्मण, हनुमन्त बुलाये।
कही जाय के नष्ट करो मख कों
लक्ष्मण मारैं रण में बतलाये।
रिछपति, सुग्रीव, विभीषण, हू
प्रभु आयशु सैन लिवाय के धाये।।

लक्ष्मण प्रण ठानि के संग चले
धनु, वाण, कठिन, तूणीर उठाये।
जब राम के पाद में शीष धरो
उन्हें देखि युवा मृगराज लजाये।
बधिहौं मैं आज अवसि शठ कों
चहि शंकर हू वाहि आय बचायें।
मख देखि चकित कपि भालु भये
शठ आहुति रक्त औ माँस चढ़ाये॥

卐

कपिवृन्द विध्वँस कियो मख कों
घननाद तबहुँ रहो ध्यान लगाये।
कपि लातिन मारि उठाय रहे
भालू बहु बृक्षन लाय गिराये।
तेहि ध्यान अचानक टूट गयो
तब लै तिरशूल कपिन पर धाये।
हुँकार भरी, घन सो गरजो
कपि दौरि के राम के भ्रात पै आये॥

धाये अंगद, हनुमान तबै
उन्हें मारि त्रिशूलन भूमि गिराये।
शठ राम पै शूल प्रचण्ड हनो
तेहि काटि के भूमि अनन्त गिराये।
उठि अंगद औ हनुमान तबै
दोउ टूटि परे पर मारि न पाये।
घननाद अनन्त पै वार कियो
हुइ क्रुद्ध लखन बहु बाण चलाये।।

लखि के शर अन्तर्ध्यान भयो
लियो दैत्य अनन्त को वार बचाई।
माया नभ माँहि दिखाय रहो
कबहूँ प्रकटे कबहूँ छिप जाई।
प्रकटत, लक्ष्मण उर बाण हनो
शठ भूमि गिरो सुमिरत रघुराई।
हनुमान ने दैत्य उठाय तबै
दियो लंक के द्वार पै जाय पराई।।

भुइ पै घननाद परो लखि कै
नभ देवन दुंदुभि नाद कराई ।
करि स्तुति वन्दन लक्ष्मण की
मुदि ह्वै बहु पुष्प दिये बरसाई ।
लक्ष्मण प्रभुपाद में शीष धरो
श्रीराम लियो उन्हें कंठ लगाई ।
घननाद मरो, दसकंठ सुनी
बिलखाय के भूमि गिरो हहराई ।।

घननाद की मृत्यु पै पागल सो
दस शीष फिरै घूमत बिलखायो ।
हुइ बुद्धि विहीन सो देखि रहो
करूँ काह कछू तेहि सोचन पाये ।
करि याद तबहि अहिरावण को
शठ दौरि 'महेश' के आश्रम आयो ।
मंत्राकर्षण जपि रावण ने
अहिरावण चित्त पताल डुलायो ।।

अहिरावण सोचि कही तब ही
दसकन्धर तो अति ही बलशाली।
तेहि ऊपर कौन विपत्ति परी
यह सोच तुरत तलवार निकाली।
दसकन्धर को रिपु कौन भयो
द्रुति जाय के देंहु मैं ताहि सम्भारी।
यह सोचि गयो दसकंठ ढिगाँ
शिव गेह थो जोहत ताहि कुचाली।।

अहिरावण ने कही काह भयो
केहि कारण ही मोहि बन्धु बुलायो।
कस सीय हरी, सुत, बन्धु मरे
दसकंठ ने पूर्ण प्रसंग बतायो।
अहिराव कही मत सोच करो
हरि हौं दोउ राम लखन बतलायो।
निशि में जब सूर्य प्रकाश दिखै
तबही समझो उनको हरि लायो।।

तेहि ठाँव गयो द्रुति दौरि तबै
जहँ सैन के मध्य रहे रघुराई।
कपि सैन बिशाल लखी तहँ पै
हनुमंत की पूँछ को कोट औ खाई।
मुँह फारि खड़े हनु द्वार बने
जोइ शत्रु घुसै तिन पेट में जाई।
केहि भाँति घुसूँ, पहुचूँ प्रभु पै
कछु युक्ति भुजंग पति सोचन पाई।।

✲

धरिकें फिर भेष विभीषण को
श्रीराम जपत हनुमन्त पै आयो।
कपि टोकेहु तो कर जोरि कही
रघुनाथ की अनुमति से मैं आयो।
सन्ध्या, अर्चन महँ देर भई
यहि कारण शीघ्रहि लौट न पायो।
कपि जानदै मोहि डरौं प्रभु से
सुनि हनुमत ने प्रभु पाँहि पठायो।।

घुसि सैन के बीच विभीषण सो
पहुँचो जहँ सोय रहे दोउ भाई ।
लखि बन्धु के ऊपर हाथ धरैं
दिशि दक्षिण भूमि परे रघुराई ।
चहुँ कोद परे कपि भालु निरे
मनो तारेन बीच शशी छबि पाई ।
द्रुति राम लखन दोउ कों हरि के
नभ राह चलो रवि तेज दिखाई ।।

मन सोचत जात चलो नभ में
कुल देवि कों दोउ की भेट चढ़ाऊँ ।
उन्हें पूजि प्रसन्न करूँ बलि से
फिर मैं अपने मन को फल पाऊँ ।
निशि माँहि प्रकाश लख्यो रवि को
दसकंठ कही अब मौज मनाऊँ ।
कल प्रात हनौ कपि भालुन कों
बिनु राम, लखन उन्हें मार गिराऊँ ।।

निशि राम लखन कहँ सोवत ही
अहिरावण दौरि पताल में लायो।
बलि दैन कों देवि के मन्दिर में
शठ ने तबहीं सब साज सजायो।
उत वानर, भालु विकल हुइ कैं
कपिराज कों आय के हाल सुनायो।
दोउ बन्धु गये कहँ छोड़ि हमें
यह सोचि सुग्रीव बहुत दुख पायो।।

अति ही कुहराम मचो दल में
मनो हों सबने निज प्राण गँवाये।
अति आकुल व्याकुल ताहि घरी
सुग्रीव के पास पवनसुत आये।
अब राम बिना मोहि चैन नहीं
करूँ काह कोई मोहि राह बताये।
रिछराज कही सब लायक हो
मिलैं रामलखन करु शीघ्र उपाये।।

हनुमन्त ने रोय कही तबही
धरि रूप विभीषण को कोइ आयो।
हमहू नहिं भाँपि सके शठ कों
सब देखत ही प्रभु कों बिसरायो।
हम जानि गये जोइ रूप धरो
तब आय विभीषण ने बतलायो।
अहिरावण छोड़ कें और नहीं
कोइ है जेहि ने मम-रूप बनायो।।

अहिरावण भक्त दशानन को
पाताल के लोक निवास करे।
तेहि ने प्रभु बन्धु समेत हरे
लगै देवि पै सो बलिदान करे।
अति कष्ट में राम वहाँ हुइहैं
अब शीघ्रहि कोइ उपाय करें।
यदि देर भई, बिनु अस्त्र प्रभू
कहुँ सोवत में नहिं मारि धरे।।

हनुमन्त हुँकारि चले तबही
क्षण माँहि पताल के लोक में आये।
पुर द्वार के बाहर पेड़ लख्यो
कछु देर तहाँ रुक के बिलमाये।
रही पेड़ पै गर्भिन गीधत्रिया
तेहिने निज गीध से बैन सुनाये।
मन चाहत आमिष मानव को
मिलै मोहि कहूँ भरिके जी खायें॥

कही गीध न सोच करो मिलिहै
अहिरावण दुइ मानव हरि लायो।
उनकी बलि काटि चढ़ावन को
तेहिने देवी गृह आज सजायो।
नर दोउ दिखाय रहे हमको
बलि हेतु उन्हें तेहि ठाँव पै लायो।
मिलिहै कछु देर में माँस तुम्हें
तब खूब प्रमुदि, भरिके जी खायो॥

हनुमन्त ने गीध की बात सुनी
द्रुति दौरि पताल के द्वार पै आयो।
मकरध्वज नाम महान कपी
उनने तेहि द्वार पै रक्षक पायो।
पुर द्वार से भीतर जान लगे
मकरध्वज ने उन्हें रोकि बतायो।
मैं अतिबल पूत पवनसुत को
मम होत नहीं कोई घुसि पायो।।

हनुमन्त कही कस पूत मिरो
कबहूँ नहिं मैं निज ब्याह रचायो।
कही पुत्र ने लंकहि जारि फिरे
तबही तुम सिन्धु में स्वेद गिरायो।
मम मातु मकरि सोइ खाय लियो
तव पुत्र के रूप तबहि मैं आयो।
अति निष्ठ मैं रक्षक हूँ पुर को
घुस पाइहौ ना, कहिके समझायो।।

बल से हनुमन्त ने जान चहो
तब मकरध्वज उन्हें खैंचि गिरायो।
दोउ वीर भिरे करि क्रोध तबै
इक दूसर से कोइ न जीत पायो।
सुतहू बलवान रहो पितु लौं
पर हनुमत तो प्रभु काज कों आयो।
उनि खैंचि के बाँधि दियो सुत कों
पुर माँहि घुसे लघु रूप बनायो ।।

इक मालिनि फूलनि बीनि तबै
बलि उत्सव के हित मंदिर ल्याई।
हलके बनि फूल से ताहि धरी
घुसि फूल गये बलि ठाँव पै आई।
जब देवि के ऊपर पुष्प चढ़े
कपि जाय चढ़ो उनके सिर जाई।
दियो पाँव से भूमि में दाबि उन्हें
अपनो लियो देवि को रूप बनाई ।।

मुख फारि चढ़ावन खान लगे
अहिरावण तब मन में हरषायो ।
कही लागत देवि प्रसन्न भई
मैं राम लखन बलि के हित लायो।
निश्चर सब मोद भरे सुनि कें
उननेहु सँग में अटहास लगायो।
फिर राम लखन दोउ कों नृप ने
तेहि मण्डप में बलि हेतु बुलायो ।।

कही अन्त समय तव आय गयो
जोइ हो इच्छा सुमिरौ दोउ भाई।
मन में तब राम विचार कियो
करिहैं हनुमन्त ही आय सहाई ।
क्षण में हनुमन्त प्रकट हुइ कें
अहिरावण के कसि लात जमाई।
तलवार तुरन्त छुड़ाय लई
क्षण में दियो काटि के शीश गिराई।।

अहिरावण ने जब प्राण तजे
सँग ताहि के सब निश्चर कपि मारे।
खुलवाय के बन्धन राम तबै
मकरध्वज सिंहासन बैठारे।
फिर पूजि कें पग दोउ भाइन के
हनुमन्त उन्हें निज कन्ध बिठारे।
लइके उनकों सँग आय गये
जहँ पै कपि वृन्द थे बाट निहारें।।

❋

लखिकें दोउ बन्धनु कों दल में
कपि भालु सबहि मन में हरषाये।
बिनु राम रहे मृत प्राय मनो
अब देखि उन्हें पुनि प्राण हों पाये।
हनुमन्त कों कंठ लगाय लियो
कपि भालुन ने उनके गुण गाये।
कपिराज कृतज्ञ भये उनके
जिनने पुनि राम लखन मिलवाये।।

उत रावण धीर धराय रहो
तिय सोच तजो होनी सोइ होई ।
क्षति, लाभ, मरण, जीवन सबही
निज हाथ नहीं बिध के बस सोई।
घननाद के शीश कों गोद धरे
हुइ व्याकुल नारि सुलोचनि रोई।
बिलखै मन्दोदरि शीष धुनै
सुत के बध पैं अपनी सुधि खोई।।

❋

जब भोर भई कपि भालु सबै
द्रुति चारहु द्वारन पै चढ़ि आये ।
उत रावण निश्चर वीरन कों
ललकारि के प्रातहि पास बुलाये।
कही जाइकों प्राण पियार लगें
सोइ जाय तुरत मम संग न आये ।
रण छोड़ि जो प्राण बचाय भगे
वह मृत्यु मेरी तलवार से पाये ।।

हम बैर कियो अपने बल पै
अरु मैंहि उतर दैहौं तेहि जाई।
अस कहि दसकंठ चलो रथ लै
मग जान परी आँधी होय आई।
सँग में गज बाज अनेक चले
पद सैन्य असंख्य निशाचर धाई।
पथ में असगुन बहु होन लगे
पर नाहि असुर रहो ध्यान में लाई।।

मग धूलि उड़ी नभ में इतनी
ढकि सूर्य गयो खग मृग अकुलाये।
दसमुख पग चाप से भूमि हिले
दिकपाल डरे कुंजर भय खाये।
कही सैन से मारहु भालु कपी
हम राम लखन कहँ मारिहैं जाये।
सुनि के रणनीति दशानन की
कहि राम की जय कपि भालुहू धाये।।

निश्चर कपि सैन पै टूट परे
पर राम के वीर हटैं न हटाये ।
दसकंठ रथी, रथहीन प्रभू
लखि दृश्य विभीषण थे घबराये ।
प्रभु से कर जोरि कही उनने
रावण रथ पै अरु आप हैं पाँयें ।
बिनु स्यन्दन आप जो युद्ध करैं
मरिहै कस ये हम सोचन पायें ।

कही राम अधीर न हो मन में
वही जीति है धर्म का स्यन्दन जाका ।
परहित बलबुद्धि के बाज जुते
होंय धर्म और धैर्य के ही जेहि चाका ।
प्रभु भक्ति को सारथि हो जेहि को
दृढ़ हो सतशील ध्वजा औ पताका ।
जहँ दान औ ज्ञान के वाण धरे
उर शक्ति नियम यम सो रथ बाँका ।।

श्रद्धा गुरु विप्र कवच जेहि में
रथ धर्म को जो ऐसो नर पाये।
सोइ वीर अजेय रहै रण में
खल रावण से द्रुति मारि गिराये।
सुनिके भयो ज्ञान विभीषण कों
पुनि राम चरण मँह शीष झुकाये।
देखन रण राम दसानन को
चढ़ि वाहन पै सब ही सुर आये।।

अति घोर समर तहँ होन लग्यो
सब बीर भिड़े मन कोइ न हारे।
श्रीराम को नाम हिया धरिकें
भट भालु कपिन बहु निश्चर मारे।
पग वार से भूमि में गाढ़ि उन्हें
तिन ऊपर रेत उठाय के डारें।
मारैं, काटैं, मरदैं कसिकें
तिन शीष उखारि कें शीषनि मारें।।

श्रीराम प्रताप बढ़े बन्दरा
गहि पाँव, पटकि अरि पक्ष कों मारें।
इक टाँग दबायके दूसरि कों
करि क्रोध उठायके चीरकें फारें।
दुइ खण्ड बनायके फेंकि उन्हें
रण हेतु पुनः कपि और पुकारें।
पकरें दुइ कों दोउ हाथन सें
तेहि शीष लड़ाय के फोरि के डारें।।

विचलित निज सैन भई लखि के
दसशीष गरजि निज वीर पुकारे।
हुइके अति क्रुद्ध बढ़ो रण में
कपि भालु पहाड़ उखारि के डारे।
तन वज्र सो रावण को तेहि पै
गिर छार भये पत्थर कपि मारे।
रावण कपि भालुनि रौंदि दियो
हुइ व्याकुल वे हनुमन्त पुकारे।।

रण छोड़ के भागत भालु कपी
लखि रावण ने बहु वाण चलाये।
नभ पहुँचत अगणित वाण बनें
कोइ ठौर नहीं जहाँ वाण न जाये।
बचिबे को न ठाँव दिखाय कहूँ
सोचत कपि भालु कहाँ अब जायें।
कोलाहल खूब मची रण में
प्रभु आयशु पाय लखन तहँ आये॥

लक्ष्मण शर पुंज प्रहार कियो
लगो रावण के अति ही बिलखायो।
हर मस्तक पै शत वाण लगे
तबहू खल वीर गिरै न गिरायो।
लक्ष्मण शत वाण हने उर में
मूर्छित हुइ भूमि गिरो हहरायो।
जब चेत भयो उठि साँग हनी
लक्ष्मण उर में जोइ ब्रह्म से पायो॥

लगतहिं बिलखाय गिरे भुइ पै
दसकंठ उठाय उठैं न उठाये ।
कणके सम भूमि धरैं सिर पै
उनकों सोइ चाहत मूढ़ उठाये ।
हनुमन्त उठावत देखि उन्हें
कसिके दसकंठ पै लात चलाये ।
दसकन्धर मुष्टि प्रहार कियो
भये मूर्छित, पुनि उठिके कपि धाये ।।

कपि मुष्टक एक प्रहार करी
इक क्षण मुर्छा दसकंठ कों आई ।
जब चेत भयो कही धन्य कपी
अति वीर हो तुम अतुलित बल पाई ।
हनुमान कही धिक्कार मुझे
मम होत तुझे शठ मीच न आई ।
हनुमन्त अनन्त उठाय लये
विस्मित दसकंठ भयो लखिताई ।।

हनुमान धरैं निज काँध उन्हें
द्रुति दौरत राम के पास में आये।
लखि राम कही प्रिय बन्धु जगो
सुनतहि लक्ष्मण उठि के सिर नाये।
तेहि शक्ति तुरन्त गई नभ में
लक्ष्मण पुनि वाण ले शत्रु पै धाये।
रथ तोड़िके सारथि मारि दियो
रावण रथ दूसर से गृह आये॥

जगि रात्रि में रावण यज्ञ करे
यह जानि विभीषण थे घबराये।
एहि को यदि पूरण यज्ञ भयो
हुइ जाय अजय कोइ जीत न पाये।
श्रीराम पै दौरि तुरन्त गये
अरु पूर्ण वृतान्त उन्हें बतलाये।
पठए कपि भालु विहान प्रभू
कही अंगद हनुमन्त हू सँग जाये॥

गढ़ लंक पै कूदके जाय चढ़े
कपि रावण गेह घुसे बलवीरा।
देखो शठ यज्ञ करे तहँ पै
हनी लात तबहि अंगद रणधीरा।
नहिं होय विमुख तपलीन रह्यो
कपि खैंचिके बाल दई तेहि पीरा।
विध्वंस भयो लखिकें मख कों
दसशीष उठो भरि क्रोध, अधीरा।।

कपि लौटि प्रणाम कियो प्रभु कों
मख ध्वस्त भयो सब हाल बताये।
उत जीवन को तजि मोह सबै
निशिचर कपि भालुन मारन धाये।
उनकी चिघ्घारत सैन चली
असगुन बहु राह में होत दिखाये।
उन राम लखन कहँ घेरि लियो
लखि देव दुखी भये स्तुति गाये।।

तब देख दुखी सुर वृन्दन कों
धनुवाण उठाय चले रघुराई ।
प्रभु चाप पै फेरन हाथ लगे
कुंजर डोले दिकपाल डराई ।
एहि बीच निशाचर सैंन बड़ी
लै अस्त्रन शस्त्रन कों चढ़ि आई ।
उन्हें देखिकें बानर भालु सबै
गिरि पाथर बृष्टि करैं नभ जाई ।।

❋

वर्षा करी दैत्य ने वाणन की
तब राम अपरमित वाण चलाये।
सब घायल निश्चर वृन्द भये
बही शोणित की सरि, बाढ़ सी आये।
गिध, काक उठाय के माँस उड़ैं
छीनैं, झपटैं मुड़पै गिर जाये ।
शव ऊपर बैठकें गीध बहैं
अरु आँतिन खैंचि कें काग सिहायें ।।

भुइपै कटिके जब मुंड गिरैं
चीत्कार करैं अति शोर मचायें।
उठिकैं बहु रुण्ड भगैं रण मैं
पुनि चक्कर खाय धरा गिरजायें।
रण में बहु दैत्य मरे लखि के
उर में दसकंठ विचार बनाये।
माया बिनु पार न पाय सकैं
यह सोचि प्रबल तेहि बेग बढ़ाये॥

रथहीन लखे रघुनाथ जबै
रथ दिव्य तबै शचिनाथ पठाये।
धनु वाण सम्हारि कें राम चढ़े
लखिकें कपि भालु बड़े हरसाये।
तबही माया करि रावण ने
कोटिन लक्ष्मण अरु राम बनाये।
जब राम लखी माया खल की
तब रावण पै इक वाण चलाये॥

माया क्षण माँहि हरी प्रभु ने
ऋषि विप्रन कों मन में सिरनाये।
धनु वाण उठाय लियो कर में
फिर रावण के सन्मुख रथ लाये।
दसशीष लख्यो प्रभु कों जबहीं
कही क्रोध में रक्तिम नेत्र बनाये।
तुमने खर, दूषण मारि दये
अरु कुम्भकरण सिर काटि गिराये।।

भगिनी मम नाक विहीन करी
घननाद सुतहि तुम घेरि के मारे।
नहिं जानत हो मोहि रावण हूँ
रण सम्मुख आये हो आज हमारे।
बदले सब आज चुकाइहौं मैं
दोउ राम लखन अब जाँयगे मारे।
इतनो कहि रावण क्रोध भरो
कई वाण उठाय के राम पै मारे ।।

शर पावक राम सँधानि तबै
शठ के सब वाण तुरन्त जराये।
दसकंठ हनी तब शक्ति बड़ी
तेहिको प्रभु वाण से मारि फिराये।
भरिके अति क्रोध दशानन ने
प्रभु पै बहु चक्र त्रिशूल गिराये।
शर सौ इक संग सँधान किये
प्रभु के सब सारथि भूमि गिराये॥

❋

तुम राम न मार सको हमको
हम मारि दिये तुम्हरे सुख चैना।
डर जाओगे देख के रूप मिरो
तुम कोमल सुन्दर राजिव नैना।
निर्वासित हो तुम राज बिना
अरु मैं लंकापति रावण हैना।
तुम बानर भालु लिये सँग में
मम संग निशाचर कोटिक सैना॥

तब राम ने सारँग हाथ लियो
भरि क्रोध चढ़ाय के ताहि टँकारे।
सुनतहि मन्दोदरि काँपि गई
दिग्गज चिग्घैं भरिकें हुंकारे।
प्रभु खैंचि के चाप कों कानन लौं
भंजे रथ सारथि वाण जो मारे।
रथ दूसर बैठिके रावण ने
शर, शस्त्र अनेकन राम पै डारे॥

श्रीराम तबहि दस वाण लये
अरु खैंचि धनुष हर शीष पै मारे।
बही रक्त की धार दसहु मुख से
तब क्रोध से रावणहू शर मारे।
प्रभु ने शर तीस हने तबही
दस सिर, भुज बीसहु काटिके डारे।
भुज शीष कटैं क्षण माँहि उगैं
हर बार जबहि प्रभु काटिके डारें॥

सिर बाहुन से जब भूमि पटी
प्रभु वाणन से नभ दीन्ह उड़ाई ।
नभ पाटि दियो भुज मुंडन से
सविताहु छिपे नहिं देत दिखाई।
सब सिर नभ में अटहास करें
सुनतहि गये बानर रीछ डराई।
निज मुण्ड के झुण्डन कों लखि के
हरषो रावण, रहो वाण चलाई ।।

जब वाणन से रथ राम छिपो
नहिं देखि परै अमरहु घबराये।
जब लक्ष्मण कों नहिं राम दिखे
घबराय गये उनको उर ध्याये।
तब राम कृपा करि वाहि घरी
सिर वाण से भेदि के माल बनाये।
लइ मालिका कालिकाने कर में
रण घूम रही निज ग्रीव सजाये ।।

तब रावण शक्ति प्रचण्ड लई
अरु ताकि विभीषण के उर मारी।
दियो राम ढकेलि विभीषण कों
अपने ऊपर लई शक्ति वो भारी।
कछु देर कों मुर्छित राम भये
लखि ताहि विलाप कियो सुर भारी।
बेगहि यह देखि विभीषण ने
दसकंठ के एक गदा कसि मारी ।।

मुरछा क्षण एक भई तेहि कों
पुनि रावण बन्धु कों मारन धायो।
नहिं बोल सकै भय रावण के
सोइ आज विभीषण होत सवायो।
तेहि क्षण रावण अति क्रोध भरो
निज बन्धु कों लातिन मारि गिरायो।
लखि निर्बल पक्ष विभीषण को
हनुमत दसकंठ कों मारन धायो ।।

रथ सारथि बाजन कों हनि के
कपि लात तबै कसि के उर मारी।
फिर पूँछ पसारि उड़ो नभ में
गहि पूँछ उड़ो सँग दसमुख धारी।
नभ से तुरतहि कपि लौट परो
पुनि लात प्रहार कियो तेहि भारी।
हुइ क्रुद्ध गगन दोउ युद्ध करें
इक दूसर से नहिं मानत हारी ।।

हनुमत पुनि लात हनी तेहि कें
गिर भूमि कपिहि शठ मारन धायो।
फिर माया करि दसकन्धर ने
अपनो तेहि कोटन रूप बनायो।
हर ठौर लड़ै कपि भालुन सें
सब भागि परे बानर भय खायो।
लखि के सब देव कँपे भय से
कहैं का हुइहै प्रभु मोहि बचायो।

माया इक वाण हरी प्रभु ने
क्षण मेंहि सिगरे रावण निपटाये।
जब एकहि रावण देखि परो
कपि भालु औ देव हृदय हरसाये।
जब दैत्य लख्यो, सुर मोद करें
झपटो उन पै तब वे घबराये।
अंगद लखि व्याकुल देवन कों
गहि पाद झपटि दसकंठ गिराये॥

अंगद पुनि लात हनी कसिके
फिर आय गये जहँ थे रघुराई।
श्रीराम हने कई वाण तबै
दसशीष भुजा सब काटि गिराई।
कटतहि सिर बाहु तुरन्त जमे
कपि भालुन कों लखिकें रिस आई।
गिरि, बृक्ष उखारि प्रहार कियो
अंगद, नल, नील बिना भय खाई॥

हुइ क्रुद्ध दशानन ने तबही
कपि वीरन पै कसि लात चलाई ।
हुइ व्याकुल भूमि गिरे सबही
नहिं चेत रहो मुरछा तिन आई।
रिछराज लख्यो, तब क्रोध भरे
दसकन्धर के उर लात जमाई ।
हुइ व्याकुल भूमि गिरो तबही
भयो चेत गयो गृह रात थी आई ।।

सिय राम के सोच में डूब रही
तब वाहि समय त्रिजटा वहँ आई।
रणभूमि को हाल सुनाय सियै
कटि शीष जुरे सब बात बताई ।
कटतहि पुनि शीष उगे सुनिके
सिय हू अपने मन में घबराई।
त्रिजटा कही सीय बसै उर में
तेहि से प्रभु वाण हनत उर नाहीं ।।

मरिहै का मातु नहीं शठ ये
कहिके सिय रोय परी बिलखाई।
त्रिजटा कही राम बधैं तबही
जब शीश कटे व्याकुल हुइ जाई।
भूलै तुमको शठ ज्यौंहि सिया
उर वाण हनैं तबही रघुराई।
एहि बिधि समझाय विदेह सुता
त्रिजटा अपने गृह लौट के आई॥

भई प्रात दशानन आय गयो
लखिकें कपि भालु सबहि घबराये।
धरि धीरज जाय भिरे खल से
गिरि, पाथर, बृक्ष उखारि गिराये।
माया दसकंठ रची तबही
छल से अगणित हनुमान बनाये।
सब हाथन में गिरिखण्ड लिये
श्रीराम लखन कहँ मारन धाये॥

माया शर एक हरी प्रभु ने
लखि के कपि भालु हृदय हरषाये।
करि स्तुति राम कृपानिधि की
नभ देव प्रसून प्रमुदि बरसाये ।
काटे पुनि बाहु औ शीष प्रभू
पर देखत ही क्षण में उगि आये।
जब राम विभीषण ओर लखे
कर जोरि के तब उनि यों समझाये।।

※

अमृत दसशीष की नाभि भरो
एहि कारण कोइ नहीं बधि पाये।
सुनतहि प्रभु वाण चढ़ाय लियो
द्रुति नाभि में मारि पियूस सुखाये।
शर बीस हने इक बार प्रभू
तेहि बीस भुजन कहँ काटि गिराये।
हुइ व्याकुल भूमि गिरो तबहीं
श्रीराम के पाद में ध्यान लगाये।।

शर खाय के रावण भूमि गिरो
तेहि माँस को खान को गीध थेआये।
कही रावण खाउ न रोकिहौं मैं
मम एक कही माने सोइ भाये।
रण से न विमुख भयो आज लौं मैं
मम माँस न लंक की ओर गिरायें।
उड़ियो लै लोथ अवधपुर कों
नहिं जाय सको मम अंश ही जाये।।

सनिके रण शोणित से भुइपै
जब दैत्य दशानन जाय गिरो।
लखि राम कही तब लक्ष्मण से
अति ज्ञान को पुंज मही बिखरो।
सीखहु तुम जाय के रावण से
नृप नीति औ ज्ञान अबहि सिगरो।
गुणवान प्रबल रिपु काहि न हो
लेहु ज्ञान प्रमुदि गुरु वाहि करो।।

लक्ष्मण सिर ओर खड़े हुइके
कही रावण से नृप नीति सिखायो।
सुनिकेहु नहिं ध्यान दियो तेहिने
तब बन्धु ने राम कों आय बतायो।
सिरहान की ओर थे ठाढ़ भये
कही राम नहीं तेहिसे कछु पायो।
गुरु पाद से प्रेम कियो जेहिने
तेहिने शुचि ज्ञान को पुञ्ज है पायो।।

❋

पुनि पाँव की ओर कों जाय कही
तब रावण ने नृप नीति बताई।
शुभ काम में नाहिं बिलम्ब करै
अघ कर्मन कों टारै बरियाई।
नहिं स्वर्ग सोपान बनाय सको
दई सोचत ही सब उम्र बिताई।
सौमित्र जो शत्रु कों न्यून लखै
मम भाँति ही जात है वंश नसाई।।

फिर राम की ओर निहारि कही
उर प्रेम प्रबल मुख शब्द कठोरे ।
हे राम न जीत सके हमको
यद्यपि सिर काट दिये तुम मोरे ।
मम जीवित लंक न जाय सके
तव धाम मैं जात हूँ देखत तोरे ।
सिय मातु पवित्र सुधा सी सदा
कहूँ अन्त समय लिख कागज कोरे ।।

हम जानि के युद्ध किये तुमसे
दिये कष्ट अनेक तुम्हें रघुराई ।
नहिं मुक्ति को और उपाय लखो
हम शाप से यह शठ देह थी पाई ।
प्रभु दीन दयालु क्षमा करियो
हरियो हमरी सबरी कुटिलाई ।
कही राम न दोष तुम्हार कछू
मम धाम बसो सदगति तुम पाई ।।

कही रावण नाथ कृपा करिके
अध देह से मुक्ति हमें दिलवायें।
भटकत मम प्राण परे एहि में
अब नाथ कृपा करि वाण चलायें।
दस वाण तुरन्त हने प्रभु ने
सिर काटि मंदोदरि पास पठाये।
निकरो तन तेज प्रकाश भयो
श्रीराम के उर तेहि जाय समाये।।

❋

तेहि रुण्ड गिरो कपि भालु दबे
श्रीराम के शर सब लौट के आये।
लखि कें बध रावण को हरषे
सब देव सुमन नभ से बरसाये।
प्रभु की सब जय जयकार करें
करि स्तुति वन्दन मोद मनाये।
जय बोलत राम लखन कपि की
नाचत ऋषि, मुनि सुर ढोल बजायें।।

सब राम को नाम जपैं स्वर में
कहें आपने नाथ विपत्ति है टारी ।
तुम्हरे पद में हम शीष धरैं
हे करुणाकर, प्रभु राम, खरारी ।
तुम दुष्ट दसानन मार दियो
विनती सुन लो प्रभु आज हमारी ।
अब नाथ कृपा करियो हम पैं
कहि देव करैं प्रभु जय जयकारी ।।

श्रीराम नमामि नमामि प्रभो
तुम हो अखिलेश चराचर स्वामी ।
जन के सब कष्ट हरो नित ही
उरमाँहि बसो प्रभु अन्तर्यामी ।
अघपंथ कुमार्ग को छोड़ सभी
बन जाँय सुबुद्ध सुमारग गामी ।
हे नाथ सदा तोसे नेह करूँ
जैसे नारि को प्रेम करे कोइ कामी ।।

मम ध्यान रहे तव पाद सदा
अरु आय न सुमिरन में कोइ खामी।
प्रभु प्रीति की बेल बढ़े नित ही
मम अन्तस में अति क्षीण सी जामी।
अनुपायिनि भक्ति मिलै तुम्हरी
हम दास तिरे तुम हो मम स्वामी।
हम आय परे तुम्हरे पद में
अपनाओ हमें प्रभु अन्तर्यामी ।।

त्रिसरा खर दूषण रावण से
तुम तार दिये क्षण में खल नामी।
भव सिन्धु से पापीहु पार किये
पतवार हमारिहु लो प्रभु थामी।
सिय राम लखन उर माँहि बसैं
पथ पाँय अभक्त कुमारग गामी।
पद पंकज माँहि प्रणाम करूँ
अपनाओ महेश को सीय के स्वामी।।

मन्दोदरि देखि के शीष भुजा
हुइ व्याकुल रोय परी दुख भारी।
सब नारि विलाप करैं अति ही
कहि कें तेहि तेज प्रताप थो भारी।
नर नाहिं वे नारायण प्रभु हैं
नहिं नाथ सुनी तुम बात हमारी।
मुनि दुर्लभ गति उन दीन्ह तुम्हें
निज धाम में ठाँव दियो असुरारी।।

सुनि के अति रोदन रानिन को
वहाँ जाय विभीषण ने समझायो।
जब भूमि परो निज बन्धु लख्यो
हुइ व्याकुल आपनु धीर छुड़ायो।
तब राम कही समझाय उन्हें
अन्त्येष्ठि करो मत देर लगायो।
करि बन्धु को अंतिम काज तबै
पुनि आय विभीषण ने सिर नायो।।

हनुमान से राम बुलाय कही
संग अंगद, लक्ष्मण आदि लिवाये ।
करो जाय विभीषण को पुर में
शुभ राजतिलक हम गाँव न जायें ।
करि राजतिलक बिधि मंत्रन से
उनको सिंहासन पै बैठाये ।
सबके सँग आय विभीषण ने
पुनि राम कमल पद में सिर नाये ।।

हनुमान से राम कही तबही
सब हाल सिया कहँ जाय सुनायो ।
कैसी सिय हैं कपि जाय लखो
उन केरि कुशल सब मोहि बतायो ।
हनुमान गये पुर में जबही
दल असुरन को तहँ दौरिके आयो ।
हनुमान कौं पूजिकें पाँव छुए
तुरतहि सिय पै उनकों पहुँचायो ।।

कपि सीय कों देखि प्रणाम कियो
पहिचानि के दूत उनहु सुख पायो।
बोली सिय कैस हैं तात वहाँ
कस बन्धु लखन, सुत मोहि बतायो।
कपि कही प्रभु ने रण जीत लियो
शठ रावण कों उन मारि गिरायो।
सकुशल तहँ बन्धु सहित प्रभु हैं
पुर राज अखण्ड विभीषण पायो।।

सुनकें कपि बैन प्रसन्न भई
कही पूत मैं आज परम सुख पायो।
का देहुँ तुम्हें नहिं सोचि परै
हनुमान कही सब तो हम पायो।
सिय ने कही शीघ्र प्रबन्ध करो
द्रुति जाय लखौं प्रभु रूप सुहायो।
पग छू कपि आय कृपा निधि पै
सिय मातु की क्षेम को हाल सुनायो।।

कही राम बुलाय विभीषण कों
हनुमान के संग सिया यहँ लाओ ।
अब बीत गये दिन कष्ट भरे
अति आदर से उनकौं लै आओ ।
अतिशीघ्र विभीषण जाय तहाँ
रानी अरु दासिन कों समझाओ ।
सिर से स्नान कराय सियै
पट आभूषण सादर पहिनाओ ।।

उनने सिय मातु सजाय दई
अति सुन्दर पालकी एक मँगाई ।
सादर सिय कों बैठारि लियो
सँग रक्षक वृन्द चले हुलसाई ।
पलकी प्रभू आयशु छोड़ सिया
रघुनाथ निकट चलि पाँयन आई ।
हुलसे कपि भालु लखैं उनको
तब राम कही मानहु इन्हें माई ।।

फिर राम बहुत दुर्बाद कहे
सिय नाहिं रही अब योग्य हमारे ।
इतने दिन निश्चर संग रही
तुम जाउ जहाँ मन हौय तुम्हारे ।
निज वंश की आन कों युद्ध कियो
तव हेतु नहीं हम निश्चर मारे ।
सुनतहि सिय कों गश आय गयो
बहे नेत्रन से बहु अश्रु पनारे ॥

❋

सीता कही राम सिवा मन में
सपनेहु कोइ दूसर नाम न आयो ।
बिलखति रही देखन कौं तुमकों
सुनि आज तुम्हें अति ही दुख पायो ।
श्रीराम बिछोह से मृत्यु भली
जर जाउँ चिता महँ काष्ठ मँगायो ।
सौमित्र कों प्रभु आदेश दियो
तुम काष्ठ मँगाय चिता जरवायो ॥

लक्ष्मण कछु भेद न जानत थे
यह कौतुक देखके रोवन लागे।
प्रभु आयशु काष्ठ मँगाय तबै
धुँधकाय चिता दई भक्त अभागे।
पैठी सिय राम सुमिर तेहि में
लखि रोय परे कपि खेद में पागे।
सिय बिम्ब कलंक जरे सिगरे
लै अग्नि सियहि आये तब आगे।।

कही अग्नि है राम महान सिया
सपनेहु इनके मन पाप न आयो।
प्रथमहि पावक जिन वास कियो
उनही सिय कों पुनि राम ने पायो।
श्रीराम प्रसन्न भये लखिके
सिय कों उनि सादर पास बिठायो।
लक्ष्मण, कपि, भालु प्रसन्न भये
सिय कों सबनेहि पवित्र बतायो।।

सिय राम स्वरूप लखो जबहीं
बरसाय के फूल अमर हरषाये।
करें स्तुति ब्रम्ह, 'महेश', मुनी
सबने निर्मल गुण राम के गाये।
हर्षित सुर, मुनि, नर, नाग बड़े
तब वाहि समय दशरथ तहँ आये।
सिय राम लखन, पितु पाद परे
हर्षित हुइकै उन्हें बैन सुनाये॥

तव आशिष से हम मारि दियो
रावण, सुनिकें दशरथ सुख पाये।
श्रीराम ने ज्ञान दियो उनकों
तुम भक्त मेरे उर माँहि समाये।
सब भक्त सगुण कोहि पूजत हैं
यहि हेतु नहीं नृप मुक्ति है पाये।
जोइ राम में राखत नेह सदा
प्रभु पाद बसैं निज ठाँव बनाये॥

प्रभु जानि प्रणाम कियो नृप ने
गये राम के धाम महासुख पाये।
रहैं राम के भक्त सदा सुख में
प्रभु में सब छोड़ जे ध्यान लगायें।
जिन धोखेहु राम को नाम लियो
भव सिन्धु तरे प्रभु को पद पाये।
नहिं व्यापति है माया उनको
मुनि दुर्लभ गति क्षण में मिल जाये।।

※

कर जोरि के राम से इन्द्र कही
मम योग्य प्रभू कछु काम बतायें।
रघुनाथ कही मम काज मरे
उन भालु कपिन कहँ आप जियायें।
वर्षा भई अमृत की उन पै
कपि भालु जिये नहिं दैत्य जियाये।
जीवित किये राम ने भालु कपी
पर इन्द्र को सारोहि श्रेय दिलाये।।

चढ़ि चढ़ि निज वाहन देव गये
शुभ अवसर जानिकें शंकर आये।
कर जोरि हृदय अति नेह भरे
करि अर्चन बन्दन स्तुति गाये।
करिहौं पुनि दर्शन आय प्रभू
तव राज तिलक पर अवसर पाये।
प्रभु आयशु पायकें शम्भु गये
अपने उर में श्रीराम बिठाये ॥

फिर आय विभीषण ने प्रभु कों
कर जोरि के ये मृदु बैन सुनाये।
मुक्ता, मणि, स्वर्ण से कोष भरे
प्रभु गेह चलें उनकों अपनायें।
बाटैं उनकों कपि भालुन में
कही राम, सखा ! हम गाँव न जाँयें।
लदवाय विमानन में तब ही
पट आभूषण श्रीराम पै लाये ॥

नभ जाय कें राम की आयशु से
कपि भालुन पै उनकों बरसाये ।
कही लें सब ही इन वस्तुन कों
जाकों जो भी अपने मन भाये ।
कपि भालुन दौरि उठाय लये
मणि, मुक्तन कों खातहि उगलाये।
पट तो पहिने कपि भालुन नें
निरखत सियराम लखन सुख पाये ।।

तब राम कही कपि भालुन से
बध रावण में तुम कीन्ह सहाई ।
अपने अपने गृह जाउ सखा
कपि भालु रहे संकोच दिखाई ।
उन कही हम तो लघु से मृग हैं
दसकंठ मरो तुम्हरी प्रभुताई ।
मन होत, रहें तुम्हरे सँग ही
गृह जान की बात हमें नहिं भाई ।।

कइ बार कही तब गेह गये
फिर आय विभीषण शीष नवाये।
कही नाथ रुको कछु रोज यहाँ
चलियो फिर मोहुँ कों संग लिवाये।
कही राम भरत मम राह तकैं
गई बीत अवध तोइ प्राण गँवाये।
तुम पुष्पक यान मँगाउ सखा
तेहि बैठि चलें अति वेगि चलाये।।

बैठे प्रभु ऊँच सिंहासन पै
सँग मातु सिया, लक्ष्मण कपिराई।
हनुमत, अंगद, नल, नील चढ़े
तेहि यान विभीषण हू हरषाई।
उत्तर दिशि ओर विमान चलो
सब बोल रहे जय सिय रघुराई।
नभ होत कुलाहल यान चलै
मग राम सियै रहे ठाँव दिखाई।।

कही राम लखौ सिय ठाँव जहाँ
रणभूमि लखन घननाद कों मारे ।
अँगद हनुमान बध्यौ जिनकों
रजनीचर वीर सोई भुइ डारे ।
रावण अरु कुम्भकरण यहिं पै
निज प्राण तजे जिनने मुनि मारे।
जब सेतु और शंकर मूर्ति लखी
कर जोरि प्रणाम कियो उन्हें सारे ।।

तबही हनुमान कही प्रभु से
मन होत कि मातु के दर्शन पायें ।
कही राम तुरन्त चलो उन पै
हमहू तिन्हें देख कें नेत्र जुड़ायें ।
कही पुष्पक से उत ओर उड़ो
जहाँ अंजनि मातु समाधि लगायें ।
क्षण में तेहि आश्रम आय गये
अति नेह छुए उनि मातु के पाँयें ।।

हनुमन्त कों देखि प्रसन्न भईं
अति नेह सौं शीष पै हाथ फिरायो।
कपि ने परिचय करवाय कही
सँग राम-सिया कहँ मैं लै आयो।
श्रीराम पराक्रमि, वीर बड़े
इन रावण कों रण मारि गिरायो।
सुनिके अति खिन्न भई जननी
कही पूत मिरो तुम दूध लजायो।।

तव होतहु राम ने युद्ध कियो
हत भाग्य मिरे नाहक तोहि जायो।
अंगद मुसकाय कही तबही
गुण दूध में कौन विशेष है पायो।
सुनि अन्जनि मातु ने ताहि घरी
निज दूध पहाड़ पै जाय गिरायो।
तुरतहि गिरि टूट के छार भयो
तब राम सखा लखिके चकरायो।।

तब अंगद जोरि के हाथ कही
बड़ो भूल भई मैं जान न पायो।
कर देहु क्षमा तव पाद परो
सुनि मातु ने शीष पै हाथ फिरायो।
तब राम ने जोरि के हाथ कही
अति वीर पवन सुत हैं समझायो।
इन कारण ही हम मार सके
शठ रावण कों, उनने बतलायो॥

बधतो तुम्हरो सुत ही तेहि कों
पर रावण ने यह शाप थो पायो।
बनिहैं जब घोर निशाचर ये
बधिहैं हरि ही उनकों समझायो।
मैं तु मात्र निमित्त रह्यो एहि में
हनुमन्त ही राक्षस वंश नसायो।
हरषीं सुनि मातु बड़ीं मन में
मुदि राम औ पूत पै हाथ फिरायो॥

फिर माँगि विदा रघुनाथ चले
मग कुंभज के पग शीष नवाये।
फिर आय गये चित्रकूट प्रभू
ऋषि मंडल के पग में सिर नाये।
यमुना शुचि श्याम दिखी मग में
फिर पावन सुरसरि के तट आये।
नभ से नगरी निज राम लखी
करि ताहि प्रणाम त्रिवेणि पै आये।।

अति नेह सौं पूजि के गंग सिया
पति के पद में पुनि ध्यान लगायो।
गुहराज सुनी प्रभु आय रहे
लै सुन्दर नाव तुरन्तहि आयो।
परि भूमि प्रणाम कियो उनको
सिय,राम,लखन छबि देखि सिहायो।
तब राम उठाय लगाय हिया
कर थामि गुहै निज पास बिठायो।।

शुचि संगम में स्नान कियो
तेहि पूजि के विप्रनि दान बटाये।
कही राम पवन सुत से तबहीं
कपि जाय अवधपुर हाल सुनायें।
पग छू हनुमन्त गये तबहीं
भरद्वाज के आश्रम पै प्रभु आये।
मुनि ने बहु भाँति से पूजि उन्हें
प्रभु पंकज पाद में शीष नवाये॥

रहो एक दिन शेष जब
सोच भरत बिलखायँ।
गई अवधि बिनु राम जो
मोहि जियत नहिं पाँय।
राम बिनु जीवन कैसा॥

इति लंकाकाण्ड

उत्तर काण्ड

राम राम निशिदिन रटैं
मन अति होत अधीर।
राम बिना बिलखैं भरत
ज्यौं मछली बिनु नीर।
नेह को सागर उमड़ो ॥

रहो एक दिना प्रभु लौटन को
अति व्याकुल हुइ सब लोग विचारे।
जानें कब आइहैं राम सिया
लघु बन्धु लखन धनु वाण कों धारे।
मन में सब मातु थीं सोच रही
कहैं कोइ गये सुत आय तुम्हारे।
लगे होन सगुन सुन्दर तबही
मन भ्यासत राम हों आय पधारे ॥

दक्षिण भुज और नयन फरकें
रहे सोच भरत प्रभु काहि न आये।
बस एक दिना अब शेष रहो
मोहि जानि के दीन प्रभू बिसराये।
लक्ष्मण तुम तो बड़भागि बड़े
नित राम चरण चापत मन लाये।
मोहि जानि कुटिल कपटी प्रभु ने
मग बीचहि से कैसे लौटाये ।।

यद्यपि अवगुण कर खानि हूँ मैं
मोहि पूर्ण भरोस प्रभू अपनइ हैं।
लखि होत सगुन शुभ, सुन्दर से
मोहि भ्यासत राम अवश्य ही अइहैं।
विश्वास मिरे मन माँहि बड़ो
प्रभु दीन दयालु अवसि अपनइहैं।
गई बीत अवधि, अरु आये नहीं
कहूँ सत्य मुझे जीवित नहिं पइहैं ।।

डूबत उतरात विरह नद में
रहे सोच भरत मन में अकुलाये।
श्रीराम वियोग दुखी मन थे
तब विप्र के रूप पवन सुत आये।
उन भरत लखे कृषकाय बड़े
श्रीराम के पाद में ध्यान लगाये।
हनुमंत ने आय कही उनसे
जेहि सुमिरत हो वे ही प्रभु आये॥

❋

सिय राम लखन रण जीति प्रभू
तब प्रेम की डोर बँधे भये आये।
कही भरत सनेह बताउ हमें
तुम कौन हो शुभ सन्देश ये लाये।
मैं तु डूब रह्यो थो विरह नद में
तुम आय सुतट कपि मोहि लगाये।
कही राम को भक्त पवनसुत हूँ
सुनतहि उन्हें कंठ भरत चिपकाये॥

मिल कें नहिं प्रेम समाय हिया
बही नेत्रन से उनके जल धारा।
तोहि देखि कपी मोहि आज मिलो
प्रभु नेह नदी कर एक किनारा।
कपिवर सन्देश मधुर सुनिके
भयो चित्त प्रसन्न गयो श्रम सारा।
कपि ! का कबहूँ कछु बात चले
श्रीराम जी लेत थे नाम हमारा ।।

हनुमान कही प्रभु आदर से
तोहि याद करें भरि कें दृग धारा।
तुम राम कों प्रिय, प्रिय राम तुम्हें
नहिं जोड़ कोई जग माँहि तुम्हारा।
जेहि भाँति बध्यो दसकंठ प्रभू
कपि हाल बताय दियो तेहि सारा।
फिर माँगि विदा गये राम जहाँ
यश गाय भरत कर बारहिं बारा ।।

कौशलपुर आय भरत तबही
गुरुदेव कों सादर हाल सुनाये।
अन्तःपुर जाय के मातुन कों
प्रभु आवन को सन्देश बताये।
पुर लोगन कों बुलवाय कही
प्रभु आय रहे सब मोद मनायें।
दूर्वा दधि रोचन फूलन लै
अति नेंह सों, आरति थाल सजायें।।

पुर को जब हाल कह्यो कपि ने
चले राम सबै पुष्पक बैठाई।
जब ऊपर आय गये पुर के
शोभा तेहि राम कपिन दिखलाई।
अतिशय प्रिय मोहि अवधपुर है
जहाँ जन्म लियो बोले रघुराई।
मो कहँ अति प्रिय पुर लोग लगैं
सरयू सरि पावन है सुखदाई।।

नभ आवत यान लखो प्रभु को
कहि राम सिया जय सब हरषाये।
पुर पास विमान उतारि दियो
प्रभु ताहि कुबेर के पास पठाये।
श्रीराम जी आय गये लखि के
गुरु औ पुर लोग भरत सँग आये।
वाम्देव, वशिष्ठ को राम प्रभू
सिय,लक्ष्मण संग प्रथम सिरनाये ।।

❋

मुनि नाथ कुशल पूछी जबही
कही राम कृपा गुरुदेव तुम्हारी।
द्विज वृन्द कों शीष नवाय दियो
सिय, लक्ष्मण औ रघुनाथ खरारी।
हुइ भावुक रौय के पाद परे
कृशकाय भरत हा राम पुकारी।
श्रीराम सनेह उठाय उन्हें
निज कंठ लगाय हरी श्रम सारी ।।

शत्रुघ्न परे प्रभु पाँयन में
पुनि भरत लखन कहँ कंठ लगाये।
फिर सीय कों आय प्रणाम कियो
अति आदर से पद माथ नवाये।
लखि प्रेम विह्वल पुर लोगन कों
प्रभु एकहि साथ हृदय चिपकाये।
मिलि राम से भाव विभोर भये
प्रभु रूप विपुल कोइ जान न पाये।।

❋

सब मातु थीं धाय परीं मिलिबे
अपने सुत कों ज्यौं बच्छ को गाई।
दोउ पूत सुमित्रा के पाँव छुए
भई प्रेम विह्वल माता हरषाई।
कैकेयी अति ही संकोच परी
छुइ पाँव प्रबोध कियो रघुराई।
निज मातु के राम ने पाँव छुए
उमड़ी ममता लियो अंक लगाई।।

बैंदेहि मिली सब सासन से
करि नेह लियो उनि कंठ लगाई।
ताहि देत अशीष न सास थकें
सब राम कों देखि बड़ी हरषाई।
सोचैं कस कोमल हाथन से
इन मारि के रावण सीय छुड़ाई।
हुइ प्रेम विभोर लखैं सुत को
पुलके उर नेह न अंक समाई।।

अँगद, नल, नील, विभीषण ने
नर देह धरैं प्रभु को सिर नायो।
हनुमंत सुग्रीवहु पाँव परे
दियो राम अशीष सबनि सुख पायो।
कपि घूमत मानव रूप धरें
पुर स्वागत देखि उछाह दिखायो।
सबने गुरु पाद प्रणाम कियो
परिचय सबको श्रीराम करायो।।

इन प्राणन को नहिं मोह कियो
मम हेतु लड़े यह वीर थे सारे।
सब भरतहु से प्रिय मोहि लगें
इनके बल पै हम निशिचर मारे।
गुरुदेव अशीष दियो सबको
पुनि चरणन धूलि सबहि सिर धारे।
सब राम की मातु के पास गये
तेहि चरणन में सादर सिर धारे।।

पुरवासिन से पुनि राम मिले
दियो नेह सबै फिर गेह कों आये।
लखि कें मन में लघु मातु दुखी
सबसे पहिले कैकयी गृह आये।
समझाय के धीरज दै प्रभु ने
नहिं दोष कछू उनको समझाये।
गये लक्ष्मण मातु के गेह प्रभू
पग पूजि उन्हें निज मातु पै आये।।

अवसर शुभ राजतिलक लखि के
ऋषि, विप्र सभा गुरुदेव बुलाये ।
सबको यदि आयशु मोहि मिले
कही राम को राजतिलक करवायें ।
गुरुदेव की बात रुची सबको
कही शीघ्र करें नहिं देर लगायें ।
दिये धावक भेज चहूँ दिशि को
शुचि सर, सरितन कर नीर मँगाये ।।

श्रीराम को राजतिलक करके
गुरुदेव सिंहासन पै बैठारे ।
बैठी दिशि वाम सिया प्रभु के
भये ठाढ़ लखन धनु बाण को धारे ।
रिपुसूदन चौंर डुलाय रहे
हनुमन्त भरत दोउ पाँव पखारें ।
पग शीष नवाय 'महेश' कहें
छबि ऐसी बसै उर नित्य हमारे ।।

बैठे सियराम सिंहासन पै
मनोशक्ति औ धर्म दोऊ मिलि आये।
लगै तेज को पुंज विराज रह्यो
भयो धन्य सिंहासन राम को पाये।
ऋषि, विप्र पढ़ैं श्रुति मंत्र वहाँ
सुर, नर, किन्नर दर्शन हित आये।
मिलि आरति राम की लोग करैं
सजि नारि मधुर शुभ मंगल गायें।।

चतुरानन, इन्द्र, 'महेश' मुनी
प्रभु चरणन आय के शीष नवायें।
नभ से करि पुष्पन की बरषा
स्तुति करि देवन ने सिर नाये।
हे रघुपति दीन दयालु प्रभो
तुम कष्ट बड़े मम कारण पाये।
शठ रावण कों तुम मारि दियो
द्विज देवन के सब कष्ट मिटाये।।

श्रीराम को राजतिलक सुनि कें
सब देश, विदेशन के नृप आये।
तहँ सिन्धु नरेशहु ताहि घरी
गये आय छुए उनने प्रभु पाँयें।
फिर बैठ गये शुचि आसन पै
मुनि नारद के पासहि उनि बाँयें।
श्रीराम सिया छबि कों लखि के
नर, नारि, अमर, मुनि सब हरषाये।।

फिरि राम उठे कर माल लिये
मुनि कौशिक कों उनने पहिराई।
सबसे कही ये गुरुदेव मिरे
शुचि माल पिन्हाय के पूजहु आई।
कही सिन्धु नरेश से नारद ने
नृप गूढ़ रहस्य रह्यो बतलाई।
कइ पुत्र वशिष्ठ बधे इनने
अरु तोड़ि दियो तप मैनका पाई।।

कही भूप न माल पिन्हाइहौं मैं
नहिं आदर योग्य लगैं मुनिराई।
सब लोग थे माल पिन्हाय रहे
पर भूप ने माल नहीं पहिराई।
कर माल थी डारि दई भुइ पै
करि लाल नयन देखे मुनि ताई।
अपमान कियो नृप ने हमरो
याहि मृत्यु को दण्ड मिलै रघुराई।।

बधिहौं कही राम, अवश्यहि मैं
मत सोच करो गुरुदेव हमारे।
सुनि कें प्रभु बैन कों काँपि गयो
नृप, नारद से तब बैन उचारे।
अब का हुइहै मुनि नाथ कहो
बचिहैं कस ये अब प्राण हमारे।
मुनि कही प्रभु वाण भयंकर हैं
अब अंजनि मातु ही तोहि उबारें।।

क्षण ताहि में अंजनि मातु वहाँ
प्रभु राजतिलक देखन हित आई।
द्रुति दौरि कें सिन्धु नरेश तबै
गहे मातु के पादु हृदय अकुलाई।
कही प्राण को संकट आय परो
रक्षा हमरी करियो प्रिय माई।
कही मातु ने धीर धरो मन में
तब प्राण बचाइहौं मैं नृपराई ।।

हनुमन्त कों मातु बुलाय कही
नृप केरि करो तुम ही रखवारी।
हमने एहि कों वरदान दियो
अब बिगरन पाय न बात हमारी।
हनुमन्त कही यह काह कियो
याहि मारन चाहत राम खरारी।
लड़ि राम से याहि बचाय सकें
ऐसी सामर्थ्य न मातु हमारी ।।

कही मातु बड़ो दुख मोहि भयो
जोइ पूत ने ही मम दूध लजायो।
वरदान दियो हमने नृप कों
बिगरै मम बात हमें नहिं भायो।
हनुमन्त कही मन धीर धरौ
तव पूत न कायर है समझायो।
कहि पूँछ को घेर बनाय लियो
कपि ताहि में सिन्धु नरेश छिपायो।।

श्रीराम उठाय के वाण जबै
उठि सिन्धु नरेश कों मारन धाये।
कपि-पूँछ की ओट में वाहि लख्यो
रघुनाथ तबहि अति क्रोध में आये।
भगवान औ भक्त न युद्ध करें
ऋषि कौशिक ही उनको समझाये।
कर देहु क्षमा प्रभु दोउन कों
कहि अन्जनि के सबने गुण गाये।।

देख्यो प्रभु राजतिलक सबने
हुइ प्रेम विह्वल मन में हरषाये।
सब सुधि बुधि भूल गये अपनी
सिय राम छटा नहिं देखि अघाये।
फिर भरत बुलाय कें राम सखा
अति नेह सबै स्नान कराये।
सिर लेप सुगन्धन को करिके
सब कों पट आभूषण पहिराये॥

श्रीराम सबनि उपहार दयो
पर अन्जनि पुत्र नहीं कछु पाये।
कर में उपहार न एक बचो
तब सीय कों देखि प्रभू मुसकाये।
हनुमन्त कों नाहिं दियो कछु हू
सुनि सीय कही सब सोच बिहायों।
उपहार परम प्रिय बानर कों
प्रभु मैं दइहौं कहिके समझाये॥

हनुमान कों नेह सौं मातु सिया
निज ग्रीव से हार उतारि गह्रायो।
कपि सादर मातु के पाँव छुए
लइ हार प्रमुदि निज शीष लगायो।
फिर कण कण हार को टोरि लख्यो
पर राम कहूँ वामें नहिं पायो।
लखि टोरत हार कही सबने
तुम काहि सुहार कों टोरि गिरायो।।

हनुमन्त कही सब देखि फिरो
पर हार में राम कहूँ नहिं पाये।
बिनु राम के चाहि कोई निधि हो
कहूँ सत्य शपथ नहिं मोहि सुहाये।
कही लोगनि हार में राम कहाँ
कपि बीर उन्हें सब ठाँव बताये।
पूनि एक कही तूम्हरो तन ये
एहि में कहँ राम हैं मोहि बतायें।।

हनुमन्त कही सब ठौर प्रभू
कहि वक्षस्थल निज चीर दिखायो।
सबकों सिय राम दिखे उर में
कपि के हर रोम में राम कों पायो।
लखिकें अति विस्मित लोग भये
हनुमन्त के प्रति उर आदर आयो।
सबने जयघोष करी कपि की
हनु—राम के पाद में शीष नवायो।।

उर में ब्रण देख कें सीय तबै
घृत सैंदुर दौरि के लाय लगायो।
द्रुति घाव मिटो कपि के उर को
तब लै सैंदुर सिग देह लगायो।
श्रीराम प्रसन्न भये लखिकें
कपि कों उनि नेह सौं कंठ लगायो।
हनुमन्त विभोर भये अति ही
जब नेह सौं राम को सानिध पायो।।

अतिही आनन्द अवधपुर में
चहुँ कोद मनो मधु ऋतु होय छाई।
सुख स्वर्ग को पाय रहे सबही
दिन जात न काहु कों देत दिखाई।
छह माह थे बीत गये क्षण से
गृह की सुधि काहु सखै नहिं आई।
बहुकाल भयो गृह जाउ सखा
कही राम सनेह उन्हें समुझाई॥

❋

मम हित गृह त्यागि रहे सँग में
तुम भरत समान लगौ प्रिय भाई।
सब भक्त मुझे अति ही प्रिय हैं
बढ़िके अपने सेंहु मानत ताई।
रहियो तुम सुमिरत मोहि सखा
मन से जु भजे निश्चय मोहि पाई।
नल, नील, लँकेश, कपीश चले
रिछराज सहित प्रभु को सिरनाई॥

पर अंगद सोच में ठाढ़ रहे
उनसे प्रभु छोड़ के जाउ न जाई।
तब राम सनेह प्रबोधि उन्हें
दियो ज्ञान तबहिं कपि स्तुति गाई।
फिर वेहु गये अपने गृह कों
सिय, राम, लखन पद शीष नवाई।
हनुमन्त कही गहि पाद प्रभू
रखियो मोहि साथ सदा रघुराई॥

श्रीराम कही मम पास रहो
सुनतहि मनु हो जग की निधि पाई।
सुत मारुति प्रेम विभोर भये
दियो राम ने शीष पै हाथ फिराई।
सब देव गये निज लोकन कों
सुमनावलि डारि प्रभुहिं सिर नाई।
सिंहासन राम विराजत हैं
सेवा हर भाँति करें सब भाई॥

गुहराज निषाद चले जबही
उपहार अनेक दयो रघुराई ।
उन्हें कंठ लगाय के राम कही
अति ही प्रिय मोहि लगो तुम भाई ।
रहियो रत भक्ति सदा हमरी
तुम अन्त समय मोहि पाइ हो आई ।
सुनिकें अति हर्ष भयो गुह कों
चले राम के पाद में शीष नवाई ।।

जब से श्रीराम ने राज कियो
दुख दूर भये सबही हरषाये
नहिं काहु से कोइ हु बैर कर
सब छोड़ विषय तन को सुख पाये
वर्णाश्रम के अनुसार चल
रत धर्म रहें जस वेद बताये
सब लोग सुखी, भय शोक नह
नहिं काहु कों हू त्रय ताप सताये ।

सब प्रीति करें श्रुति नीति चलें
जग में अघ काहु के पास न आये ।
रत राम के पाद रहें सब ही
अधिकार परम गति को सब पाये।
कच्ची वय मृत्यु न होय वहाँ
नहिं कैसिहु पीर कबहुँ कोइ पाये ।
सुन्दर सब स्वस्थ शरीर भये
दुख दारिद काहु कों नाहिं सताये ।।

नहिं कोइ अबुध गुणहीन रह्यो
नर नारि चतुर भये ज्ञान समाये ।
भये पंडित औ गुणवान सबै
जन होंय कृतज्ञ, कपट नहिं भाये ।
तहँ कर्म स्वभाव औ कालहु को
दुख नेकहु सपनेहु में नहिं आये ।
परहित उपकार, उदार सबै
ऋषि, विप्र चरण विश्वास जगाये ।।

इक नारिव्रती सबही नर थे
सब नारि करें पति की नित सेवा।
तरु कानन फूलि फलैं नित ही
विखरात सबहि ऋतु में फल मेवा।
खग मृग विचरैं अति नेह भरे
करते नहिं काहु को कोइ कलेवा।
सब राम के राज में प्रेम करें
रहें धर्म परायण मुनि महिदेवा ।।

संगहि जल सिंह औ धेनु पियें
भय त्यागि चरैं खग मृग सुख पायें ।
शुचि शीतल मन्द सुगंध भरी
मलयागिरि से नित आयें हवायें ।
माँगत मधु देंहि बिटप सबकों
मनवाँछित दुग्ध कों धेनु पिवायें ।
गिरि रत्नमणी उर से उगलें
सरिता नित शीतल नीर दिवायें ।।

नित रात्रि में चन्द्र रहे नभ में
नहिं चोर कोई जु करे कहुँ चोरी।
जल निधि अपनी मर्याद रहे
तट पै नित डारत रत्न बटोरी।
जल माँगत ही बरसैं बदरा
कृषि उत्तम होय फसल नहिं थोरी।
सब के घर में धन धान्य भरे
निशि नित्य सुलाय सुनाय कें लोरी।।

❋

इक दिन उपवन प्रभु संग गये
अरिहन्त, भरत, लक्ष्मण, हनुमन्ता।
लखिकें लतिका द्रुम पुष्प खिले
उर माँहि प्रसन्न भये भगवन्ता।
सनकादिक आय गये तबही
रहें बालक रूप सदा तेहि सन्ता।
मुनिवृन्द कों आय प्रणाम कियो
हनु औ भरतादिक, रावणहन्ता।।

लखि राम के रूप में ब्रह्म खड़े
सनकादिक ने तेहि स्तुति गाई।
हे अच्युत दीन दयालु हरी
शरणागत ने तुमसे गति पाई।
अघनाशक, शासक हो जग के
वर देहु हमें इतनो रघुराई।
अनुराग रहे तव पाद प्रभू
देहु भक्ति हमें नहिं कोहु जो पाई।।

❋

सनकादिक भाव विभोर खड़े
गहि बाँह प्रभू उनकों बैठारे।
लखिकें उर प्रेम ऋषी गण कों
प्रभु ब्रह्म सगुण शुचि बैन उचारे।
मुनि आप तो ब्रह्म में लीन सदा
नित राखत हो उनकों उर धारे।
तुमसो नहिं सन्त कोई जग में
मम भाग्य बड़े मुनि तोहि निहारे।।

शुचि सन्त को संग मिलै जबही
शत जन्म के पाप मिटैं क्षण में ।
उर ज्ञान विराग के द्वार खुलें
प्रभु पाद में प्रीति बढ़ै मन में ।
मिट जात हैं दोष सबै मन के
मिलै पावन राह महा वन में ।
मुनि वृन्द बहोरि प्रणाम कियो
अरु खोय गये आनँद घन में ।।

सनकादिक ब्रह्म के गेह गये
प्रभु पाद भरत तब आय गहे ।
भरि प्रेम निहार रहे प्रभु को
मुख बोल न नैननि नीर बहे ।
हनुमन्त ने बन्धु को प्रेम लखो
कर जोरि के राम से बैन कहे ।
कछु पूछन चाहिं भरत तुमसे
पर पूछत में सकुचाय रहे ।।

कही राम न अन्तर है हममें
प्रिय बन्धु भरत अति ही मोहि भायें।
कपि पूछ लें पूछन चाहत जो
मन से सब सोच सँकोच मिटायें।
पग राम के बन्धु ने शीष धरो
कही सन्त असन्त के भेद बतायें।
श्रीराम सिहाय कही उनसे
सुनो सन्त के भेद जो शास्त्र सुझायें।।

❖

सब सन्त हैं चन्दन के बिरवा
औ असन्त कुठार बने उन्हें काटें।
कटिकेहु उपकार करें जग में
निज श्रेष्ठ सुवास सदा तेहि बाँटें।
महकात कुठारहु संगत से
भले वाहि ने हों उनके तन काटे।
तपि आग कुठार पिटे घन से
गुण नीच को चन्दन सो द्रुम काटे।।

पर को दुख देखि जो होत दुखी
सुख और को देख के ही सुख पायें।
चित कोमल और दया मन में
अध कर्म में नेंक न नेह लगायें।
सब कोहि दें मान वे जानि हमें
उर शुद्ध सरल नहिं काहु सताये।
तजि काम व लोभ औ मोह सबै
नित मोहि भजैं वेहि सन्त सुहाये॥

नहिं संग असन्त कों कोइ करे
खल प्रीति औ बैर दोऊ दुखदाई।
खल केरि स्वभाव है बन्धु बुरो
जरै देखि सदा पर की प्रभुताई।
मद काम औ लोभ बसैं उनके
मन माँहि भरी अति ही कुटिलाई।
व्यवहार कठोर दया न कहूँ
करें दीन के संग सदा निठुराई॥

मन और की नारि को रूप बसै
पर द्रव्य कों देख के आह भरैं।
रत स्वार्थ विरोध करें सबको
छल, दम्भ, कपट उर माँहि धरैं।
सतसंग औ शास्त्र न भायँ उन्हें
तेहि ऊट पटाँग विरोध करैं।
मति मन्द हरैं धन औरन कों
पितु मातु को हू नहिं नेह करैं।।

पर हित सम धर्म न है जग में
पर पीर की भाँति नहीं अधमाई।
धरि के नर देह जो पीर करें
भव कूप परैं अति ही दुख पाई।
परि लोभ में लोग कुकृत्य करें
रत स्वार्थ सदा दोउ लोक नसाई।
इन हेतु मैं काल को रूप बनूँ
फल कर्म शुभाशुभ देत हूँ भाई।।

सिग छोड़ के मोहि भजै नर जो
उतरै भव पार बिना श्रम के।
तजि के फल कर्म शुभाशुभ को
अर्पण करे मोहि बिना भ्रम के।
माया कृत हैं गुण दोष सबै
अरु भाग हैं जीवन के क्रम के।
येहि लक्षण सन्त असन्तन के
अविवेक, विवेक उपक्रम के ॥

सुनि ज्ञान वचन प्रभु के मुख से
सब बन्धु प्रसन्न भये मन में।
करी स्तुति राम की भक्ति भरे
निज शीष धरो तेहि पाँयन में।
तुम राम कृपालु दया निधि हो
नित वास करो उर आँगन में।
करि नाथ कृपा अब दूर करो
बसी वासनायें मन के वन में ॥

एहि भाँतिहि दै उपदेश प्रभू
सँग भाइन के निज मन्दिर आये।
सनकादिक, नारद आदि मुनी
कइ बारहि राम के दर्शन पाये।
जबही मुनि आयँ अवधपुर में
सब ब्रह्म कों जायकें हाल सुनायें।
ब्रह्मादिक होंय प्रसन्न बड़े
जब राम चरित्र कों वे सुनि पायें॥

सिय राम विराजत थे गृह में
हनुमान तबहि उनके ढिग आये।
लखि सीय कें भाल पै सेंदुर कों
कर जोरि विनीति से बैन सुनाये।
तव माथ पै लाल सो मातु कहा
कही सीय ये सेंदुर भाल लगाये।
तुम काहि लगावति हो एहि कों
कही सीय बहुत यह राम कों भाये॥

हनुमान विचार कियो मन में
प्रभु कों सिन्दूर लगै अति प्यारो।
सिय मातु के भाल कों देखि सदा
मुदि होत प्रभू, मनमाँहि विचारो।
द्रुति दौरि श्रृंगार के कक्ष गये
सिगरो सिन्दूर शरीर पै डारो।
हुइहैं प्रभु आज प्रसन्न बड़े
मोहि देख कें मातु से बैन उचारो।।

रघुनाथ प्रसन्न भये लखि कें
कपि अन्तस के मृदु भाव को जाने।
फिर नेह सौं हाथ धरो सिर पै
उर प्रेम कों देखि प्रभू मुसकाने।
एहि रूप में पूजिहैं लोग तुम्हें
कहि राम पुनः कपि कों सन्माने।
श्रीराम तो भक्त से प्रेम करैं
उनि भक्ति के होत अनेक बहाने।।

इकबार बुलाय लये प्रभु ने
सब पुरवासी, द्विज, मुनि सुखदाई।
बैठारि सुआसन पै सबकों
श्रीराम गिरा एहि भाँति सुनाई।
सब सेवक भावत मोहि बड़े
सब छोड़ करैं हमरी सेवकाई।
यदि नीति विरुद्ध कहूँ कछु मैं
मोहि आप कहैं भय कों बिसराई।।

सुर दुर्लभ मानव को तन है
बड़े भाग्य से ही एहि कों कोइ पाये।
यह खोलत मोक्ष के द्वारन कों
श्रुति, शास्त्र, पुराण ये बात बतायें।
नर देह कों पाय के ध्याय हमें
नहिं कालहि कर्महि दोष लगाये।
यह पाय परे जोइ विषयन में
सोइ फैंकि सुधा विष कंठ लगाये।।

तेहि केरि न होय भलो कबहूँ
लै पाथर ज्यौं कर की मणि खोये।
यह जीव फिरै लख चौरासी
नित योनि नई लै माल पिरोये।
परिके माया केहि चक्कर में
भटकै भवसिन्धु सदा उर रोये।
कबहूँ जब होय कृपा प्रभु की
नर देह धरै जपि कें प्रभु होये ॥

✻

नर देह जहाज बनै भव को
पतवार अनुग्रह मोर सुहानो।
सद्‌गुरु बनि नाविक थामि सदा
देइ राह सुगम जहँ जीव भुलानो।
होंय दुर्लभ काज सुलभ क्षण में
भव योनि निशा कर पाय विहानो।
इतने पै हु जो नहिं मोहि भजै
तेहि को समझो पर लोक नसानो ॥

परलोक सम्हारन चाहत जो
मम वचनामृत निज गाँठ में बाँधे।
अति भावुक हुइ मम भक्ति करै
निशिवासर ही मोहि कों आराधे।
जप, योग औ ज्ञान, बिरागहु से
बढ़के मोहि भक्ति के भाव से साधे।
नर भक्ति विहीन न भाय हमें
जप योग सबै बिनु भक्ति के आधे॥

सत संग बिना नहिं भक्ति मिलै
बिनु पुण्य मिलै नहिं सन्त को संगा।
द्विज को बनि सेवक पुण्य मिलै
उर माँहि हिड़ोलति भक्ति तरंगा।
सुर, द्विज, मुनि होंय प्रसन्न जबै
नर पाय तबै सतसंग की गंगा।
बिनु शंकर भक्ति जो मोहि भजै
कहूँ सत्य लगै बिनु पंख बिहंगा॥

एहि भाँतिहि नित्य समाज जुरै
श्रीराम सबनि उपदेश सुनायें।
भरतादिक भाव विभोर रहें
हनु, परिजनहू अति ही सुख पायें।
प्रभु एक दिना सब बन्धु लिये
हनुमान सहित पुर द्वार पै आये।
लखिकें द्रुम छाँव प्रसन्न भये
कही पुण्य मिलै जोइ बृक्ष लगाये ॥

पट पीत कों बन्धु बिछाय दियो
तेहि ऊपर बैठ गये रघुराई।
सुत वायु के वायु डुलाय रहे
श्रीराम कों सेवहिं तीनहु भाई।
हनुमान को भाग्य 'महेश' बड़ो
श्रीराम चरण, उर ज्योति जगाई।
रघुनाथ कों सेवत हैं मन से
कई बार प्रभू तेहिं कीन्ह बड़ाई ॥

तेहि अवसर नारद आय तहाँ
करी स्तुति राम की जोरि के पानी।
तुम ब्रह्म स्वरूप दयानिधि हो
निज भक्त के हेतु सनेह की खानी।
हम चाहत नाथ कृपा तुम्हरी
देहु भक्ति हमें कोइ कोई हो जानी।
कही राम तथास्तु महा मुनि कों
गये गेह मुदित कही शंभु-भवानी।।

❋

कही गौरि ने मोह गयो मन को
सुनि रामकथा नहिं कोई अघाये।
वह कान हैं सूप समान प्रभू
जिन्हें राम कथा नहिं नेंक सुहाये।
नर होय सहस्र में एक कोई
व्रत धर्म कों पालि के ना डिग पाये।
अस कोटन धर्म व्रती महँ से
कोइ त्यागि विषय वैराग्य कों पाये।।

जन कोटि विरक्तन में सेहु जो
कोइ सम्यक ज्ञान कों पाय सके।
अस कोटन ज्ञान के पुंजन में
कोइ जीवन चक्र विहाय सके।
इन जीवन मुक्त हजारन में
कोइ भक्त ही राम कों गाय सके।
अति दुर्लभ राम की भक्ति प्रभो
तव कारण ही हम पाय सके॥

सुख से रहैं लोग अवधपुर में
कही गौरि से राम के भक्त पुरारी।
शुभ कर्मन में सब लोग लगे
दिये पाप सबहि प्रभु दूर बिड़ारी।
मन होत अवध में हि वास करूँ
जहाँ राज करत श्रीराम खरारी।
प्रभु जापहि से सब पाप कटैं
यदि नेह से लैं उन्हें चित्त बिठारी॥

कर जोरि के गौरि कही शिव से
तुम्हें राम कथा प्रभु कौनि सुनाई।
विस्तार से मोहि बताउ प्रभू
मम अन्तस ह्व अब जाय जुड़ाई।
तब शम्भु कही सुनु पार्वती
खग काक भुशुण्डि कथा यह गाई।
तेहि पास मैं हँस के रूप रहो
सुनी राम कथा नहिं चित्त अघाई॥

❋

शुचि शैल पै एक सरोवर थो
तेहि पार्श्व में आश्रम काक बनायो।
खगराज गये तहँ मोह भरे
उन्हें काग ने राम चरित्र सुनायो।
खग की भाषा खग जानि सकै
हमनेहु तब हंस को वेश बनायो।
तेहि ठाँव सुनी हम राम कथा
अरु चित्त में राम को रूप बसायो॥

कही पार्वती मम नाथ कहो
खगराज के उर कस बात से आई।
कइसे पहुँचे खगराज वहाँ
हे नाथ नहीं यह बात बताई।
तब शंभु कही हे गौरि सुनो
अति गूढ़ रहस्य कों चित्त लगाई।
घननाद से राम को युद्ध भयो
तब नाग की पाश बँधे रघुराई ।।

❋

जग कों क्षण बन्धन मुक्त करें
सोइ रामजी नाग से बाँधि कें डारे।
खगराज पै नारद दौरि गये
तब आय गरुण सब नाग सँहारे ।
श्रीराम कों बन्धन मुक्त कियो
खगराज तबहिं मन माँहि विचारे ।
नहिं ब्रह्म कों कोइ हु बाँधि सके
वेहि दैत्य ने नाग से बाँधि के डारे ।।

खगराज ये सोचत जात चले
मुनि नारद कों यह बात बताई।
सब देव तो राम कों ईश कहैं
नहिं नाग की पाश सके वे छुड़ाई।
कही नारद ने तुम्हें मोह भयो
नहिं जान सके प्रभु की प्रभुताई।
गिरि नील पै काक भुशुण्डि बसैं
उनके उर माँहि बसैं रघुराई॥

खग ही खग कों समझाय सके
तुम जाउ शरण उनकी खगराई।
कहैं काक वहाँ नित राम कथा
सुनैं देश विदेशन के खग आई।
बहुकाल से वे तेहि शैल रहैं
बचैं होय प्रलय चाहे दुखदाई।
तेहि शैल से योजन दूर रहैं
सब पाप, कलेश, बिशेष बुराई॥

खगराज तुरन्त गये गिरि पै
लखि आश्रम कों मन में सुख पायो।
गिरि बीच सरोवर एक बनो
घने बृक्ष ज्यौं ब्रह्म ने बाग लगायो।
सर में बहु हंस किलोल करैं
खगनाथ निरखि अति ही सुख पायो।
लखि अंडज नाथ कों आश्रम में
तहँ आय भुशुण्डि ने शीश नवायो।।

❋

खगराज ने काक के पाँव छुए
कही नाथ शरण हम आपकी आये।
भ्रम घोर भयो हमरे मन में
अब नाथ कृपा करि वाहि मिटायें।
जग बन्ध जो काटत हैं छिन में
निज बन्ध कों काहि वे काटि न पाये।
तब जाय के नाग बधे हमने
उन्हें खोलकें बन्धन मुक्त कराये।।

मन में अति घोर दिवार खड़ी
अब नाथ कृपा करि वाहि गिरायें।
कही काग न होउ दुखी मन में
श्रीराम कथा कहि मोह मिटायें।
यह ब्रह्म हैं राम को रूप धरैं
तोहि मान दियो एहि हेतु बुलाये।
वर ब्रह्म को झूठ न होय कहूँ
एहि कारण नाग न दूर भगाये॥

कही काग ने राम कथा सिगरी
अरु खगपति के सब मोह मिटाये।
उनके मन से भ्रम दूर भयो
अति नेह सौं काग कों शीष नवाये।
सुनि राम कथा मम मोह मिटो
प्रभु ज्ञान औ भक्ति के भेद बतायें।
सुनिकें अति काक प्रसन्न भये
विस्तार से भक्ति औ ज्ञान बताये॥

सुनु ज्ञान को ठाँव तो बुद्धि में है
अरु भक्ति को होत हृदय में बसेरो।
तपि कें मुनि ज्ञान की खोज करैं
कई जन्म करैं तप घोर घनेरो।
तब जाय कें पाय सकैं प्रभु कों
फिर होत नहीं उनको जग फेरो।
कलिकाल में भक्ति को मान बड़ो
श्रीराम जपै तजिके तव मेरो।।

तजि के छल दम्भ जो नाम जपै
दिन रैन बसैं उर अन्तर्यामी।
प्रभु पाद में प्रीति सुतीक्ष्ण सी हो
भव सिन्धु तरैं पापिहु खल कामी।
धरि सन्त को वेश जटा सिर पै
नहिं राम में नेह बनैं ऋषि नामी।
मद में रहें चूर सदा धन के
उर वासना ही जिनकें रहै जामी।।

नहिं राम कों भावत हैं जन वे
जिनके मन में खल काम बसें।
उर पाप में लिप्त रहैं जिनको
परनारि विलोकि रसाल रसें।
नहिं दीन कों देखि द्रवैं कबहूँ
उन्हें कष्ट में देख कें खूब हँसें।
निर्मल मन राखि भजै प्रभु कों
श्रीराम के उर तेहि भक्त बसें॥

❋

केहिं कारण मोह भयो मन में
खगराज कही प्रभु मोहि बतायें।
यद्यपि सब मोह मिटो मन को
जब राम चरित्र कों आप सुनाये।
माया अति चंचल काक कही
जड़ चेतन कों नित नाच नचाये।
एहि में परिं जीव भुलानु फिरैं
सनकादिक नारद हू भरमाये॥

परिजात हैं मोह में भक्त बड़े
कहि काग ने एक प्रसंग सुनायो।
युग द्वापर अर्जुन हनुमत कों
कस मोह भयो उनकों बतलायो।
इक बार अकेलेहि लै रथ कों
अर्जुन चलि लंक के सेतु पैं आयो।
तप लीन तहाँ हनुमान मिले
पुल देख कें पारथ बैन सुनायो।।

प्रभु काहि न मोहि बुलाय लिये
बेकार में पाथर ढोय मँगाये।
क्षण में गढ़ते हम बाणन से
कहि पारथ गर्व भरे मुसुकाये।
सुनिके हनुमन्त कही उनसे
शर सेतु पैं नाहिं कटुक चल पाये।
मत पारथ बोलहु बोल बड़े
पुल बाण को भार नहीं सहि पाये।।

जिन पै तुम गर्व करो इतनो
तब वाण को सेतु न बोझ सहे।
मम पाद अँगुष्ठ के भारहि से
क्षण एक में सिन्धु में डूब बहे।
कहो अर्जुन वाण न मोर लखे
एहि कारण ही अस बैन कहे।
पुल जो गिर जाय ये वाणन को
तन त्यागि जरौं कछु होय चहे॥

हनुमन्त कही नहिं टोरि सके
पुल तौ बनि सेवक पाद परें।
तुम वाण से सेतु बनाउ अबै
हम जाय अँगुष्ठ को बोझ धरें।
पुल ध्वस्त न हो तुम जीत गये
गिर जाय तो हैं मम बैन खरे।
अर्जुन शर सेतु बनाय दियो
हनुमन्त अँगुष्ठ को बोझ धरे॥

शर को पुल टूट गयो क्षण में
तब हनुमत ने अति गर्व करो।
कही अर्जुन से तुम हार गये
बनवाय चिता निज दाह करो।
तेहि क्षण वहँ राम थे आय गये
अपनो उनि विप्र को रूप धरो।
कही साक्ष्य बिना कस निर्णय हो
कपि मोहि प्रसंग कहो सिगरो॥

कपि ने सिग हाल बताय दियो
कही विप्र पुनः करि मोहि दिखायो।
बिनु दृश्य लखे कोइ काह कहे
तब अर्जुन ने पुनि सेतु बनायो।
प्रभु चक्र सुदर्शन कों कहि के
चुपके पुल के नीचे बैठायो।
हनुमन्त हुँकारि चढ़ो पुल पै
कसि बोझ धरो पर तोड़ न पायो॥

कही विप्र न तोड़ सके पुल कों
कपि नाहक ही तुम रारि मचाई।
पुल से कपि भूमि पै आय गयो
तब ही प्रभु ने लियो चक्र हटाई।
कछु देरहि में पुल ध्वस्त भयो
बिनु भार गिरो जल में हहराई।
पुल संगहि गर्व ढहो दोउ को
समझाय उन्हें प्रकटे रघुराई॥

❋

हनुमन्त कही तब अर्जुन से
तुम्हरे ध्वज माँहि निवास करूँ।
रहिहौं अब मैं तुम्हरे सँग में
सेवा तुम्हरी सब खास करूँ।
श्रीराम के भक्त बड़े तुम हो
एहि कारण तोहि प्रणाम करूँ।
मोहि राम मिले पुनि द्वापर में
उनके पग कों उर माँहि धरूँ॥

तुहि अंडज नाथ जो मोह भयो
हरि प्रेरित मायाहि रूप दिखायो।
प्रभु ने मोहि देन बड़प्पन कों
खगराज तुम्हें मम पास पठायो।
तुम तो हरि के प्रिय सेवक हो
उनके पद कंज में ध्यान लगायो।
रक्षा निज भक्त की राम करें
तोहि भेजि यहाँ तव मोह मिटायो।।

खगनाथ कही केहि कारण ही
प्रभु काग के रूप में आप रहें।
वन में रहिके इन बृक्षन पै
हिम, आतप, बात औ नीर सहें।
एहि ठाँव पै आप रहें कब से
केहि हेतु भुशुण्डि जी आप कहें।
कही काक ये गूढ़ रहस्य बड़ो
तन मोर प्रलय में हु शेष रहे।।

एहि ठाँव पै कल्प सताइस से
हम वास करैं खग देह धरे।
उर माँहि बसैं प्रभु रात दिना
करके सुमिरन मन मोद भरे।
हर कल्प में विष्णुहि राम बनैं
खल रावण से सोइ मारि धरें।
हर बार चरित्र लखो हमने
प्रभु के सँग खेल के केलि करें॥

जब जब श्रीराम ने जन्म लियो
हर बार अवध तेहि देखन जाऊँ।
रहि पाँच बरस उनके सँग में
नित देखि उन्हें मन में सुख पाऊँ।
मोहि जानि के दास खिलायें प्रभू
जब दौरत वे उनकों पिछियाऊँ।
मुड़िके जब पकरन चाहिं प्रभू
झट से उड़िके कछु दूर पै जाऊँ॥

लखि कें नित बाल चरित्रन कों
रहूँ भाव विभोर न नेकं अघाऊँ ।
गिरैं खात में जूठन जो प्रभु की
ताहि खायकें मैं अति ही सुख पाऊँ ।
बदलें हर कल्प में भ्रातृ सभी
पर राम मैं विष्णु को रूप ही पाऊँ।
रहि पाँच बरस प्रभु के सँग में
पुनि आश्रम आय कथा तेहि गाऊँ ।।

अचरज खगराज सुनाउँ तुम्हें
प्रभु खेलत मोहि पकरिबे कों धाये।
उड़िकें मैंतु दूर भगो उन से
शिशु राम ने आपनु बाहु बढ़ाये।
नभ में गयो ब्रह्म के लोक लौं मैं
प्रभु बाहु रहे तहँ लौं पिछियाये ।
घबराय के नेत्रनि मूँदि लियो
चितये क्षण में प्रभु के ढिग आये।।

मोहि देखि भ्रमित जब राम हँसे
उड़िकें उनके मुख माँहिं समायो।
तहँ सूरज चन्द्र अनेक दिखे
सरिता, गिरि, अगणित देवन पायो।
ब्रह्मा, शिव, विष्णु अनेकन थे
दशरथ, कौशिल्या हू बहु पायो।
भरतादिक बन्धु अनेक मिले
पर राम को रूप थो एक सुहायो।।

मुख में प्रभु रूप विराट लखो
अगणित ब्रह्माण्ड नहीं गिन पायो।
हर लोक में मैं शत बार रहो
सुनि राम को जन्म अवधपुर धायो।
तिनके सँग खेलि मैं पक्षिपती
अपने मनमाँहि बड़ो सुख पायो।
सब सोच के अचरज मोहि भयो
प्रभु ने कस ये निज रूप दिखायो।।

अति अचरज देखि मैं व्याकुल सो
श्रीराम के पेट रहो पल थोरे।
मोहि व्याकुल देख कें राम हँसे
हँसतहि भुइ आय परो मति भोरे।
पुनि बालक लौं खिलवाड़ करें
पर चैन नहीं आये मन मोरे।
अति ही मोहि व्याकुल देखि प्रभू
सिगरी माया क्षण माँहि बटोरे।।

मम शीष पै हाथ धरो प्रभु ने
क्षण एक ही कष्ट मिटे सिगरे।
मन के सब मोह मिटे पल में
जब राम लखे मोहि नेह भरे।
पुनि पुनि प्रभु के परि पायन में
करी स्तुति, वन्दन मोद भरे।
हुइ राम प्रसन्न कही हमसे
वर माँगु जो चाहु मिलें सबरे।।

सुख सम्पत्ति आदि जु हैं जग के
सुर दुर्लभ वस्तु मिलै क्षण में।
मिलिहैं सच मानु वो काग तुम्हें
तुम जो कछु चाहत हो मन में।
कर जोरि के काग कही प्रभु से
शुचि भक्ति मिलै तव चरणन में।
मिलिहै सुर दुर्लभ भक्ति तुम्हें
कही राम उठाय के बाहुनि में।।

तव चातुर देखि प्रसन्न भयो
माँगी तुम भक्ति, हो बुद्धि निधानी।
सब मानव ही हमको प्रिय हैं
उनमेंहु द्विज श्रेष्ठ विशेष हों ज्ञानी।
उन ज्ञानिन सेहु अधिक प्रिय हैं
तपलीन सदा, मुनिवर विज्ञानी।
उनसेहु प्रिय भक्त लगैं हमको
रहें भक्ति में लीन सदा मोहि जानी।।

नहिं ब्यापि है काल कबहुँ तुमको
अनपायनी भक्ति तुम्हें है दई।
देखौ हर कल्प चरित्र मिरे
मम माया से मुक्ति तुम्हारि भई।
अतिशय प्रिय काक वे भक्त लगैं
जिनि छोड़ के सब मम भक्ति लई।
पुनि बालक रूप धरो प्रभु ने
समझाय हमें उन बार कई ॥

कछु काल अवध रहिके सँग में
धरिके तेहि ध्यान मैं आश्रम आयो।
तब से माया अति दूर रहै
यह गुप्त रहस्य मैं तोहि सुनायो।
निज अनुभव आज बताय रह्यो
जिन राम जपो उननेहि सुख पायो।
उनकी जब होय कृपा जेहि पै
प्रभुता प्रभु की सोई लखि पायो॥

पहिचान बिना नहिं प्रेम बढ़ै
बिनु प्रेम न हो विश्वास घनेरो।
विश्वास बिना नहिं भक्ति मिलै
मन ऊपर से कितनोहु उन्हें टेरो।
गुरु के बिनु आय न ज्ञान कभी
बिनु ज्ञान न हो बैराग्य बसेरो।
वैराग्य बिना नहिं मुक्ति मिलै
सन्तोष बिना भटकै मन तेरो॥

❋

देखे युग चारहु, कल्प निरे
उनके कछु भेद तुम्हें बतलाऊँ।
हर युग अवतार धरैं जग में
प्रभु के दर्शन करिके सुख पाऊँ।
नरसिंह को रूप धरैं कबहूँ
कहुँ बामन बालि को नापत पाऊँ।
त्रेता युग आवत राम सदा
अरु द्वापर कृष्ण को देखि सिहाऊँ॥

कलकी अवतार हो कलियुग में
सदा विप्र के वंश कों देत बड़ाई ।
जो दैत्य के कर्म करें जग में
उन्हें मारे बिना हर लेत बुराई ।
आभायुत गौर बदन जिनको
रहैं वस्त्र धवल उनके सुखदाई ।
विचरत चढ़ि श्वेत तुरंग प्रभू
जिनकों निज भक्तन को रुचिभाई ।।

सतकर्म करें सब सतयुग में
जपै ईश सदा तप यज्ञ करैं ।
तजि राग औ द्वेष सबहि मन के
नर नारि प्रमुदि शुभ कर्म करैं ।
तपिके तहँ वर्ष हजारन लौं
प्रभु में रमि के भवपार करैं ।
सब सन्त, असन्त न एक लखैं
हरिके गुण गात न भक्त डरैं ।।

त्रैतायुग रावण त्रास भरै
शुचि कर्म करैं उनकों शठ मारे।
अति आकुल व्याकुल सन्त फिरैं
तप यज्ञ करैं तिनि आय सँहारे।
सुर, किन्नर, नाग औ मानव का
ऋषि सन्त मिलैं तिन्ह मारिके डारे।
जब पाप के कर्म बढ़ैं जग में
तब रामहि आयके कष्ट निवारैं॥

❋

युग द्वापर कंस को वंश बढ़ै
करिके अतिचार समाज विरोधी।
ब्रज के सिगरे शिशु मारन कों
करै कर्म असुर नित नित्य अबोधी।
भुइमण्डल में खल त्रास भरै
सतकर्मन को बनिके अवरोधी।
तब कृष्ण के रूप में आय प्रभू
सब दैत्य बधैं, बनि केहरि क्रोधी॥

कलिकाल में पाप बढ़ैं अतिही
नहिं धर्म अधर्म को भेद रहे।
अपमान हो शास्त्र पुराणन को
ऋषि कर्म करें तिन रक्त बहे।
नर लम्पट चोर जुआरि बने
अरु नारि को पतिव्रत धर्म डहे।
नहिं कोइ गरीब की बात सुने
मुखि देखि प्रधानहु बात कहे॥

निज मित्र पै मित्रहिं घात करै
औ हरैं तेहि सम्पति कों पल में
करके अघ कर्म कों फूलि फलैं
नहिं काहू कों देख सकैं कल में।
पितुमातु कों ताड़त पुत्र तहाँ
शठ मूरख राज करैं दल में।
पर नारि के धर्म कों भ्रष्ट करैं
जिमि मीन कों फाँसत हों जल में॥

शुभ कर्म से होय विरति सबको
परिहर निज नारि बिरानि तकैं।
आलोचक वेद पुरानन के
बनिकें सब ऊटपटाँग बकैं।
विघटित करि पूर्ण समाज भलो
तब राज सिंहासन पाय सकैं।
तजि नीति अनीति से राज करैं
रहैं पाप में लिप्त न नेंक थकैं।।

पुनि काक से अण्डज नाथ कही
कलिकाल में मुक्ति की राह बतायें।
करैं कौन सी युक्ति जो पाप कटैं
औ हटैं भवरात्रि के साँवरे साये।
कलिकाल में सन्त कहा करिहैं
करैं कौन उपाय जो राम को पायें।
जग के हित पूछत हौं तुमसे
अब नाथ कृपा करि राह सुझायें।।

सतयुग, त्रेता अरु द्वापर में
करैं सन्त कठिन तप तो हरि पायें।
कलिकाल में भक्ति से नाम जपै
कहि राम नहीं पुनि पुनि जग आयें।
मन शुद्ध से भक्त जो ध्याय उन्हें
करि राम कृपा ताहि पास बुलायें।
हर जीव में राम को रूप लखै
तो कटैं भव फन्द औ राम समायें ।।

❋

यदि शील विवेक से नारि चले
रहि केहु स्वतन्त्र नहीं बिगरे।
निष्ठा पति पाद रहे जेहि की
तेहिके दोउ लोक सदा सम्हरें।
तेहि शील सतीत्व अटूट रहै
कितनेहु रावण शठ रूप धरें।
है नारि तो शक्ति औ माँ जग की
गृहणी बनके प्रतिपाल करे ।।

मन से जब तेरो औ मेरो मिटै
औ दिखे सब में प्रभु रूप सलोनो।
शुचि कर्म करै जग के हित में
तेहि के बन जात हैं लोक तो दोनों।
तजि पाप बुराइन के घर कों
कबहूँ न करै कोइ कर्म घिनौनो।
मन शुद्ध से राम को नाम जपै
मिलैं राम में ही मन आत्मा दोनों।।

❋

राम राम राम राम तुम जपते रहौ
एक दिन राम मय तुम हुइ जाइहौ।
जितनोहि निर्लिप्त हुइहौ संसार से
उतनोहि राम कों ढिगाँ तुम पाइहौ।
काम,क्रोध,लोभ,मोह आदि सब पापहैं
इनसे बचोगे तुम तब सुख पाइहौ।
जातिपाँति,धर्म,लिंगादि सबभेदभूलि
प्राणीमात्र में 'महेश' राम को हीपाइहौ

है राम से राम को नाम बड़ो
जेहि सुमिरत ही सबने फल पायो।
श्रीराम अवध में हि वास कियौ
उर सन्त में नाम निवास बनायो।
बधो राम ने रावण से खल कों
पर नाम ने तो जग कष्ट मिटायो।
जपि नाम तरैं भव सागर से
श्रीराम तो सिन्धु पै सेतु बनायो ।।

त्रेता महँ राम उबारत थे
पर नाम सबहि युग में खल तारे।
मद, काम औ क्रोध हो लोभ चहे
श्रीराम को नाम तुरन्त उबारे।
नारद, सनकादिक नित्य जपैं
विचरैं ब्रह्माण्ड में नाम सहारे।
पापिहु भव सिन्धु जु डूब रहे
उन्हें नाम जहाज ने पार उतारे ।।

गणिका, गज, गीध, अजामिल हू
जपि नाम तरे जग से क्षण में।
लिखि राम के नाम कों पाथर पैं
दियो सेतु बनाय थो सागर में।
हनुमान ने नाम जपो जबहीं
श्रीराम बसे उनके उर में।
नरसिंहहु खम्भ कों फारि भये
लखो नाम प्रभाव मैं कण कण में।।

❋

भंजो इक चाप सियावर ने
भन्जै भव को भय नाम लिये।
तारी श्रीराम ने एक त्रिया
पर नाम अनेकन तार दिये।
जपि नाम बिना श्रम मोह मिटै
एहि मुक्ति के द्वार हैं खोल दिये।
एहि लोक बनै, परलोक बनै
जब नाम अमोल के मोल किये।।

नित राम को नाम जपौ मन से
यदि पावन चाहत चैन जिया में ।
नर देह पवित्र मिली तुमको
तनि सोचु का राम का काम किया मैं।
दिन रैन मृषारस जीभ चरै
लेहु पूछ कबै हरि नाम लिया मैं ।
अब मानहु सीख 'महेश' मेरी
धरिले निज चित्त कों सीय पिया में।।

✠

यहि देह पै गर्व कहा करिये
करिये वेहि काम जु राम बताये ।
अपने मन कों रत राम करै
अति दीन गरीबहु में उन्हें पाये ।
प्रभु राह चले में भलो सबको
मिलै राम की भक्ति औ पाप नसाये।
कण कण जड़ चेतन राम बसैं
सत चित आनन्द के रूप समाये ।।

सब बेद पुराण और सन्त कहें
श्रीराम के नाम जो नेह करें।
मिट जात हैं पाप सबै मन के
भवसागर सन्त लौं पार करें।
कट जात कलेश दुखी जन के
पुनि पुनि जग आय न देह धरें।
जपि नाम पहाड़ उठाय लियो
हनुमान ने राम के काम करे ।।

मोहित होय नारि पै नारि नहीं
खगपति हम भेद की बात कहैं।
माया अरु भक्ति हैं सौत दोऊ
उर काहु के दोउ न संग रहैं।
उर सन्त में भक्ति बसै जबहीं
माया तहँ से अति दूर बहै।
एहि से रहि दूर जपौ हरि कों
प्रभु प्रीति बढ़े श्रुति शास्त्र कहैं।।

खगनाथ ने शीष नवाय कही
मन में कछु प्रश्न हैं आय रहे।
अभिलाष है उत्तर दैंय प्रभू
मनमानस कों बिलखाय रहे।
दुर्लभ तन कौन औ का सुख है
दुख कौन बड़ो नर पाय रहे।
गुण सन्त असन्त के कौन प्रभू
का पाप औ मानस रोग कहें।।

❋

नर तन अति दुर्लभ काक कही
सुर मुनि सब चाहत पाय सकें।
सब चाहत हैं नर देह मिलै
करि भक्ति प्रभू तक जाय सकें।
यहि से वैराग्य औ ज्ञान मिले
पद मोक्ष को भक्ति से पाय सकें।
धरि के नर देह मिलें प्रभु से
निज दुष्ट प्रवृत्ति बिहाय सकें।।

दारिद्र बड़ो दुख है जग में
एहि कारण ही अधकर्म बढ़ें ।
तजि धर्म औ नीति, सुमारग कों
अघकर्म, अनीति की बेल चढ़ें ।
जप तप नहिं भक्ति रुचै उनकों
जिन पै दुख दारिद जाय चढ़े ।
रहि आरत भूख पियास सहें
नहिं सन्ततिहू उन केरि पढ़े ।।

सुख सन्त समागम सो नहिं है
सतसंग सबहि दुख दूर करे ।
शुचि ज्ञान औ भक्ति मिलै जन कों
मन के सब संशय दूर करे ।
तलवार को लोह बधिक घर को
पारस छुवतहि तेहि स्वर्ण करे ।
भरि जात सुवास सुगंधन से
चन्दन सँग औरहु काठ धरे ।।

सब सन्त हैं सरिता के जल से
नहिं शीतल नीर पिवाय थकें ।
बनिकें फलदार बिटप मग के
देंय शील छाँव औ फल सु पके ।
पर को दुख देखि वे होत दुखी
उर होत द्रवित आँसू टपकें ।
उनको श्रीराम में ध्यान रहै
अज्ञान की नींद वे ना झपकें ।।

खगनाथ असन्त को हाल बुरो
पर को सुख देख कें आह भरैं ।
बनिकें व्यवधान परैं मग में
जब सन्त कोई शुभ काम करैं ।
नर लम्पट चोर कुटिल बनिके
पर सम्पति औ पर नारि हरैं ।
ऐसे नर से रहे दूर सदा
उपकार करै ताहि त्रास भरैं ।।

पर सम्पत्ति देखि जरैं मन में
लखि दीन को दुख परिहास करें।
अधकर्म को नेक न सोच करैं
पर ताड़न कों लखि मोद भरें।
नहिं काहु कों वे उपकारत हैं
नहिं होत कृतज्ञ, विनाश करें।
कितनेहु मग फूल बिछाउ उन्हें
तुम्हरो पथ कंटक डारि भरें॥

उर सन्त तो है निर्मल जल सो
खल के मन में रहै खोट भरी।
परहित सब सन्त दधीच बनें
देंय अस्थि विहँसि जब भीर परी।
सत संगति से खल हू सुधरें
श्रीराम जपे से बनें बिगरी।
खल पै हु श्रीराम की होत कृपा
जपैं नेह सौं नाम जो चार घरी॥

श्रुति सम्मत पुण्य दया सबसे
हिंसा नहिं आय कभी मन में ।
करैं जीव से प्रेम सताय नहीं
पशु पक्षिहु घूमत हों वन में ।
सबसे शुचि धर्म अहिंसाहि है
नहिं चोट करैं कहु के तन में ।
करै शील सनेह औ प्रीति घनी
प्रभु तेज भरै तेहि के तन में ।।

निंदा सम पाप नहीं जग में
पर निंदक नर्क निवास करैं ।
गुरु विप्र औ शास्त्र पुरानन के
निन्दक सब रौरव खास परैं ।
चमगादड़ और उलूकन की
परि योनि तिमिर घन वास करैं ।
परि मोह निशा भटकैं जग में
बनि गर्दभ मोह की घास चरैं ।।

अब मानस रोग कहौं तुमसे
सब व्याधिन की जड़ मोह बड़ो।
कफ काम, औ पित्त सो लोभ भयो
अरु बात सो क्रोध को रोग बड़ो।
तीनहु यदि एकहि साथ मिलें
दैंय राजसि रोग उखारि गड़ो।
ममता, कटुता, इर्षा, तृष्णा
सब रोग मिटैं हरि पाद पड़ो ।।

श्रीराम की भक्ति सँजीवनि है
श्रद्धा सँग भक्त जो पान करै।
सब मानस रोग मिटैं क्षण में
उर में प्रभु नेह को ज्ञान भरै।
श्रुति, संत, पुराण कहैं सबही
सिय राम चरण महँ नेह करैं।
जग में नहिं कष्ट मिलै उनको
क्षण में भवसागर पार करैं।

सुनिके अति भाव विभोर भये
खगनाथ ने काग कों शीष झुकायो।
कही मोह मिटो मन को सिगरो
शुचि ज्ञान औ भक्ति को मार्ग है पायो।
खगपति तब आयशु पाय उमा
निज नाथ के धाम चले सुख पायो।
श्रुति मंत्र झरैं तेहि पंखन सैं
उड़े राम के पाद में ध्यान लगायो।।

राम भजे से सुख मिलै
बन जायें दोउ लोक।
मुक्ति मिलै संसार से
मिटत जन्म कर शोक।
जगत को बन्धन टूटै।।

।। इति उत्तरकाण्ड ।।

लवकुश काण्ड

मंसा, वाचा, कर्मणा
सीय राम पद नेह ।
पूर्ण निष्ठ पति में सदा
नहीं कछू संदेह ।
राम कों हू अति प्यारी ॥

सेवा सिय नित्य करै पति की
यद्यपि दासी अरु दास घनेरे ।
सब बन्धु सदा रत राम रहैं
नित सेवत हैं उनकों बिनु टेरे ।
श्री रामहु नेह करैं सब से
समझैं उनकों यह मित्र हैं मेरे ।
दुर्लभ सुख भोग करैं सबही
प्रभु आयशु कों उनके तन हेरें ॥

नहिं कष्ट प्रजा कहँ होय कहूँ
सुधि लैन कों अनुचर नित्य पठायें।
इक रजक ने नारि निकारि दई
रही रात कहूँ आरोप लगाये।
तोहि राखि सकूँ नहिं राम हुँ मैं
रही रावण गृह सिय संग बसाये।
अनुचर सब बात सुनी उनकी
श्रीराम कों जाय तुरन्त बताये॥

सुनिकें श्रीराम गँभीर भये
कहे सत्य रजक प्रभु ताहि बताये।
जब नीति को भूप प्रतीक बने
तब जाय प्रजा कहुँ धर्म सिखाये।
रखिबो सिय कों अब ठीक नहीं
कहि सोच भरे लक्ष्मन बुलवाये।
कही जाउ सियहि लै कानन कों
कहु आश्रम के ढिग छोड़ के आयें॥

कर जोरि के बन्धु ने रोय कही
मम कैसि ये पारिख लेत हो भाई।
सिय मातु पवित्र सुधा सम हैं
इन्हें कानन भेजत मोहि न भाई।
जब राम कही मम आयशु है
सुनि बन्धु चले नैननि जल छाई।
पहुँचे सिय गेह दुखी मन से
पग छू प्रभु आयशु दीन्ह बताई।।

अति आरत हुइ सिय रोय कही
अपराध कहा प्रभु जो बिसराये।
उन ऐसु कठिन आदेश दियो
जाय पालत जी हमरो घबराये।
मैं हुँ गर्भवती मत सोच करो
पालहु आयशु संकोच न लायें।
बैठारि सियहि रथ हाँकि चले
लखि दृश्य सबहि पुर जन बिलखाये।।

रथ बैठि लखन अरु मातु सिया
परिहर बाल्मीकि के आश्रम आये।
बिलखति सिय छोड़ दई बन में
लक्ष्मण लौटे दृग अश्रु बहाये।
प्रभु कों सब हाल बताय दियो
सुनिकें श्रीराम हृदय दुख पाये।
सिय से अति नेह थे राम करें
तेहि जन हित में तजि के मुरझाये।।

ब्रह्मचर्य वरण करके भुइ पै
सोवत सिय कों सुमिरैं रघुराई।
कर्तव्य के बन्धन में बँधि के
निज प्रेयसि त्यागि सहैं वे जुदाई।
यह देख के हाल दयानिधि को
अति शोक भरे उनके सब भाई।
गई कानन सीय विदेह सुनी
उन आय के राम कों धीर बँधाई।।

बाल्मीकि लख्यो निज आश्रम मे
श्रीराम बधू सिय हैं यहाँ आई।
अति नेह सौं शीष पै हाथ धर्यो
सियहू उनके पद में सिर नाई।
ऋषि ने कही सोच तजौ मन कों
जोइ होनिहै वह निश्चय हुइ जाई।
बिटिया एहि ठाँव निवास करो
हरि नाम जपौ फल कन्दनि खाई॥

श्रीराम वियोग में सीय दुखी
जग की कोइ वस्तु न वाहि सुहाये।
करि राम की याद झरैं अँखियाँ
सखियाँ तब आश्रम की समझायें।
गुरुदेव सियहि अति नेह भरे
श्रुति शास्त्र सुनाय कें धीर धरायें।
सुनिकें कछु चैन मिलै मन कों
पर राम की याद कों भूल न पायें॥

लवणासुर जीतन कों मथुरा
शत्रुघ्न कों राम सिखाय पठायो।
रुकि कें बाल्मीकि के आश्रम में
पहिले उनसे तुम आशिष पायो।
पहुँचे जब आश्रम में तबही
सिय ने दुइ पुत्र जने सुख पायो।
लखि राम को बन्धु महाऋषि ने
उनसें नन्दीमुख श्राद्ध करायो॥

फिर शोधि कें शास्त्र पुरानन कों
सुत नामकरण बाल्मीकि करायो।
सिय कुक्ष को गौरव जो सुत है
मुनि ते तेहि को कुश नाम धरायो।
रही राम के प्रेम की ज्योति की लौ
ऋषि सीय कों लव तेहि नाम बतायो।
बनि हैं दोउ पूत महान बड़े
ऋषिराज ने आशिर्वाद सुनायो॥

कछु और बड़े जब पूत भये
ऋषि ने धनु वाण साँगीत सिखायो।
नित राम चरित्र सुनाय उन्हें
मुनि वेद, पुराण पढ़ाय गुनायो।
सिगरे सँस्कार दये गुरु न
पितु नाम न मातु उन्हें बतलायो।
निज नामहु त्यागि दियो सिय ने
वन देवि कहै जब कोइ बुलायो॥

❋

स्वर से नित गाय के राम कथा
लव कुश पुर लोगनि जाय सुनायें।
सुनि के होंय लोग प्रसन्न बड़े
उन्हें आशिष दै मन में सुख पायें।
गये दोउ अवधपुर एक दिना
पुर घूम के राम कथा शुचि गाये।
सुनिके पुर लोग प्रसन्न भये
उनि राम कों जाय कें हाल बताये॥

ऋषि के दुइ पुत्र लखे हमने
शुचि राम कथा जिन आज सुनाई।
सुनिकें रघुनाथ प्रसन्न भये
कही जाउ उन्हें तुम लाउ लिवाई।
गये सेवक, जोरि के हाथ कही
ऋषिपुत्र ! कथा सुनिहैं रघुराई।
मम संगहि राज प्रासाद चलो
सुनि राम के पास गये दोउ भाई।।

❋

दोउ राम के पाद में शीष धर्यो
मुदि ह्वै छवि देखि कही रघुराई।
सुनना चाहें राम कथा हमहू
ऋषि पुत्र ! हमेंहु अब देहु सुनाई।
कही राम कथा दोउ पूतन ने
फिर सीय बिछोह कथा तिनि गाई।
सुनि राम भये उर माँहि दुखी
कही है कहँ पै सिय, नाहिं बताई।।

लव कुश कही जानत थे जितनो
उतनीहि कथा हम दीन्ह सुनाई।
कही राम हैं को तव मातु पिता
तब लव कुश ने कर जोरि बताई।
मम पितृ बसैं सबके उर में
उनकेरि बड़ी सबसे प्रभुताई।
हम जानत नाम नहीं उनको
अबलौं मम मातु नहीं बतलाई॥

तव मातु है को सुत मोहि कहो
कही लव कुश वे हमरी महतारी॥
झरैं स्वर्ण कमल जिनके पद से
उनकेरि यही पहिचान खरारी।
सिय पादु से स्वर्ण के पुष्प झरैं
मनमाँहि विचार कियो असुरारी।
कही राम ने नाम कहा उनको
सुत कही वन देवी हैं मातु हमारी॥

इक स्वर्ण कमल दिखलाउ हमें
अति नेह से राम उन्हें समझाये ।
लवकुश कर जोरि कही तबही
पुनि आइहैं पुर तब लाय दिखायें।
फिर कही प्रभु! नाम है का तुम्हरो
तब राम उन्हें निज नाम बताये ।
तुम कौन से राम हो पूत कही
उनमें जितने हमने सुनि पाये ।।

❋

इक राम हैं दसरथ के सुत जो
पितु कोहु मुखाग्नि नहीं दै पाये ।
इक राम गये पितु आयशु से
वन में जिन चौदह वर्ष बिताये ।
इक राम हैं वीर महान बड़े
शठ रावण से जिनि मारि गिराये।
इक राम हैं और सुने हमने
निर्दोष सियै वन जानि पठाये ।।

सुनिकें भये राम दुखी मन में
करि सीय की याद नयन भरि आये।
लखि राम को रूप विषाद भरो
लव कुश अपने मन में दुख पाये।
कहि नाथ बिदा कर देहु हमें
दोउ राम कमल पद में सिर नाये।
तब राम लगाय के अंक उन्हें
कहीं हे ऋषि पुत्र ! पुनः पुर आयें।।

अश्वमेध कियो श्रीराम जबै
इक बाज सजाय लिखाय छुड़ाये।
सीमा वही राज अवधपुर की
हुइहै जहँ कहुँ मख अश्व ये जाये।
करनो पड़िहै वाहि युद्ध बड़ो
नर यज्ञ तुरंग कों जो पकराये।
मख केरि तुरंग रखावन कों
रिपु सूदन राम ने सँग पठाये।।

ऋषि कानन आय तुरंग रुको
पढ़िके तेहिकों पकरे दोउ भाई ।
छोड़हु रिपुसूदन गर्जि कही
मख बाज है ये न करो लरिकाई ।
सुनतहि धनु वाण निकारि लियो
करिहैं हम युद्ध कही दोउ भाई ।
हम जानत यज्ञ तुरंग ढिलो
पढ़िके ही यही पकरो हम आई ।।

शत्रुघ्न कही सुकुमारन से
अति सुन्दर हो मारोहु नहिं जाई ।
धनु वाण धरौ कटि में अपने
देहु छोड़ तुरग अपने मग जाई ।
सिय पूत तुरंग कों नाहिं तज्यो
शत्रुघ्न तबहि कसि साँग चलाई ।
तेहि वार बचाय लियो लव ने
हनो वाण गिरे भुइ राम के भाई ।।

तब आय भरत सब हाल लख्यो
उन लव कुश कों बहुतहि समझायो।
देहु बाज कों छोड़ ये हैं मख को
सिय पुत्र कही अपने घर जायो।
करि क्रोध भरत नेहु युद्ध कियो
पर राम के पुत्र से पार न पायो।
कुश वाण लगत वेहु भूमि गिरे
कछु देर कों आपनु चेत गँवायो।।

आये लक्ष्मण, हनुमान तबैं
उन युद्ध कियो लव कुश सँग भारी।
दोउ ओर से वाण अमोघ चले
इक दूसर से नहिं मानत हारी।
तेहि क्षण लव कुश कइ वाण हने
रथ सारथि संग कटक सब मारी।
लक्ष्मण जोइ शर संधान करैं
देंहि बालक काटि उन्हें भुइ डारी।।

कोइ काहु से हार न मान रहे
लक्ष्मण उनसे कछु परत सवाये।
करि ध्यान तबहिं गुरु को कुश ने
कइ एक अमोघ से अस्त्र चलाये।
शर एक लगो लक्ष्मण उर में
गिरे भूमि भगी सब सैन पराये।
अकिले हनुमान मिले उनकों
उन्हें बाँधि के खैंचत मातु पै लाये।।

कपि जानि गय सुत हैं सिय के
एहि कारण बन्दर से बँधि आये।
कही मातु से बानर बाँधि लियो
तोहि देखन हेतु यहाँ हम लाये।
सिय देखि उन्हें पहिचान गई
अति नेह सौं आय उन्हें खुलवाये।
मारुति सुत मातु के पाँव परे
कही राम दुखी उनकों समझाये।।

प्रभु बन्धु अचेत परे रण में
यह जानि सिया पायो दुख भारी।
अति नेह सौं हाथ धर्यो सिर पै
उनके मुख में डारो सिय बारी।
भयो चेत, उठे लखि मातु सिया
छुए पाँव अनुज्ञ भरि नेत्रनि बारी।
सिय डाँटि कही निज पूतन से
पितु बन्धु हैं ये, रोको अब रारी ।।

✻

हनुमान ने राम से जाय कही
वन माँहि मिली मोहि जानकी माई।
जिन बालक बाँधि तुरंग लियौ
रणभूमि परास्त किये तव भाई।
वे दोनोंहि आपहि के सुत हैं
सुनि दौरि गये तहँ पै रघुराई।
पर सीय उन्हें नहिं देख सकी
सब देखत भूमि में जाय समाई ।।

जब पाँव धँसे सिय के भुइ में
लक्ष्मण हनुमान बहुत बिलखाये।
अब हम किनकी सेवा करिहैं
भये दूर बहुत मम मातु के पाँयें।
हम तो रहे दास सदा इनकें
इन्हें छोड़ के मातु कहाँ हम जायें।
अति व्याकुल हुइ दोउ रोय कहें
अब मातु के पाद कहाँ हम पायें।।

पूरोहि कटि भाग घुसो धरती
गयो वक्षस्थल भुइ से नियराई।
लखि मातु के वक्ष कों जात मही
लव कुश रोये कहि जात है माई।
हम कौन से रूठ कें बैठिहैं यौं
अब को पुचकारि मनावन आई।
अति नेह सौं दूध पिवाइहै को
निज बछरन छोड़ कें जात हैं गाई।।

भुइ राम ने आनन जात लख्यो
बिलखाय कही मत जानकी जाओ।
बहुकाल भयो बिछुड़े हम से
पुनि आज मिलीं मत छोड़ के जाओ।
सँग में रहीं शक्ति की भाँति सदा
मत जानकी मोहि अशक्त बनाओ।
मम कारण कष्ट अनेक सहे
उनको बिसराय क्षमा कर जाओ।।

जब भूमि में सीय विलीन भई
श्रीराम विछोह के दुःख समाये।
भरि क्रोध कही सुनु माँ धरणी!
हे सास मेरी सिय को लौटायें।
हम जानत हैं सिय मातु तुम्हीं
हल जोतत में मिथिलापति पाये।
लौटारि सियै देहु मातु हमें
अथवा सिय के ढिग मोहि पठायें।।

यदि नाहिं मिली मम सीय हमें
कहूँ सत्य मैं सृष्टि विनाश करौं।
ब्रम्हा अति व्याकुल देखि उन्हें
समझाय कही प्रभु खेद हरौ।
सिय तबे साकेत में जाय बसी
मिलिहै तुमको मन धीर धरौ।
सुनिकें कछु राम कों चैन मिलो
पुनि कही बिनु सीय के काह करौं।।

सिय रोवत छोड़ गई सबकों
निज मातु की गोद में जाय समाई।
मिलकेहु सिय राम कों नाहिं मिली
लखि दृश्य अधीर भये रघुराई।
बाल्मीकि प्रबोध कियो सबकों
गति काल की होत अजेय बताई।
लव कुश दोउ राम कों सौपि दये
अति नेह लये प्रभु वक्ष लगाई।।

अश्वमेध कों राम ने पूर्ण कियो
सबके सँग लौट कें गेह कों आये।
जितने ऋषि, विप्र रहे मख में
सबकों पग पूजि कें गेह पठाये।
नहिं भूलि सके कबहूँ सिय कों
उनकी प्रभु कों नित याद सताये।
कबहूँ जब यज्ञ करें पुर में
सिय मूर्ति गढ़ाय कें वाम बिठायें।।

बैठि सिंहासन राम जी
करैं अवध में राज।
भक्तन को कल्याण करि
पालहिं सकल समाज।
सीय की याद सताये।।

इति लव कुश काण्ड

जलसमाधि काण्ड

अन्त समय हर जीव कों
निज गृह आवत याद ।
लौ लागति हरि चरण में
छूटत हर्ष विषाद ।
जीव पुनि ब्रह्म समाये ।।

मन में श्रीराम थे सोच रहे
अब पूर्ण सबै मम काज भये ।
जेहि हेतु लियो अवतार यहाँ
सब दुष्ट मरे मम धाम गये ।
भू पै नहिं भार रहो उनको
मम लौटन के दिन आय गये ।
जग चिन्तन कों तब छोड़ प्रभू
कछु देर कों ध्यान में लीन भये ।।

जब अन्त समय प्रभु केरि लख्यो
मिलबे उनसे यमराज थे आये।
प्रभु के पग में उनि शीष धर्यो
फिर लौट के जान की याद दिलाये।
दियो ब्रह्म ने मोहि सँदेश प्रभू
हम वाहि अकेलेहि में बतलायें।
यदि काहु ने बात सुनी हमरी
प्रभु प्राण को दण्ड वही नर पाये।।

❋

लक्ष्मण कहँ राम बुलाय कही
रहि द्वार लखो यहाँ कोइ न आये।
यदि काहु ने बात सुनी हमरी
वह प्राण को दण्ड अवश्य ही पाये।
लक्ष्मण कर जोरि कही प्रभु से
प्रभु होय वही जोइ आपको भाये।
द्रुति जाय के द्वार पै बैठ गये
अरु रक्षक सारेहि दूर हटाये।।

यमराज कही कर जोरि प्रभू
तोहि ब्रह्म ने है तव धाम बुलायो।
सब देव वहाँ तव राह तकें
सब काम भये कहि याद दिलायो।
श्रीराम कही हम आय रहे
तुम ब्रह्म कों जाय यही बतलायो।
यमराज कों कीन्ह बिदा प्रभु ने
निज धाम प्रयाण को साज सजायो।।

लक्ष्मण धनुवाण लयें कर में
तेहि कक्ष के द्वार पै आय डटे।
अति चिन्तन में रघुनाथ लगें
उनको नहिं काहु में चित्त बटे।
मनमाँहि लखन यह सोच रहे
दुर्वासा जी ताहि समय प्रकटे।
श्रीराम तुरन्त मिलें हमसे
कहे बैन कठोर ज्यौं बाँस फटे।।

लक्ष्मण तेहि सादर पाँव छुए
शुचि आसन पै उनको बैठारे।
कही आपने आयके कीन्ह कृपा
केहि हेतु कहैं मुनिराज पधारे।
कही राम से काम है मोहि अबै
रहे वर्ष सहस उपवास हमारे।
व्रत तोड़न चाहत आज यहाँ
श्रीराम के कर सँग शिष्यन सारे॥

❋

लक्ष्मण कर जोरि प्रणाम कियो
अति आदर से बोले सिर नाई।
श्रीराम तो चिन्तन कक्ष में हैं
मिलै प्राण को दण्ड वहाँ जोइ जाई।
मुनि कही मैं भस्म करौं अबही
यदि मोसन नाहिं मिले रघुराई।
लक्ष्मण अनचाहत कक्ष घुसे
श्रीराम प्रताड़ि कें कीन्ह बिहाई॥

नहिं प्राण को दण्ड दियो प्रभु नें
पर त्यागि दियो उनकों क्षण में ।
नहिं पालन आयशु मोरि करी
रहे जासे भले तुम कानन में ।
तुमने थो दियो मम साथ सदा
नहिं प्राण कों मोह कियो मन में ।
अब काह भयो दई टारि गिरा
लक्ष्मण सुनि ग्लानि भरे मन में ॥

तुम रोकत हू यहँ आय गये
मम आयशु कों धरि एक किनारी ।
तुम तो प्रिय भक्त रहे हमरे
मम आयशु थी सपनेहु नहिं टारी ।
तुहि काह भयो गये आय यहाँ
आई वहँ कौन विपत्ति है भारी ।
उर व्याकुल चैन नहीं मन में
सुनि त्याग की बात हिया दुख भारी ॥

मम पाप के कारण मोहि तज्यो
प्रभु बिनु जीवन बेकार भयो।
यह सोच के कूद परे सरयू
जल पैठत प्राण निसार भयो।
श्रीराम को भक्त महान बड़ो
जग छोड़ कें राम के धाम गयो।
सुनतहि पुर हाहाकार मची
कहें रोय के सब यह काह भयो।।

मुनि आवन राम सुनी जबहीं
तजि कक्ष तुरन्तहि द्वार पै आये।
मुनि के पद माँहि प्रणाम कियो
करि आदर पूजि उन्हें बैठाये।
बहु व्यंजन लाय खवाय प्रभू
सन्मानि के व्रत उनकों तुड़वाये।
मुनि नाथ कों राम बिदा करके
पुनि लौट कें जब निज कक्ष में आये।।

लक्ष्मण कर महा प्रयाण सुनो
श्रीराम दुखी मन द्वार पै आये।
हमहू अब महा प्रयाण करें
यह सोच भरतआदिक बुलवाये।
जबही उनि राम सँदेश सुन्यो
परिहर निज काम तुरन्तहि आये।
पुरजन परिजन सब बन्धु सखा
सुनि राम वचन अति ही घबराये॥

शत्रुघ्न पै धावक दौरि गये
सिग हाल अवधपुर को बतलाये।
सुनतहि बुलवाय पुरोहित कों
दोउ पुत्रनि राजभिषेक कराये।
विदिशा शत्रुघाति कों सौपि तबै
मथुरा नृप, पूत सुबाहु बनाये।
फिर बैठि अकेलेहि वे रथ में
चलिकें दिन रैन अवधपुर आये॥

फिर राम ने बन्धुनि पूतन कों
सँग लव कुश के अभिषेक करायो।
कुश कों दियो राज कुशावति को
लव श्रावस्ती कर राज थो पायो।
अंगद, चन्द्रकेतु लखन सुत जो
अँगद्वीप औ मल्ल को भूप बनायो।
पुष्कर अरु तक्ष भरत सुत थे
उनकों गान्धार प्रदेश दिलायो ।।

करि राजतिलक सब पूतन कों
तिनि हाथ पवन सुत कों पकरायो।
फिर लोग गये सरयू तट पै
प्रभु के सँग जायँ विचार बनायो ।
कही राम यहीं सब लोग रहो
पर राम वियोग न काहु कों भायो।
लखि प्रेम सियावर ने उर को
सब लोगन कों साकेत पठायो ।।

कही राम बुलाय विभीषण को
बहुकाल लौं लंक पै राज करो।
हनु औ रिछराज से फेरि कही
सँग मैंद, द्विविद भुइ वास करो।
पुनि द्वापर में मिलिहौं तुमसे
तब लौं उर में नित मोहि धरो।
फिर राम घुसे सरयू जल में
सबने कर जोरि प्रणाम करो ॥

प्रभु जान लगे हनुमान कही
मोहि नाथ नहीं निज संग लियो।
तुम्हरे सँग नाथ चलें हमहू
तब राम सनेह प्रबोध कियो।
मम तेज बसै तुम्हरे उर में
कपि तोहि में आज निवास कियो।
जब तक जग में मम नाम रहे
तुम्हें पूजिहैं लोग यहीं पै जियो ॥

प्रकटो तन तेज विशाल प्रभू
हनुमान के उर तेहि जाय समायो।
हनुमन्त प्रणाम कियो प्रभु कों
उनके पद कंज में शीष नवायो।
जल माँहि समाधि लई प्रभु ने
कर जोरि अवधपुर कों सिर नायो।
करि नेत्र सजल हनु आदिक ने
श्रीराम कों राम के धाम पठायो।।

पुरजन परिजन सब बन्धु सखा
सब देखत ही प्रभु धाम में आये।
कपि जो देवन कर पुत्र रहे
उनकों उनके पितु लोक पठाये।
जो शेष बचे चतुरानन ने
उनकों सन्तानक लोक भिजाये।।
श्रीरामहु चारहु बन्धु तबै
श्री विष्णु चतुर्भुज रूप समाये।।

प्रभु ग्यारह हजार बरस तक लौं
करि राज यहाँ साकेत सिधाये।
बैठारि के पुत्र सिंहासन पै
हनुमान के नाम के दीप जलाये।
सुनिहै नर जो यह राम कथा
वह निश्चय ही हरि को पद पाये।
जपि नाम सबहिं भव सिन्धु तरैं
अरु अन्त समय श्रीराम समायें।।

मथि के श्रुति शास्त्र पुराणन कों
उनसे नवनीत सो सार जो पायो।
रचि छन्द प्रबन्ध औ काव्य महा
श्रीराम चरित्र मैं गाय सुनायो।
ये कथा बिधु वृक्ष के फूल सी है
जेहि ध्यान कियो मन को फल पायो।
अपने सुख औ जग के हित कों
कहि राम कथा अति आँनद पायो।।

:- श्रीराम आरती :-

ओम जय जय जय श्रीराम ।

निशिदिन वास करो मम उर में, जपत रहूँ तव नाम । ओम जय......

कौशिल्या के कक्ष में प्रकटे, विष्णु को रूप लिये
बालक रूप धरो प्रभु ने जब, आग्रह मातु किये
कमल नयन केहरि शावक से, रूप छटा प्रभु श्याम । ओम जय.....

बिश्वामित्र के संग गये तब ताड़का थी मारी
गौतम नारि पड़ी बनि पाथर पाँव छुवत तारी
मुनि मख राखि सुबाहु सँहारो पहुँचायो निज धाम । ओम जय......

तोड़ि धनुष मथिलापति मख को, सिय के संग ब्याहे
भूप कुटिल, कर मान घटायो, सुर, नर, मुनि चाहे
प्रमुदित किये जनक अरु दशरथ, फिर आये निज धाम । ओम जय .....

कैकयी के वर पै नृप ने प्रभु को बनवास दियो
सन्त सुखी बहु किये और खर दूषण मार दियो
सीय हरी रावण ने वन में, लायो लंका धाम । ओम जय......

मिले अगस्त, सुतीक्षण, शबरी, गिद्धराज तारे
मैत्री हनुमत औ सुग्रीव से, बाली कहँ मारे
खोज भई सिय की जरी लंका, सेतु बनो अभिराम । ओम जय......

रावण, कुम्भकरण कहँ मारो, निशिचर नाश कियो
आयो शरण विभीषण तबही, लंक को राज दियो
पुष्पक में बैठारि सिया कहँ, लौटि परे निज धाम । ओम जय......

राज सिंहासन पै प्रभु बैठे, वाम सिया सोहे
अनुपम राम सिया छबि लखि के, मन 'महेश' मोहे
लक्ष्मण, भरतादिक, हनुमत के उर में बैठे राम । ओम जय......

राम, लखन, सिय, भरत, शत्रुघ्न और हनुमत वीरा
पावन करें अयोध्या मन को, रहि सरयू तीरा
मेरेहु मन में वास करें प्रभु, जनक सुता पति राम ।
ओम जय जय जय श्रीराम ।।

"विद्वानों की दृष्टि में छन्द रामायण" का शेष भाग

※ छन्द रामायण एक अद्भुत रचना है, इसे शत-शत प्रणाम ।

हंसराज बिहारी पांडे,५५, डिस्कोइन्स रोड, लौंग माउण्टेन–मारीशस

※ ब्रजभाषा में पहिली बार पूरी रामायण देखकर प्रसन्नता हुई इस कृति के लिए मैं शुक्ल जी का अभिनन्दन करता हूं।

डा० टी० राजेश्वरानन्द शर्मा पी०एच०डी०,डी०लिट तिरुपति. आंध्र प्रदेश

※ छन्द रामायण में कवि ने भारत की अनन्य भाषाओं में रचित रामायण काव्यों से प्रेरणा ग्रहण कर कथावस्तु को नया रूप देने का प्रयास किया है ।

डा० एम० शेषन, पी०एच०डी०,डी०लिट मद्रास, तमिलनाडु

※ शुक्ल जी की छन्द रामायण ब्रजभाषा को वही प्रतिष्ठा देगी जो इसकी पूर्व में रही है । मैं इस कार्य के लिए उन्हें बधाई देता हूं ।

डा० कमल किशोर गोयनका, दिल्ली

※ तुलसी के ज्ञान और भक्ति की समग्रता, शुक्ल जी की मर्म भेदिनी दृष्टि ने 'छन्द रामायण' में बड़ी कुशलता से समाविष्ट की है ।

डा० राम निरंजन पाण्डेय, पी०एच०डी० हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश

※ रामकथा और ब्रजभाषा का संयोग निश्चय ही एक सर्वथा नूतन उपलब्धि है ।

डा० जवाहर लाल तरुण, एम०ए०, पी०एच०डी० जबलपुर, मध्य प्रदेश

※ 'छन्द रामायण' में कवि के भावों की मौलिकता और मार्मिकता उनकी प्रतिभा के श्रेष्ठ विकास को सूचित करते हैं ।

डा० कृष्ण चन्द्र मिश्र, एम०ए०, पी०एच०डी० काठमाण्डू, नेपाल

※ 'छन्द रामायण' के छन्दों का हृदय पर सीधा प्रभाव पड़ता है। मैं दिन-भर उनके छन्दों को गुनगुनाया करता हूं, यह ब्रजभाषा की एक अनुपम कृति है ।

डा० सिया रामशरण शर्मा, एम०ए०, पी०एच०डी० प्रो० एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, ग्रामोदय वि०वि० चित्रकूट, सतना

※ कवित्त सवैया में प्रथम बार रचित 'छन्द रामायण की मौलिक महाकाव्यात्मक सृजनशीलता, ब्रजभाषा का मार्दव, पदलालित्य, संगीतात्मकता, प्रवाहशीलता और सूक्ति शैली अत्यन्त मोहक है ।

डा० निजामुद्दीन एम०ए०पी०एच०डी०, श्रीनगर, कश्मीर

'छन्द रामायण' कवि की कारयित्री प्रतिभा का विमुग्धकारी सुफल है। हिन्दी काव्य साहित्य को उनका यह अवदान एक कालजयी कृति के रूप में अमर रहेगा। डा० नन्दलाल मेहता, एम०ए०पी०एच०डी०
प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय, गुड़गाँव, हरियाणा

ब्रजभाषा में कवित्त सवैया में रामायण लिखकर शुक्ल जी ने एक बहुत बड़ा कार्य किया है। डा० देवेन्द्र दीपक पी०एच०डी०, भोपाल

महेश चन्द्र शुक्ल की 'छन्द रामायण' अवश्य ही बहुत ख्याति को प्राप्त होगी। कैलाश षड़ंगी, दण्डकारण्य, कोरापुट, उड़ीसा

ब्रजभाषा में लिखित 'छन्द रामायण' का महत्व निश्चित ही दीर्घ-कालिक होगा। डा० गिरिजाशंकर त्रिवेदी, पी०एच०डी०, बम्बई

'छन्द रामायण' की सहज अनुभूति युग युगान्तर तक मानस की भांति अमर रहेगी। डा० धर्मपाल मैनी, पी०एच०डी०, डी०लिट, चण्डीगढ़

जि ब्रजभाषा को मौलिक अरु अद्वितीय महाकाव्य है। ब्रजभाषा के पाठक सुधी लेखक अरु शोधकर्ता के ताईं जि ग्रन्थ उपयोगी सिद्ध ह्वैवेगो।
डा० रामप्रकाश सुमन पी०एच०डी०, अलवर, राजस्थान

'छन्द रामायण' के लिए शुभकामना अर्पित करता हूं।
पूर्व कुलपति डा० विद्यानिवास मिश्र, पी०एच०डी० दिल्ली

कवि ने देश विदेश की कई रामकथाओं तथा लोक प्रचलित रामकथा विषयक प्रसगों का अध्ययन किया है। 'छन्द रामायण' की भाषा आडम्बर हीन ब्रज है। डा० रमानाथ त्रिपाठी, पी०एच०डी० दिल्ली

राम कथा की ब्रजभाषा में रचना कर श्री शुक्ल ने हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की है। यह ब्रजभाषा की प्रथम रामायण निश्चय ही शोधार्थियों को नूतन दिशा देगी। डा०कामता कमलेश, पी०एच०ड०डी०लिट, अमरोहा

शुक्लजी आप महान है। मैं आपको दूसरा तुलसी कहता हू।
डा० युवराज सिंह, पी०एच०डी०डी०लिट, जावल, बुलन्दशहर

ब्रजभाषा में रामकथा का विस्तृत रूप इस ब्रजी रामायण में देखने को मिला, साहित्येतिहास में इसे एक दिन उच्च स्थान मिलेगा।
डा० सैयद महफूज हसन रिजवी 'पुण्डरीक' पी०एच०डी०, अलीपुर, कलकत्ता

के रचयिता
महेश चन्द्र शुक्ल

आपका जन्म ७ दिसम्बर १६३२ ई० को उत्तर प्रदेश के आगरा जनपद के नौगाँव भदावर में हुआ था। इनके पिता श्री रामाधार शुक्ल एवं माता श्रीमती त्रिवेणी देवी थे। इनका पैत्रिक गाँव ईकरी, लखना जनपद इटावा है। वर्तमान में कानपुर के निकट पतित पावनी गंगा के तट पर शुक्लागंज जनपद उन्नाव में निवास कर रहे हैं।

आपने एम० ए० तक शिक्षा प्राप्त की तथा ग्राम्य विकास विभाग में राजपत्रित अधिकारी बी० डी० ओ० के पद पर कार्यरत रहे। बचपन से ही आपको लेखन कार्य में विशेष रुचि रही है। अब तक सोलह पुस्तकें एवं पचपन कहानियाँ लिखीं हैं। सन् १६६० में राजकीय सेवा से निवृत्त होने के पश्चात अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला के आग्रह तथा अपने इष्टदेव के आशीर्वाद से ब्रज भाषा में छन्द रामायण की रचना की, जो ब्रजभाषा की प्रथम रामायण घोषित हुई। देश विदेश के अनेक विद्वानों ने छन्द रामायण की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। छन्द रामायण में लगभग हर छन्द में ही 'राम' के दर्शन होते हैं चाहे रावण का 'रा' और मन्दोदरी का 'म' ही मिलकर क्यों न राम हो गये हों। 'छन्द रामायण' की रचना पूर्ण हो जाने के पश्चात् एक अद्भुत घटना घटित हुई कि श्री महेश चन्द्र शुक्ल के दाहिने हाथ की हथेली में हस्त रेखाओं के माध्यम से स्वास्तिक का चिन्ह 卐 तथा बायें हाथ की हथेली में ॐ ओम् लिख गया है, इतना ही नहीं हस्त रेखाओं के माध्यम से ही अन्य धर्मों के भी प्रतीक चिन्ह बन गये हैं।

डा०
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग
ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म० प्र०